पुस्तक परिचय

लगभग तीस पीढ़ियां व्यतीत हो चुकी हैं, जब पं. जयदेव पन्त महाराष्ट्र के हिम्बरा प्रदेश से चौदहवीं सदी के प्रारम्भ में बद्रीनाथ तीर्थ यात्रा हेतु उत्तराखण्ड में आये, तथ से आज तक उनके वंशजों का बराबर विकास होता रहा और वे एक गांव से दूसरे गांव में फैलते रहे। वर्तमान समय में ये सत्तर से भी अधिक गांवों में बसे हैं। इसके अलावा आजीविका हेतु कुछ परिवार अपने मूल गांव को छोड़कर अन्यत्र चले गये और वहीं बस गये।

पन्तों का विकास किस प्रकार हुआ, तत्कालीन राजाओं से इन्हें उच्चपद एवं मान्यताएं किस प्रकार मिली, कब-कब और कहां-कहां दान जागीर तथा रौंत में ग्राम मिले, इसका संक्षिप्त वर्णन इस पुस्तक में किया गया है। इसके अतिरिक्त इसमें यह भी दर्शाया गया है कि ये लोग, शर्म, श्रीनाथ, नाथू, भवदास, हटवाल और गौतम राठ नाम से कब से और किस प्रकार प्रसिद्ध हुये और इन लोगों का राज्य संचालन में क्या योगदान रहा। मूल पुरुष पं. जयदेव से वर्तमान पीढी तक, सभी राठ, शाखा, प्रशाखा एवं प्रत्येक गांव की पूर्ण वंशावली भी दी गई है, जिससे हर व्यक्ति अपने पूर्व पुरुषों, पिता, पितामह, प्रपितामह क्रम से मूल पुरुष जयदेव जी तक नामों की व अन्य जानकारी प्राप्त कर सकता है। इस पुस्तक में उत्सुक व्यक्तियों की जानकारी हेतु अन्य ब्राह्मण वर्ग जैसे, पाराशर गोत्रीय, वशिष्ठ गोत्रीय, उपमन्यु गोत्रीय, पन्त तथा पाण्डे, जोशी, भट्ट, उप्रेती, त्रिपाठी या तिवारी और अन्य ब्राह्मणों के विषय में भी थोड़ा प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है कि ये लोग कब और कहां से आये, किस प्रकार फैले और वर्तमान में कौन से गांवों में रहते हैं। पुस्तक के अध्ययन से काफी जानकारी आपको मिल सके ऐसा प्रयास मैंने किया है।

कुर्मांचलीय संस्कृति, रीति-रिवाज, व्रत, त्यौहार मंत्र एवं इतिहास का एक दिग्दर्शन पुस्तक की रचना का ध्येय रहा है। मानव विकास के साथ जुड़े सभी पक्षों का क्रमोत्तर विकास परिवर्तन, परिवर्द्धन की एक झलक को ध्यान में रखकर पुस्तक लिखी गई है। एक सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप में पुस्तक पाठकों के लिये उपयोगी सिद्ध हो ऐसा विचार मेरा सदैव रहा है। कुमाऊं में सौरमांस और चान्द्रमांस के अनुसार कौन-कौन से पर्व व्रत त्यौहार कब-कब और किस प्रकार मनाये जाते हैं, हमारी क्या-क्या परम्पराएं, रीति-रिवाज हैं, प्रचलित तंत्र-मंत्र जिससे अनेक प्रकार के रोग व्याधियों का उपचार किया जाता है उसका भी समावेश इच्छुक व्यक्तियों की जानकारी हेतु किया गया है।

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
१-	संक्षिप्त इतिहास	१ से ९ तक
२-	भाग-१- शर्म पन्त	११ से ३८ तक
३-	भाग-२- श्रीनाथ पन्त	३९ से ५३ तक
४-	भाग-३- नाथू पन्त	५४ से ६९ तक
५-	भाग-४- भवदास (भौदास) पन्त	७० से ११७ तक
६-	भाग-५- गौतम पन्त	११८ से १२१ तक
७-	भाग-६- हटवाल पन्त	१२२ से १२३ तक
८-	भाग-७- अन्य गोत्रीय ब्राह्मण	१२४ से १३३ तक
९-	भाग-८- पर्व, ब्रत, रीति-रिवाज तथा मंत्र तंत्र प्रयोग	१३४ से १४७ तक
१०-	समापन	१४८ से १५० तक

संक्षिप्त इतिहास

ॐ श्री गणेशाय नमः पदम् पुराण स्वर्ग खण्ड अध्याय ३५ में पंक्तिपावन विप्रा (पंत ब्राह्मण) के विषय में लिखा है।
नारदः उवाच्:-

इमेदि मनुजः श्रेष्ठ विशेषया पंक्ति पावन।
विद्या वेद ब्रतश्चप्ता ब्राह्मण सर्वश्रेष्ठ वदि।

तरूण भारत अगस्त १९१५

मिश्र देश के इतिहास में लिखा है कि आठ सहस्त्र वर्ष व्यतीत हुये कि कुछ भारतीय मिश्र देश में आकर बसे। उन्होंने भारत का नाम पंडित देश लिखा है। ज्ञात होता है कि उस समय भारत वर्ष ही विद्वता में सब देशों का शिरोमणि था। इसी से पंत (पंडित) देश लिखा हो।

महाराजा शिवाजी के मुख्य अमात्य पंत ब्राह्मण थे। महेश्वर (मोरो) पंत प्रधान सचिव को साढ़े चार सहस्त्र मुद्रा वार्षिक वेतन मिलता था और राजा के दरबारियों में प्रथम स्थान पर बैठता था। पंत अमात्य को साढ़े तीन सहस्त्र पंत सचिव को तीन सहस्त्र मुद्रा वार्षिक वेतन मिलता था। प्रधान अमात्य, देश का प्रबन्ध और सैन्य संचालन करता था। अमात्य एवं सचिव भूमि का प्रबन्ध तथा कर अर्जन करते थे।

पं. त्रिलोचन पंत, नागरी भाषाया प्रधानाध्यापकेन संग्रहीता

मकरार्क संवत्, १९७३ वि. क्र. (सन् १९१६)

पुराणों में लिखा है कि चन्द्रवंशी नृप, गाधि के गुरु भृगुवंशी महर्षि ऋचीक थे। इस महर्षि ने पुत्रेष्टि यज्ञ कर चर्म विद्या विभक्त करके अपनी ब्राह्मणी तथा राजमहिषी (रानी) को खाने को दिया, किन्तु भाग्यवश ब्राह्मणी का भाग राजमहिषी तथा राजमहिषी का भाग सत्यवती ब्राह्मणी ने भक्षण कर लिया। सत्यता जानने पर ब्राह्मणी चिन्तित हो गई।

अतः महर्षि ने उसे वरदान दिया कि तेरा पुत्र ब्राह्मतेज युक्त और पौत्र क्षात्र कर्मा होगा। गाधि राजा का पुत्र विश्वामित्र और महर्षि ऋचीक के दो पुत्र जमदग्नि और भारद्वाज, हुए। जमदग्नि का पुत्र परशुराम क्षात्र कर्मी हुआ। भारद्वाज का पुत्र द्रोणाचार्य क्षत्रियों के युद्ध विद्या गुरु हुए। द्रोण पुत्र अश्वत्थामा युद्ध विद्या में प्रसिद्ध हुए। भारद्वाज के कनिष्ठ पुत्र मुकेतन महर्षि हुए। ये भारद्वाज (भार्गव) ब्राह्मण नर्मदा के तीर महिष्मती नगर में यदुवंशी नृपों के युद्धविद्या के गुरु होकर निवास करते रहे। जिस समय परशुराम ने महिष्मती के चक्रवर्ती नृप, कार्त वियोज्यन को पराजित किया ये ब्राह्मण सह्यार्दि के सुरक्षित स्थान पर चले गये। कार्त वियोज्यन के पुत्र जयध्वज और तालध्वज ने सह्याद्रि का प्राच्य भू-भाग जो कोंकण देश के नाम से प्रसिद्ध है, इन भार्गव ब्राह्मणों को प्रदान किया।

कालान्तर में चन्द्रवंशी राजकुमार ने कंकण (कोंकण) प्रदेश का शासन भार अपने हाथ में लेकर भार्गव को मंत्री पद पर नियुक्त किया। देवगढ़ के यदुवंशी राजा ने शाके ८८४ (आठ सौ चौरासी) में कोंकण निवासी कृष्ण जी को गोदावरी के तीर हिम्बरा ग्राम में बसाया, यहां ये हिमाड़ पंत के नाम से जाने जाते रहे। श्रेष्ठ ब्राह्मणों को पंक्ति में प्रथम स्थान मिलता था। इसीलिये 'पंक्तिपावन' पंत (जो बाद में पन्त नाम से जाने जाते रहे) की पदवी मिली। कृष्ण जी कृष्णोपासक और मोदी महाराष्ट्रीय लिपि के उत्पादक हुए। इन्होंने श्रीकृष्ण के भक्तिरत होकर रमावल्लभ दास की पदवी धारण की, इनकी बनाई कृष्णाष्टमी व्रतकथा का महाराष्ट्र देश में बड़ी श्रद्धा व भक्ति से कीर्तन होता है। इन्होंने बद्रीनाथ की यात्रा की। इनके बनाए भजन श्री बद्रीनाथ की स्तुति महाराष्ट्रीय भाषा में है। एक भजन में इन्होंने अपना परिचय इस प्रकार दिया है।

"देवगढ़ी चा राजा, लेखक में हो तू त्याचा" अर्थात्, मैं देवगढ़ी का राजा का लेखक हूं।

कृष्ण जी के ज्येष्ठ पुत्र दशरथ पंत को राजभवन का गुरू और पुस्तैनी लेखक (पटवारी) का पद दिया गया।

जब अलाउद्दीन खिलजी ने सन् १३०० के आसपास देवगढ़ पर आक्रमण कर तत्कालीन राजा शंकरदेव को मार डाला और हिन्दुओं को अनेक प्रकार से परेशान किया और धर्म परिवर्तन कर मुसलमान बनने पर मजबूर किया तो, दक्षिण भारत, गुजरात और उत्तर प्रदेश के मैदानी क्षेत्रों से कुछ ब्राह्मण वर्ग जैसे पन्त, पांडे, जोशी, तिवारी आदि, पर्वतीय क्षेत्रों के हिन्दू राज्यों में सुरक्षा हेतु चले गए। इसी परिपेक्ष में, हिमाड़ पंत जयदेव अपने साले (स्याल) पाराशर गोत्रीय दिनकर राव पंत (कहीं-कहीं इनका नाम नीलमणि पंत भी दिया गया है) के साथ बद्रीनाथ यात्रा हेतु कूर्मांचल आए।

पं. जयदेव पन्त का कूर्मांचल में वास करना।

खण्डशि चन्द्र (१३६०) खल वैक्रमीये, पुरा महाराष्ट्र कुल प्रदीपः।
यात्रा भिषात कोंकण देशतोयम, जयदेव नामा वदरीषु प्रतस्थे।।
कूर्मान्चलेऽस्मिन नृपराज सदमति, स्थित्वदि दृक्षुर्धरणीं पति स।
उत्थायमन्द भूमिपतिः समाहितो, विस्त्रायं यन्मंत्र जवात्क्षणां खः।

जयदेव से शर्म, श्रीनाथ, नाथू और भवदास तक की वंशावली

प्राचीन ताम्रपत्रानुसारः-

श्रीमतो जयदेवस्य रवि देवो सुतोभवत,
रविदेवात्वामदेवो, भानुदेवश्च तत्सुतः ।१।
श्रीधरो मांणिकोटस्य राज्ञो गुरूर भूदयम,
तत्सुतो बलभद्रोऽभूव्वाल्लाच्छिदेवकः ।२।
वेदयुग्मानि चन्द्राब्दे (१३२४) यस्यहस्ताक्षराणिवै,
राज्ञोगरूड़ज्ञानस्य सभायां लेखकोः भवत ।३।
शिवदेव त्रयः पुत्रा बुद्धिमतो बहुश्रुता,
दामोदरो, भानुदेवो, शम्भुदेवः इति त्रयः ।४।
भू न वाग्नि विधौ (१३९१) शाके सोमं दामोदरः,
सुधी कत्यूरवंश भूपाल विरम्भदेव नामकः ।५।
दामोदरश्च भूपश्च लेखकोयं बुधाग्रणी,
राज्ञो भारति चन्द्रस्य लेखको भानुदेवकः ।६।
ब्योमाष्ट त्रिविधौ शाके (१३००) भवद्वीश्वर,
राजा प्रताप चन्द्रस्य शंभुदास लेखकः।७।
शम्भूदासाद् धर्मदासः तत्सुतो, (चतुर्दश शताब्देक)
भवदास भू सचिवो मांणिकोटके ।८।
दामोदरो पुत्रौ द्वौ गोविन्द च गदाधर,
गोविन्दात् केशवो जातः शर्मनामाय तत्सुतः ।९।
गदाधरश्च पुत्रोऽभूत श्रीनाथेति प्रथमांगतः,
भानुदेवान्मुकुन्दोभूत् तत्सुतो विश्वरूपकः ।१०।
तत्सुतः नाथुदेवस्य सर्व एते, विचक्षणा,
शर्म, श्रीनाथ, नाथुश्च भवदासेति राष्ट्रकाः ।११।

कविवर गुमानी के शब्दों में

जयदेव सुतोधीमान रविदेवो वभूवह।
तत्सुतो रामदेवाख्यो भानुदेवश्चतत्सुतः।।१।।
बलभद्रस्ततो जग्ये शिवदेव तदात्मजः।
दामोदरस्त पुत्रो गोविन्दाख्य तदात्मजः।।२।।
केशवस्तनयस्तस्य हरि शर्मा भवन्ततः।
पुरुषोत्तम आसीत्सः मुकुन्दास्यतत्सुतः।।३।।
विश्वनांथस्ततो जग्ये तत्सुतो भूत्सदाशिवः।
तत्पुत्रो जयरामाख्यो रमावल्लभश्चततः ।।४।।
तत्पुत्रोऽभूत्उमाकान्तः शिवनामा ततोभवत।
देवीवल्लभ नामा भूतत्सुतो ह्यवसानजः।।५।।
जयदेव कुलोदभूतः ज्येष्ठा सर्वे च मानवाः।
प्रोक्ता हि क्रमशः श्लोक गर्भ संस्था हि "गुमानियां"।।६।।

सम्वत १३६० शाके १२२५ सन् १३०३

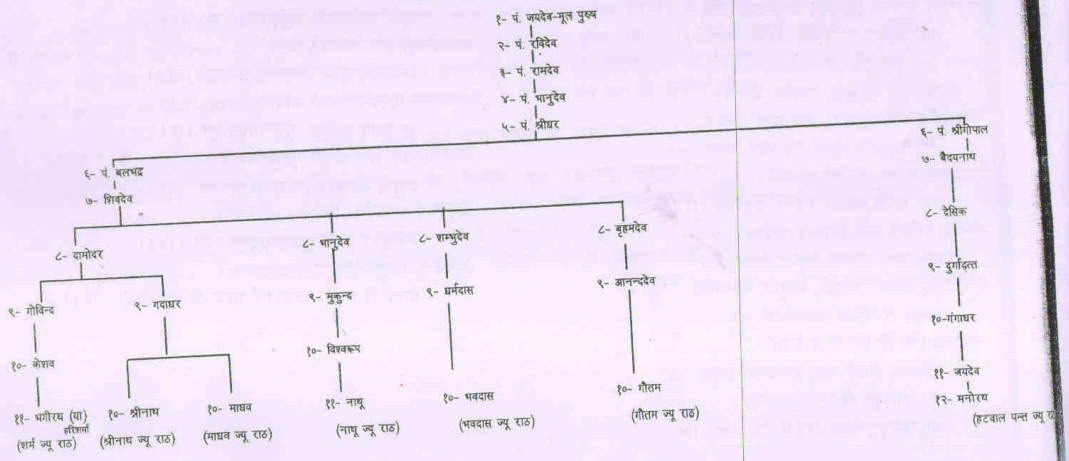

पं. जयदेव पन्त
गोत्र: भारद्वाज
प्रबर: त्रिप्रबर
वेद: शुक्ल यजुर्वेदाध्यायी
शाखा: माध्यन्दिनी

गोत्र:- हिन्दू समाज में हर परिवार किसी एक मिथकीय ब्रह्मर्षि या राजर्षि को अपना आदि पुरुष मानता है। गोत्र परम्परा सन्तानानुसार अथवा शिष्यानुसार दो प्रकार से चलती है। शास्त्रानुसार एक गोत्र के व्यक्तियों के बीच विवाह संबंध वर्जित है। यदि गोत्र परम्परा सन्तानानुसार या शिष्यानुसार अलग-अलग हो तो विवाह संबंध में कोई आपत्ति नहीं मानी जाती क्योंकि दोनों पक्ष के पिता अलग-अलग गोत्रों से संबंधित होते हैं। पन्त लोग जो इस वंशावली से संबद्ध हैं वे भारद्वाज गोत्रीय हैं अथवा यूं समझ लें मूल पुरुष पं. जयदेव पन्त भारद्वाज गोत्रीय थे अत: उनकी समस्त सन्तान भारद्वाज गोत्रीय हुई। भारद्वाज गोत्र के अलावा अन्य गोत्र के भी पन्त हैं। इनके विषय में आगे लिखा जाएगा।

प्रबर:- इस शब्द का मूल अर्थ, वह सूचना है, जिससे अग्नि को संबोधित कर यज्ञारम्भ में उसे आवाहित करते थे। इस कारण कुछ समय बाद प्रबर का तात्पर्य पितरों की संख्या से हो गया। आगे चलकर एक वंश में प्रसिद्ध पितरों की संख्या जितनी होती थी, वहीं उनका प्रबर माना गया भारद्वाज पन्त 'त्रिप्रबर' हैं (भारद्वाज, आंडिरस, वार्हस्पति)।

वेद:- शुक्ल यजुर्वेद को बाजसनेयी संहिता भी कहते हैं। एक विद्वान के अनुसार याज्ञवल्क्य के पिता/गुरू का नाम वाजसन था, और वाजसनेय, याज्ञवल्क्य का ही दूसरा नाम था। उत्तर भारत में शुक्ल तथा दक्षिण भारत में कृष्ण यजुर्वेद का प्रचार है। भारतद्वाज पन्त शुक्ल यजुर्वेदाध्यायी है।

शाखा:- शुक्ल यजुर्वेद की दो शाखाएं हैं, माध्यन्दिनी और काण्व। अधिकांश पर्वतीय ब्राह्मणों की माध्यान्दिनी शाखा है। इसके अनेक कारण हैं। एक मतानुसार जाबालादि पन्द्रह शिष्यों ने आचार्य बाजसन से शुक्ल यजुर्वेद पढ़ा। इन शिष्यों में माध्यन्दिनी अग्रणी थे उन्हीं की वेद परम्परा में आने वाले ब्राह्मण माध्यन्दिनी शाखा के हैं, भारद्वाज पन्त भी उन्हीं में से एक हैं।

जयदेव पन्त का कत्यूरी राजा द्वारा सम्मान और उड्यारी ग्राम में निवास।

जयदेव पन्त जब संवत १३६० शाके १२२५ सन् १३०३ में अपनी पत्नी और साले के साथ बद्रीनाथ यात्रा को आये तो, कत्यूरी राजा से मिलने उसके राजमहल में गये। उस समय राजा सोये हुये थे, अत: मुलाकात न हो पाई। उन्होंने आशीर्वाद के पुष्प बाहर एक सूखे पेड़ पर रख दिये और दरबान से कह

गये कि राजा के लिये पुष्प बाहर पेड़ पर रख दिये हैं और जब राजा जग जायें तो उन्हें तदनुसार बता देना। जब राजा नींद से जागे तो देखा कि जिस सूखे पेड़ पर फूल रखे थे, वह पेड़ हरा-भरा हो गया है। ऐसी एक किंवदन्ती है, यद्यपि इस विज्ञान के युग में यह एक कोरी कल्पना ही मानी जायेगी, तथापि यह तथ्य है कि उस समय ब्राह्मणों को आदर, सम्मान मिलता था। राजा गांवों को दान अथवा जागीर में रहने को दिया करते थे। जयदेव पन्त जी, बद्रीनाथ और गंगोली के अनेक तीर्थ घूमकर वापस आकर राजा से मिले। राजा ने उन्हें अपना राजगुरू बनाया और सम्मान पूर्वक कत्यूर (वैराठ) में उड्यारी ग्राम रहने को दिया। यहां ये चार पीढ़ी तक रहे।

गंगोली के मांणिकोटी राजा के दरबार में।

चार पीढ़ी तक सन्तान केवल एक-एक ही होती रही। पांचवी पीढ़ी में श्रीधर पन्त को मणिकोटी राजा ने अपना गुरू बनाया और वारामंडल के कमस्यार पट्टी में रिखाड़ी ग्राम रहने को दिया। साथ-साथ पाराशरगोत्रीय हरिहर पन्त को रिखाड़ी के निकट कोटयूड़ा ग्राम मिला। रिखाड़ी में श्रीधर के दो पुत्र हुये, बलभद्र और श्रीगोपाल। बलभद्र के लड़के शिवदेव (शिवदास) के चार पुत्र हुये, दामोदर, भानुदेव, शम्भूदास और ब्रह्मदास। श्रीगोपाल की सन्तान हटवाल पन्त के नाम से जाने जाते हैं।

रिखाड़ी से गंगोलीहाट, मणकोट दरबार में अधिकतर जाना पड़ता था आनें जाने में विलम्ब भी होता था और परिश्रम भी अत: मणिकोटी राजा से दरबार के आसपास रहने का स्थान मांगा। राजा ने ग्राम गसगौली (शायद वर्तमान, ग्राम छीना हो, यह मल्ला कोट के नाम से भी जाना जाता था) रहने को दिया। गंगोली में यही स्थान पन्तों का प्रथम निवास स्थान रहा। कालान्तर में वे धीरे-धीरे बढ़ते गये। शिवदेव के चार लड़कों में दामोदर, भानुदेव, और शम्भूदास यहां आ गये किन्तु ब्रह्मदेव रिखाड़ी में ही रह गये।

बलभद्र का लड़का शिवदेव बड़ा प्रतापी हुआ इसे चम्पावत के राजा गरुड़ज्ञानचन्द्र ने सन् १४०२ में अपने दरबार में सभासद का पद दिया। इनके चार पुत्रों में दामोदर को सन् १४६९ में कत्यूरी राजा विरम्भदेव ने अपना दीवान बनाया। तीसरे भाई शम्भूदेव को राजा प्रतापचन्द्र (सन् १५०३-१५१७) ने अपना सचिव बनाया। शम्भूदास के पुत्र भवदास को मणिकोटी राजा ने अपना सेनापति बनाया।

दामोदर के दो पुत्र हुये, गोविन्द और गदाधर। गोविन्द के लड़के केशव और उनके लड़के, शर्म या हरिशर्मा। शर्म की सन्तान आगे को शर्म राठ कहलाये, ये राजा के राज्य वैद्य थे, और आगे को भी होते रहे। गोविन्द के दो लड़के श्रीनाथ और माधव हुये। श्रीनाथ की सन्तान श्रीनाथ राठ कहलाये, माधव को राज्य की ओर से कोई प्रतिष्ठा नहीं मिली अत: ये ज्यादे प्रकाश में नहीं आये। (इन्हें माधव ज्यू राठ की संज्ञा दी जायेगी)। श्रीनाथ राठ राजगुरू हुये। दामोदर के दूसरे भाई, भानुदेव के पुत्र मुकन्द और मुकन्द के पुत्र विश्वरूप और विश्वरूप के नाथू हुये नाथू की सन्तान नाथूं ज्यू राठ कहलाई जाती है, ये राजा के पौराणिक पंडित (व्यास) हुये। तीसरे भाई शम्भूदास के पुत्र भवदास राजा के सेनापति हुये और इनकी सन्तान 'भवदास ज्यूराठ' कही जाती है। चौथे भाई ब्रह्मदेव रिखाड़ी में ही रहे। इन्हें राज्य से कोई प्रसिद्धि नहीं मिली अत: ये भी ज्यादे प्रकाश में नहीं हैं। ब्रह्मदेव के पुत्र आनन्ददेव हुये और आनन्ददेव के पुत्र गौतम दसवीं पीढ़ी

में हुये। ये, शर्म, श्रीनाथ, नाथू और भवदास के समकालीन थे अत: इनकी शाखा को पंत वंशावली के प्रकरण में 'गौतम ज्यू राठ' आगे लिखा जायगा।

उप्राड़ा ग्राम में निवास वहां से अन्य गांवों को जाना।

पहिले मणिकोटी राजा के दीवान उप्रेती थे। किन्हीं कारणवश राजा उप्रेतियों से नाराज हो गया। उसने श्रीधर के दूसरे पुत्र श्रीगोपाल जिसकी ससुराल उप्रेतियों में थी से कहा कि वह उप्रेतियों से सम्बन्ध न रखे। लेकिन उसने हठ की और राजा की आज्ञा नहीं मानी और गंगोलीहाट बाजार में रहने लगा, इस कारण उसकी सन्तान हटवाल पन्त कहलाई जाती है। उप्रेतियों का वैमनस्य, राजा से चलता रहा। राजा ने क्रुद्ध होकर उप्रेतियों का गांव उप्रेतड़ा छीन कर श्रीधर पन्त को दे दिया। बाद में इस गांव का नाम उन्होंने उप्राड़ा रख दिया। उप्रेतियों का घर जो मल्लाकोट के नाम से (वर्तमान में छीना) जाना जाता है, शम्भूदेव के हिस्से में आया। चूंकि उप्रेतियों का गांव छीन लिया गया था, वे राजा से नाराज थे और बदला लेने के उचित अवसर की प्रतीक्षा में थे। इन्द्रदेव उप्रेती ने राजा कर्मचन्द्र को शिकार के बहाने जंगल में ले जाकर मरवा दिया और खबर फैला दी कि राजा को बाघ ने मार दिया है। राजा कर्मचन्द्र की रानी को इस अफवाह पर विश्वास नहीं हुआ। उसने उप्रेतियों का बध कर अपने एक मात्र पुत्र ताराचन्द्र को श्रीधर पन्त की सुरक्षा में सौंपा और स्वयं राजा की पगड़ी के साथ सरयू गंगा में सती हो गई। पन्तों ने सती को दिये वचनों को पूरा किया और कर्मचन्द के पुत्र ताराचन्द को राजगद्दी पर बैठाया। इस प्रकार सब अधिकार पन्तों के हाथ में आ गया और यही, राजगुरू राजवैद्य, दीवान, पौणारिक और सेनापति बन गये और तभी से पन्तों और उप्रेतियों के बीच मनमुटाव रहने लगा।

उप्राड़ा ग्राम, शर्म, श्रीनाथ और नाथू को मिला, भवदास को मल्लाकोट मिला श्रीनाथ ने अग्रौन का गांव नागिल ब्राह्मणों से बलपूर्वक छीन लिया, और उप्राड़ा में अपने हिस्सेदारी की जमीन शर्म जी के पुत्रों को बेच दी। नाथू के पुत्र को राजा ने डोभाल ग्राम जागीर में दिया। जैंत पन्त ने जैंत कोट बनवाया और वहीं निवास करते थे। पुरुष पंत के लड़के इन्द्रदेव ने पठक्यूड़ा के पास इन्द्रकोट बनवाया और वहीं निवास करने लगे।

कूर्माचल (कुमायूं) की संक्षिप्त भौगोलिक स्थिति एवं इतिहास।

कुमायूं में पन्त लोगों के विकास के सम्बन्ध में जानने के लिये कुमायूं की भौगोलिक स्थिति तथा प्राचीन इतिहास पर भी थोड़ा सा प्रकाश डालना आवश्यकीय है। यह क्षेत्र उत्तरी अक्षांश २८°५१-३०°४९ तथा पूर्वी देशान्तर ७७°४३-६९°३१ के मध्य स्थित है। इसके पूर्व नेपाल पश्चिम में गढ़वाल के जिले, उत्तर में तिब्बत और दक्षिण में पीलीभीत, बरेली व मुरादाबाद के मैदानी प्रदेश हैं। ऐसी किंवदन्ती है कि कुमायूं का नाम कूर्म परबत (जो वर्तमान में कानदेव नाम से जाना जाता है) के कारण पड़ा। जब कूर्म अवतार हुआ तो ३ वर्ष तक इस पर्वत पर खड़ा रहा जिसके कारण उनके चरणों से पर्वत में चिन्ह हो गये। तब से यह स्थान कूर्म+अंचल कूर्मांचल पड़ गया। जिसका प्राकृत बिगड़ते-बिगड़ते स्थानीय भाषा में कुमाऊं या कुमायूं हो गया। पहिले इसमें दो जिले थे, अल्मोड़ा और नैनीताल। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद प्रशासनिक दृष्टि से, अल्मोड़ा जिले का कुछ भाग काट कर एक नया जिला पिथौरागढ़ बना दिया गया।

इसी नव सृजित जिला पिथौरागढ़ के रामगंगा और सरयू के बीच का भू भाग गंगावली या गंगोली नाम से जाना जाता है। इसका प्रशासनिक नाम बारामंडल है। यह घाटी बड़ी सुरम्य एवं शस्यश्यामला है। छोटी-छोटी पहाड़ियां हरे भरे जंगलों से आच्छादित हैं, जहां से हिमालय की धवल चोटियां निरन्तर मन मोह लेती हैं। कलकल करती छोटी-छोटी नदियां बहती हैं, जिनके किनारे उपजाऊ समतल भूमि है। पीने के लिये मीठे पानी के स्रोत, जलाने के लिये लकड़ी जानवरों के लिये घास, कहीं समतल, कहीं ढलुवां उपजाऊ भूमि में भरपूर फसलें उगती हैं। सीढ़ीदार खेत फसलों से हरे-भरे, फल-फूल, एवं साग सब्जियों से भरे रहते हैं। इसकी प्रशंसा में कविवर गुमानी पन्त ने निम्न प्रकार लिखा है।

केला निम्बू अखोड़, दाड़िम रिंगू, नारींग आदो दही।
खासो भात जमोलि को कलकलो, भूना गडेरी गावा।।
च्यूड़ा सद्य, उत्योल, दूध बाकलो, घ्यू गाय को दोंणोदार।
खानी सुन्दर मौणियों धपड़वा गंगावली रौणियां।।

राजा कल्यॉण चन्द के समय, राजकवि शिव ने भी कल्यांण चन्द्रोदय में गंगोली की प्रशंसा में निम्नलिखित कहा है।

राज्ये कूर्माचल श्रेष्ठस्तम, गंगावली शुभा।
ब्राह्मणा: यत्र बर्तन्ते, कुलीनाश्च विपक्षीत:।। (श्लोक सं. ५२)
नृपोक्तांभाकर्ण्य मनोहर वच: प्राप्त कुमारोन्ति कुमार विक्रम:।
गंगावली वेद निनाद शोभनीय: दानेन, मानेन जनान प्रहर्षयन।। (श्लोक सं. ६०)

लगभग २०० वर्षों तक चन्द राजाओं का राज्य रहा। किन्तु इस बीच स्थानीय राजाओं तथा कत्यूरी राजाओं के बीच निरंतर संघर्ष रहने से शासन में स्थिरता न आ सकी। कत्यूरी राज्य के पराभव के उपरान्त चन्द राजाओं के शासनकाल में कुमाऊं को एक शक्तिशाली राज्य के रूप में विकसित होने का अवसर

मिला, लेकिन आपसी संघर्ष, गढ़वाल, नेपाल तथा रोहिलों से बराबर युद्धरत रहने से यह एक स्थायी और विकसित राज्य न हो सका। चन्द राजाओं में गरूड़ज्ञानचन्द, उद्यानचन्द, विक्रमचन्द, भारतीचन्द, रतनचन्द, मांणिकचन्द, रूद्रचन्द, बाजबहादुरचन्द के नाम उल्लेखनीय हैं। इन्होंने कई मन्दिर, नौले, बावडियां बनवाईं, कई मन्दिरों का जीर्णोद्धार किया। ब्राह्मणों और वीर सेनानियों को गांव जागीर, दान और रौत में दिया। (असाधरण वीरता में दी जाने वाली जागीर को रौत कहा जाता है)। इन्हें राज्य में उच्च पदों, मंत्री, दीवान, गुरू, सेनानायक आदि प्रतिष्ठित पदों पर नियुक्त किया। उन्हें सामाजिक मान्यता दी। राज्य का शासन प्रबन्ध अधिकतर ये लोग ही चलाते थे। समय-समय पर चालें (षड्यंत्र) चलाते थे। राजाओं को कठपुतली की तरह नचाया करते थे। राजा लक्ष्मीचन्द और उद्योतचन्द के शासन काल से चन्दराज्य बलहीन होता गया। राजा महेन्द्रचन्द कुमाऊं के अन्तिम चन्दवंशीय राजा थे। सन् १७९० में नेपाल के राजा रणबहादुर ने आक्रमण कर कुमायूं राज्य अपने राज्य में मिला लिया।

गोरखा राज्य।

सन् १७९० से सन् १८१५ यानी २५ वर्षों तक कुमायूं में गोरखा राज्य रहा। गोर्खाराज कुमायूं के लिये कोई सुखद नहीं रहा। प्रजा पर बड़े-बड़े अत्याचार हुये, राज्य संचालन का कोई स्थायी प्रबन्ध नहीं था। गोर्खा सैनिक बलपूर्वक, खाने का सामान, अनाज, फल, दही, दूध आदि छीन लेते थे जिसका मूल्य भी नहीं देते थे। कुली का काम भी बेगारी में लेते थे। जब शहर अथवा गांवों में आते तो घर के मालिक को घर से निकाल देते थे। गांवों में तो अधिकतर परिवार घर छोड़ जंगलों को भाग जाते थे। न्याय प्रथा कुछ भी नहीं थी, जो कुछ थी भी वह बिल्कुल निष्ठुर और कठोर थी। राजा से न्याय की मांग की कोई सुनवाई न थी। विचित्र राजाज्ञाएं जारी की जाती थी, ये लोग बड़े कठोर प्रवृत्ति के थे, चिड़िया या मनुष्य को बिलावजह मार देना मामूली बात थी। आज भी जब किसी पर अन्याय होता है तो यह कहता है 'क्या तेरे लिये गोरखिया राज्य आ गया है।' कविवर 'गुमानी' ने भी लिखा है।

दिन-दिन खजाना का भार का वोकणां ले।
शिव-शिव चुलि में, बाल न एक कैका।।
तदपि मुलुक तेरो छोड़ि कोई निभाजा।
इति वदति 'गुमानी' धन्य गोर्खालि राजा।।

(यहां पर धन्य शब्द व्यंगात्मक है)।

गोर्खा राज में अधिकतर कामदार, शिजाड़, दन्यां व गल्ली के जोशी, गंगोली, उप्राड़ा, स्यूनरा कोट तथा खूंट के पन्त, दौरा के चौधरी व अन्य लोग रहे। पंडिताई, वैदयक में भी यही लोग थे। सेना में भी बहुत से कुमाऊं वाले भर्ती थे। गोरखाओं का इन पर विश्वास कम था तथा इनकी इज्जत भी मामूली थी। राज्य की दयनीय दशा देखकर हर्षदेव जोशी ने कुमाऊं में अंगरेजी राज्य स्थापित करने में उनकी मदद की, अन्ततः सन् १८१९ में पूरा कुर्मांचल क्षेत्र सिंगौली की सन्धि के अनुसार अंग्रेजी शासन के अर्न्तगत आ गया और अगस्त सन् १९४७ तक उनका राज्य यहां रहा।

भाग–१ (शर्म पन्त)

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
१-	शर्म पन्तों का विकास तथा विभिन्न गांवों में बसना।	११ से १५ तक
२-	विभिन्न ग्रामों की सूची।	१६
३-	उप्राड़ा और जीवनपुर, अल्मोड़ा (शिवदेव की शाखा)।	१७
४-	उप्राड़ा और तल्ला पोखरवाली अल्मोड़ा (पुरुषोत्तम की शाखा)।	१८
५-	उप्राड़ा, नांधर तालिका I और II सुनौली, छांना (सोर)।	१९ से २० तक
६-	उप्राड़ा पुरानकोट एवं चौंसार, पन्त भवन (अल्मोड़ा)	२१
७-	जजुट और त्यूनरा अल्मोड़ा।	२२
८-	जजुट शिवराम की शाखा (तालिका I)।	२३
९-	भीमताल पुरुषोत्तम एवं हरिराम की शाखा (तालिका II)।	२४
१०-	बिष्टाकुड़ा अल्मोड़ा।	२५
११-	चम्पानौला अल्मोड़ा।	२६
१२-	अघार और काशीपुर।	२७
१३-	मलौंज और काशीपुर।	२८
१४-	गड़तिर गंगोलीहाट।	२९
१५-	मथुरा, कुनल्ता, बरेली।	३०
१६-	चितई।	३१
१७-	पीपली बैड़ती।	३२
१८-	बर्षायत (तालिका I II, III IV और V)।	३३ से ३७ तक
१९-	पभ्या।	३८

भाग-१ (शर्म पन्त)

पं. भगीरथ शर्म के दो पुत्र हुये, पुरुषोत्तम और काशी, पुरुषोत्तम के तीन पुत्र हुये (१) मणिराज, (२) मुकुन्द और (३) गणेश। पहले पुत्र मणिराज के पुत्र सदानन्द हुये (छज्यू नाम से जाने जाते रहे आगे इनकी सन्तान छज्यूराठ से प्रसिद्ध हुई)। सदानन्द के पुत्र विश्वेश्वर हुये। विश्वेश्वर जी के तीन पुत्र हुये शिवदेव, पुरुषोत्तम और हरिकृष्ण। शिवदेव जी की सन्तान उप्राड़ा तथा अल्मोड़ा (जीवनपुर) में रहती है। इसी शाखा में डा. तारादत पन्त, नेपाल नरेश के वैद्य रहे। इन्होंने अपना धर्म परिवर्तन कर लिया और ईसाई हो गये। उनके पौत्र तथा प्रपौत्र अभी भी अल्मोड़ा के मिशन कम्पाउण्ड में रहते हैं। हरिकृष्ण उप्राड़ा में ही रहे और १८ वीं पीढ़ी में यह शाखा समाप्त हो गयी। पुरुषोत्तम की सन्तान उप्राड़ा तथा तल्ला पोखरखाली अल्मोड़ा में रहती है।

मणिराज, के दूसरे भाई मुकन्द का लड़का विश्वनाथ हुआ (ये विणज्यू के नाम से प्रसिद्ध हुये और इनकीं शाखा विणज्यू राठ से भी जानी जाती है)। विश्वनाथ के दो लड़के हुये, प्रभाकर और शिवदेव। प्रभाकर का लड़का वीरभद्र और वीरभद्र के २ दो लड़के विद्याराम और देवकीनंदन हुये। विद्याराम की सन्तति, उप्राड़ा, सुनौली, छाना (सोर) तथा नाघर (उप्राड़ा) में रहती है। दूसरे लड़के देवकीनन्दन की सन्तान उप्राड़ा (पुरानाकोट), चौंसार एवं पन्तभवन अल्मोड़ा में रहती है। विश्वनाथ (विणज्यू) के दूसरे पुत्र शिवदेव के दो पुत्र हुये, जयराम और कामदेव। राजा दीपचन्द ने सन् १७६३ में जयराम को जजुट ग्राम दान में दिया। जयराम के पुत्र प्रेमबल्लभ और ताराबल्लभ जजुट में रहे। प्रेमबल्लभ की सन्तान में एक शाखा रामचन्द्र त्यूनरा चले गये। गौरीवल्लभ विष्टाकुड़ा अल्मोड़ा चले गये। ताराबल्लभ चन्द दरबार में सभासद थे। रमावल्लभ चम्पानौला अल्मोड़ा को गये। राजा कल्यांणचन्द्र (सन् १७२९-१९४७) एक लट्ठ मूसल राजा था, उसके कारिन्दे उसे भड़का कर अपना उल्लू सीधा करते थे। इन्हीं मुंहलगे कर्मचारियों में बैड़ती के भवानीदत पाण्डे जो पुलिस विभाग के प्रधान अफसर थे; ने राजा से शिकायत की कि कुछ ब्राह्मण तथा राजपूतों ने षड़यंत्र रचा है कि राजा को धोखे से मरवाकर उसके स्थान पर जयपुर के सवाई जयसिंह के कुंवर को राजगद्दी पर बैठाया जाय। राजा ने बिना जांच पड़ताल के यह खबर सच मान ली और ब्राह्मणों की आंखें निकलवा दीं। राजपूतों को मरवा कर सुबाल नदी में फिंकवा दिया। कहते हैं कि निकाली गई आंखों से सात भदेले (लोहे का गोल बर्तन) भर गये। ब्राह्मणों में पन्त तथा जोशी भी थे। अभाग्यवश रमाबल्लभ पन्त भी इनमें से एक थे।

शिवदेव के दूसरे पुत्र कामदेव के दो पुत्र हुये, कमला बल्लभ और सीता बल्लभ। कमला वल्लभ की सन्तान अघार ग्राम में रहती है और सीतावल्लभ की मलौंज एवं काशीपुर में।

पुरुषोत्तम के तीसरे लड़के मणेश हुये और गणेश के गदाधर और गदाधर के तीन लड़के हुये (१) गोविन्द (२) यशोधर (३) मुकुन्दराम। गोविन्द की सन्तान गड़तिर (गंगोलीहाट) में रहती है। यशोधर के एक पुत्र पदमपति मथुरा चले गये। दूसरे बृहस्पति की सन्तान ग्राम कुनल्ता में रहती है। तीसरे पुत्र इन्द्रदेव बरेली चले गये। गदाधर के तीसरे पुत्र मुकुन्दराम चितई चले गये।

शर्म के दूसरे पुत्र काशी हुये। काशी के भरत और भरत के पाराशर। पाराशर के तीन लड़के (१) कामदेव (२) भगीरथ और (३) मारकण्डेय हुये। कामदेव मल्ला बड़ाऊ के ग्राम पीपली में रहने लगे, इसी शाखा से एक व्यक्ति विष्णुवल्लभ श्रावण ४, गते सन् १७७३ में बैड़ती को चले गये अब इनकी सन्तान वहीं रहती हैं। भगीरथ के पुत्र भवदेव ने ग्राम पभ्या बेरीनाग के समीप जहां ये लोग पहले आकर बसे थे, छोड़ दिया और वर्षायत में आकर बसे। किंवदन्ती है कि इनके पांच भाई नेपाल को चले गये। एक अन्य किंवदन्ती के अनुसार दूसरे भाई जिसका नाम शिवदेव था वह बड़ा ज्ञानी था उसे आभास हुआ कि वर्षायत ग्राम का पानी तामसी है और यहां रहने वाले तेज स्वभाव वाले होंगे अतः वे गांव छोड़कर नेपाल चले गये। यह भाई नेपाल में पालपा में बस गया। वर्षायत से कुछ पीढ़ियों तक कोई न कोई उनसे मिलने पालपा जाया करता था। कालान्तर में आना जाना बन्द हो गया। ऐसा कहा जाता है कि वहां, उनकी आर्थिक, सामाजिक एवं शैक्षिक स्थिति अच्छी है। नेपाल राज्य में वे अच्छे पदों पर भी नियुक्त हैं।

ग्राम पभ्या में भवदेव का आपसी मनमुटाव हो गया अतः उन्होंने राजा देवीचन्द (सन् १७२०-१७२६) से वर्षायत ग्राम मांगा। उस समय यह पूरा गांव उजाड़ था। उससे पहिले यहां बाईस मवासे जाटों को बाघ ने उजाड़ दिया। गांव अच्छा था पहाड़ के बीच में कुछ समतल जमीन थी। बीच ग्राम में मीठे पानी का स्रोत था। मातदिल आबहवा, घास और लकड़ी का जंगल साथ में लगा था, भवदेव जी को पसन्द आ गया। राजा ने बाघ वाली बात बतलाई भी, उन्होंने इसकी परवाह न कर गांव मांग लिया। छुरमल देवता तथा श्री पिंगलीनाग देवता के मन्दिर बनवाये जिससे बाघ कभी-कभी जानवरों पर आक्रमण करता है, लेकिन गांव के अन्दर अभी तक बाघ का कोई आतंक नहीं हुआ।

पभ्या ग्राम छोड़ते समय उन्होंने अपने चाचा के लड़कों को श्राप दिया कि न तो तुम उजड़ो और न बढ़ो। यह श्राप के कारण था या दैवइच्छा थी कि पभ्या ग्राम अधिक नहीं फैला, शाखाएं भी नहीं फैली।

शर्मराठ निरमांसी है और प्याज लहसुन तक नहीं खाते। इनमें समय-समय पर, प्रख्यात, वैद्य, कवि, शिल्पी, संस्कृत के विद्वान राजनीतिज्ञ पैदा हुये। राजदरबार में इन्हें वैद्यकी का कार्य मिला। ये राजवैद्य रहे। छोटे-छोटे कवि जैसे ग्राम मलोज के श्री श्यामाचरण पन्त आदि ने अधिक प्रसिद्धि नहीं पायी और प्रकाश में नहीं आये। इस प्रकरण में कविवर लोकरत्न 'गुमानी' का नाम उल्लेखनीय है।

कविवर लोकरत्न 'गुमानी'।

लोकरत्न कविवर गुमानी का नाम लक्ष्मी नंदन पन्त था। ये मूलतः उप्राड़ा के निवासी थे। इनका जन्म सम्वत् १८४७ अर्थात् सन् १७९० में काशीपुर में हुआ। इनके पिता का नाम देवनिधि था, कहा जाता है कि काशीपुर में कुमाऊं नरेश गुमानसिंह देव की सभा को मंडित करने के कारण इन्हें गुमानी कहा जाने लगा। गुमानी टिहरी महाराज सुदर्शन शाह की सभा के मुख्य कवि थे। एक बार एक विदेशी पंडित ने गुमानी जी से उनका नाम पूछा। उन्होंने अपना नाम निम्न श्लोक में दिया।

कोर्मध्य मोहस्व, तृतीयकेन स्वरेण दीर्घ प्रथमेन युक्तः।
पोरान्तिमस्तोश्वर मस्तुवर्णो, दीर्घ द्वितीयेन ममामिनामम्।।

अर्थात् 'क' वर्ग के मध्य वर्ण 'ग' में तृतीय ह्रस्वस्वर (उ) पवर्ग के अन्तिम वर्ण 'म' में प्रथम दीर्घस्वर (आ) तथा तवर्ग के अन्तिम वर्ण 'न' में द्वितीय स्वर (ई) जोड़ने से बनता है मेरा नाम 'गुमानी'। इन्होंने अपना उपनाम 'गुमानी' ही रखा। वैद्यक एवं पांडित्य गुमानी की कुल परम्परा रही। इनके पिता देवनिधि नेपाल नरेश के राजवैद्य रहे। यद्यपि गुमानी काशीपुर में पैदा हुये, तथापि इनकी कर्मस्थली मूल गांव उप्राड़ा ही रही। चौबीस वर्ष तक विद्याध्ययन के पश्चात् बारह वर्ष ब्रह्मचर्य व्रत धारण कर देशाटन किया। कुछ समय तक दूब का रस पीकर जीवन यापन किया। गुमानी जी के समय भारत वर्ष में राजनैतिक घटनाओं का उथल-पुथल का युग था। उन्होंने अपने जीवन काल में, गोरखा शासन की कठोरता को भोगा। गढ़वाल एवं कुमाऊं के स्वतंत्रता के सूर्य को अस्त होते हुये तथा अंग्रेजी शासन काल को उगता हुआ देखा।

ये विद्वान, कवि, स्पष्टवादी, तथा स्वाभिमानी प्रवृति के थे। काशीपुर, टिहरी, कांगड़ा, अलवर तथा नाहन के राजाओं द्वारा सम्मानित हुये। मूलतः ये संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। इसके साथ-साथ ये बहुभाषाविद भी थे। फारसी, हिन्दी, बृजभाषा, कुमाउँनी एवं नेपाली में भी कविता करते थे। इनके द्वारा लिखित तेईस संस्कृत ग्रन्थों का विवरण मिलता है। इनके द्वारा रचित कुछ कविताएं निम्न प्रकार हैं।

हास्यरसः-

कालो, करड़ो, कुतकुतो, भट को भकूना जसों।
बांई तरफ मणीं मणीं निकलियो अटको नशा जाल में।।
ऐसा गान सुभायमान गलि में क्या कूं विशा जोशि को।

करुणरसः-

हलिया हाथ पड़ो बड़ा कठिन ले, है गैछ दिन दोफरी।
बॉयो बल्द दिज्यू को मिलछियो, कॉ जॉ मैं दैणा सुणी।।
द्वी मॉणा भट्ट, गहत, गुरूंश का पैंचा लगै नी मिला।
हाय! मैं रांड़ सूं काल हरांणों कां जां के धान् करूं।।

मिश्रित भाषा में कविता:-

बाजे लोग त्रिलोकनाथ शिव की पूजा करैं तौ करैं। (हिन्दी)
क्वे क्वे भक्त गणेश का जगत में बाजा हुनी तौ हुनी।। (कुमाउनी)
राम्रो ध्यान भवानी का चरणमां गर्दन कसैले गरन। (नैपाली)
धन्यांत्मातुल धामनीह रमते, रामे गुमानी कविः। (संस्कृत)

अंगरेजी राज में अल्मोड़े शहर की दुर्दशा का वर्णनः-

विष्णु का देवाल उखाड़ा, ऊपर बंगला बना खरा।
महाराज का महल ढहाया, बेड़ी खाना तहां धरा।।
मल्ले महल उठाई नन्दा, बंगलों से तहां भरा।
अंग्रेजों ने अल्मोड़े का नक्शा औरी और करा।।

सन् १८४६ आषाढ़ कृष्ण अष्टमी को ५६ वर्ष की आयु में उनका देहान्त हो गया।

माननीय पं. हरगोविन्द पन्त।

राजनीति में माननीय पं. हरगोविन्द पन्त एक ख्याति प्राप्त नेता रहे हैं। १९ मई सन् १८८५ में जन्मे चिताई गांव के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम पं. धर्मानन्द पन्त था। प्रारम्भिक शिक्षा इन्टरमीडियेट तक अल्मोड़ा में पाई। सन् १९१९ में इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से एल. एल. बी. की डिग्री लेकर रानीखेत में वकालत शुरू की। स्वराज पार्टी से वर्ष १९२४ में जिला अल्मोड़ा से लेजिसलेटिव कौंसिल के लिये चुने गये। असहयोग आन्दोलन के सिलसिले में ४ जून १९३० में जेल गये और सन् १९३१ में उनके पिता के देहान्त होने के कारण जेल से छोड़ दिये गये। सन् १९२५ से १९२९ तक जिला परिषद के चेयरमैन रहे। कांग्रेस पार्टी से सन् १९३६ में यू. पी. विधान सभा के मेम्बर चुने गये। भारतवर्ष को जबरदस्ती द्वितीय विश्वयुद्ध में घसीटे जाने के कारण पूरी मिनिस्ट्री ने त्याग पत्र दे दिया। डिफेन्स आफ इन्डिया रूल्स के अन्तर्गत एक साल के लिये जेल भेज दिया गया। बाद में भारत छोड़ो आन्दोलन के सिलसिले में पुनः जेल भेज दिया गया। पांच अप्रैल १९४४ को रिहा कर दिये गये और यू. पी. विधान सभा के डिपुटी स्पीकर रहे। कुमाऊं केशरी पं. बद्रीदत्त पांडे जी के साथ १४ मई १९२१ को कुली बरदाइस की प्रथा बिना खून खराबी के समाप्त करवा दी। अन्य अनेक सुधार कार्य भी किये जिनमें अछूतोद्धार (२) हिन्दू मुस्लिम एकता (३) नशाबंदी (४) शिक्षा का सुधार एवं प्रसार (५) सड़कों का निर्माण आदि मुख्य हैं। दूसरे आम चुनाव में संसद के लिये चुने गये। जब पहिली मीटिंग के लिये दिल्ली गये तो वहां १७ मई १९५७ को उनका देहान्त हो गया।

अन्य उल्लेखनीय पुरुष

पन्त आस्पदों में कुछ परिवार, उप्राड़ा, जजुट, मलौज वालों में अधिकतर व्यक्तियों ने आयुर्वेद में ख्याति प्राप्त की। बड़े-बड़े निपुण वैद्य रहे। उप्राड़ा के पं. हरिदत्त पन्त वैद्य (यह शाखा ५/६ पीढ़ियों से अल्मोड़ा जीवनपुर मोहल्ले में रहती है) उस समय के धन्वन्तरि हुये हैं अपनी विद्या से इन्होंने यू. पी. के बड़े-बड़े रियासतों से धन अर्जित किया, जिसका उपयोग दीन, दुखियों, अनाथ, विधवाओं, गरीब विद्यार्थियों की मदद में किया। आज का महिला विद्यालय अमीनाबाद, उन्हीं के प्रयासों से फला-फूला है। वे तत्कालीन लखनऊ म्यूनिसिपैलिटी की शिक्षा संस्थाओं के चेयरमैन रहे।

जजुट ग्राम के मोहल्ला त्यूनरा अल्मोड़ा निवासी पं. बुद्धिबल्लभ पन्त सन् १८३१ के लगभग कुमाऊं व बरेली मंडल के विद्यालय निरीक्षक रहे। ये प्रथम भारतीय थे जो इस पद पर नियुक्त हुये। कुमाऊं में शिक्षा के प्रचार व प्रसार में इनका महान योगदान रहा। आयुर्वेद के क्षेत्र में पं. दुर्गादत्त पन्त जी का नाम भी विशेष उल्लेखनीय है। इनके पूर्वज जजुट ग्राम के मूल निवासी थे। और मुरादाबाद कांठ में आकर रहने लगे। अब इनकी सन्तान लखनऊ में रहती है। इन्होंने सुश्रुत पर टीका लिखी इसके अलावा पदार्थ विज्ञान और दोषदर्पण नामक ग्रन्थ भी लिखा है। 'जजुटाख्ये ग्रामे जातेन द्वाविंशति कुल परम्परागत वैदयक व्यवहारस्य कूर्मांचलीय वैदयराज हरिकृष्ण पन्त स्थात्मजेन विद्यार्णव श्री घनानंद पन्तेन तदर्पितम। इससे प्रतीत होता है कि वैद्यक, पन्तों का कुल परम्परागत कार्य था।'

शास्त्रीय ज्ञान और आयुर्वेद विज्ञान के समकलयिता वर्षायत ग्राम निवासी पं. तारादत्त पन्त षटशास्त्री जी के वैदुष्य की चर्चा अब भी होती रहती है। ये महामहोपाध्याय पं. नित्यानंद पन्त जी के प्रमुख शिष्य थे। साहित्य, व्याकरण, दर्शनशास्त्र, पुरांण एवं आयुर्वेद के अच्छे विद्वान थे। इन्होंने, सूर्यमहाकाव्य, गोलसूत्र, मन्दार मज्जरी की 'कुसुम' नामक टीका, चरकसंहिता पर सूत्ररूप एवं सूर्यचरित्र ग्रन्थ लिखे। मानस खंड की दुर्लभ प्रतियों का संग्रह कर उसका उद्धार कर स्वयं पान्डुलिपि बनाई, और प्रकाशनार्थ उत्तर प्रदेश शासन को भेजी किन्तु इसका कुछ पता नहीं चला कि कहां है और किस स्थिति में है। ये काशी में रणधीर संस्कृत पाठशाला में मुख्याध्यापक रहे। ९६ वर्ष की लम्बी आयु भोगकर सन् १९७० में अपने ही गांव में इनका निधन हो गया।

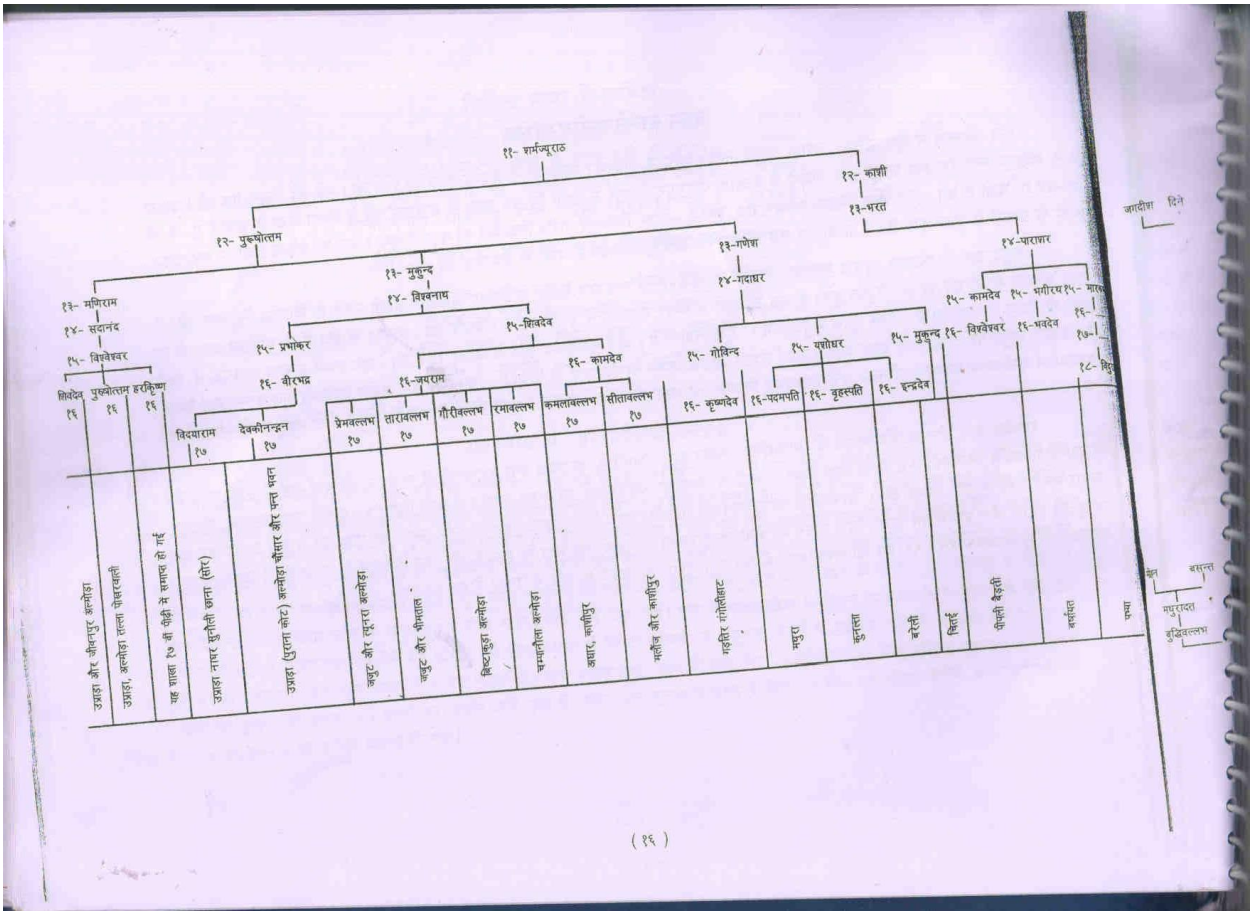

११- शर्मज्यूराठ
१२- पुरूषोत्तम
१२- काशी
१३- भरत
१३- मणिराम
१४- सदानंद
१५- विश्वेश्वर
शिवदेव १६
पुरूषोत्तम १६
हरकृष्ण १६
१३- मुकुन्द
१४- विश्वनाथ
१५- प्रभाकर
१६- वीरभद्र
विदयाराम १७
देवकीनन्दन १७
१५-शिवदेव
१६-जयराम
प्रेमवल्लभ १७
तारावल्लभ १७
गौरीवल्लभ १७
रमावल्लभ १७
१६- कामदेव
कमलावल्लभ १७
सीतावल्लभ १७
१३-गणेश
१४-गदाधर
१५- गोविन्द
१६- कृष्णदेव
१५- यशोधर
१६-पदमपति
१६- वृहस्पति
१६- इन्द्रदेव
१५- मुकुन्द
१४-पाराशर
१५- कामदेव
१६- विश्वेश्वर
१५- भगीरथ
१६-भवदेव
उप्राड़ा और जीवनपुर अल्मोड़ा
उप्राड़ा, अल्मोड़ा तल्ला पोखरखाली
यह शाखा १७ वीं पीढ़ी में समाप्त हो गई
उप्राड़ा नाघर सुनौली छाना (सोर)
उप्राड़ा (पुराना कोट) अल्मोड़ा चौसार और पन्त भवन
जजुट और त्यूनरा अल्मोड़ा
जजुट और भीमताल
बिष्टाकुड़ा अल्मोड़ा
चम्पानौला अल्मोड़ा
अधार, काशीपुर
मलौंज और काशीपुर
गड़तिर गंगोलीहाट
मथुरा
कुनल्ला
बरेली
चितई
पीपली बैड़ती
वर्षायत
पम्पा

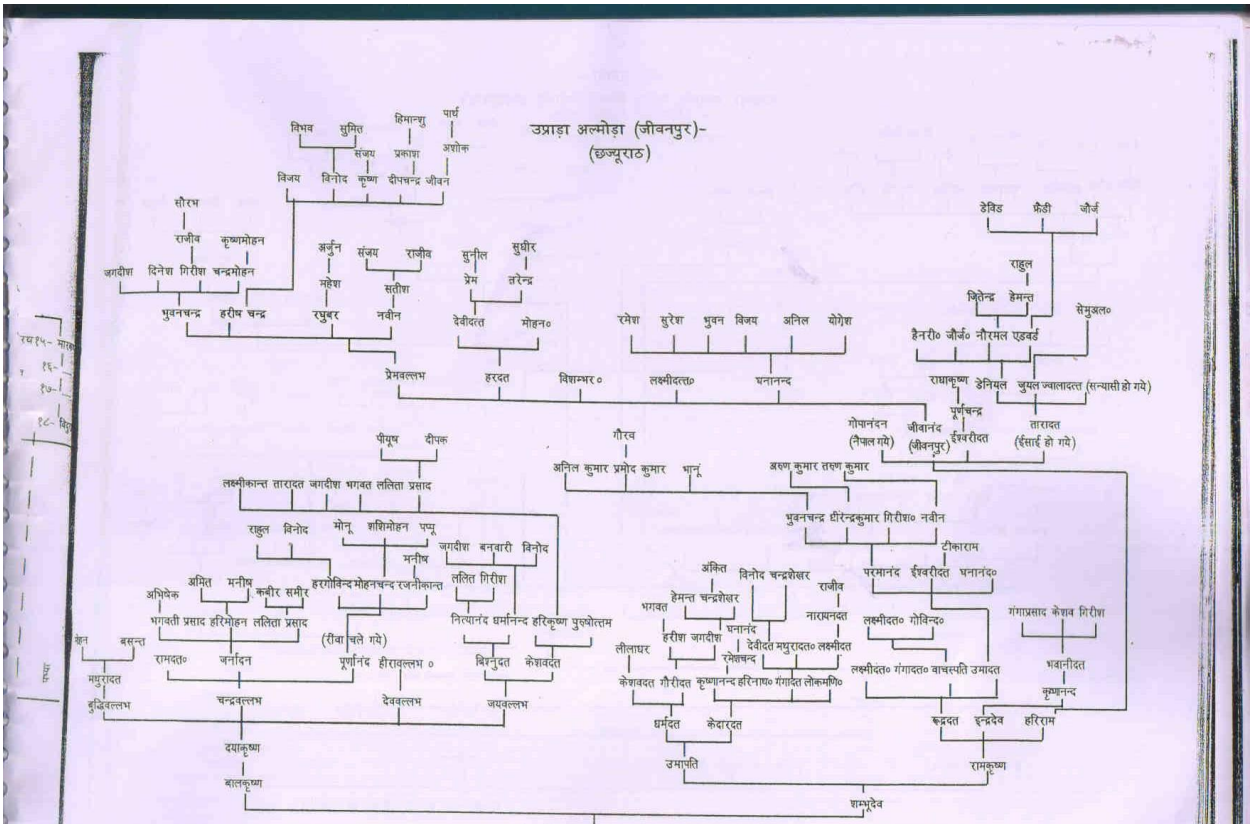

शिवदेव १६ वीं पीढ़ी से आगे

✓

ग्राम उप्राड़ा -

(उप्राड़ा, हल्द्वानी, नहांन, दिल्ली, गड़ौली, इलाहाबाद)

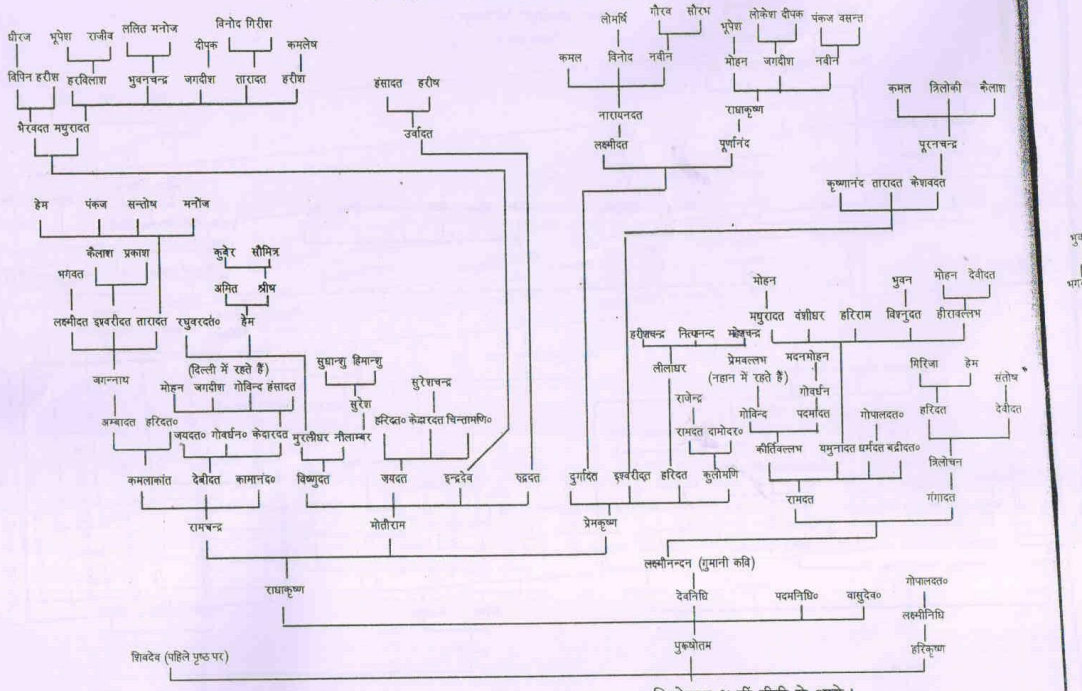

विश्वेश्वर १५वीं पीढ़ी से आगे।

ग्राम उप्राड़ा (सुनौली) -
तालिका I गंगादत्त की शाखा

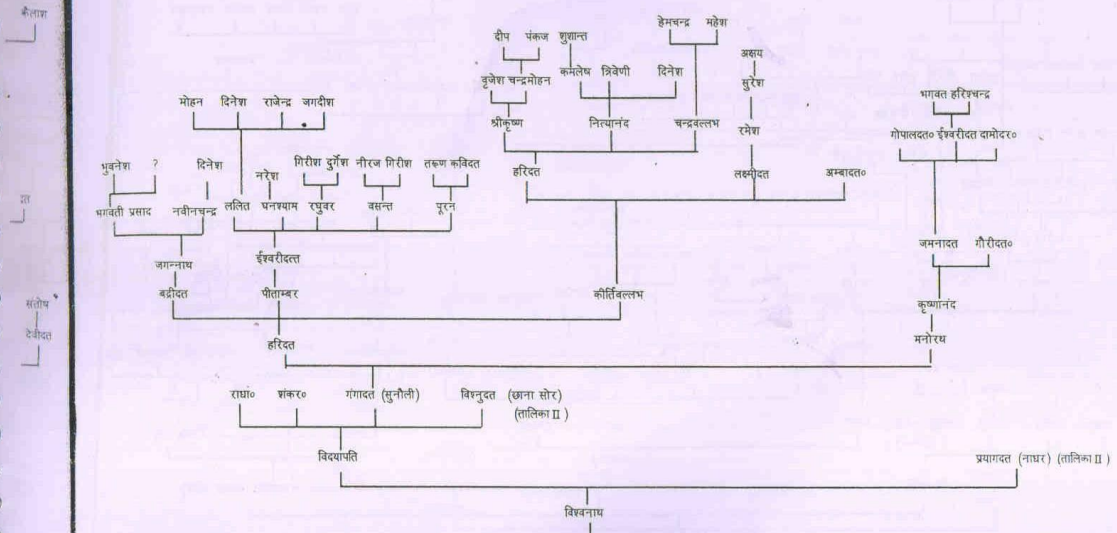

विद्याराम-१७ वीं पीढ़ी से आगे।

ग्राम - छांना सोर और उप्राड़ा (नांघर)
विश्नुदत और प्रयागदत की शाखा (तालिका II)

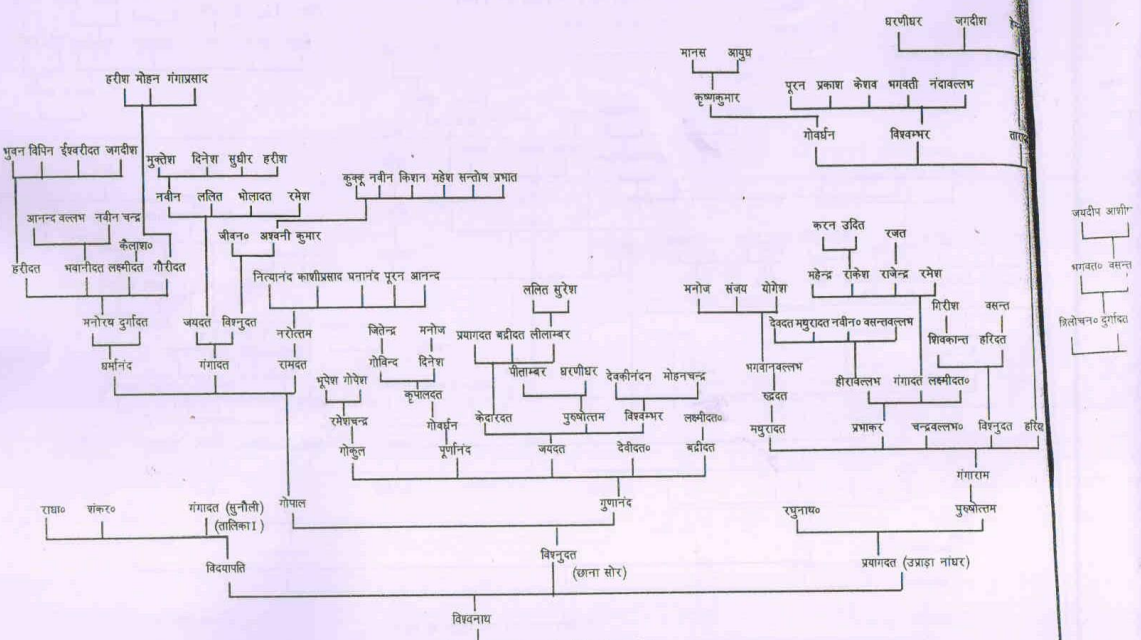

विदयाराम-१७ वीं पीढ़ी से आगे।

ग्राम - उप्राड़ा-

(पुरानकोट) उप्राड़ा, चौंसार, पन्त भवन अल्मोड़ा

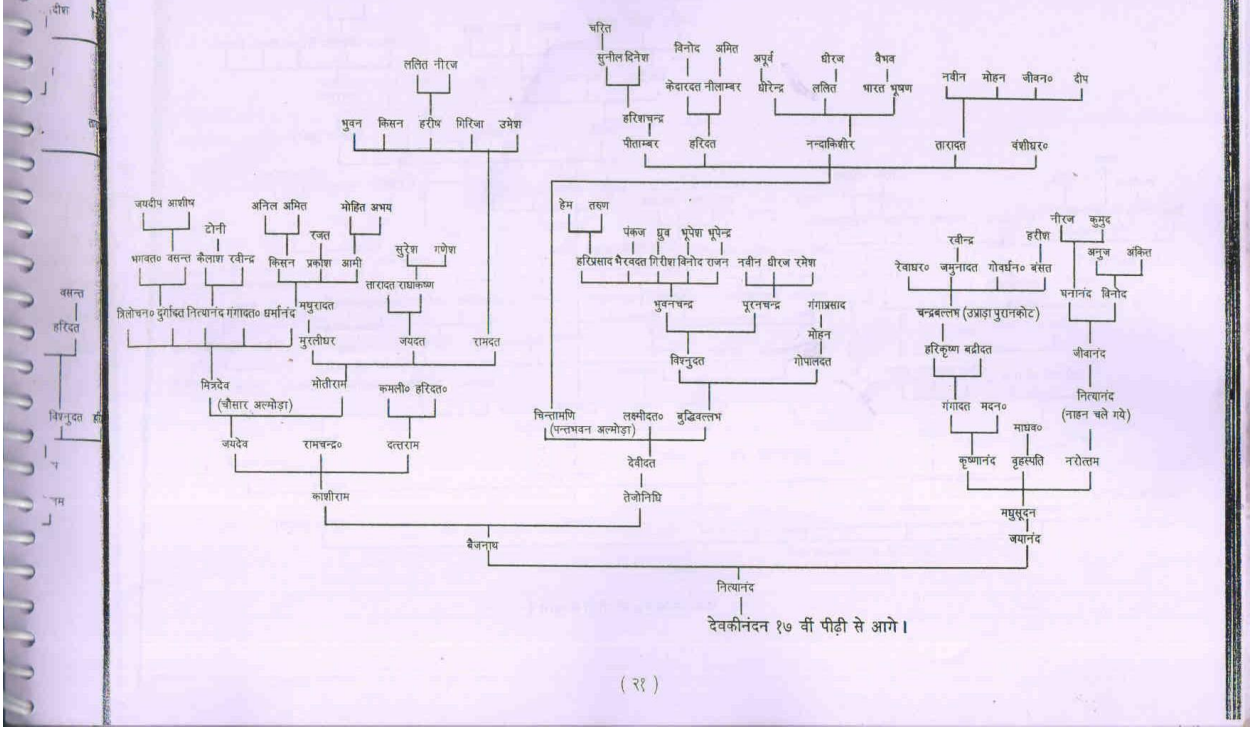

देवकीनंदन १७ वीं पीढ़ी से आगे।

ग्राम - जजुट और त्यूनरा-

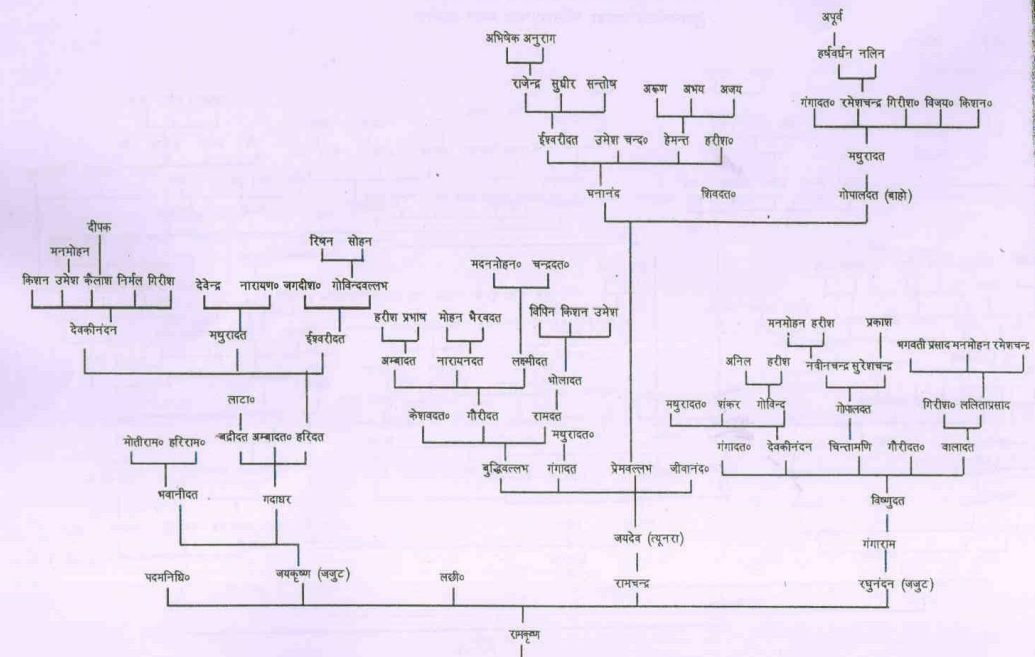

प्रेमवल्लभ १७ वीं पीढ़ी से आगे।

ग्राम–जजुट –

तालिका I (शिवराम की शाखा)

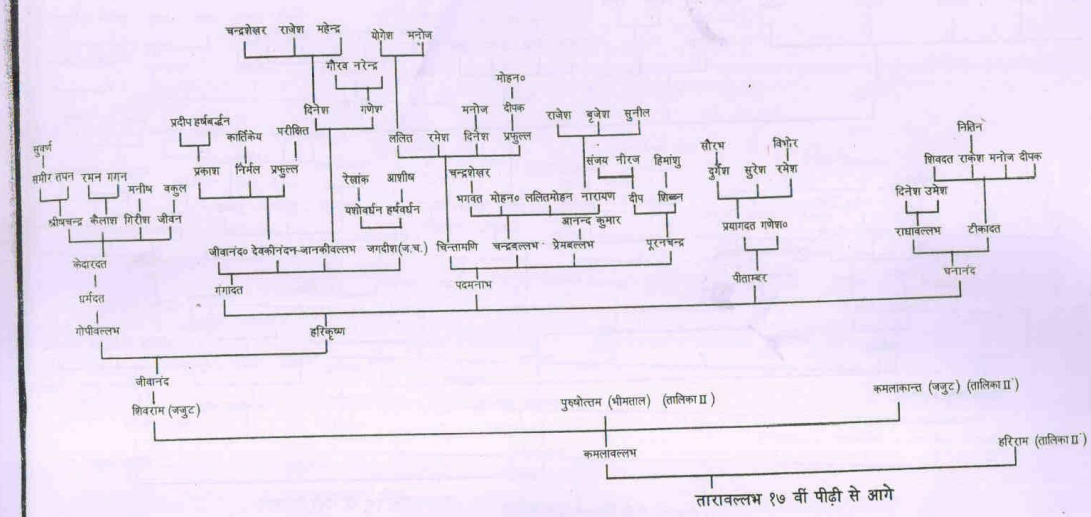

तारावल्लभ १७ वीं पीढ़ी से आगे

ग्राम - भीमताल -

तालिका II पुरुषोत्तम (भीमताल) और हरिराम (लखनऊ) की शाखा

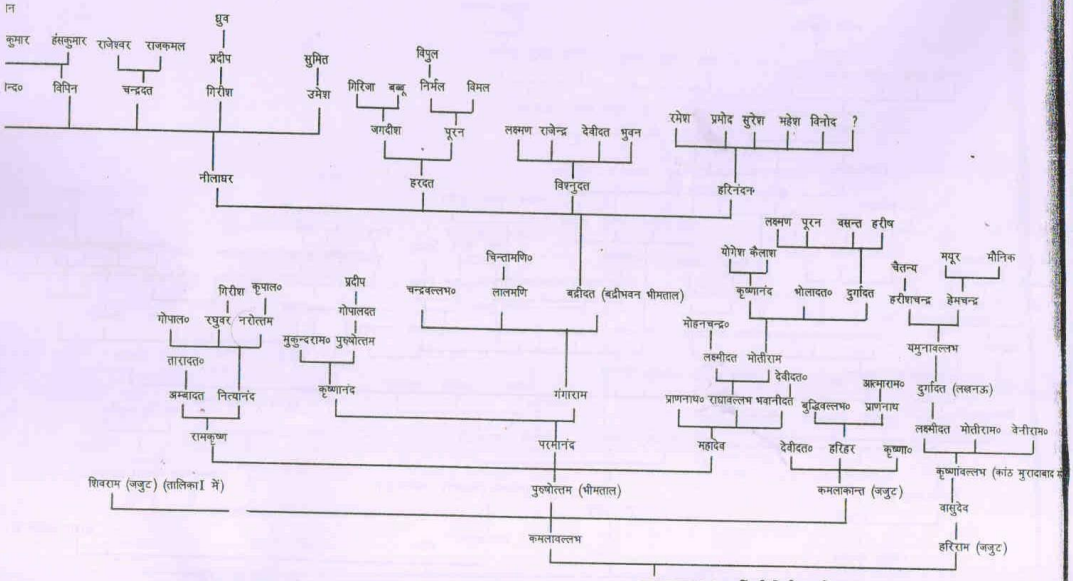

तारावल्लभ १७ वीं पीढ़ी से आगे

बिष्टाकुड़ा (अल्मोड़ा)-

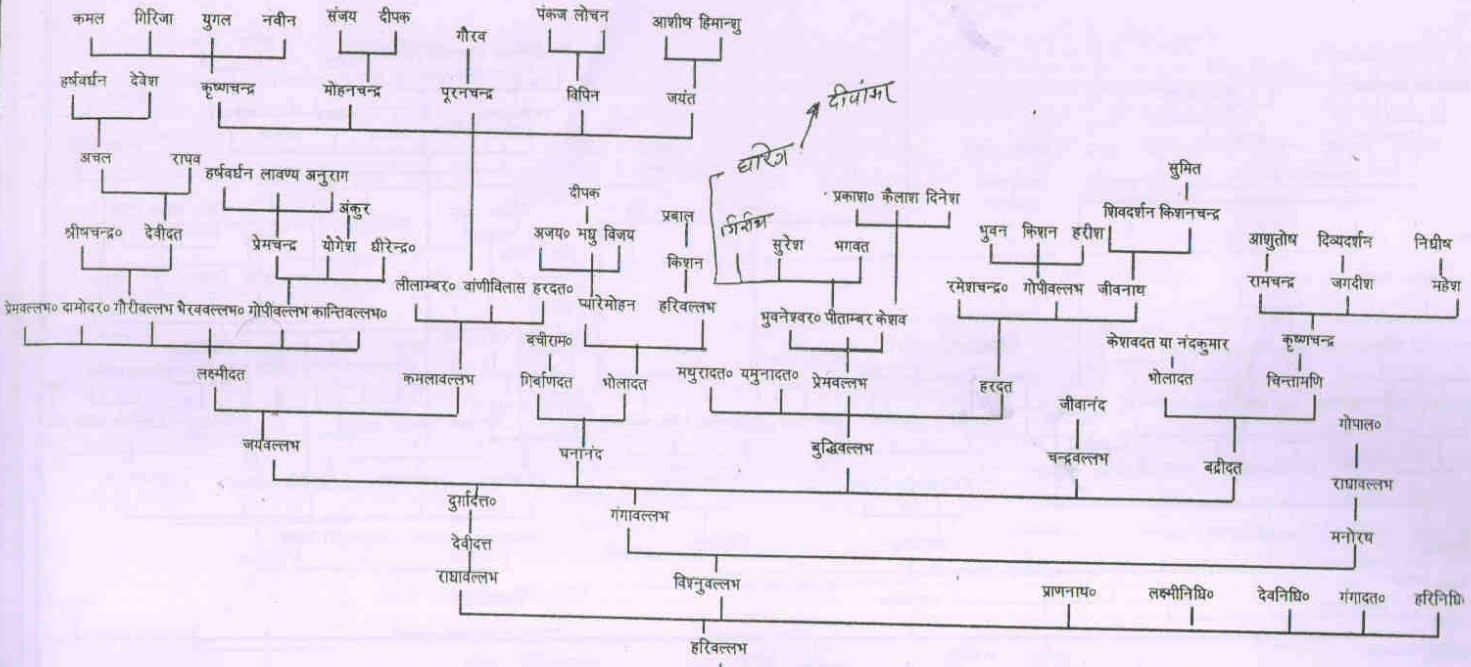

गौरीबल्लभ १७ वीं पीढ़ी से आगे।

चम्पानौला-अल्मोड़ा-

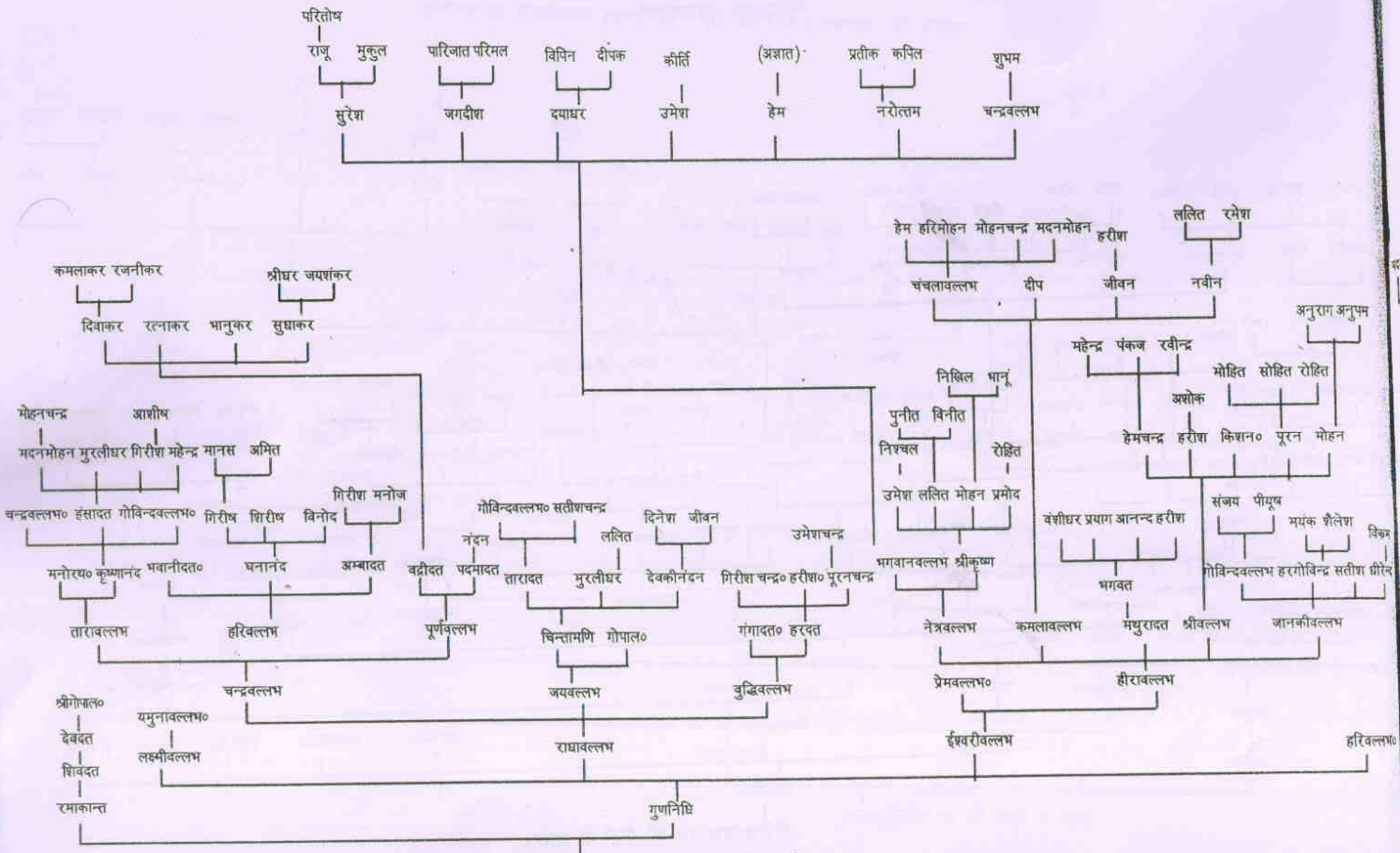

रमावल्लभ १७ वीं पीढ़ी से आगे

ग्राम-अघार-

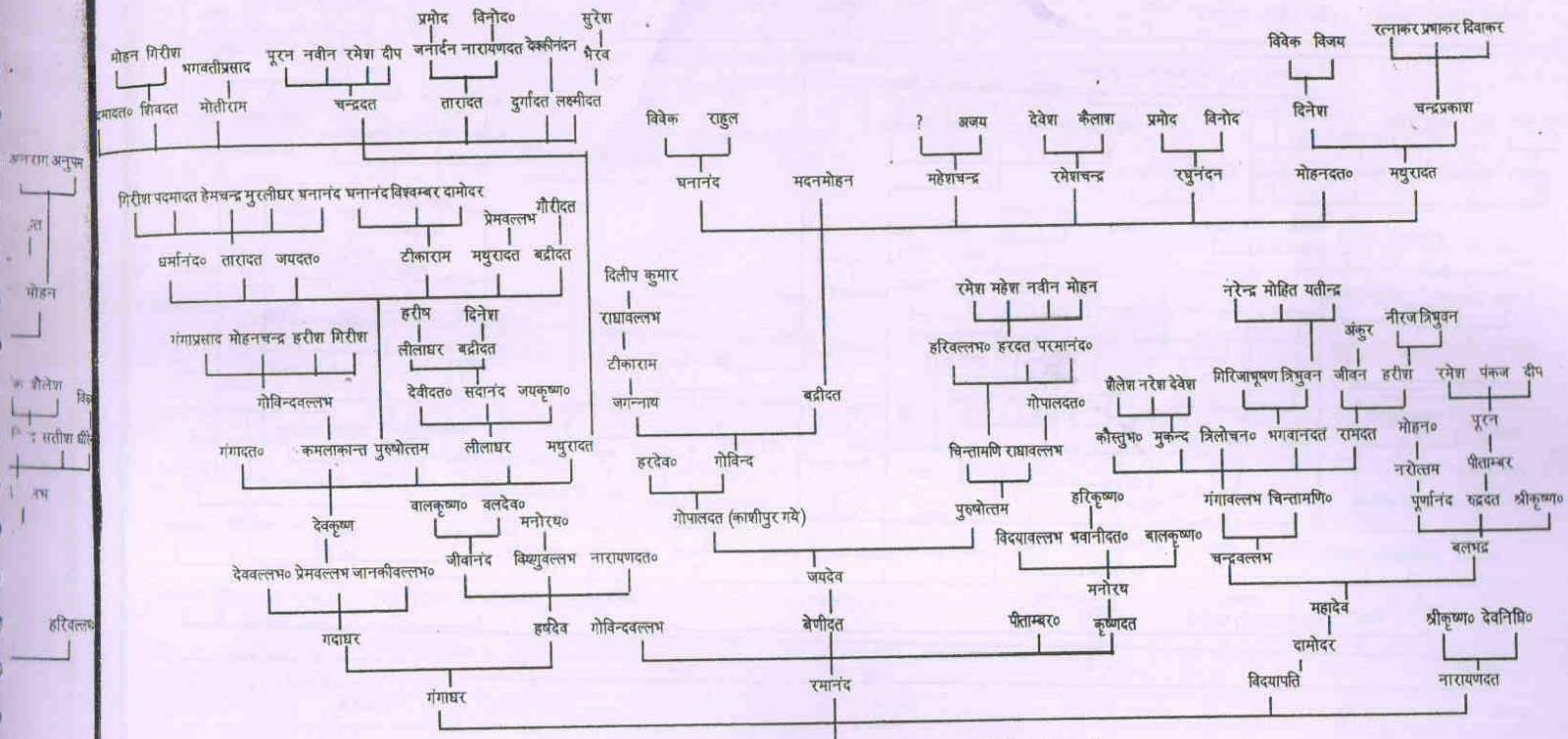

कमलावल्लभ १७ वीं पीढ़ी से आगे।

मलौंज एवं काशीपुर शाखा-

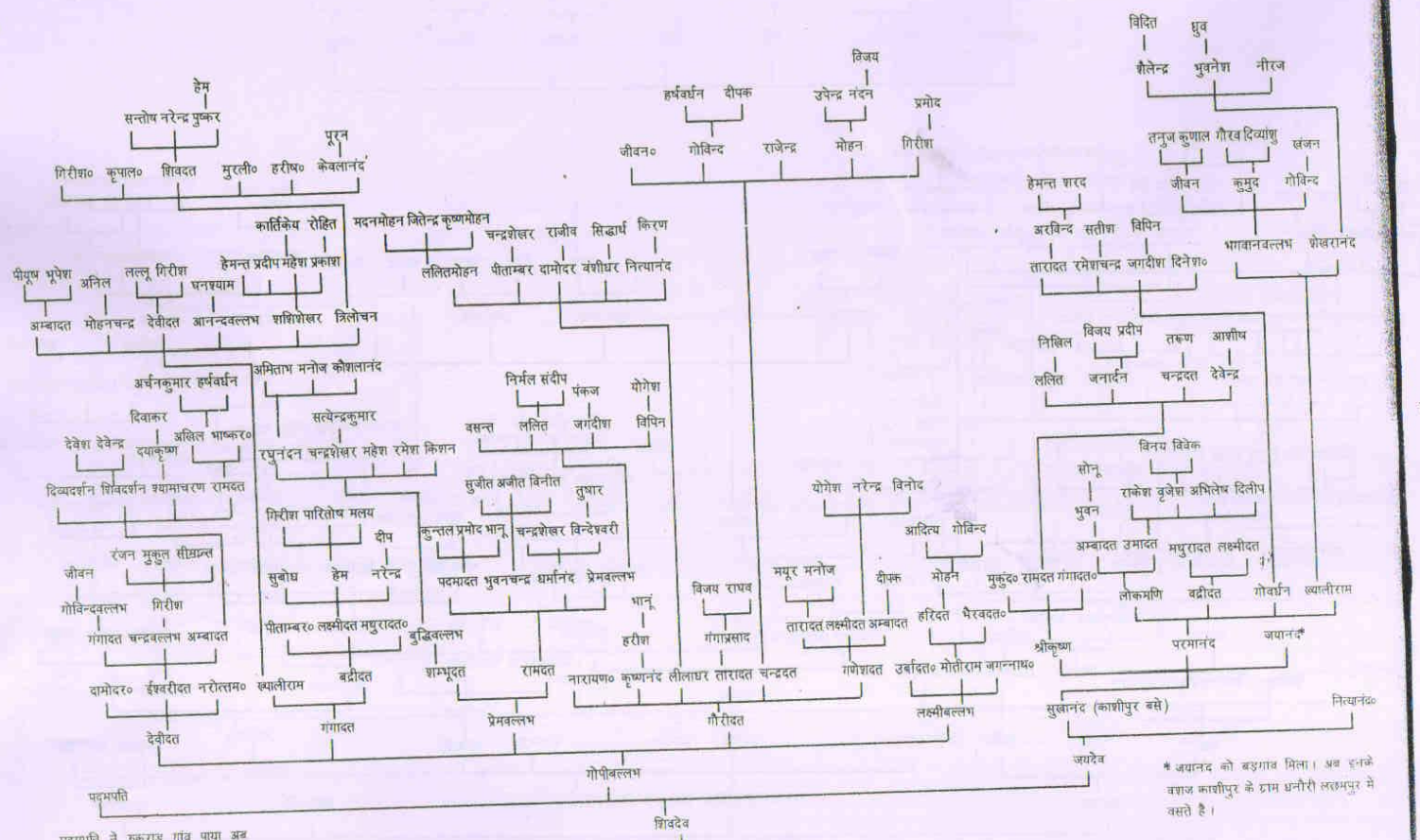

* जयानंद को बड़गाव मिला। अब इनके वंशज काशीपुर के ग्राम धनौरी लखमपुर में बसते है।

ग्राम - गढ़ीतर (नाधर) -

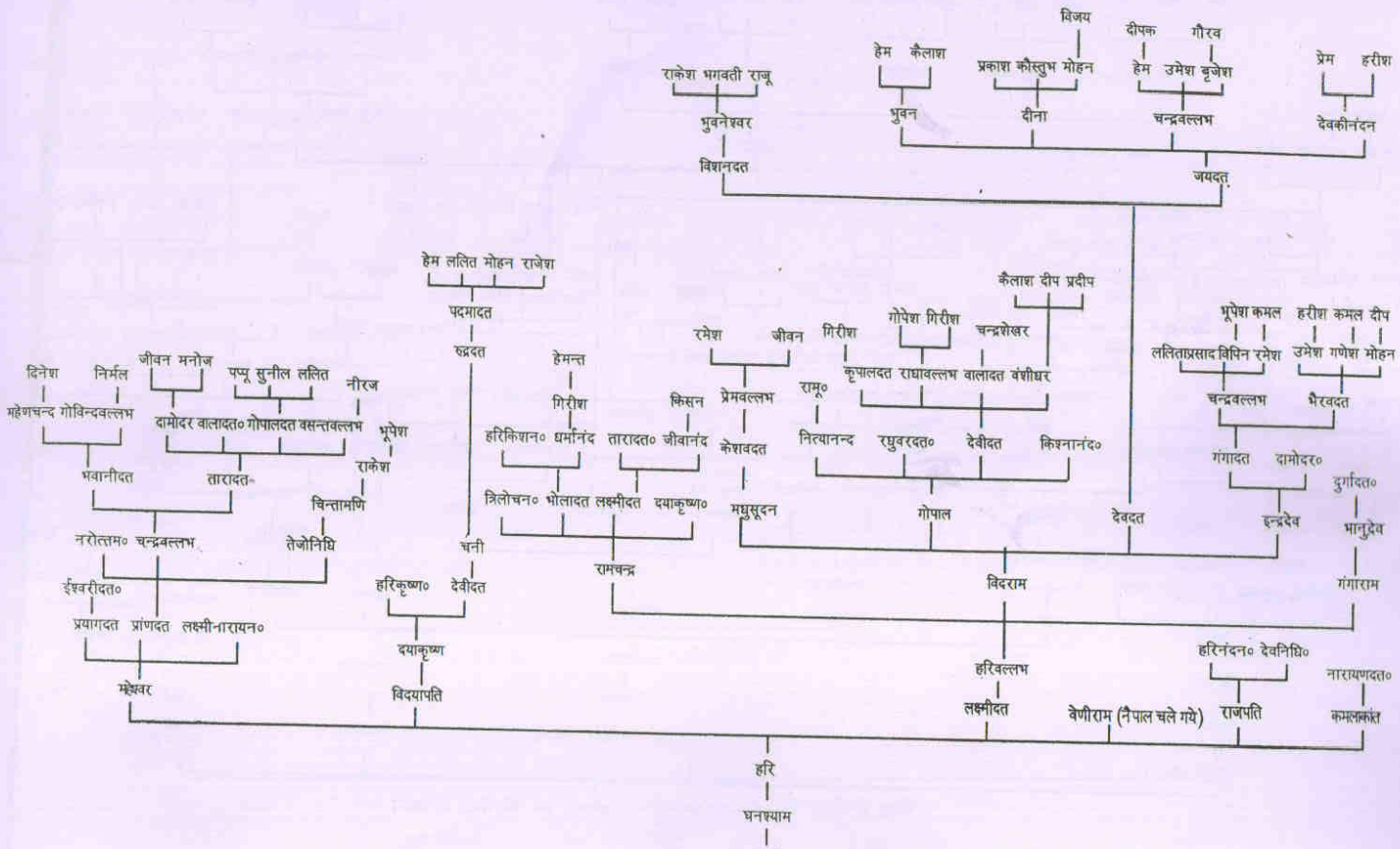

कृष्णदेव १६ वीं पीढ़ी से आगे

ग्राम कुनल्ता, बरेली और मथुरा-शर्म

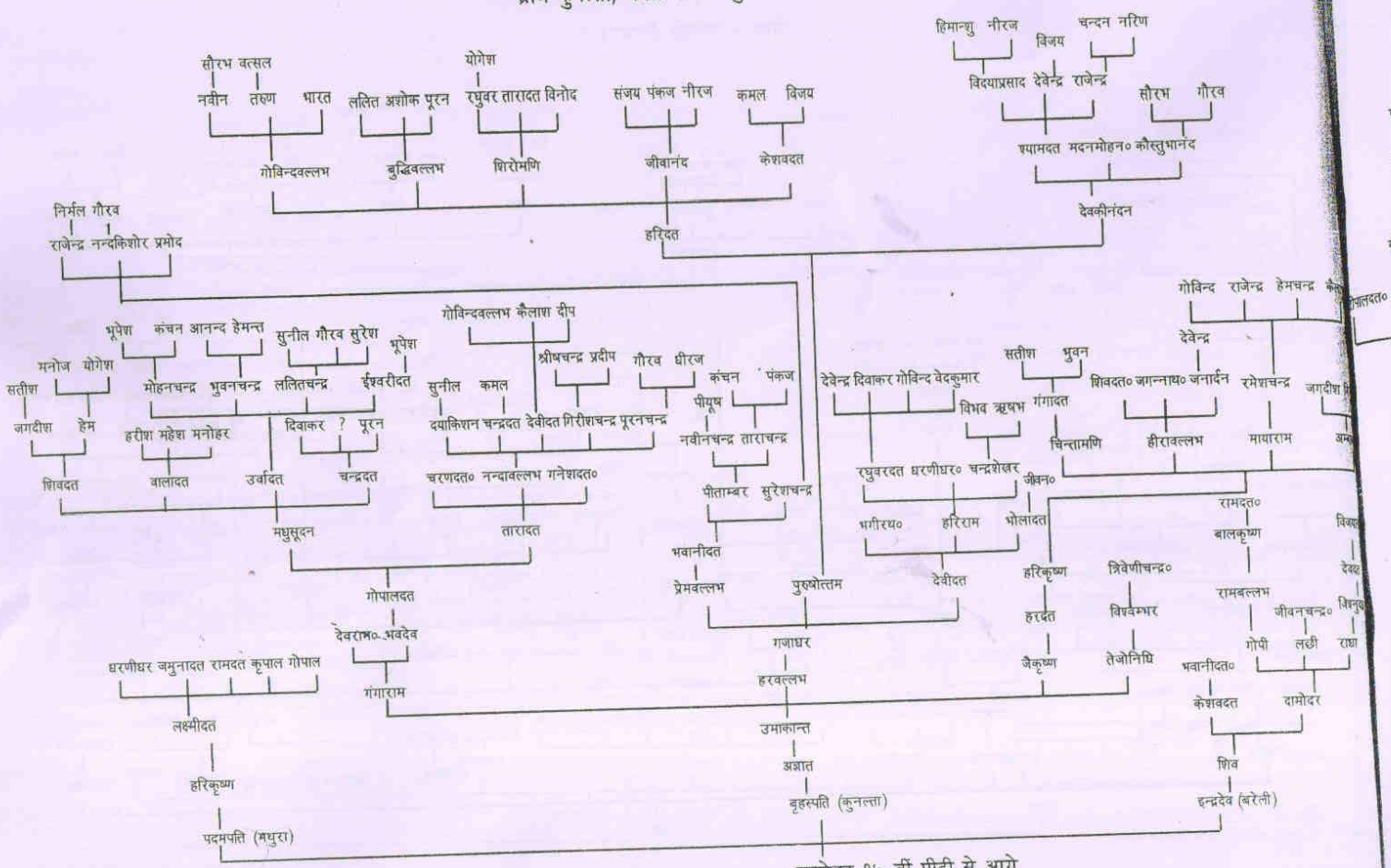

यशोधर १५ वीं पीढ़ी से आगे

ग्राम-चितई-

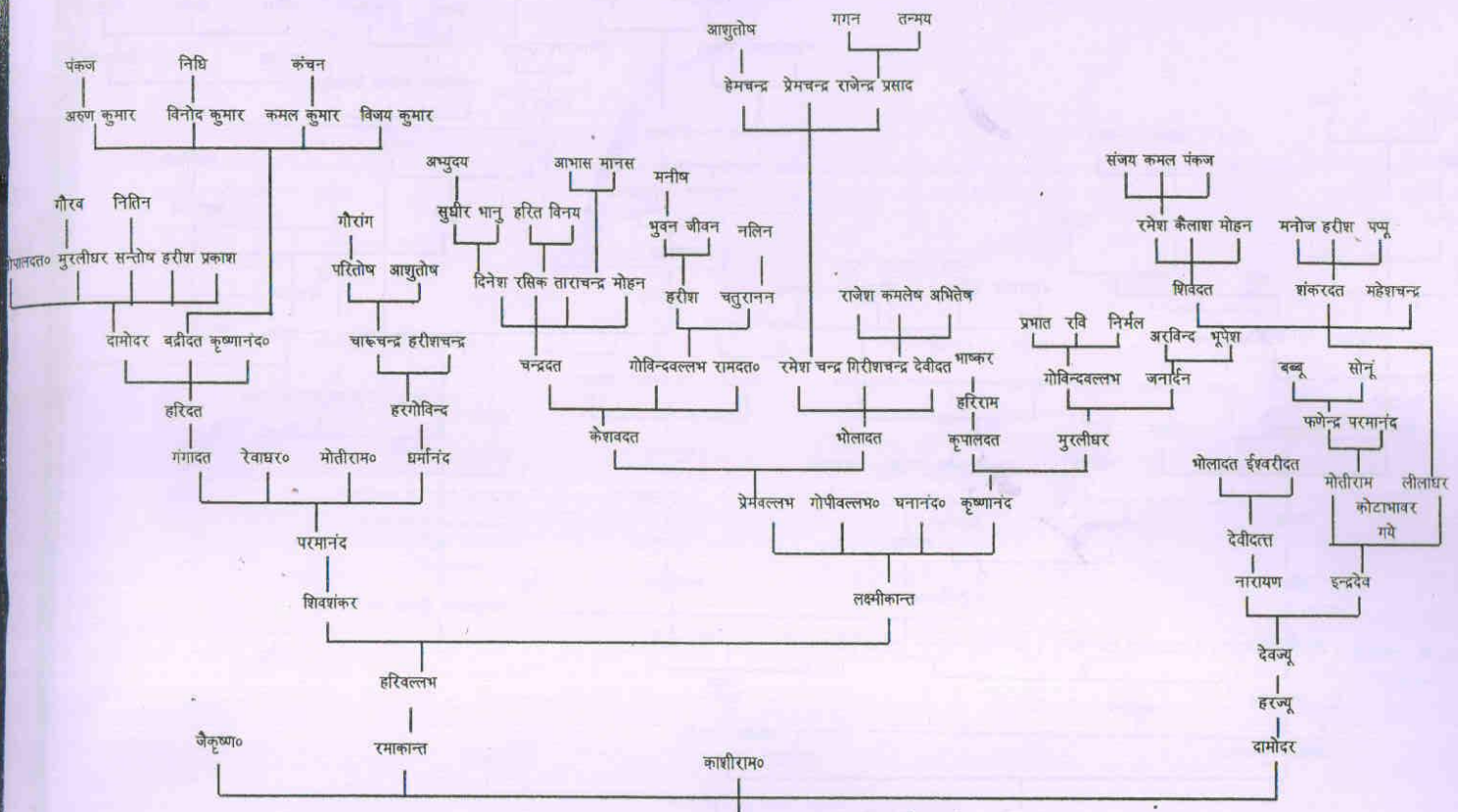

मुकुन्दराम-१५ वीं पीढ़ी से आगे।

ग्राम-पीपली, पुन्यगॉव और वैड़ती-

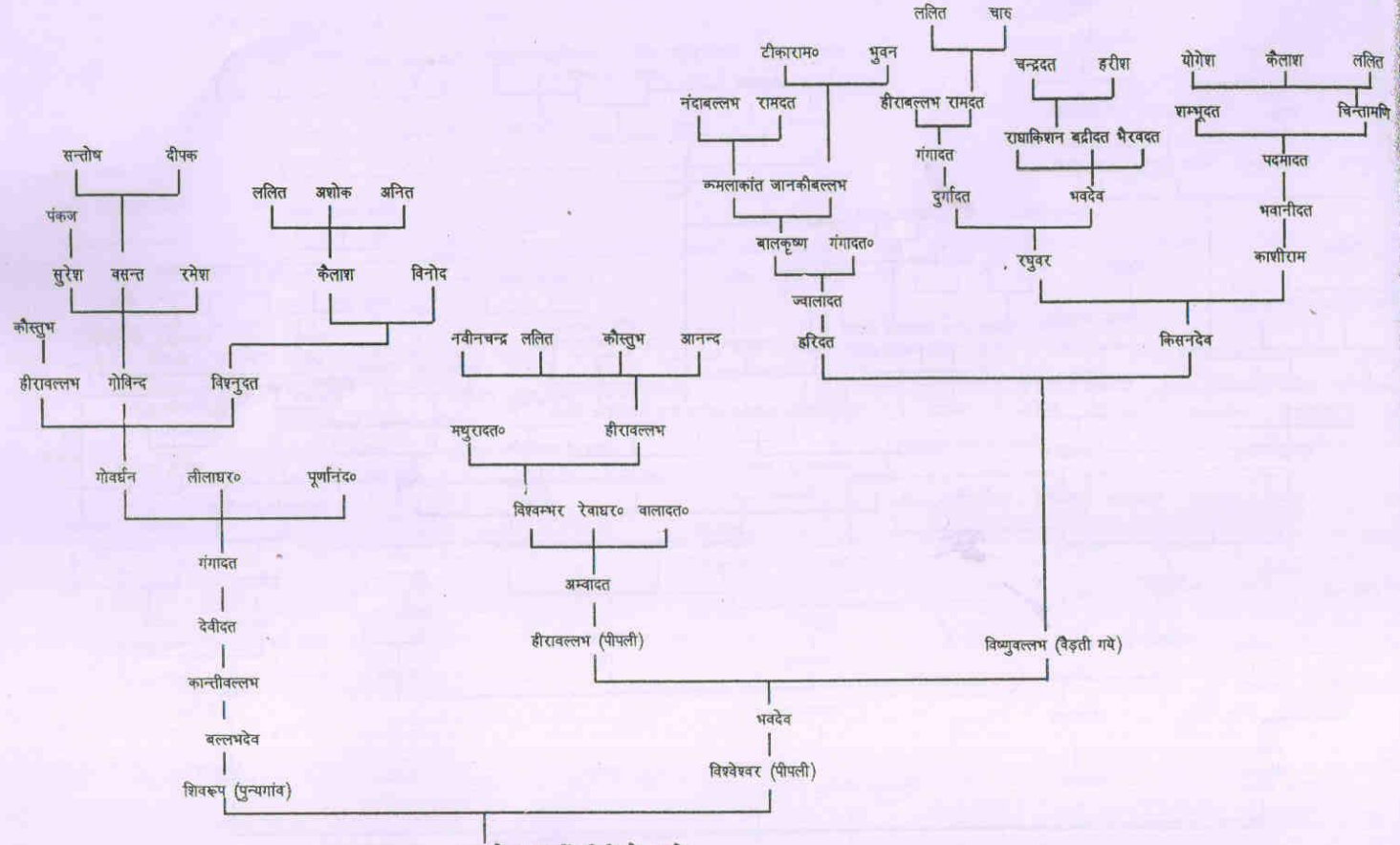

कामदेव १५वीं पीढी से आगे

ग्राम वर्षायत-

तालिका (I) हरिदत की शाखा

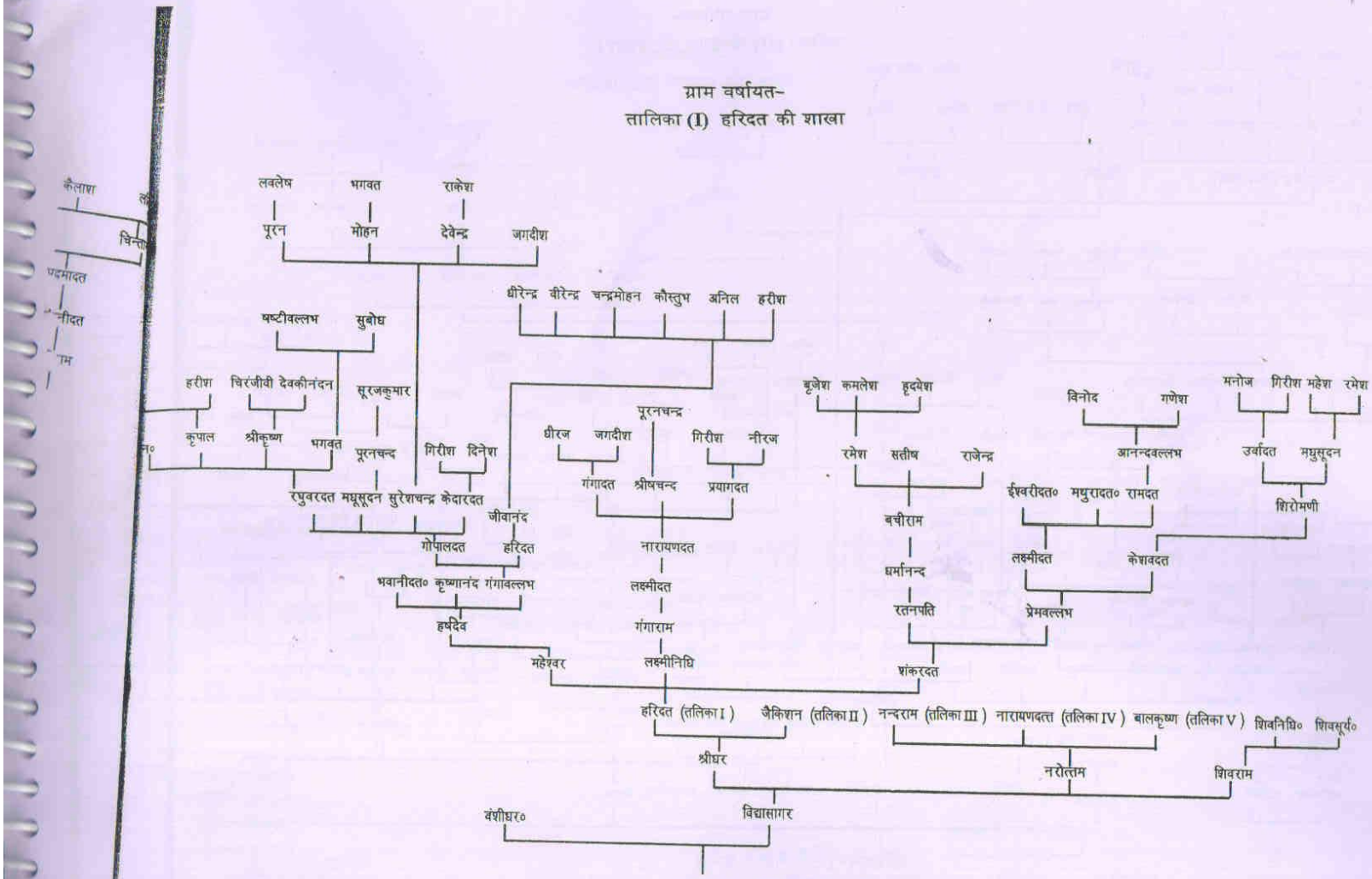

भवदेव-१६ वीं पीढ़ी से आगे।

ग्राम-वर्षायत-
तालिका (II) जैकिशन की शाखा।

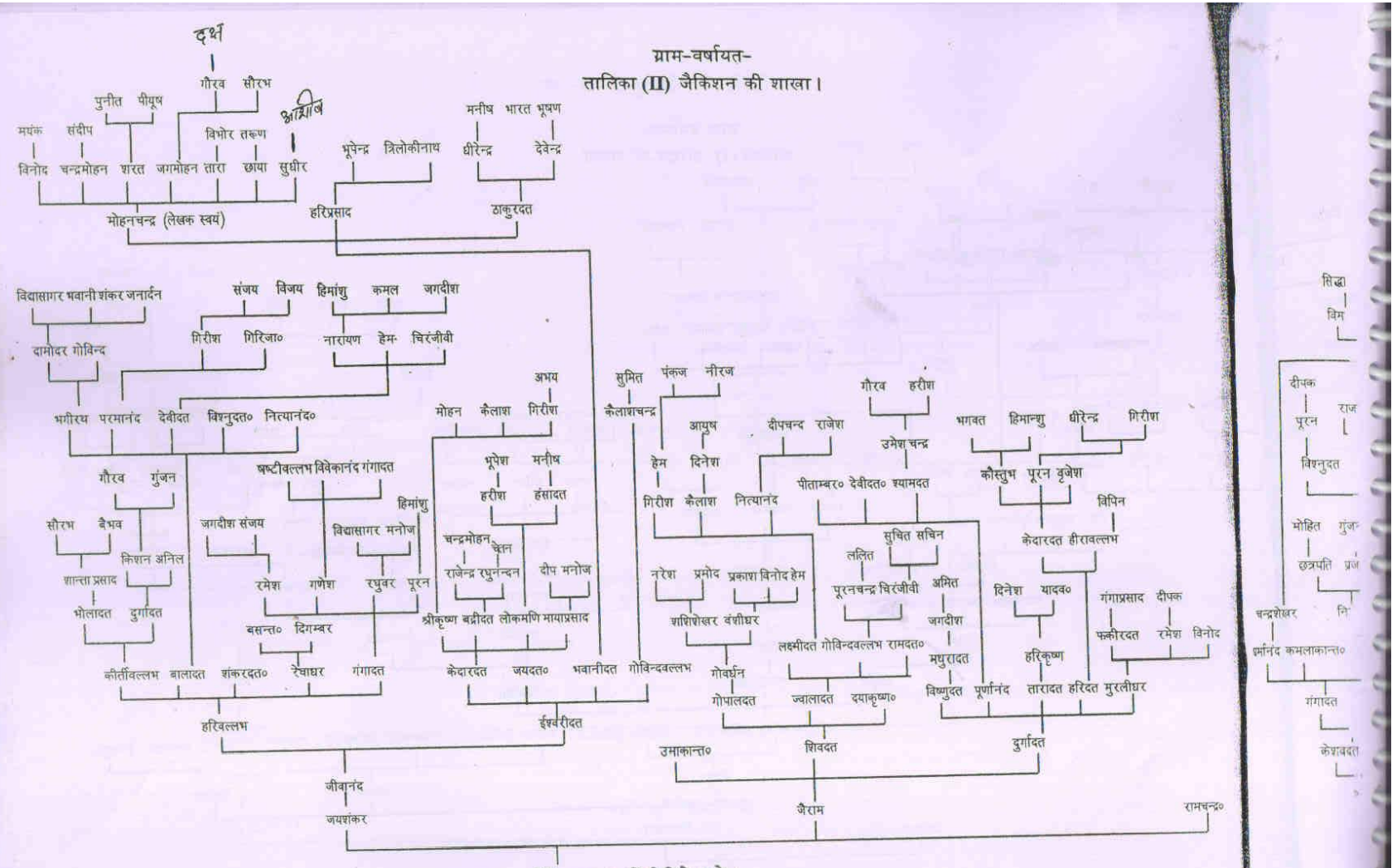

ग्राम-वर्षायत-

तालिका (III) नंदराम की शाखा

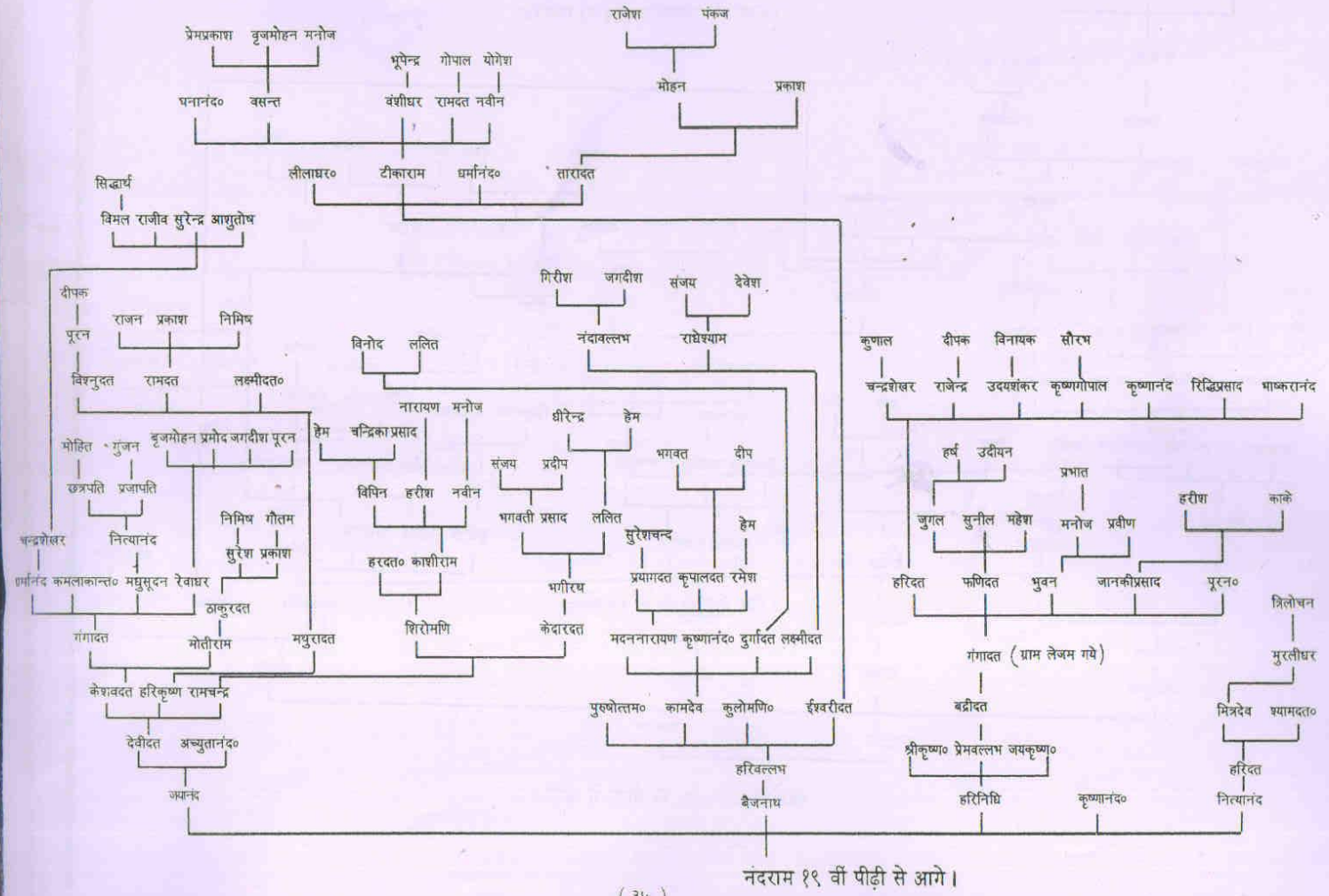

नंदराम १९ वीं पीढ़ी से आगे।

ग्राम वर्षायत

तालिका (IV) नारायण की शाखा

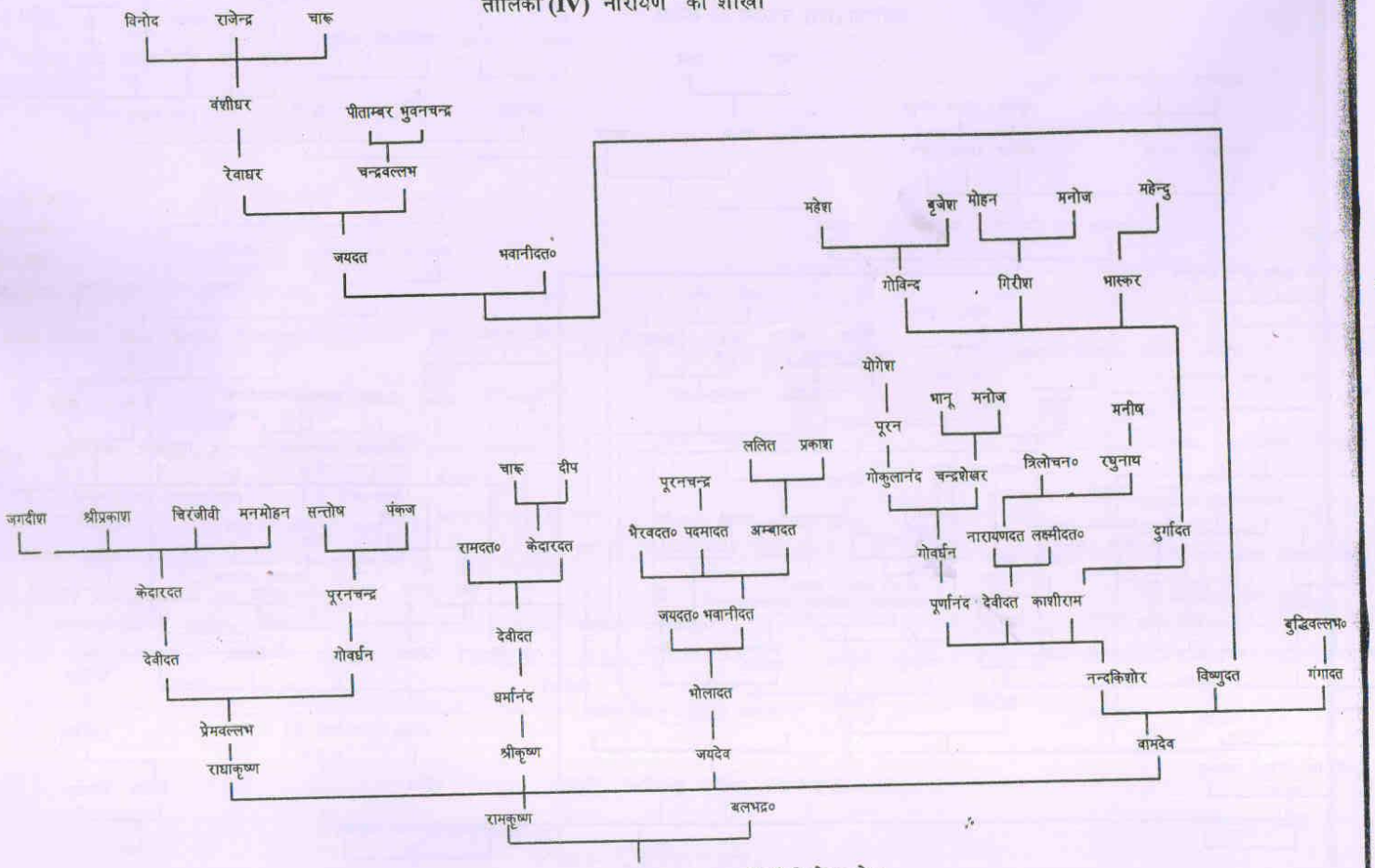

नारायणदत- १९ वीं पीढ़ी से आगे।

ग्राम-वर्षायत-

तालिका (V) बालकिशन की शाखा

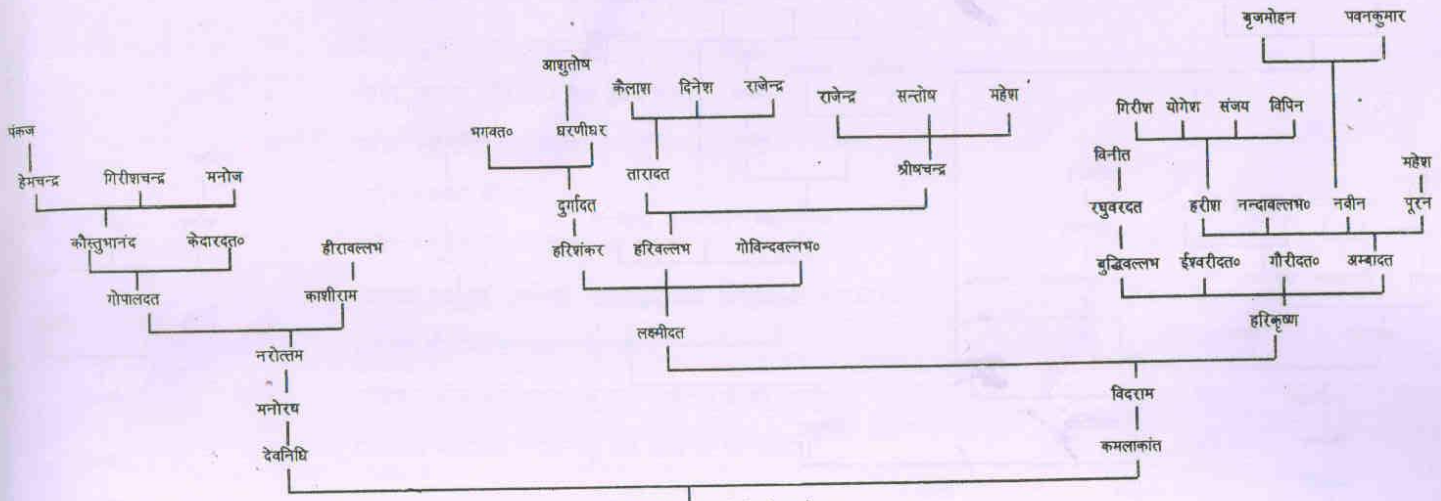

ग्राम पभ्या-

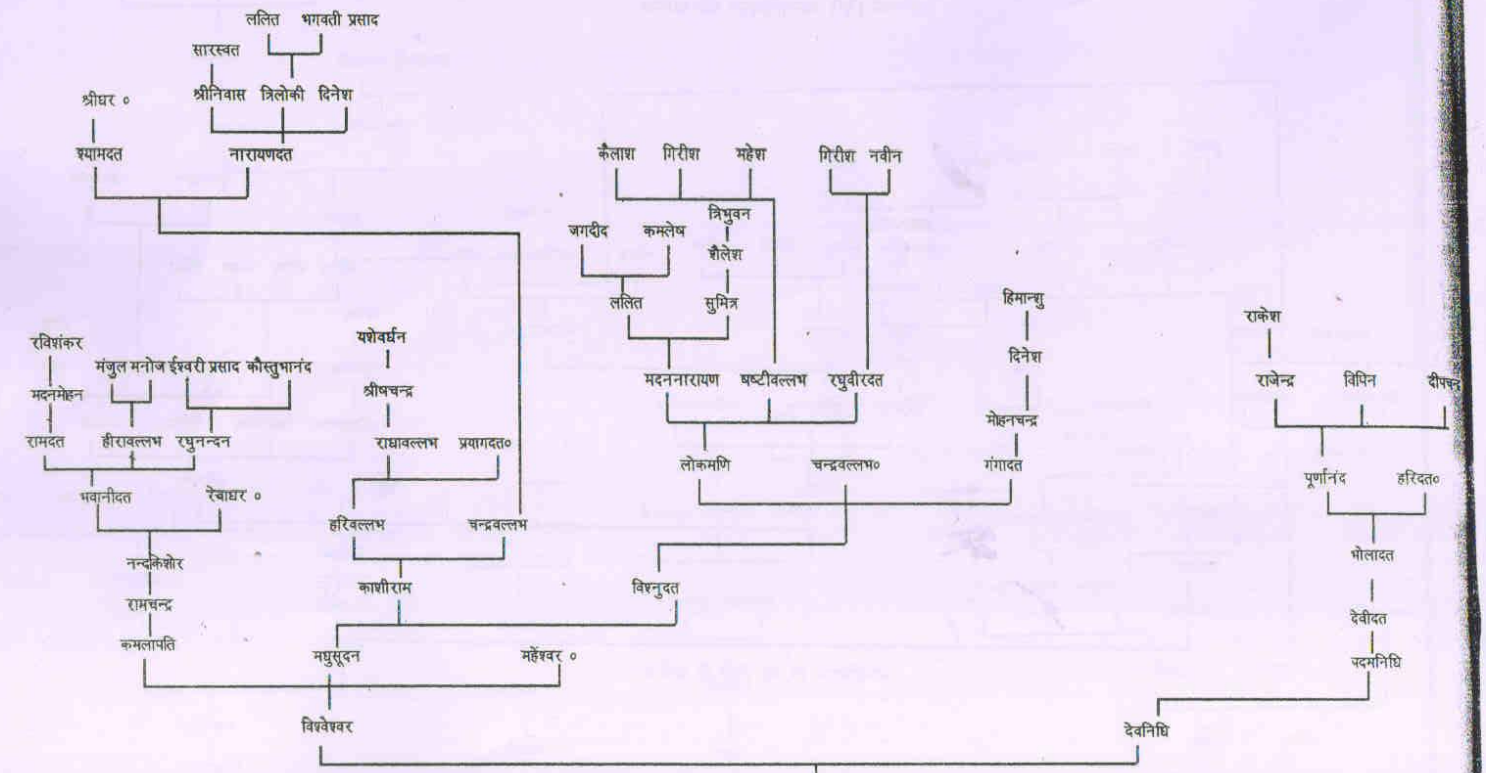

विदुराम-१८ वीं पीढ़ी से आगे।

भाग–२ (श्रीनांथ और माधव)

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
१-	श्रीनाथ और माधव पन्तों का विकास तथा विभिन्न गांवों में बसना।	४० से ४१ तक
२-	विभिन्न ग्रामों की सूची।	४२
३-	तिलाड़ी, धनौरा स्टेट रामपुर और पाण्डेखोला।	४३
४-	तिलाड़ी तुलाराम की शाखा एवं परीक्षितगढ़ शाखा	४४
५-	अग्रौन, बलभद्र और ब्रह्मानंद की शाखा।	४५
६-	अग्रौन, लक्ष्मीपति की शाखा।	४६
७-	अग्रौन चक्रधर की शाखा।	४७
८-	अग्रौन महादेव और शिरोमणि की शाखा।	४८
९-	रतमाटा एवं खर्क (खरिक) माधव ज्यू राठ (तालिका I और II)।	४९ से ५०
१०-	हल्पाटी और बड़ेऊ माधव ज्यू राठ।	५१
११-	पाण्डेगांव कोटाबाग माधव ज्यू राठ जगन्निवास की शाखा।	५२
१२-	पाण्डेगांव कोटाबाग माधव ज्यू राठ क्षेमानंद की शाखा।	५३

भाग-२ (श्रीनाथ पंत)

श्रीनाथ पन्त ने अग्रौन ग्राम नागिल ब्राह्मणों से बलपूर्वक ले लिया और वहीं निवास करने लगे। उप्राड़ा में अपना हिस्सा शर्म पन्तों को दे दिया सन् १५०० के लगभग जब तत्कालीन राजाओं ने पन्तों को मान्यता दी तो उन्हें अपना गुरू बनाया तब से ये लोग राजगुरू रहे। इनके सहोदर माधव को राजा की ओर से कोई प्रतिष्ठित पद नहीं मिला। इनकी सन्तान कोटबाग, रतमाटा, खरीक एवं हल्पाटी में रहते हैं। श्रीनाथ के तीन पुत्र हुये (१) शितिकण्ठ (२) श्रीकण्ठ और (३) हर्षदेव। शितिकण्ठ तिलाड़ी चले गये, श्रीकण्ठ अग्रौन ही रहे। पं. तोताराम उर्फ तारादत पन्त पाण्डेगाँव कोटाबाग विजौनिया हल्दू जिला नैनीताल के अनुसार तेरहवीं पुश्त में श्री बिद्यविलास, तत्कालीन कुर्माञ्चलीय राजा देवीचन्द के साथ देवीपुरा कोटाबाग आये राजा ने उन्हें पाण्डेगाँव दान में दिया तथा देबीपुरा में कोटकालिका का पुरोहित नियुक्त किया, तबसे उनकी सन्तान कोटाबाग में रहती हैं।

कहते हैं कि आदि शंकराचार्य जब बद्रीनाथ यात्रा के बाद कैलाश यात्रा को आये तो गंगावली (गंगोली) में हाटकाली मंदिर में बीमार हो गये। पेट खराब हो जाने से शक्तिहीन हो गये तथा चलने फिरने में भी असमर्थ हो गये। तभी रात्रि में उन्हें स्वप्न में शक्ति ने दर्शन दिया और कहा कि तुम केवल परब्रह्म परमेश्वर को ही भजते हो, उसकी आदि शक्ति का ध्यान नहीं करते। जब तक तुम उस परमेश्वरी का ध्यान नहीं करोगे, तब तक जिस प्रकाश शिव में 'इ' कार को निकालने के बाद केवल शव शेष रह जाता है, उसी प्रकार तुम भी शव हो जाओगे। अत: श्री शंकराचार्य ने नारमदेश्वर पत्थर में शक्ति महायंत्र निर्मित कर उसे कवच, कीलक मंत्रों से अभिमंत्रित कर हाट-काली मंदिर में प्रतिष्ठित किया और आनन्द से उत्तराखण्ड यात्रा पूरी की। गंगोलीहाट से लगभग एक मील दूर यह प्रसिद्ध मंदिर 'हाट-कालिका' नाम से स्थापित है। अग्रौन के पन्तों की एक शाखा इसकी पूजा अर्चना का कार्य सम्भालते हैं।

तिलाड़ी ग्राम राजा से दान में मिला। शितिकण्ठ वहां जाकर बस गये। वहां से एक परिवार पाण्डेखोला अल्मोड़ा चला गया और एक अन्य परिवार ठाकुरद्वारा चला गया। इन लोगों के पूर्वजों में पं मणिराम जी एक विद्वान और धार्मिक प्रवृत्ति के पुरुष थे। इनकी ससुराल मिसर लोगों में थी। इनके ससुर, जागेश्वर में महामृत्युंजय की साधना और तप करते थे। एक समय इनके दामाद पं. मणिराम पन्त अल्पावस्था में बीमार हुये और उनकी मृत्यु हो गयी। तब प्रथा यह थी कि शवदाह जागेश्वर में होता था। पत्नी सती होने के लिये वहीं जाती थी। अत: मणिराम की पत्नी भी सती होने के लिये शव यात्रा के साथ जागेश्वर को चली गई। वहां अपने पिता को देखकर आवेश में पिता के पांव छुये। पिता ने सौभाग्यवती का आशीर्वाद दिया। लड़की ने कहा पिताजी आपने यह कैसा आशीर्वाद दिया। मेरे पति की अर्थी तो शवदाह हेतु यहां आ चुकी है। पिता ध्यान मग्न हो गये। कुछ समय पश्चात् पुत्री से बोले, शमशान में चिता को अग्नि देने से रोके और पुन: ध्यानमग्न हो गये। शमशान में शवयात्री यह देखकर आश्चर्य चकित हो गये कि शव में हलचल शुरू हो गयी और मृतक उठ कर बैठ गया। पिता ने शव यात्रियों को वापस भेज दिया और जामाता के सभी संस्कार पुन: कर दिये तथा आज्ञा दी कि वे इस जीवनदान के बदले शिव के मन्दिर का निर्माण करे, इसके लिये वे तत्कालीन राजा से सहयोग लें। भगवान शिव की कुछ ऐसी महिमा हुई कि उन्होंने राजा को स्वप्न में आदेश दिया कि छीड़ेश्वर (यह स्थान बेनीनाग से लगभग दो मील दूरी पर गराऊं ग्राम के नीचे गौरघटिया नदी में एक जलप्रपात है जिसे छीड़ कहा जाता है) से पुंगीफल (सुपारी के बराबर) लिंग को उठाकर किसी उचित स्थान पर स्थापित कर दें। उधर जब मणिराम राजा से मिले तो राजा ने उन्हें स्वप्न वाली बात बताई तथा आदेश दिया कि शिव मन्दिर का निर्माण कर उसमें पूंगेश्वर लिंग की स्थापना कर दें। मणिराम ने इस स्थान का पता लगाया और स्थानीय लोगों की सहायता से यही मल्ला बड़ाऊ में कनेड़ा ग्राम के ऊपर एक शिवालय बनवाया जो अब पुंगेश्वर महादेव के नाम से जाना जाता है। राजा ने ग्राम मैतोली, गूंठ में दिया इसमें पूजा हेतु भट्ट (कोटिया) लोगों को बसाया।

मन्दिर निर्माण की ऐसी एक कहावत प्रसिद्ध है।

यद्धपि इस विज्ञान युग में कोई भी व्यक्ति इस पर शायद ही विश्वास करे तथापि यह सत्य है कि मन्दिर बना है जो अभी तक विद्यमान है। मन्दिर निर्माण हेतु पत्थर समीपवर्ती पाषाण (पाखांण) जिसे स्थानीय भाषा में कांठा कहा जाता है, से लाया गया है। इसलिये उस स्थान का नाम देवाल का कांठा प्रसिद्ध हो गया। यहा कांठा लगभग ७५ अंश कोण पर आगे को झुका है। वहां कोई भी नहीं जा पाता। रात्रि में पत्थर स्वतः ही गिर जाते थे जो दूसरे दिन मन्दिर निर्माण हेतु काम में लाये जाते थे। यह क्रिया तब तक जारी रही जब तक मन्दिर का निर्माण पूर्ण न हो गया। इसमें पत्थर इस स्थिति में चिपके हुये हैं कि मालूम पड़ता है कि वे अभी गिर जायेंगे। तब से अब तक लगभग १० पीढ़ी का अन्तराल हो गया है, लेकिन इसमें भूचाल व बदलते मौसम का कोई भी प्रतिकूल असर नहीं पड़ा।

चार-पांच पीढ़ी बाद मन्दिर का कठछत्र वर्षायत ग्राम निवासी जैकिशन पन्त ने बदलवाया जब लकड़ी पुनः सड़ गल गई तो सन् १९४० के लगभग, कालासिल ग्राम में जन्मे महंत मणिराम ने इसे नया बनवाया और ऊपर से ताम्र पत्र लगवाया। यह कार्य पं. केदारदत्त पन्त ग्राम वर्षायत (बजेत) द्वारा सम्पादित किया गया।

महामहोपाध्याय पं. नित्यानन्द पन्त

पांडित्य में महामहोपाध्याय पं. नित्यानंद पन्त का नाम सर्वोपरि रहा है। मूलतः ये तिलाड़ी ग्राम के थे। इनके प्रपितामह नीलाम्बर पन्त तिलाड़ी से आकर काशी में बस गये। इनके पिता नामदेव भी वेदान्त और धर्मशास्त्र के ज्ञाता थे। अपने पिता ही से इन्होंने वेदादि अध्ययन किया। व्याकरण में आचार्य की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की। इनके द्वारा रचित ग्रन्थ इस प्रकार है, संस्कार दीपक (तीन भाग), कार्तोयेष्टिदीपक, अन्त्य-कर्मदीपक, वर्ष-कृत्यदीपक, सापिण्डीयदीपक, कात्यायन श्रोतसूत्र आदि। काशी में पर्वतीय धर्मशाला की स्थापना भी इन्होंने की।

श्रीनांथ ज्यूराठ

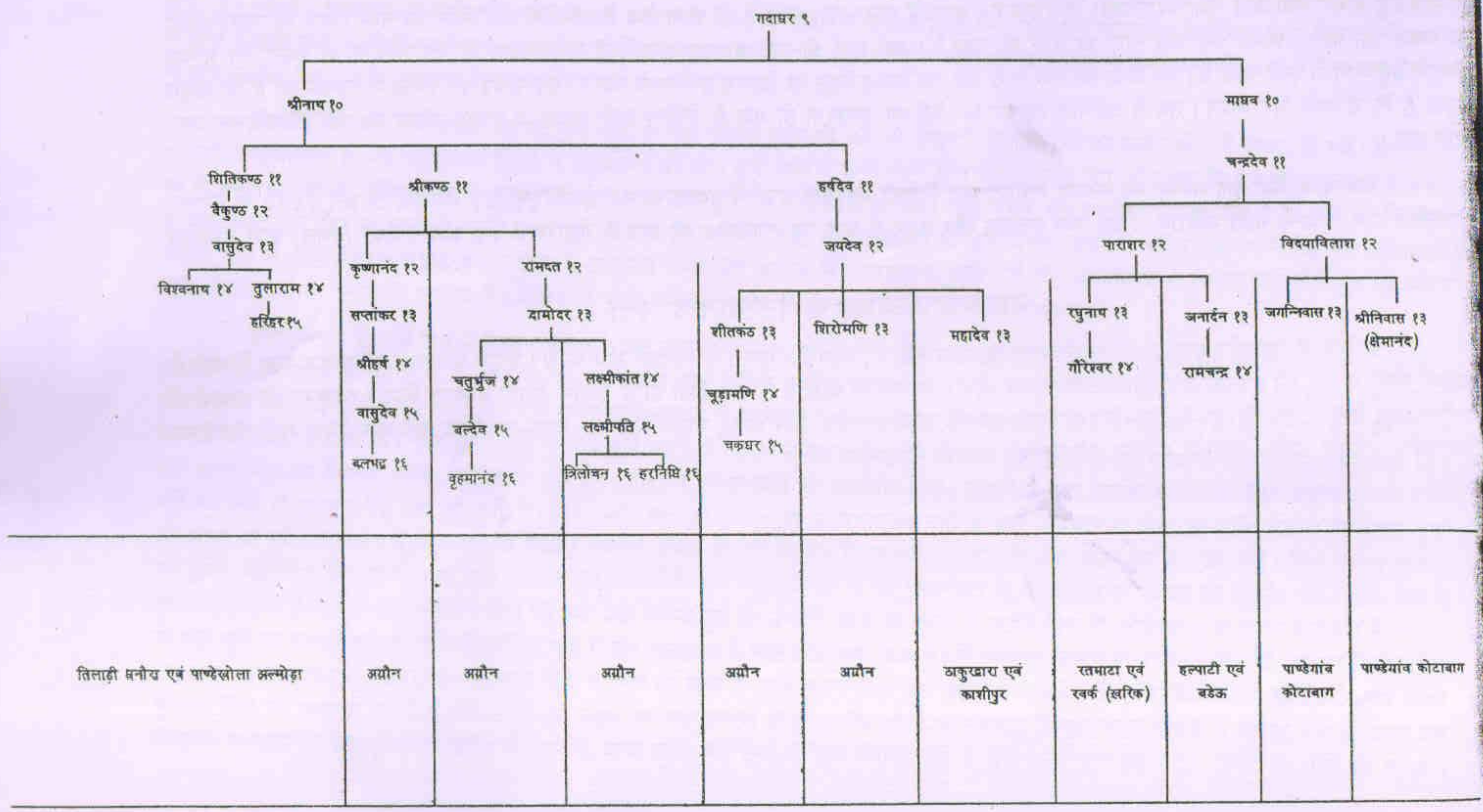
गदाधर ९
श्रीनाथ १०
माधव १०
शितिकण्ठ ११
श्रीकण्ठ ११
हर्षदेव ११
चन्द्रदेव ११
वैकुण्ठ १२
वासुदेव १३
विश्वनाथ १४
तुलाराम १४
हरिहर १५
कृष्णानंद १२
रामदत्त १२
जयदेव १२
पाराशर १२
विद्याविलाश १२
सप्ताकर १३
दामोदर १३
शीतकंठ १३
शिरोमणि १३
महादेव १३
रघुनाथ १३
जनार्दन १३
जगन्निवास १३
श्रीनिवास १३ (क्षेमानंद)
श्रीहर्ष १४
चतुर्भुज १४
लक्ष्मीकांत १४
चूड़ामणि १४
गौरेश्वर १४
रामचन्द्र १४
वासुदेव १५
बन्देव १५
लक्ष्मीपति १५
चक्रधर १५
बलभद्र १६
वृहमानंद १६
त्रिलोचन १६ हरनिधि १६
तिलाड़ी धनौरा एवं पाण्डेखोला अल्मोड़ा
अग्नौन
अग्नौन
अग्नौन
अग्नौन
अग्नौन
ठकुरद्वारा एवं काशीपुर
रतमाटा एवं रवर्क (खरिक)
हल्पाटी एवं बडेऊ
पाण्डेगांव कोटाबाग
पाण्डेगांव कोटाबाग

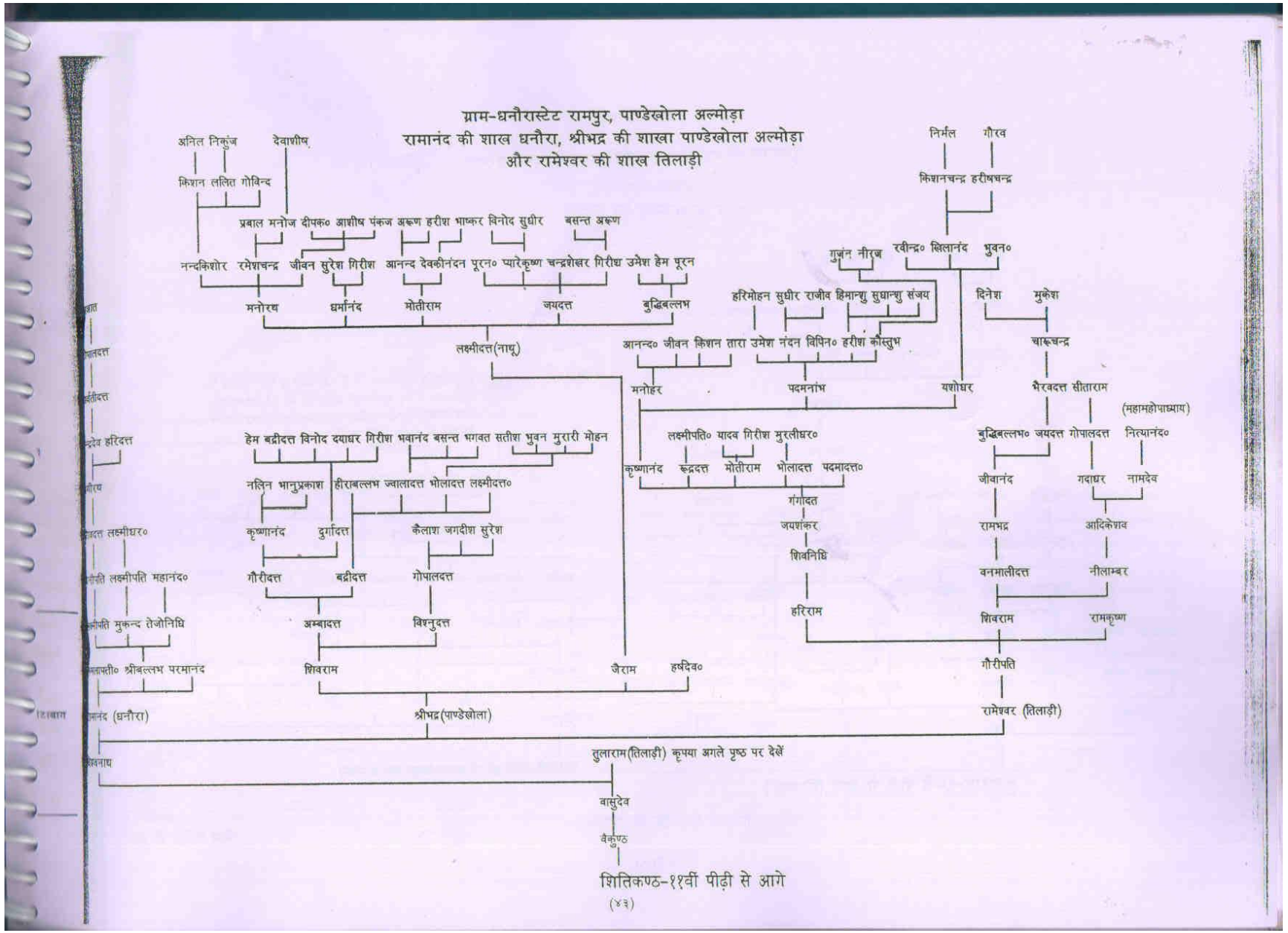

ग्राम-धनौरास्टेट रामपुर, पाण्डेखोला अल्मोड़ा
रामानंद की शाख धनौरा, श्रीभद्र की शाखा पाण्डेखोला अल्मोड़ा
और रामेश्वर की शाख तिलाड़ी

ग्राम तिलाड़ी

तुलाराम की शाखा तथा परीक्षितगढ़ में बसा परिवार

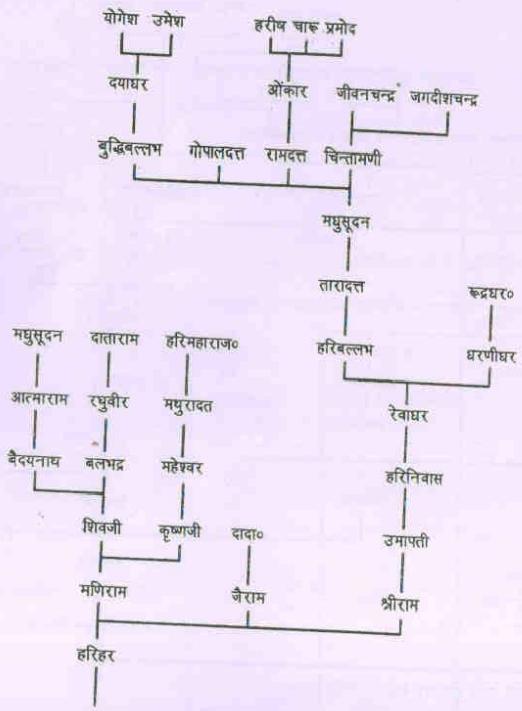

तुलाराम-१४वीं पीढ़ी से आगे (तिलाड़ी)

नोट: कुछ परिवार परीक्षितगढ़ में है। ये कहते हैं सन् १८५७ में परीक्षितगढ़ में थे। यानी उससे पहिले चले गये थे। एक परिवार श्री हरीशचन्द्र पंत जी का मॉडल हाउस लखनऊ में रहता है उनके अनुसार जो सूचना मिली वह निम्नप्रकार है।

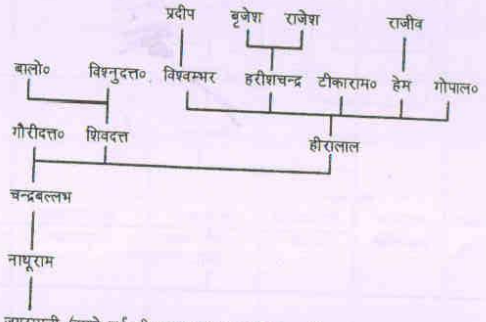

जयरामजी (इससे पूर्व की सूचना मालूम नहीं हो सकी)

ग्राम-अग्रौन-

बलभद्र एवं बृहमानंद की शाखा।

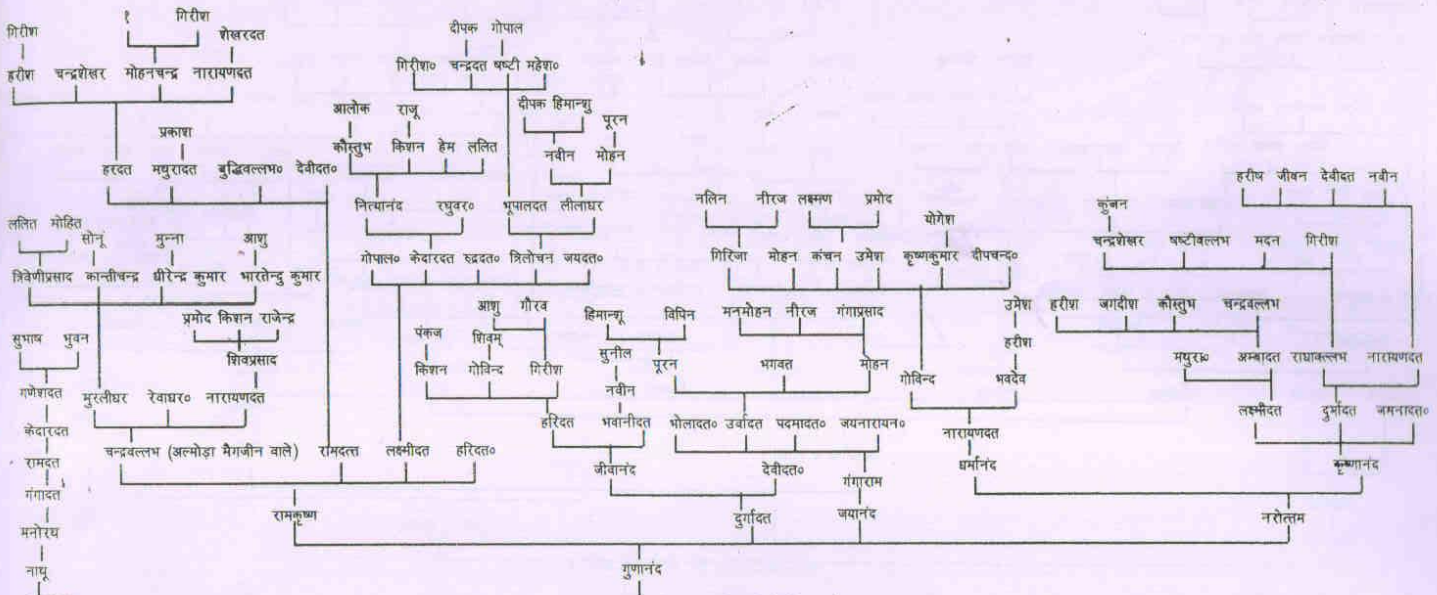

१६ वीं पीढ़ी से आगे

वृहमानंद १६ वीं पीढ़ी से आगे

ग्राम-अग्रौन-

लक्ष्मीपति की शाखा।

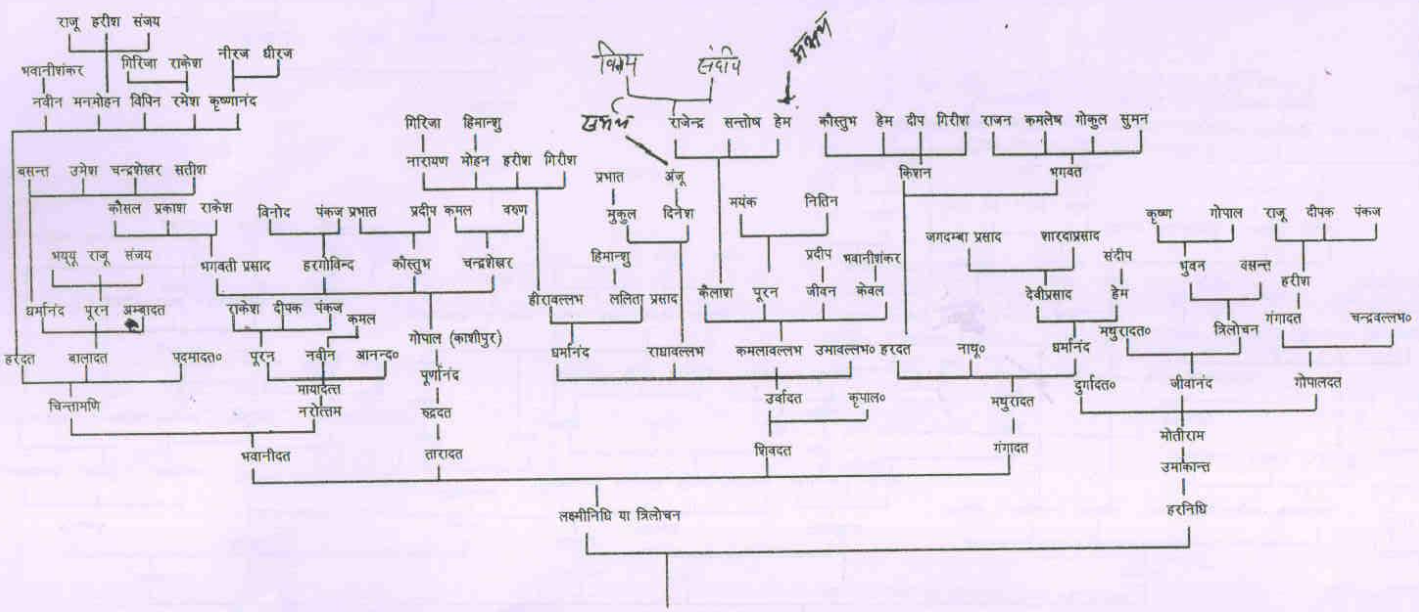

लक्ष्मीपति-१५ वीं पीढ़ी से आगे।

ग्राम-अग्रौन-
चक्रधर की शाखा

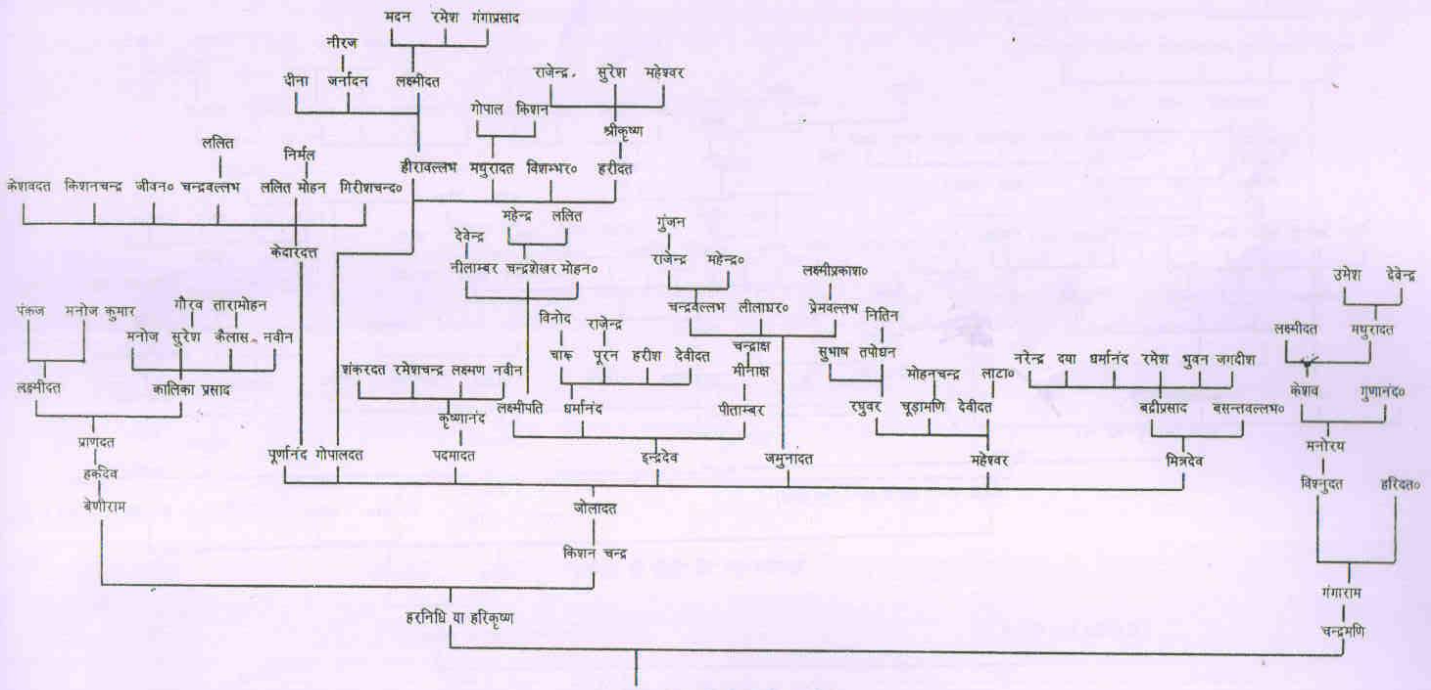

चक्रधर-१५ वीं पीढ़ी से आगे।

ग्राम-ठाकुरद्वारा, काशीपुर-श्रीनाथ महादेव और शिरोमणि की शाखा

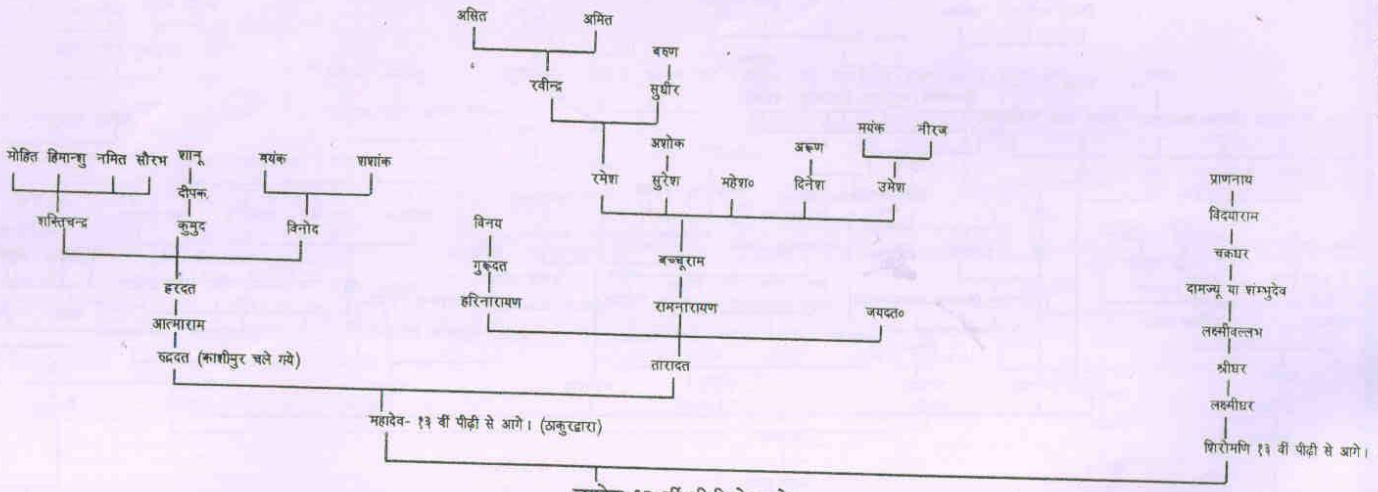

ग्राम-रतमाटा-

रमावल्लभ या राधा की शाखा-तालिका I

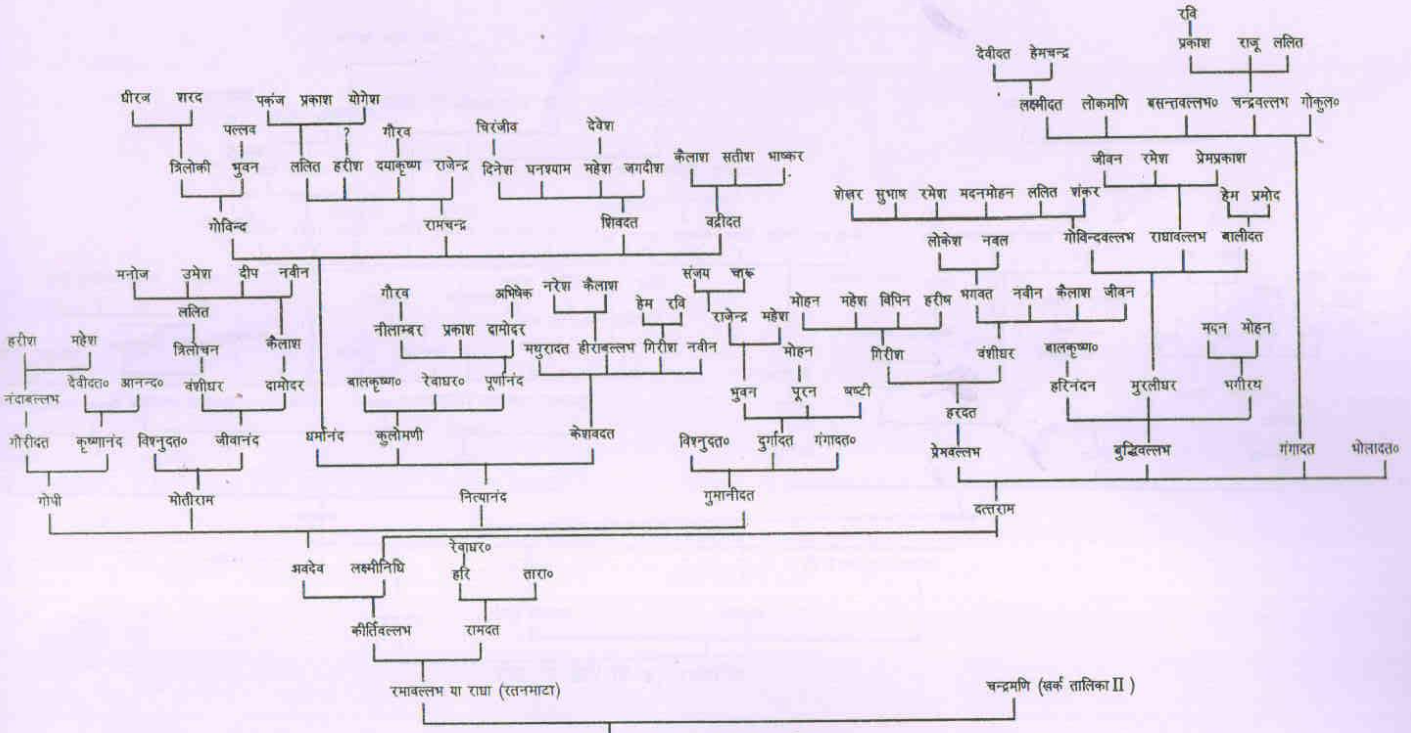

गौरेश्वर-१४ वीं पीढ़ी से आगे।

ग्राम खरिक (खर्क)-माधव-चन्द्रमणि
की शाखा-तालिका II

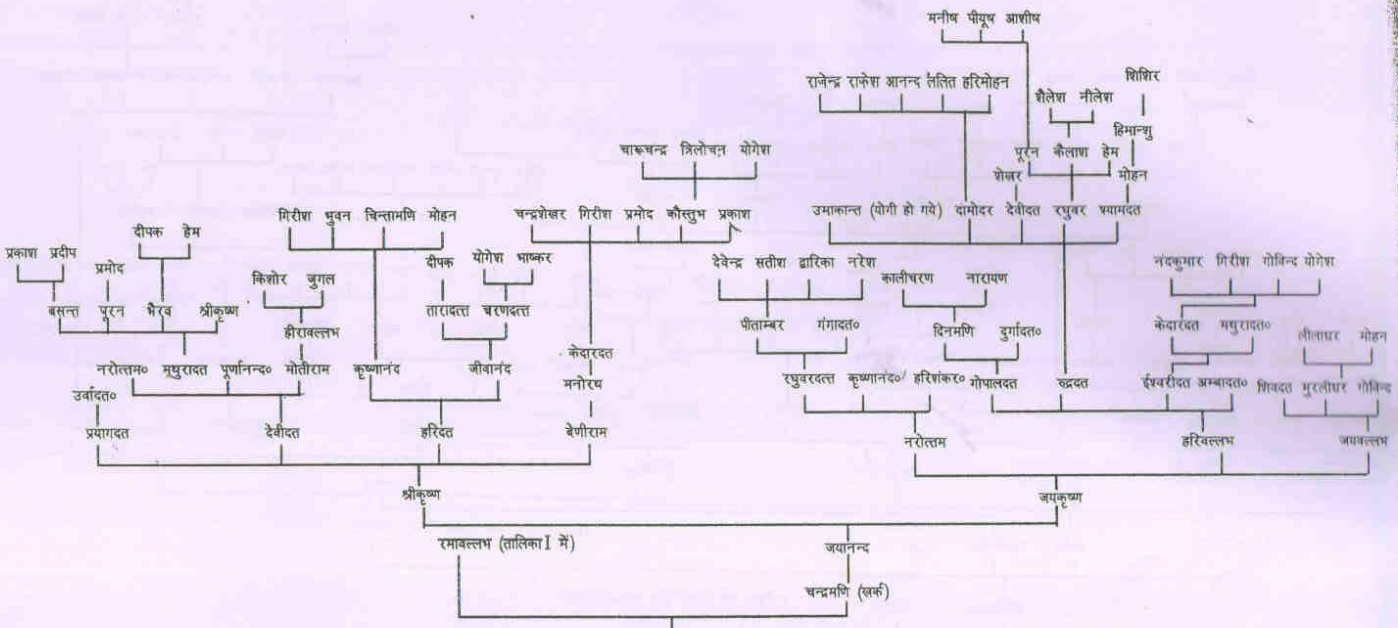

गौरेश्वर-१४ वीं पीढ़ी से आगे

ग्राम-हल्पाटी एवं बड़ेऊ-

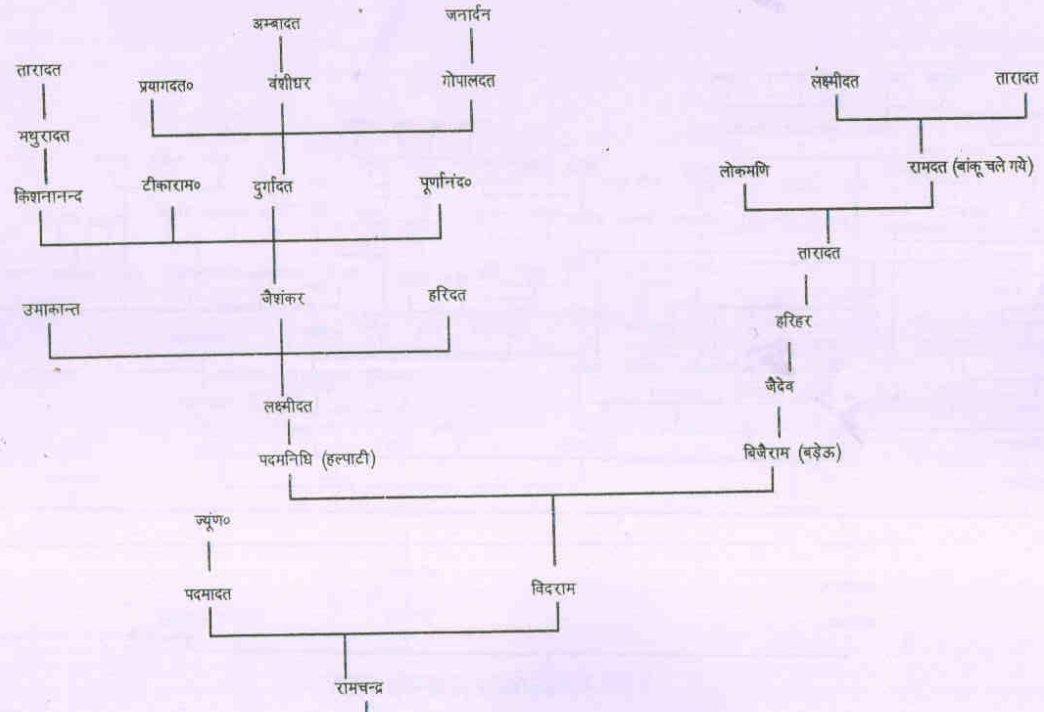

जनार्दन-१३ वीं पीढ़ी से आगे

ग्राम- पाण्डेगांव (कोटाभावर)-
विद्याविलास (जगन्निवास) की शाखा। तालिका I

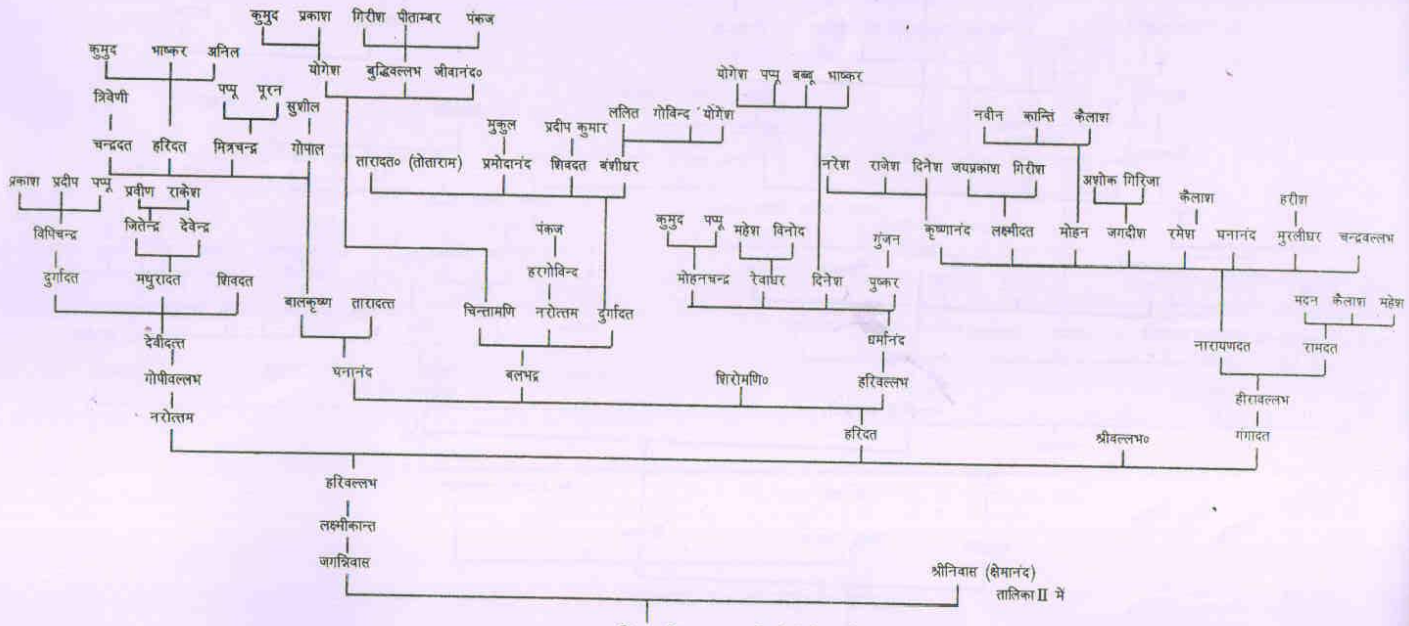

विदयाविलास १२ वी पीढ़ी से आगे

ग्राम-पाण्डेगांव (कोटाभावर)-

श्रीनिवास (क्षेमानंद) की शाखा-तालिका II

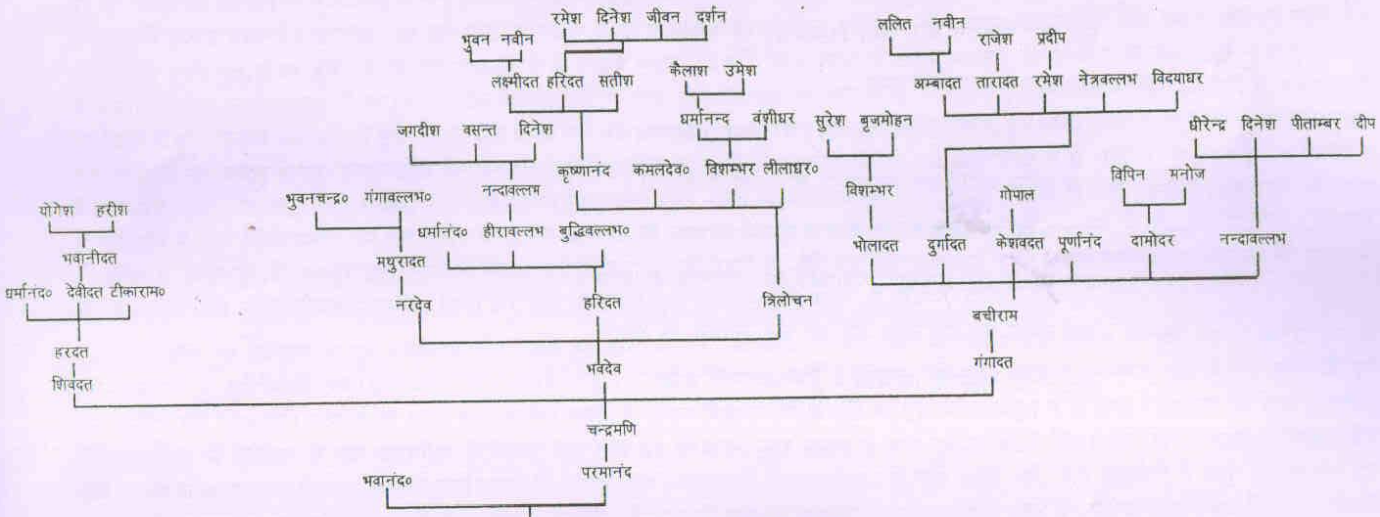

श्री निवास (क्षेमानंद) १३ वीं पीढ़ी से आगे।

भाग–३ नाथू पन्त

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
१-	नाथू पन्तों का विकास तथा विभिन्न गांवों में बसना।	५५ से ५६ तक
२-	विभिन्न ग्रामों की सूची।	५७
३-	ग्राम खूंट/काशीपुर/ठाकुरद्वारा और ढुगांलगांव।	५८
४-	ग्राम छकाता (सिलौटी) मणिराम की शाखा तालिका I।	५९
५-	पोखरखाली (अल्मोड़ा) विद्यापति की शाखा तालिका II।	६०
६-	ग्राम खूंट विदराम की शाखा।	६१
७-	ग्राम खूंट शिवराम और रमेश (रामचन्द्र) की शाखा।	६२
८-	ग्राम खूंट रमाकान्त की शाखा।	६३
९-	ग्राम मलेरा बांणी विलास (रामचन्द्र) की शाखा तालिका I।	६४
१०-	ग्राम मलेरा बांणीविलास (मणिराम) की शाखा तालिका II।	६५
११-	ग्राम मलेरा बांणीविलास (लक्ष्मीकान्त और वैदयनाथ) की शाखा।	६६
१२-	ग्राम ज्योली और ठाकुरद्वारा पीताम्बर और गौरीपति की शाखा।	६७
१३-	ग्राम ज्योली एवं पाण्डेखोला रघुनंदन एवं उमापति की शाखा।	६८
१४-	ग्राम मलेरा, बृहस्पति (कामदेव व विश्वरूप) की शाखा।	६९

भाग-३ (नाथू पन्त)

नाथू पन्त, मूल पुरुष जयदेव के बाद ११ वीं पीढ़ी में पैदा हुये। मणकोटी राजदरबार में ये पौणारिक, यानी पूजा पाठ कराने वाले नियुक्त हुये। इन्होंने सोमयज्ञ किया अत: ये सोमयाज्ञी भी कहे जाते हैं। इनके चार पुत्र गिरधर, मनोहर, रमाकान्त और त्रिविक्रम हुये। पहिले ये मल्लाखोला, उप्राड़ा में रहते थे। इनका एक पुत्र और भी था जिसका नाम कामदेव था। उसके लड़के इन्दिरमण, उनके नीलदेव षटशास्त्री और नीलदेव के पुत्र वाचस्पति हुये। वाचस्पति के दो पुत्र (१) जयदेव (२) दिव्यदेव वर्तते हुये। दिव्यदेव के ऋषिदेव हुये। अन्तत: ये नेपाल को चले गये। अत: वंशावली में इनका जिक्र नहीं मिलता। ऐसी टिप्पणी पं. जगन्नाथ पन्त जी ने अपनी वंशावली में दि. २३-२-१९५२ को दी है।

गिरधर के पौत्र कृष्णदेव ने डोभालखेत (गंगोलीहाट) में कटार मार कर पानी निकाला। अत: यह ग्राम राजा ने उन्हें दान में दे दिया। कृष्णदेव ने अपनी उप्राड़ा वाली जमीन शर्मा पन्तों को दे दी और स्वयं डोभालखेत में रहने लगे। कृष्णदेव के तीन पुत्र, कृष्णानंद, श्रीधर और मणिराम हुये। कृष्णानंद की शाखा छकाता से काशीपुर और वहां से ठाकुरद्वारा चली गई, इस शाखा में एक-एक ही पुत्र हुआ। २१ वीं पीढ़ी में २ भाई लीलाधर और गोवर्धन हुये। गोवर्धन के २ पुत्र भोलादत और टीकाराम। टीकाराम को उनके नाना, त्रिपाठी ने गोद ले लिया अत: गोत्र बदल गया और शाखा समाप्त हो गई। भोलादत जी के पुत्र डा. हरिशंकर वर्तमान में मुरादाबाद में हैं। मणिराम ने डोभालखेत अपने पुरोहित पठक्यूड़ा के पाठकों को दान कर दिया और स्वयं छकाता (शिलौटी) जिला नैनीताल में आकर बस गये। सम्भवत: यह ग्राम उन्हें तत्कालीन राजा से दान में मिला होगा। मणिराम की सन्तान अब छकाता तथा उसके आसपास रहती है। कृष्णदेव के दूसरे पुत्र श्रीधर हुये। इनके पुत्र राधापति के दो लड़के कान्त एवं हरि हुये। कान्त के लड़के पाराशर को अस्कोट के पाल राजा ने शाके १४३३ में अपनी रियासत के डुंगालगांव में बसाया। ये पाल खानदान के पुरोहित और रसोइया का काम करते हैं। दूसरे हरि नि:सन्तान रहे। शिलौटी में मणिराम के पुत्र शिवराम हुये। इनकी चार सन्तानें हुईं। दो की आगे शाखा नहीं बढ़ी। बाकी दो रामनाराण एवं हयग्रीव (विश्वेश्वर) हुये। इसी शाखा में माननीय पं. गोविन्दवल्लभ पन्त जी हुये। इसी शाखा के एक अन्य व्यक्ति लीलाधर पोखरखाली अल्मोड़ा चले गये और उनकी सन्तान अब पोखरखाली में ही रहती है। मनोहर के पुत्र त्रिलोचन के चार पुत्र। (१) विदराम, (२) हरिहर, (३) शिवराम या शिवाकान्त (४) रमेश या रामचन्द्र हुये। इन सबकी सन्तान खूंट में रहती हैं। त्रिलोचन को राजा ने खूंट गांव में १९० नाली जमीन मय एक मकान के दान में दी। बाद में राजा बाजबहादुरचन्द ने किच्छा में दोपहरिया गांव माफी में ताम्र पत्र कर दिया। विदराम की शाखा में गोपीनाथ को चांदपुर ग्राम माफी में मिला। उनकी सन्तान वहीं रहती है, आगे का विवरण मालूम न हो सका। इसी प्रकार देवकृष्ण की शाखा में भी चिन्तामणि पन्त को माफीदार दोपहरिया लिखा है। नाथू के तीसरे पुत्र रमाकान्त की शाखा भी खूंट में रहती है।

चौथे पुत्र त्रिविक्रम के पुत्र भवदेव के चार लड़के हुये बांणी विलास, पदमपति, विश्वरूप और बृहस्पति। बांणी विलास के पुत्र रमापति मलेरा ग्राम में बसे। पदमपति के पुत्र ज्योली ठाकुरद्वारा एवं पाण्डेखोला (अल्मोड़ा) में बसे। विश्वरूप की कोई सन्तान नहीं हुई। बृहस्पति भी मलेरा ग्राम में बसे उनके दो पुत्र हुये कामदेव और विश्वरूप। कामदेव की शाखा का आगे पता चलता है लेकिन विश्वरूप की सन्तति का पूरा ब्यौरा मालूम न हो सका। विश्वरूप को राजा ज्ञानचन्द्र ने सन् १७०४ में अल्मोड़ा के पास धारानौला के निकट, एक नया घर बनवाकर कुछ जमीन के साथ गृहदान करके दिया। अत: दोनों भाइयों, विश्वरूप और कामदेव की शाखा गृहदान के पन्त नाम से जानी जाती है। इनमें कुछ अल्मोड़ा के पास लक्ष्मेश्वर में कुछ मवासे अलै, पल्यूं बलढौटी में रहते हैं कुछ यत्र तत्र भी फैले हैं। कुमाऊं के राजाओं के साथ भी कुछ परिवार काशीपुर को गये जो अभी भी काशीपुर व ठाकुरद्वारा में रहते हैं। प्रसिद्ध कहानीकार शिवानी (श्रीमती गौरा पन्त) इसी शाखा से हैं। मलेरा एक बहुत बड़ा गांव है। वर्तमान में वहां कुछ ही परिवार रहते हैं अधिकतर परिवार आजीविका हेतु अन्यत्र चले गये हैं।

भारत रत्न माननीय गोविन्द वल्लभ पन्त

जिला नैनीताल के नौकुंचियाताल के किनारे छकाता क्षेत्र के अन्तर्गत शिलौटी ग्राम स्थित है। चन्द राजाओं के शासन काल में वहां बसे नाथ वंशज, प्रतिष्ठित एवं प्रख्यात रहे। इसी वंश में जन्मे कमलाकान्त एक भाग्शाली तथा प्रभावशाली व्यक्ति रहे। गोर्खा एवं ब्रिटिश राज्य के प्रारम्भ में ये ए शासक पद पर रहे। दीवानी तथा फौजदारी के मुकदमे इनके यहां होते थे। इनके पांच पुत्रों, महादेव, दुर्गादत, घनानंद, शम्भूबल्लभ व प्रेमवल्लभ में नौकुंचियाताल के समीप रसिया क्षेत्र के सरकारी चाय बागान के प्रबंधकर्ता थे। इनके तीन लड़के नरोत्तम, मनोरथ और हरिदत थे। मनोरथ जी सर पर थे। अल्मोड़ा नैनीताल तथा गढ़वाल जिलों में उन्होंने राजसेवा की। स्वनामधन्य, भारतरत्न स्व. गोविन्दवल्लभ पन्त इन्हीं के पुत्र थे। पंडित गोवि पन्त का जन्म शाके १८०९ भाद्र १६, गते तदनुसार २०, अगस्त सन् १८८७ को हुआ इनके नाना रायबहादुर पं. बद्रीदत जोशी अल्मोड़ा में सदरअमीन पद जिले में जिलाधिकारी के बाद होता था)। पन्त जी का बचपन में लालन-पालन, शिक्षा-दीक्षा, जोशी की देखरेख में हुआ। इन्टरमीडियेट तक की शिक्ष अल्मोड़ा में ही पायी। सदरअमीन साहब का घर तत्कालीन राजनैतिक अखाड़ा था। इसी का प्रभाव पन्त जी पर भी पड़ा, जिससे वे एक महान नेता व र बने।

अल्मोड़ा रामजे कालेज से इन्टरमीडियेट की परीक्षा पास कर वर्ष १९०७ में प्रयाग विश्वविद्यालय से बी. ए. तथा वर्ष १९०९ में एल. एल. बी. क पास की। तदन्तर नैनीताल में वकालत करने लगे। शीत ऋतु में काशीपुर रहते थे। कुछ समय तक जिला बोर्ड के सदस्य तथा दीर्घकाल तक चेयरम कुमाऊं परिषद की स्थापना इनके सहयोग से सन् १९१६ में हुई। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की सदस्यता १९१६, यू. पी. लेजिस्लेटिम काँउन्सिल की सन् १९२३, सभापति कांग्रेस कमेटी उत्तर प्रदेश सन् १९२७, नेता स्वराज्य पार्टी सन् १९२७, सभापति अलीगढ़ अधिवेशन साइमन कमीशन विरोध सन् १९३०-३२, जेल यात्रा सन् १९३०-३२, जनरल मंत्री अखिल भारतीय पार्लियामेन्ट्री बोर्ड सन् १९३४, एम. एल. ए. सेन्ट्रल बोर्ड सन् १९३४, डि कांग्रेस पार्टी यू. पी. सन् १९३७ मुख्यमंत्री प्रथम बार १९३७ त्याग पत्र सन् १९३९ व्यक्तिगत सत्याग्रह में जेल यात्रा सन् १९४०-४१, भारत छोड़ो आ में जेल यात्रा सन् १९४२ से १९४५, स्वतंत्रता के बाद मुख्यमंत्री उ. प्र. सन् १९४७ से, मुख्यमंत्री यू. पी. पुनः सन् १९५२ से, केन्द्रीय मंत्री मंडल में स्तर के मंत्री सन् १९५४, गृहमंत्री केन्द्रीय सरकार सन् १९५५ से, भारत रत्न की उपाधि से सम्मानित २६ जनवरी सन् १९५७ महाप्रंयाण ७, मार्च सन

श्री कृष्ण चन्द्र पन्त

जब माननीय श्री गोविन्द वल्लभ पन्त जी अपने भवाली स्थित आवास में स्वास्थ्य लाभ कर रहे थे तभी १० अगस्त सन् १९३९ को उनके कृष्णचन्द्र पन्त का जन्म हुआ। जो आज अपने स्व. पिता के मार्ग पर चलकर देश की सेवा कर रहे हैं। ये भी केन्द्रीय सरकार में रक्षामंत्री रहे। वर्तमान सरकार के १० वीं वित्त आयोग के अध्यक्ष हैं।

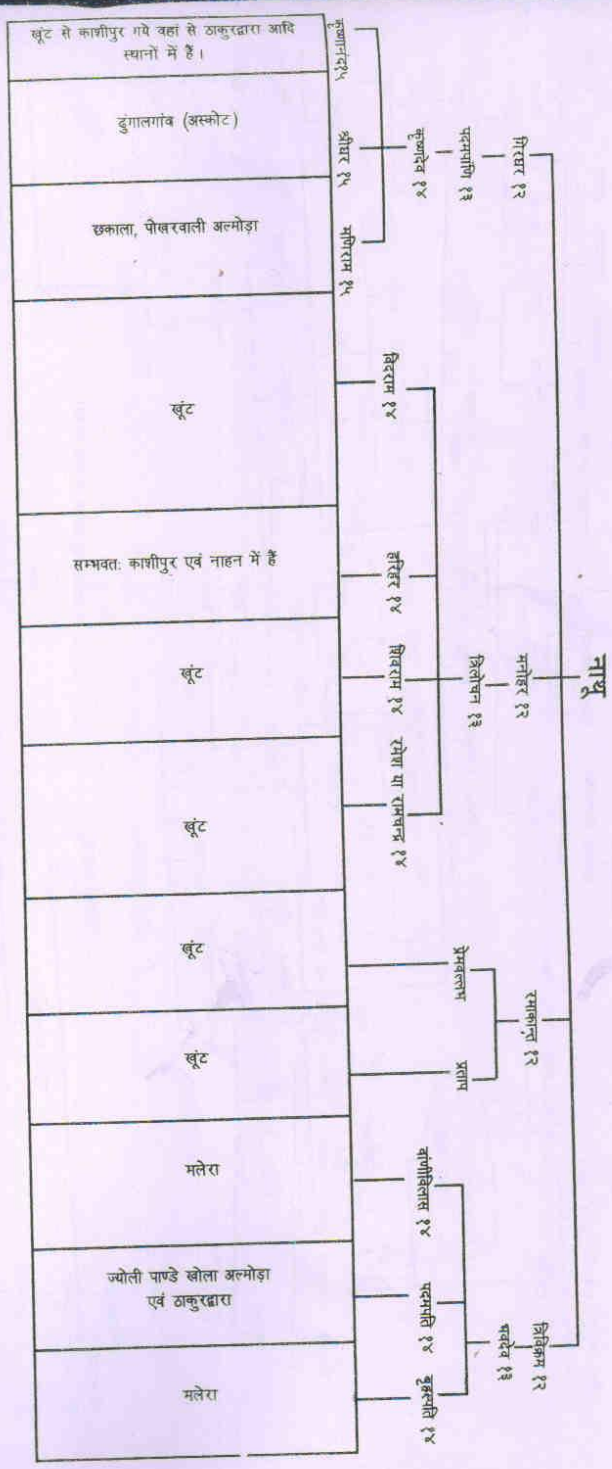

नाथू
गिरधर १२
पदमपाणि १३
कृष्णदेव १४
कृष्णानंद१५
श्रीधर १५
मणिराम १५
मनोहर १२
त्रिलोचन १३
विदराम १४
हरिहर १४
शिवराम १४
रमेश या रामचन्द्र १४
रमाकान्त १२
प्रेमवल्लभ
प्रताप
त्रिविक्रम १२
भवदेव १३
वांणीविलास १४
पदमपति १४
बृहस्पति १४
खूंट से काशीपुर गये वहां से ठाकुरद्वारा आदि स्थानों में हैं।
डुंगालगांव (अस्कोट)
छकाला, पोखरवाली अल्मोड़ा
खूंट
सम्भवत: काशीपुर एवं नाहन में हैं
खूंट
खूंट
खूंट
खूंट
मलेरा
ज्योली पाण्डे खोला अल्मोड़ा एवं ठाकुरद्वारा
मलेरा

ग्राम- (खूंट/काशीपुर/ठाकुरद्वारा) - डुगालगांव-कृष्णदेव की शाखा

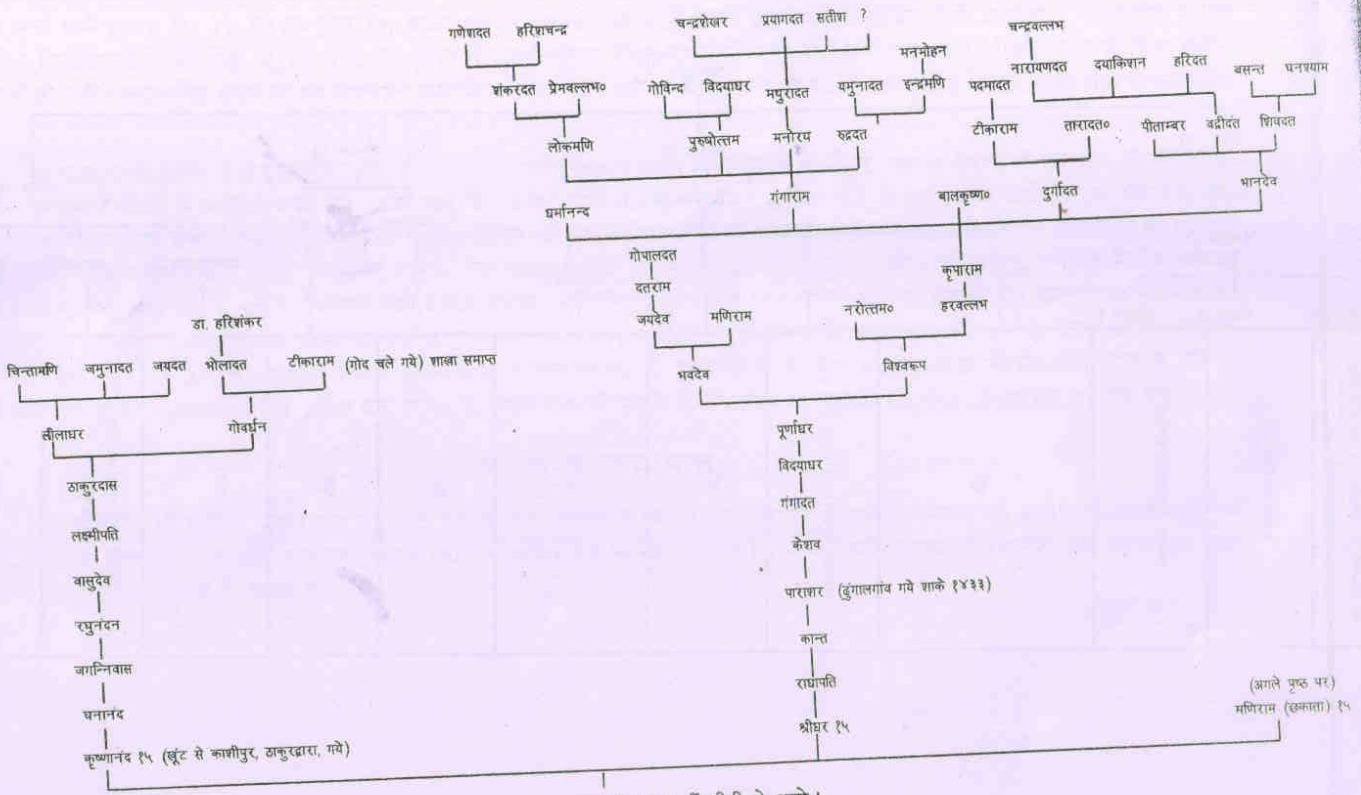

कृष्णदेव-१४ वीं पीढ़ी से आगे।

ग्राम - छकाता (सिलौटी) -
मणिराम की शाखा तालिका I

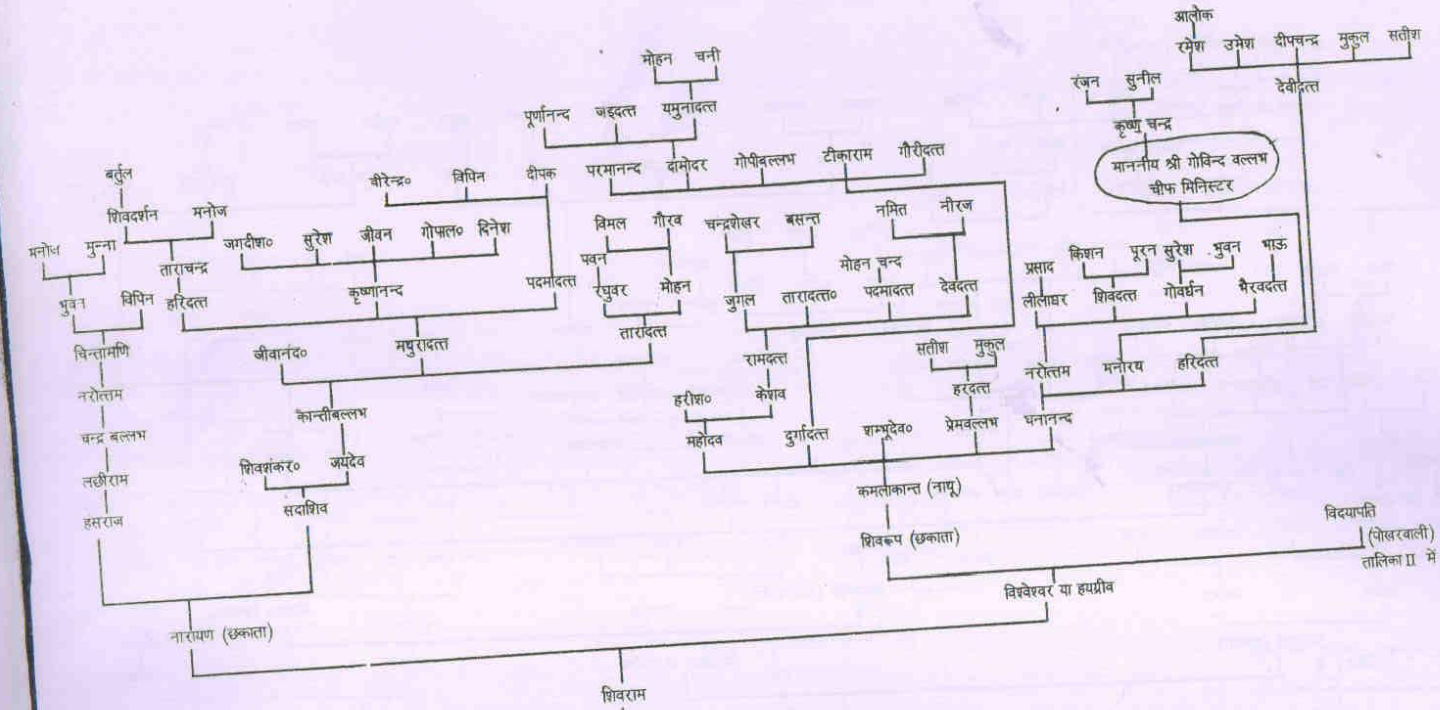

ग्राम - पोखरवाली नाथू ११

मणिराम (विदयापति) की शाखा तालिका II

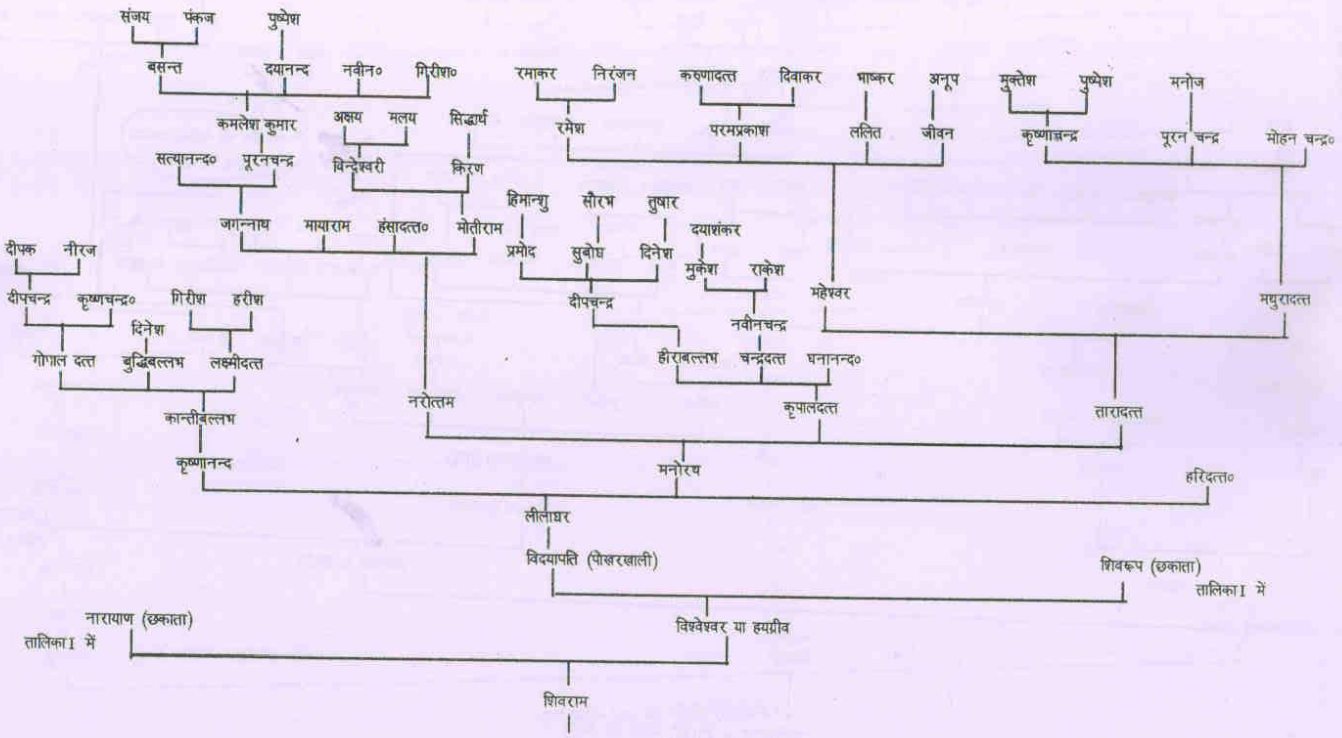

मणीराम - १५वीं पीढ़ी से आगे

ग्राम खूंट-विदराम की शाखा।

यह शाखा सम्भवतः काशीपुर/नाहन या अन्यत्र बसी हो। विवरण मालूम न हो सका।

कृष्णानंद जयशंकर नरोत्तम लछी

शिवानिधि लक्ष्मीनिधि राधापति

मनोहर

हरिहर-१४ वीं पीढ़ी।

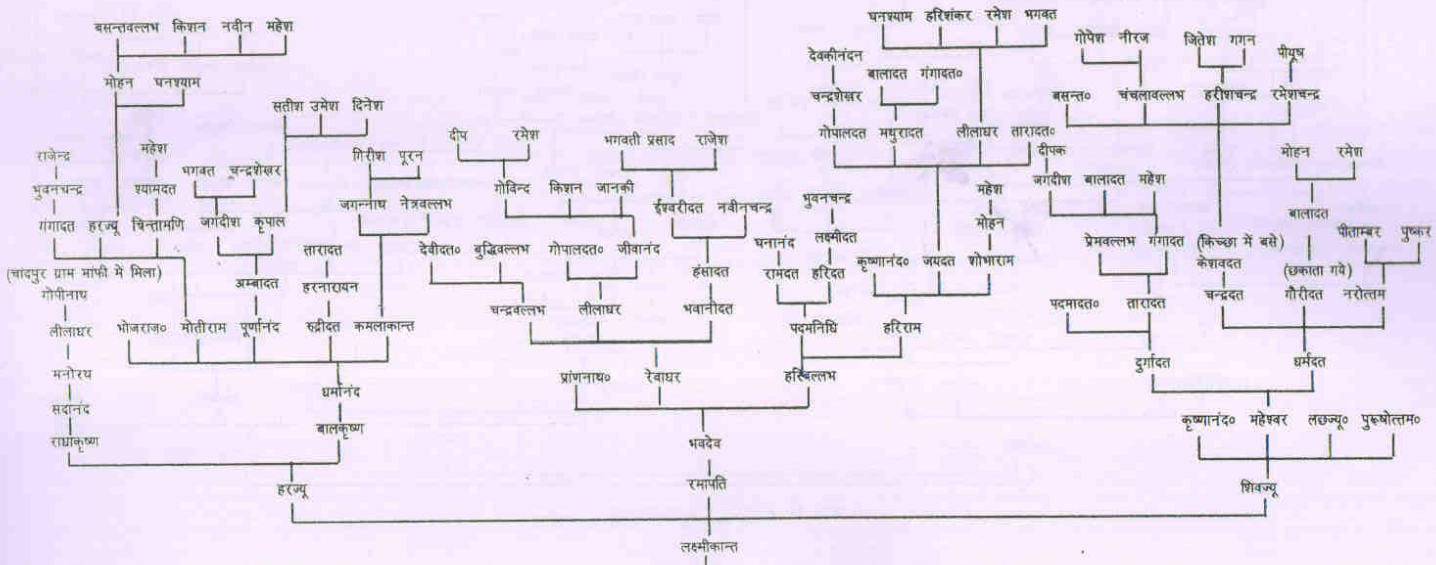

विदराम-१४ वीं पीढ़ी से आगे।

ग्राम खूंट-शिवराम एवं रमेश (रामचन्द्र) की शाखा।

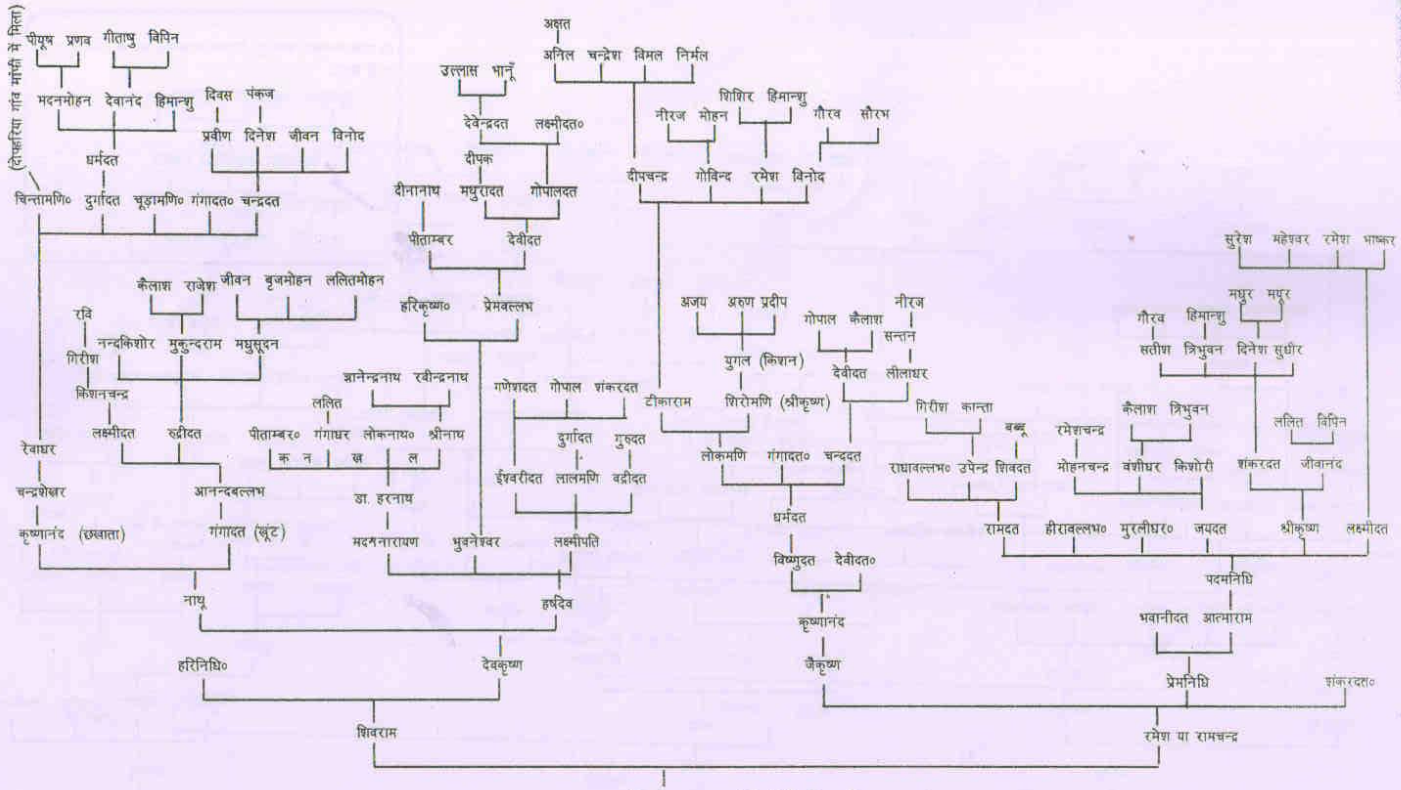

त्रिलोचन-१३ वीं पीढ़ी से आगे।

ग्राम खूंट-रमाकान्त की शाखा

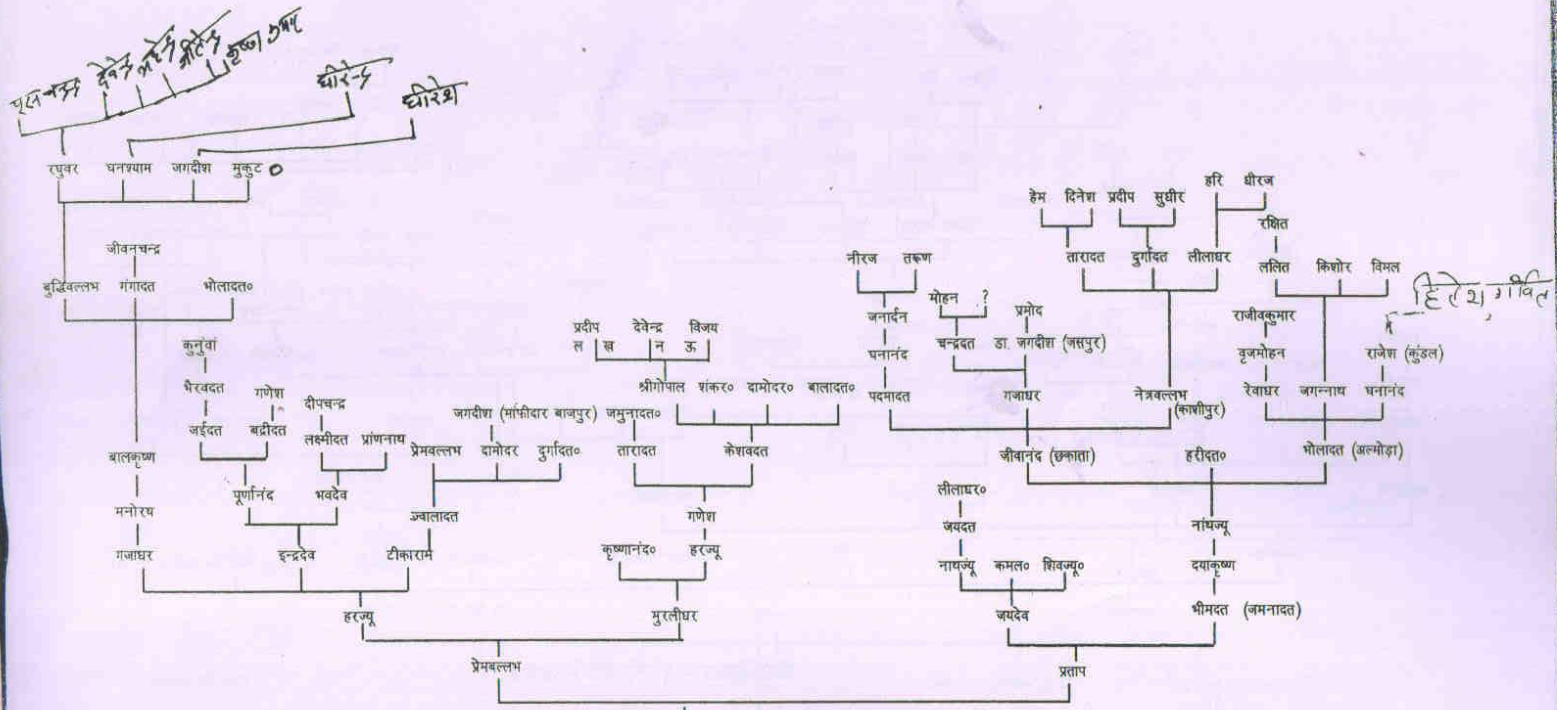

रमाकान्त-१२ वीं पीढ़ी से आगे।

ग्राम मलेरा - बाणीविलास (रामचन्द्र) की शाखा
तालिका I

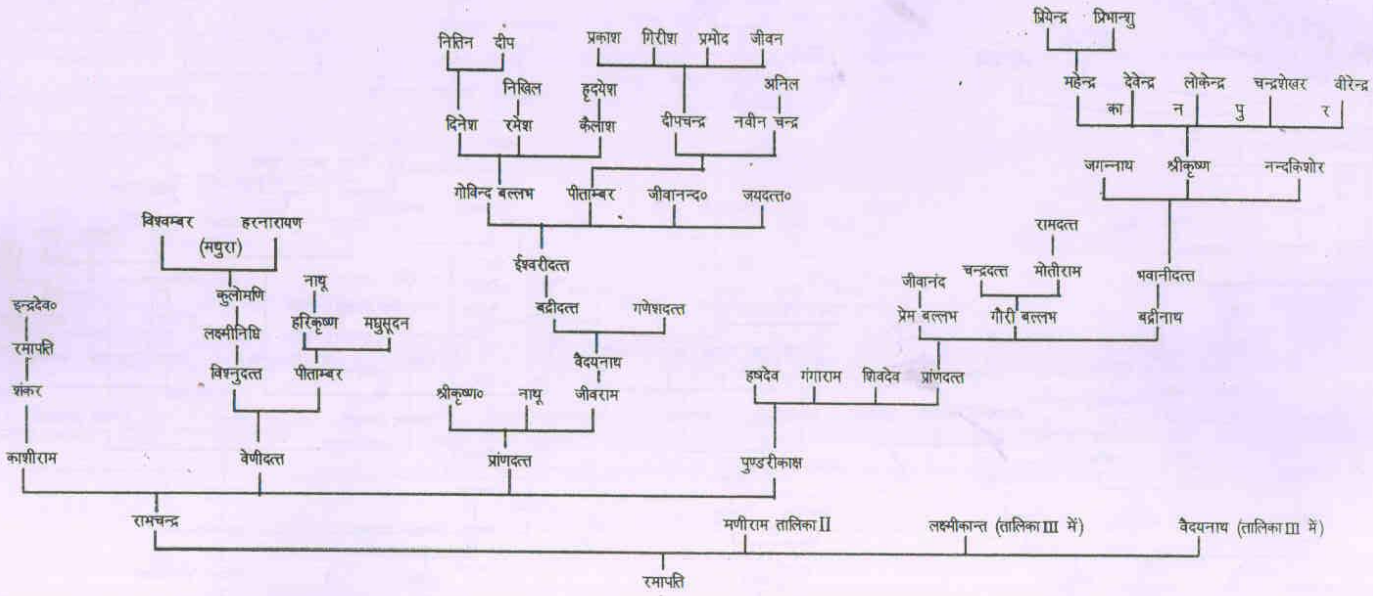

वांणीविलास - १४वीं पीढ़ी से आगे।

ग्राम मलेरा –
बांणीविलास (मणिराम) तथा (रामानन्द) की शाखा
तालिका II

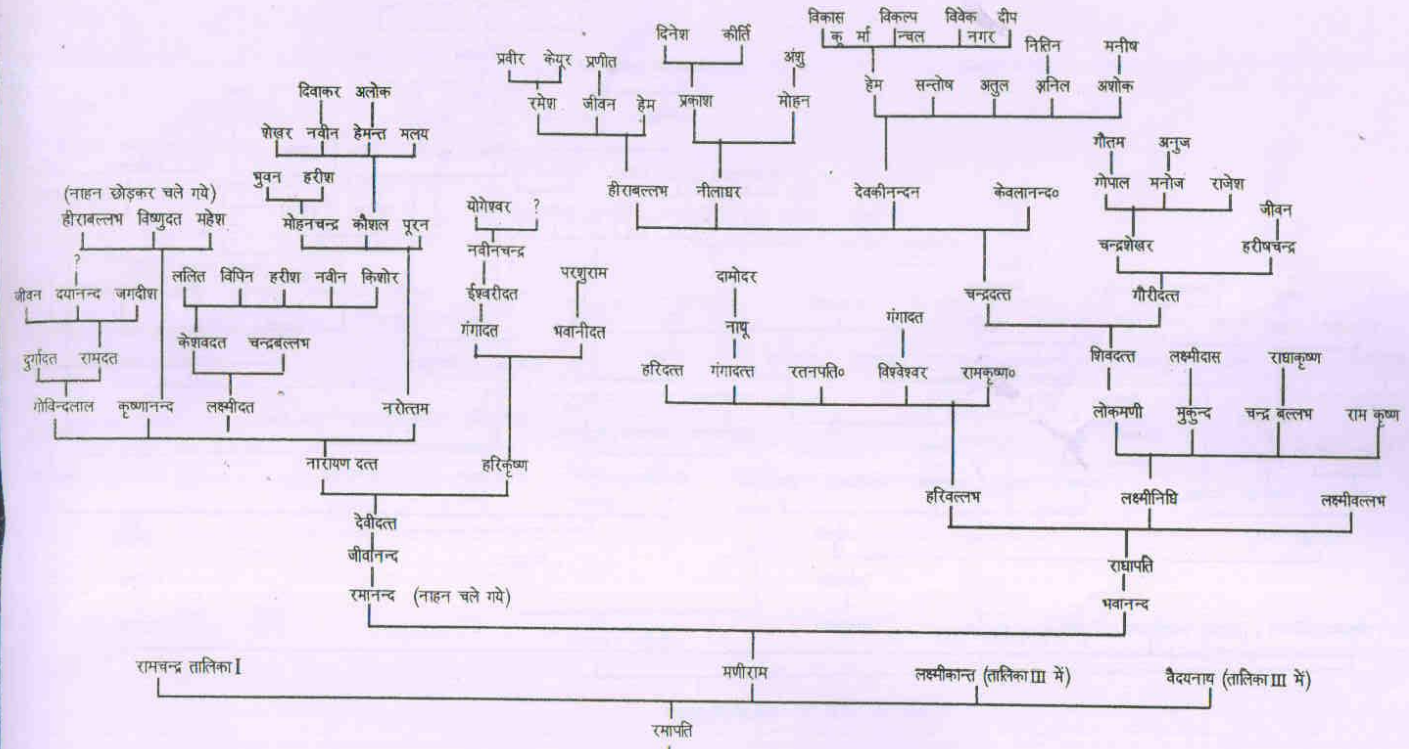

वांणीविलास – १४वीं पीढ़ी से आगे।

ग्राम मलेरा –

बाणीविलास (लक्ष्मीकान्त और वैदयनाथ) की शाखा

तालिका III

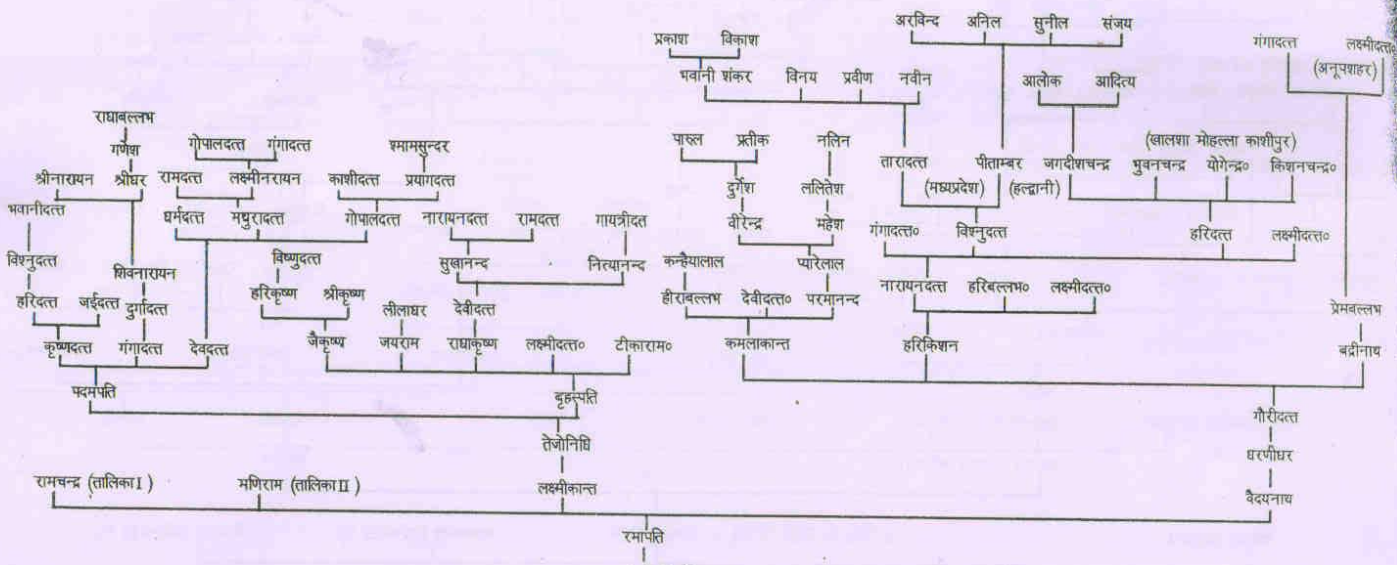

ग्राम - ज्योली एवं ठाकुरद्वारा -

पदमपति (पीताम्बर ज्योली/गौरीपति ठाकुरद्वारा) की शाखा

तालिका I

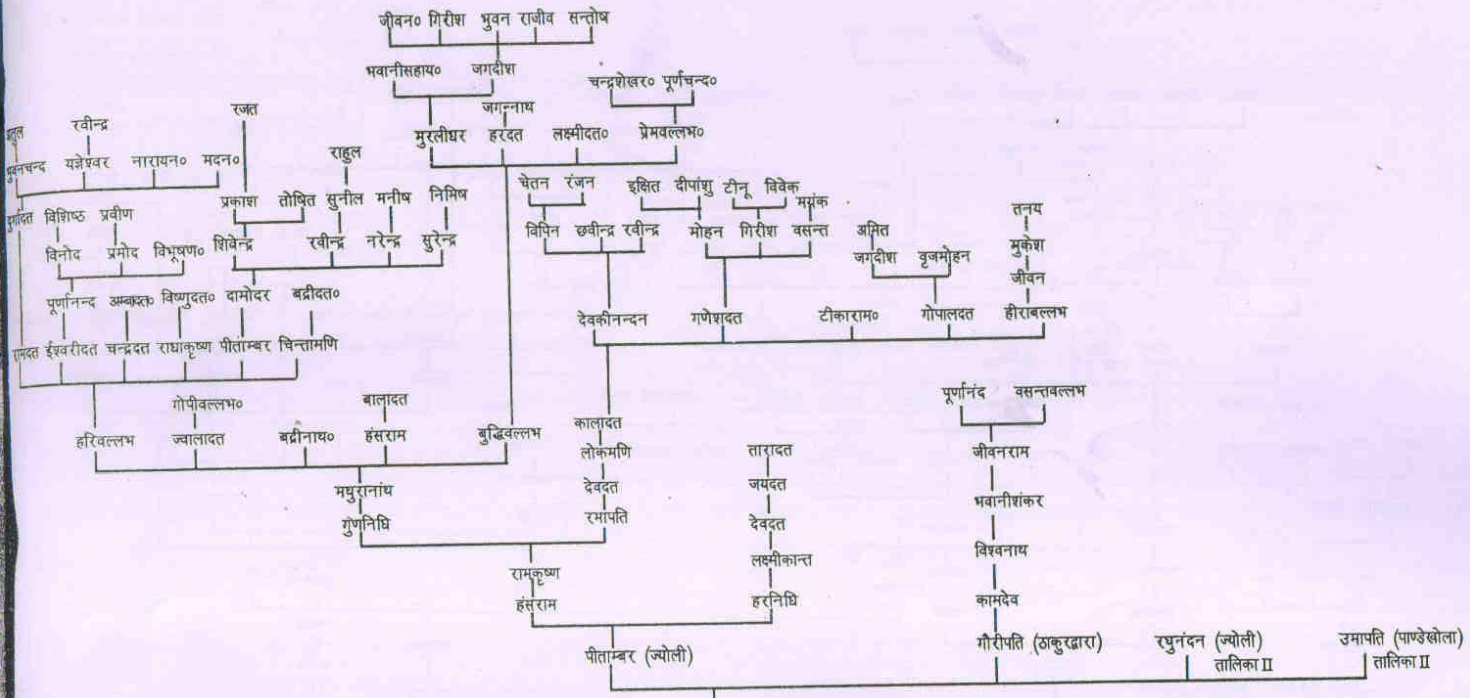

पदमापति-१४ वीं पीढ़ी से आगे।

ग्राम-ज्योली-पाण्डेखोला, अल्मोड़ा -
पदमपति (रघुनन्दन ज्योली/उमापति पाण्डेखोला) की शाखा
तालिका II

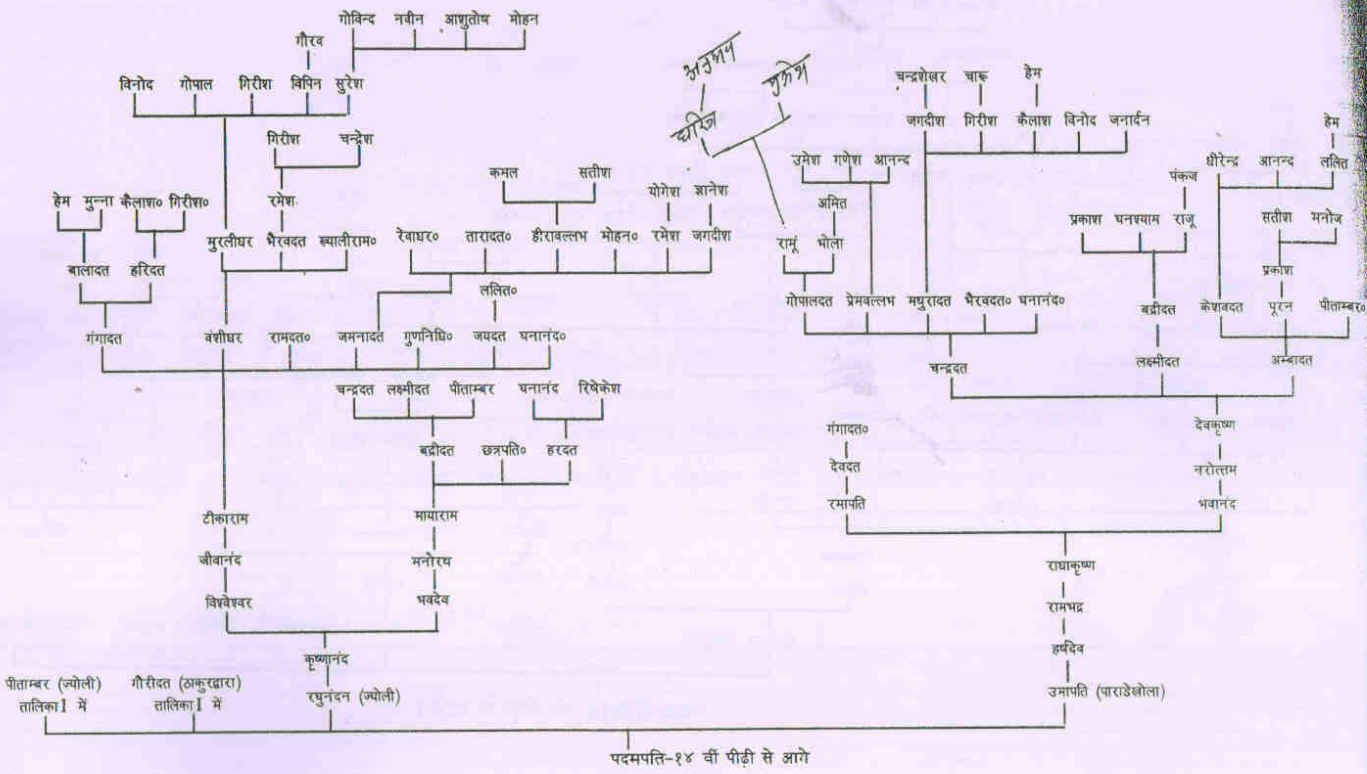

ग्राम - मलेरा -

वृहस्पति (कामदेव व विश्वरूप) की शाखा

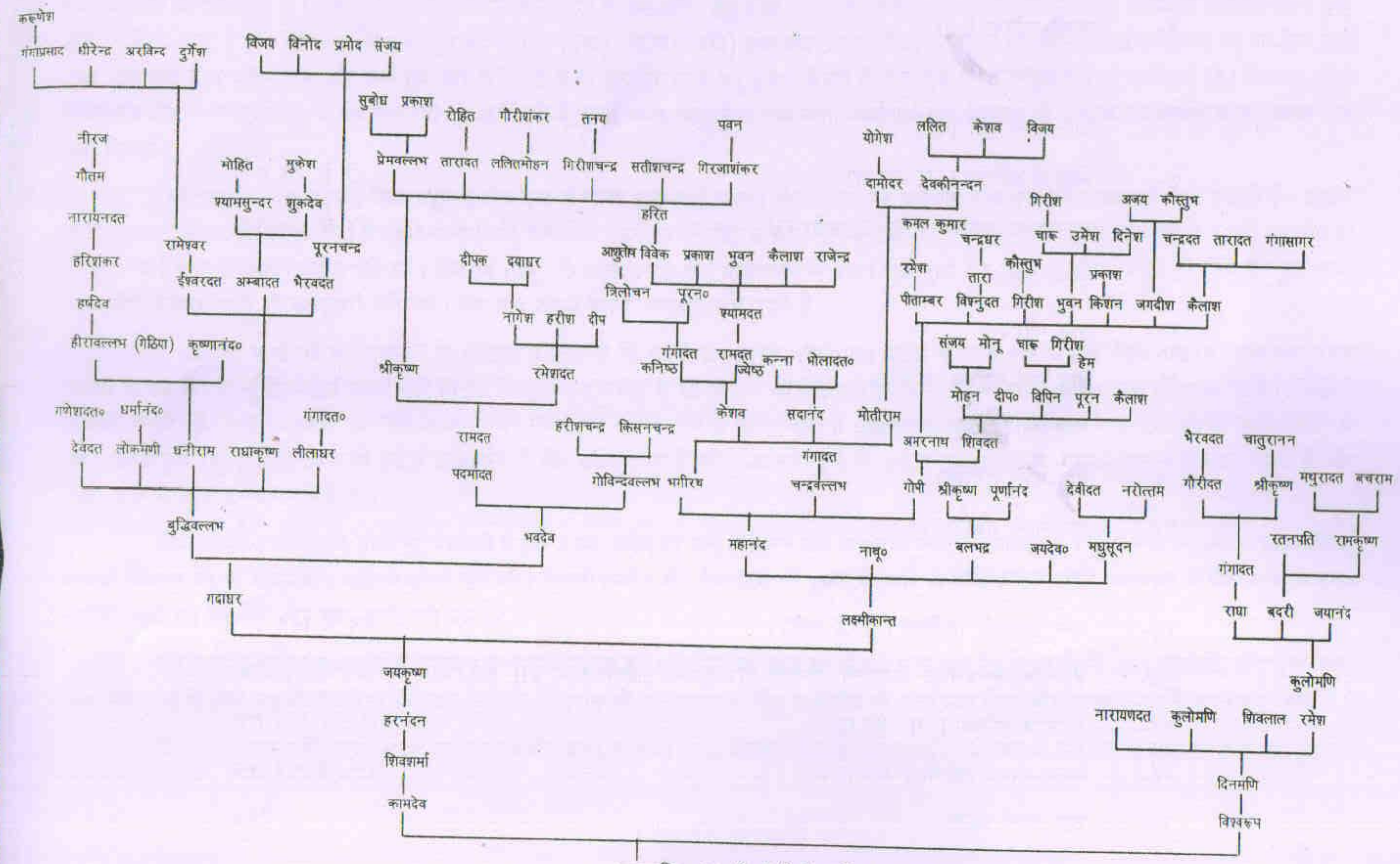

वृहस्पति- १४ वीं पीढ़ी से आगे।

भाग–४ (भौदास पन्त)

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ संख्या
१-	भवदास (भौदास) पन्तों का विवरण तथा विभिन्न ग्रामों में बसना।	७१ से ७४ तक
२-	विभिन्न ग्रामों की सूची	७५
३-	पाली थर्प।	७६
४-	काण्डे-तालिका I, II।	७७ से ७८ तक
५-	ग्राम बुडेरा।	७९
६-	ग्राम-सिमलकुड़ा (पाली)।	८०
७-	खितोली तालिका I, II और III।	८१ से ८३ तक
८-	स्यूनराकोट तालिका I, II, III और IV।	८४ से ८७ तक
९-	तल्ला गराऊं।	८८
१०-	ग्राम ग्वीर।	८९
११-	ग्राम बनां वीरभद्र की शाखा।	९०
१२-	ग्राम बनां इन्द्रदेव की शाखा।	९१
१३-	ग्राम पाली (चिल्ल)।	९२
१४-	ग्राम पाली (बिष्टौड़)।	९३
१५-	ग्राम मल्ला छीना।	९४
१६-	ग्राम खान्तोली (तालिका I से X तक)।	९५ से १०४ तक
१७-	ग्राम ढनौली, बनोली, दिगतोली, पिनारी और हपलेत तालिका I से VII तक।	१०५ से १११ तक
१८-	भटीगांव तालिका I, II और III।	११२ से ११४ तक
१९-	मल्ला-गराऊं तालिका I और II।	११५ से ११६ तक
२०-	ग्राम तल्ला छीनां।	११७

भाग-४ (भवदास ज्यूराठ)

पं. शिवदेव जी के चार पुत्रों में शम्भूदेव तीसरे थे। इनके पुत्र धर्मदास और धर्मदास के भवदास हुये। ये आगे भौदास पन्त कहलाये। भौदास जी तत्कालीन राजा के प्रधान सेनापति रहे। इस राठ में आगे भी यही परम्परा रही समय-समय पर वीर सेनानी पैदा हुये। सेना के विभिन्न पदों पर कार्यरत रहे। अन्य राठों की तरह यह राठ भी निरमांसी थे। लड़ाई की विभिन्न परिस्थितियों तथा बलिष्ठ शरीर हेतु मांस भक्षण आवश्यकीय था। अतः राजा ने अन्य भाइयों से परामर्श लेकर इन्हें मांस खाने की आज्ञा दे दी। भौदास जी के तीन पुत्र हुये गजाधर (गुजा), गदाधर (गदा) तथा जयन्त दत (जैंता) अभी तक लोकोक्ति प्रसिद्ध है भौदास ज्यू का तीन चेला गुजा, गदा तथा जैंता; गजाधर के हरि शर्मा हुये और हरि शर्मा के दो पुत्र श्रीराम व बसु हुये। श्रीराम के पांच पुत्र (१) पुरुषोत्तम, (२) भागीरथ, (३) विदराम, (४) माधवानंद और (५) मार्गशीर्ष। ये इस प्रकार से भी जाने जाते हैं, पुर्खी, भगी, विदु, मघी तथा मगी। मार्गशीर्ष और विदराम निःसन्तान रहे क्योंकि इनकी शाखा आगे नहीं मिलती।

पुरुषोत्तम के तीन लड़कों, मित्र, प्रद्युम्न, और इन्द्र में शाखा प्रद्युम्न से चली। मित्र नेपाल को चले गये और इन्द्र की शाखा बढ़ी नहीं मिलती है। प्रद्युम्न के तीन लड़कों में लक्ष्मण के पुत्र भवानी शंकर पाली (थर्प) चले गये। दूसरे रुद्र की कोई सन्तान नहीं हुयी और तीसरे भाई शंकर की सन्तान काण्डे में रही। पुरुषोत्तम के दूसरे भाई भगीरथ (भगी) बुडेरा चले गये। विदराम (विदु) निःसन्तान रहे और माधवानंद के वंशज कुछ पुश्त तक एक-एक ही रहे। २१ वीं पीढ़ी में राधा काण्डे की जमीन बेचकर पाली (सिमलकुड़ा) चले गये। अब आगे उनके वंशज सिमलकुड़ा में रहते हैं।

पं. बद्रीदत्त पाण्डे जी ने "कुमायूं" के इतिहास में लिखा है कि पुरुषोत्तम (पुरुष पन्त) ग्राम गराऊं के रहने वाले थे उन्हें मिले ताम्रपत्र अभी तक उनके वंशजों के पास हैं। किन्तु ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिलता कि पुरुषपन्त गराऊं में रहे और न कोई ताम्रपत्र ही मिला। ग्राम उप्राड़ा के पास एक छोटा सा "टीला" (छोटी समतल पहाड़ी) है, जिसे पुरुषपन्त का "घाम तापा" (धूप सेंकने का स्थल) नाम से जाना जाता है, इससे प्रतीत होता है कि पुरुष पन्त ग्राम छीना (मल्लाकोट) ही रहे। उनके पुत्र प्रद्युम्न ग्राम कान्डे जो गराऊं से लगभग दो मील की दूरी पर है बसे। यह सम्भव है कि उस समय पूरा इलाका गराऊं नाम से ही जाना जाता हो और पुरुष पन्त भी कुछ समय वहां बसे हों।

भौदास तथा उनके लड़के वीर तथा पराक्रमी थे अतः समय-समय पर उन्हें विभिन्न गांव दान तथा जागीर में मिलते रहे। पुरुष पन्त के अन्य भाइयों भगीरथ, माधव, विदराम को भी गांव मिले। भगीरथ बुडेरा चले गये। पिनारी हपलेत और दिगतौली भी कान्डे के पन्तों के गांव थे जो उन्होंने कालान्तर में जैंता पन्त के वंशज ढ़नौली वालों को बेच दिये और स्वयं पाली चले गये।

हरि शर्मा के दूसरे पुत्र वासुदेव से वशुपन्त के नाम से प्रसिद्ध हुये। वशुपन्त को राजा की ओर से तीन गांव (१) तल्ला गराऊं, (२) खितोली, और बना मिले। अतः वशु पन्त के तीन लड़कों में हरिहर को ग्राम खितोली, शिवराम को तल्ला गराऊं और मार्कण्डेय को बना ग्राम मिला और इनकी सन्तानें तदनुसार रहती हैं।

शिवराम की शाखा में, उनके लड़के बलराम हुये और बलराम के दो लड़के वीरभद्र और गोपीवल्लभ हुये। वीरभद्र का एक लड़का बृहस्पति हुआ और बृहस्पति

के तीन लड़के (१) कृष्णदेव, (२) हरिहर और (३) बलभद्र हुये। कृष्णदेव को स्यूनराकोट के राजा ने बक्शी का पद दिया और स्यूनराकोट गांव रहने को दिया। उन्होंने अपने साथ के लिये अपने भाई हरिहर को भी बुला लिया। कुछ समय पश्चात् हरिहर वापस गराऊं चले गये और दुबारा स्यूनराकोट आ गये और अपने साथ बलभद्र के दो पुत्र रामचन्द्र और प्राणनाथ को भी ले आये। बलभद्र का तीसरा पुत्र भानदेव गराऊं में ही रह गया। एक पीढ़ी बाद भानदेव का लड़का जैजैदेव भी स्यूनराकोट चला गया। गोपीवल्लभ का एक पुत्र लक्ष्मीपति गराऊं ही रहा और दूसरा चिन्तामणि ग्वीर चले गये।

भवदास के दूसरे पुत्र गदाधर के तीन लड़के हुये गोपीज्यू, जौलज्यू, और हरज्यू। वे उप्राड़ा में अपने मूल स्थान तोक, गोठयोंणी से खानतोली चले गये। गोपीज्यू के तीन लड़कों में कृष्णाकर छीना ग्राम में ही रहे और नरोत्तम व गणपति खान्तोली चले गये। अन्य भाई जौलज्यू तथा हरज्यू भी खानतोली रहने लगे। छीना ग्राम में कृष्णानंद (कृष्णाकर) का शितिकण्ठ, शितिकण्ठ का रामदेव हुये रामदेव के तीन लड़कों में रमापति पाली (चिल्ल) चले गये। रघुपति पाली (विष्टोड़ा) चले गये और तीसरे बल्लभ मल्लाछीना में ही रहे।

भवदास जी के तीसरे पुत्र जयन्तदत्त 'जैंता' के नाम से भी जाने जाते हैं। जैंता के पन्त के तीन लड़के हुये हरिहर, रुद्रदत्त और विष्णु। जैंता पन्त भी राजा की सेना में सेनानायक एवं वीर सेनानी हुये उन्हें भी राजा ने ग्राम ढनौली, भटीगांव और मल्ला गराऊं जागीर में दिये। हरिहर के तीन पुत्रों में ब्रह्मदास और महादेव ढ़नौली में रहने लगे। कालान्तर में इनकी सन्तानें, बनोली, पिनारी, हपलेत एवं दिगतोली में फैल गये। भगीरथ को भटीगांव मिला। इनके वंशज अब भटीगांव में रहते हैं। जैंता पन्त के दूसरे पुत्र रुद्रदत्त मल्ला गराऊं चले गये और तीसरे लड़के विष्णु तल्लाछीना में ही रहे। पहले मणिकोटराज में बाद में चन्द्र शासनकाल में, भौदास पन्त लोग सेना में प्रतिष्ठित पदों पर रहते आये। राजाओं का राज्य बढ़ाया, प्रतिष्ठा पाई और समय-समय पर जागीर तथा रौत में ग्राम मिलते रहे (रौत उस जागीर को कहते हैं जो किसी विशिष्ट वीरता के लिये प्रदान की जाती थी)। इस शाखा में पुरुषोत्तम (पुरुष पन्त) जैसे वीर सेनापति, सुमित्रानंदन जैसे महान छायावादी कवि पैदा हुये हैं। इन्होंने पन्त परिवार को ही नहीं अपितु समस्त कूर्मांचल को गौरवान्वित किया। इसके अलावा छोटे-छोटे कवि भी समय-समय पर हुये और होते रहे हैं। अपनी आजीविका की ओर ध्यान केन्द्रित होने से प्रकाश में नहीं आये। इनमें स्यूनराकोट के श्री भोलादत्त पन्त "भोला" भटीगांव के श्रीकृष्ण पन्त "बचीराम" जी का नाम उल्लेखनीय है।

करौत प्रकरण

जैसा कि पहले लिखा जा चुका है कि मणिकोटी राज्यकाल से ही पन्तों और उप्रेतियों में आपसी वैमनस्य था, धीरे-धीरे यह बढ़ता चला गया। राजा दिलीपचन्द ने सन् १६२१ से सन् १६२४ तक कुल तीन वर्ष राज्य किया। कहावत है कि एक उप्रेती तीर्थ यात्रा को गया। वह सारे भारतवर्ष के प्रमुख तीर्थों का भ्रमण करता हुआ प्रयागराज पहुंचा, जहां वह करवट (करौत) लेकर मरा। यह विश्वास किया जाता था कि प्रयागराज या काशी में करौत लेकर मरने वाले की मनोभिलाषा पूर्ण हो जाती है। (वृक्ष से कूदकर या गंगा में डूबकर आत्महत्या को करौत या करवट लेना कहते हैं) यह कहा जाता है कि उस उप्रेती की मरते समय यह मनोकामना रही हो कि वह अगले जन्म में वह पन्तों को सताने वाला तथा उनसे बदला लेने वाला पैदा हो। राजा दिलीपचन्द ने गद्दी पर बैठते ही पन्तों पर जुल्म करना शुरू कर दिया अतः पन्त लोगों ने समझा कि करौत लेने वाला उप्रेती राजा दिलीपचन्द के रूप में जन्मा है क्योंकि उसने अकारण ही पन्तों को परेशान करना शुरू कर दिया। यहां तक

कि पन्तों के नेता जैंता पन्त को उप्रेतियों से लड़ाई-झगड़े के झूठे आरोप लगवाकर अपने सामने मरवा कर मल्ला महल के पश्चिम में उल्का देवी के मन्दिर में फुंकवा दिया। उस समय चन्द राजाओं का महल अल्मोड़ा वर्तमान कैन्टोनमेन्ट एरिया में था। चिता का धुआं राजा को विष की तरह लगा और वह बेचैन होकर क्षय की बीमारी से सातवें रोज मर गया। "बिना बांस को डालो नै, बिना पन्त को को चालो नै" बिना बांस के डलिया नहीं बनती और बिना पन्तों के चाला (षड्यन्त्र) नहीं हो सकता। उप्रेतियों का बनाया ऐसा किस्सा आज तक प्रचलित है।

अन्धे शक्ति सिंह उच्च कोटि के प्रशासक एवं सुधारवादी

राजा लक्ष्मीचन्द (१५९७-१६२९) गद्दी पर बैठे। उनके बड़े भाई शक्ति सिंह अन्धे होने के कारण राजा तो नहीं बने किन्तु उन्होंने राज्य प्रशासन, सुधार, प्रसार, भूमि बन्दोबस्त आदि में कई सुधार के नियम बनाये। जिनमें सिपाहियों को कटक यानी सेना में भर्ती करने का भी नियम था। वीर सैनिक तथा वृद्ध सैनिकों को वेतन व पेंशन के बदले जमीन दी गयी। जिस समय शत्रु आक्रमण करता था, उस समय वे जमीन कमाने वाले 'कटक' (रिजर्भिष्ट) बुलाये जाते थे। उन्हें ताम्रपत्र में सनदें दी जाती थीं जिसमें राजा के हस्ताक्षर तो नहीं होते थे बल्कि बदले में कटार बना दी जाती थीं। अत: वे कटारदार या कटार वाले कहलाये जो कालान्तर में कटरिये नाम से जाने जाते रहे जो वीरों के लिये एक सम्मानित सम्बोधन था।

"पुरुषपन्त"

भवदास की शाखा में समय-समय पर वीर सेनापतियों, कवियों व संगीतज्ञों ने जन्म लिया। स्वयं भवदास जी प्रधान सेनापति रहे। इनके प्रपौत्र श्रीराम के घर में पुरुषपन्त का जन्म शाके १४७३ सन् १५५१ में हुआ। इनका नाम पुरुषोत्तम था लेकिन ये "पुरुषपन्त" के नाम से प्रसिद्ध हुये। ये एक वीर सेनापति थे। पं. नित्यानंद मिश्रा जी ने अपनी पुस्तक "कुर्मांचल गौरवगाथा" में पुरुषपन्त को कुमाऊं का "रोबर्ट ब्रूस" की संज्ञा दी है।

चन्द राजा बालोकल्याण चन्द ने गंगोली के अन्तिम मणिकोटी राजा नारायणचन्द को हराकर समस्त गंगोली प्रान्त अपने अधीन कर लिया। सोर पिथौरागढ़ का इलाका इनकी रानी को दहेज में मिला। वह पूर्वी रामगंगा के आसपास का इलाका जो सीराकोट के मल्ल राजाओं के अधीन था, को जीतना चाहते थे। किन्तु बार-बार आक्रमण करने पर भी असफल रहे और इसी इच्छा को मन में लेकर दिवंगत हो गये। इनके पुत्र राजा रूपचन्द सन् १६६० में गद्दी पर बैठे उन्होंने भी सीराकोट जीतने का सात बार प्रयास किया, किन्तु सफलता नहीं मिली। उनके मंत्रियों और दरबारियों ने सुझाव दिया कि गंगोली के पुरुषपन्त को सेना देकर सीराकोट विजय हेतु भेजा जाय। पुरुषपन्त विलक्षण प्रतिभा वाले योद्धा थे। पहले दो या तीन बार के आक्रमणों में वे असफल हो गये लेकिन अपनी मातामही जो विसराल गांव की थीं के सुझाव पर, किले को जाने वाली रसद व पानी के श्रोत बन्द कर, मल्ल योद्धाओं को कालीपार (डोटी) जाने के लिये विवश कर दिया और सीराकोट का पूरा इलाका चन्द राज्य में मिला दिया। इसके लगभग एक वर्ष पश्चात् पुरुषपन्त ने अपने भाइयों विदु, भगी, मघी, तथा अन्य शूरवीरों के साथ बधानगढ़ के राजा सुखलदेव को हराकर गोमती नदी की सुरम्य व उपजाऊ घाटी को चन्द राज्य में मिलाया। वापसी में पडयार लोगों ने सड़क में अवरोध डालकर धोखे से उन्हें मरवा दिया। यह स्थान अभी तक "गांग्वाल धत्कौंण" (गंगोली के वीरों का हत्यास्थल) नाम से जाना जाता है। उनकी मृत्यु सन् १५९३ में हुई। एक कहावत प्रसिद्ध है कि मरते समय पुरुषपन्त ने अपना खाँडा (एक प्रकार की तलवार) गंगोली की ओर फेंका, जहां यह खाँडा गिरा उस स्थान का नाम खांडतोली या खानतोली पड़ गया। यह कहावत कल्पित मालूम

पड़ती है, क्योंकि एक खांडे को लगभग १५/२० मील हाथ से फेंकना सम्भव प्रतीत नहीं होता, यद्यपि वर्तमान समय में मशीनों द्वारा बम व गोले बहुत दूरी तक फेंके जा सकते हैं किन्तु हाथ से नहीं। उस क्षेत्र के आसपास के गांवों के नाम बांसतोली, अयारतौली, धिंगारतोली आदि हैं। इसी प्रकार इस गांव का नाम भी खानतोली पड़ा होगा, अतः खाँडा गिरने से इसके नामकरण का कोई संबंध प्रतीत नहीं होता। पुरुषपन्त की वीरता शौर्य एवं पराक्रम से खुश होकर राजा ने उन्हें इनके भाइयों तथा अन्य सहयोगियों को गांव जमीन व जागीर रौत में प्रदान किये। भाद्रपद सुदी नवमी, शनिवार सन् १५८१ को जागेश्वर में जो ताम्रपत्र पुरुषपन्त को दिया गया उसका अर्थ कुछ इस प्रकार है।

अग्रेस राज विषये, विजयप्रदाय।
डोटीस दर्प दलनाय पराक्रमेक।
सिंहाय पंडितमणों, पुरुषोत्तमाय।
अग्रेज राज विजये, विजय प्रदाय।
मंत्रोपचार निपुणांच सदान्तुभाव।।

"राज्य के लिये भूमि को जीतने वाले, हमारे मंत्रियों में सबसे श्रेष्ठ; डोटी के राजा का मान मर्दन करने वाले शत्रु को परास्त करने वाले सिंह, सबसे विद्वान पुरुषोत्तम।''

कविवर श्री सुमित्रानंदन पन्त

इसी शाखा (राठ) में कविवर सुमित्रानंदन पन्त जी का नाम भी उल्लेखनीय है। इनका जन्म १९०० में कौसानी में हुआ। इनके पिता ग्राम स्यूनराकोट से आकर कौसानी में बस गये। इनका बचपन का नाम गुसाईंदत्त था, लेकिन ये सुमित्रानंदन नाम से ही प्रसिद्ध हैं। पन्त जी छायावादी कवि थे। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा कौसानी में हुई। उच्च शिक्षा, बनारस तथा इलाहाबाद से हुई। कुछ समय तक ये आकाशवाणी से सम्बद्ध रहे। रूपाभ और लोकायन पत्रों का सम्पादन एवं संचालन किया। गांधी जी के सानिध्य में, अरविन्द आश्रम में तथा कालाकांकर राज्य में भी रहे। इन्होंने कई काव्य ग्रन्थ लिखे जिनमें इनको 'चिदम्बरा' में ज्ञानपीठ पुरस्कार से 'लोकायन' में लेलिन पुरस्कार तथा अन्यांन्य कृतियों पर अनेक पुरुस्कार मिले। भारत सरकार ने इन्हें पदम्विभूषण की उपाधि से सम्मानित किया। चिरकुमार कविवर पन्त जी प्रयाग में निवास करते हुये स्वतंत्र रूप से लेखन कार्य करते रहे। २४ दिसम्बर १९७७ में इनकी मृत्यु हो गई।

पं. कविवर सुमित्रानंदन पंत के परम मित्र कविवर श्री हरिवंश राय बच्चन जी थे जिनके घर पुत्र रत्न प्राप्त हुआ इसका नामकरण अमिताभ पंत जी ने किया तथा आज जो भारत के श्रेष्ठ फिल्म कलाकार श्री अमिताभ बच्चन हैं। जिन्हें महानायक कहा गया है।

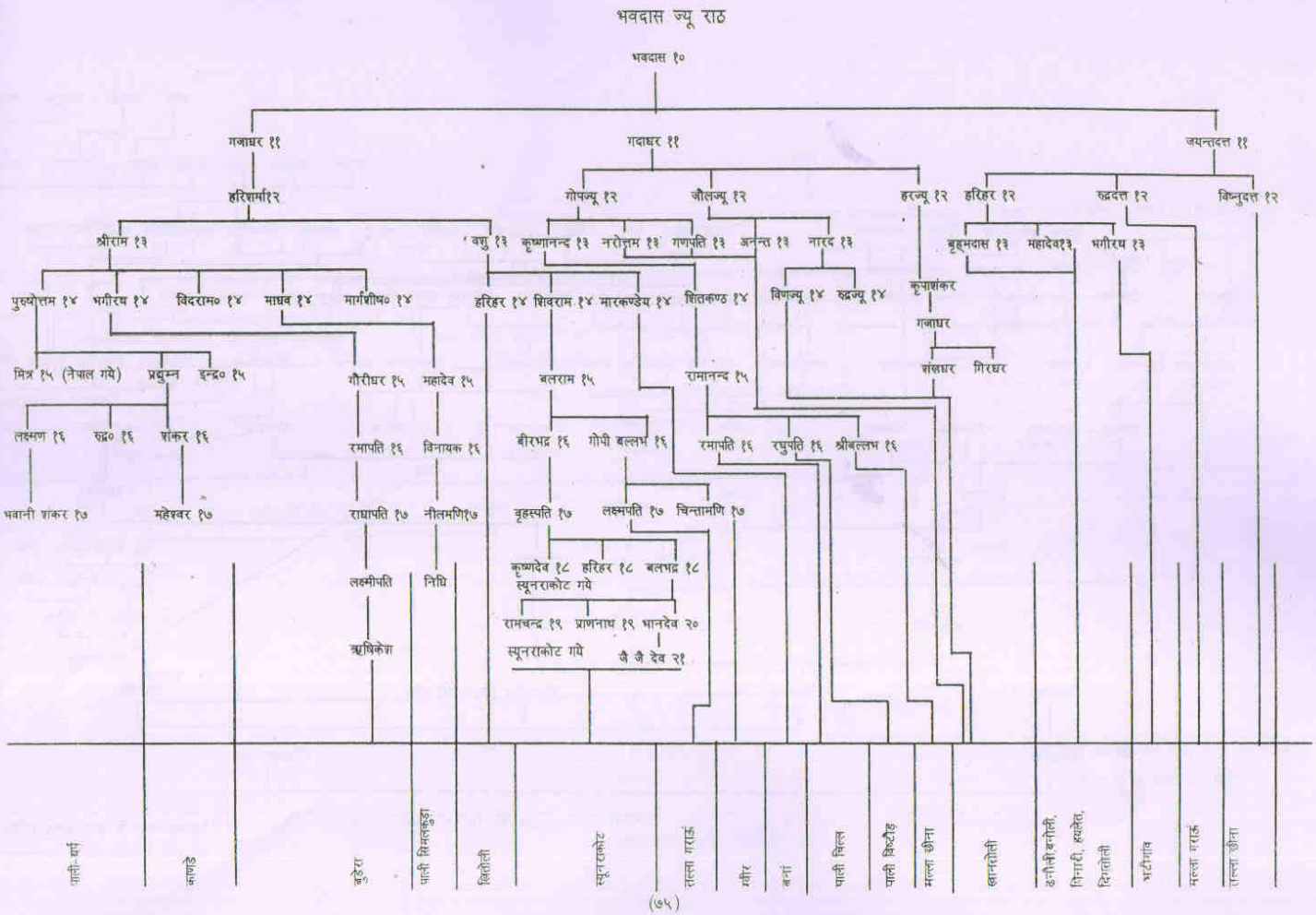

भवदास ज्यू राठ

भवदास १०
गजाधर ११
गदाधर ११
जयन्तदत्त ११
हरिशर्मा१२
गोपज्यू १२
जौलज्यू १२
हरज्यू १२
हरिहर १२
रुद्रदत्त १२
विष्णुदत्त १२
श्रीराम १३
वधु १३
कृष्णानन्द १३
नरोत्तम १३
गणपति १३
अनन्त १३
नारद १३
बृहमदास १३
महादेव१३
भगीरथ १३
पुरुषोत्तम १४
भगीरथ १४
विदराम० १४
माधव १४
मार्गशीष० १४
हरिहर १४
शिवराम १४
मारकण्डेय १४
शितकण्ठ १४
विणज्यू १४
रुद्रज्यू १४
कृपाशंकर
गजाधर
शंखधर
गिरधर
मित्र १५ (नेपाल गये)
प्रद्युम्न
इन्द्र० १५
गौरीधर १५
महादेव १५
बलराम १५
रामानन्द १५
लक्ष्मण १६
रुद्र० १६
शंकर १६
रमापति १६
विनायक १६
बीरभद्र १६
गोपी बल्लभ १६
रमापति १६
रघुपति १६
श्रीबल्लभ १६
भवानी शंकर १७
महेश्वर १७
राधापति १७
नीलमणि१७
वृहस्पति १७
लक्ष्मपति १७
चिन्तामणि १७
कृष्णदेव १८
हरिहर १८
बलभद्र १८
स्यूनराकोट गये
लक्ष्मीपति
निधि
रामचन्द्र १९
प्राणनाथ १९
भानदेव २०
ऋषिकेश
स्यूनराकोट गये
जै जै देव २१
पाली-थर्प
काण्डे
बुड़ेरा
पाली सिमलकुड़ा
छितोली
स्यूनराकोट
तल्ला गराऊं
गवीर
बनां
पाली चिल्ल
पाली बिष्टौड़
मल्ला छीना
खानतोली
ढनौली,बनोली,
निनारी, हयलेत,
दिगतोली
भटीगांव
मल्ला गराऊ
तल्ला छीना

ग्राम पाली (थर्प)

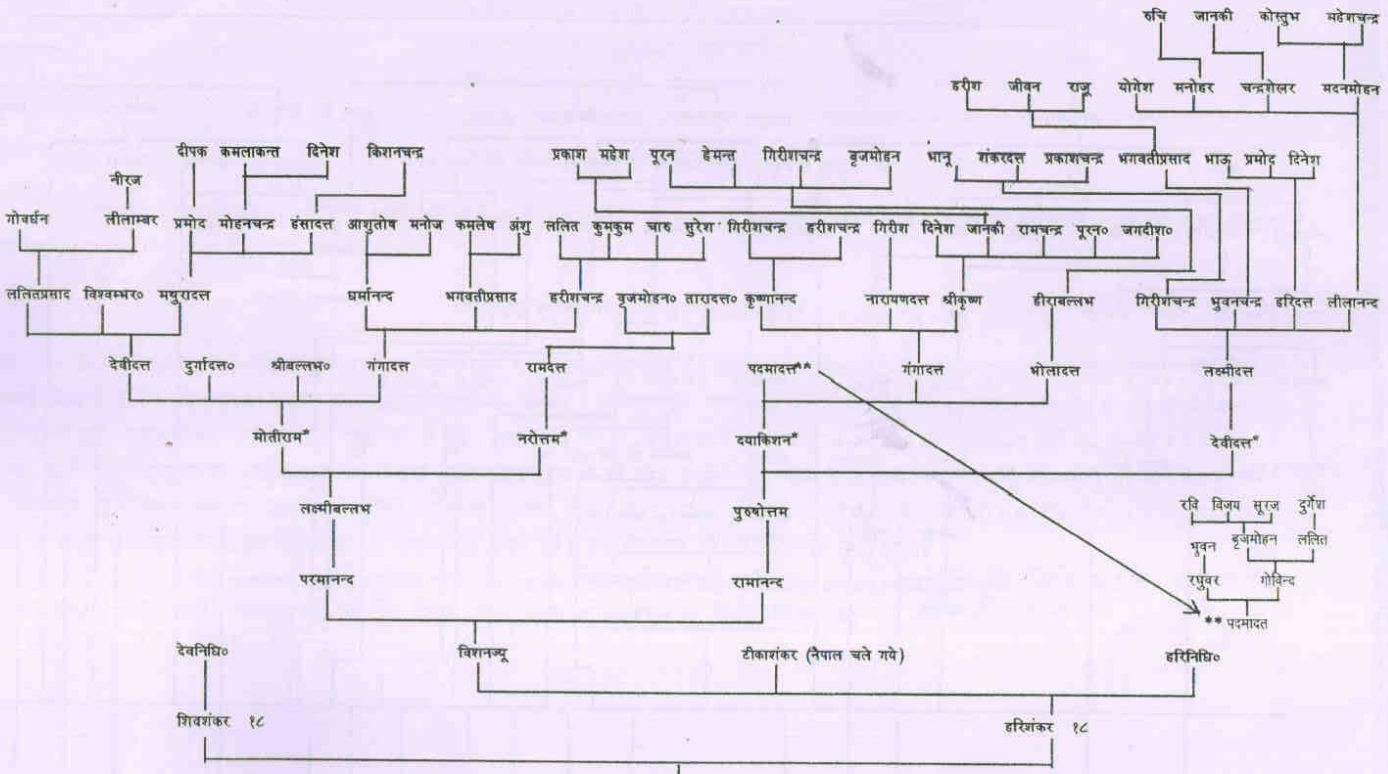

*कृपया यहां से आगे ज्येष्ठ कनिष्ठ क्रम को दायें से बायें पढ़ें।(←

ग्राम काण्डे-(तालिका I)

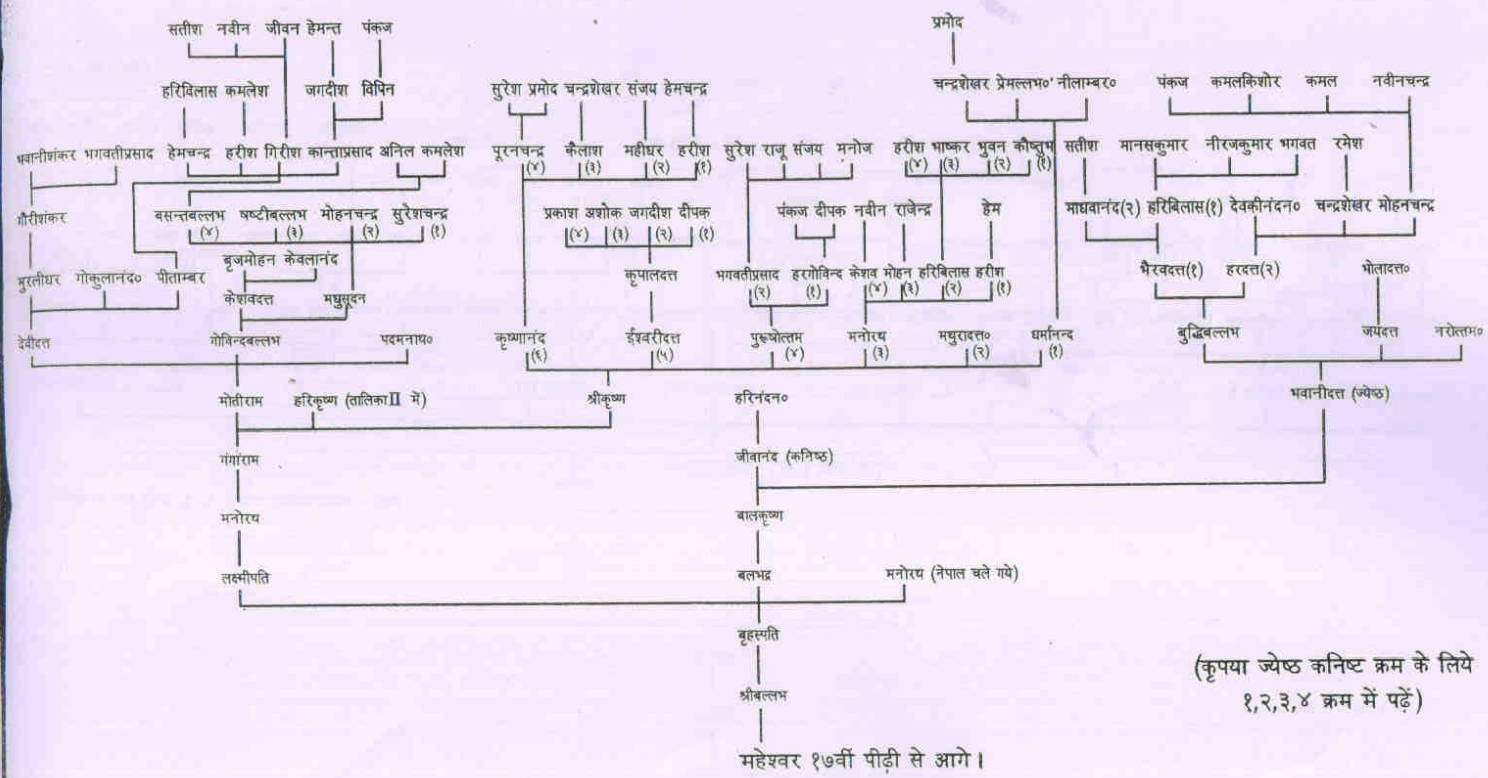

(कृपया ज्येष्ठ कनिष्ट क्रम के लिये १,२,३,४ क्रम में पढ़ें)

महेश्वर १७वीं पीढ़ी से आगे।

ग्राम काण्डे - (तालिका-II) हरिकृष्ण की शाखा

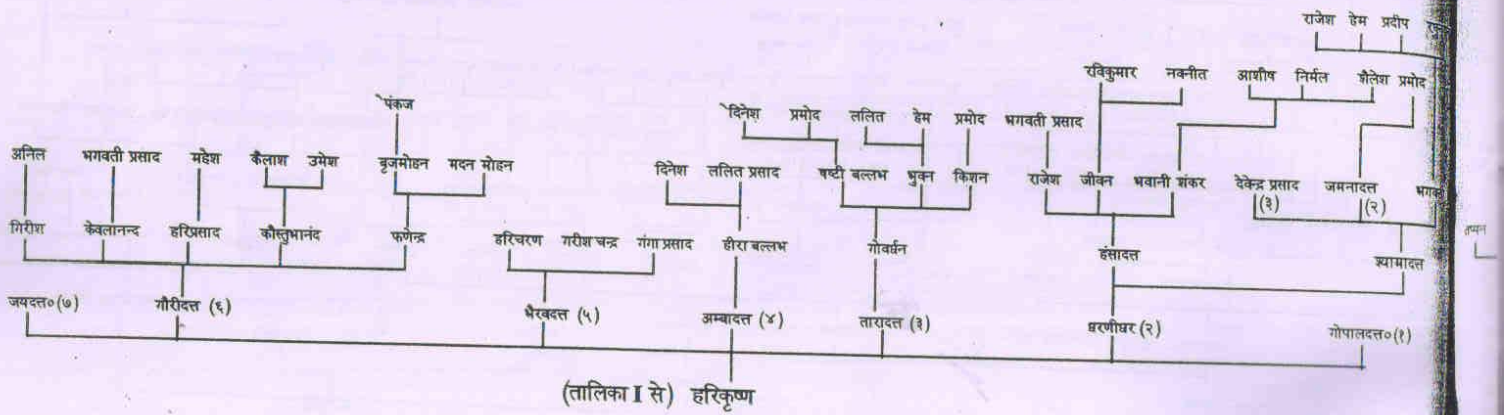

(तालिका I से) हरिकृष्ण

(नोट:- ज्येष्ठ कनिष्ट क्रम १, २, ३, ४ के क्रम में पढ़ें)

ग्राम बुडेरा

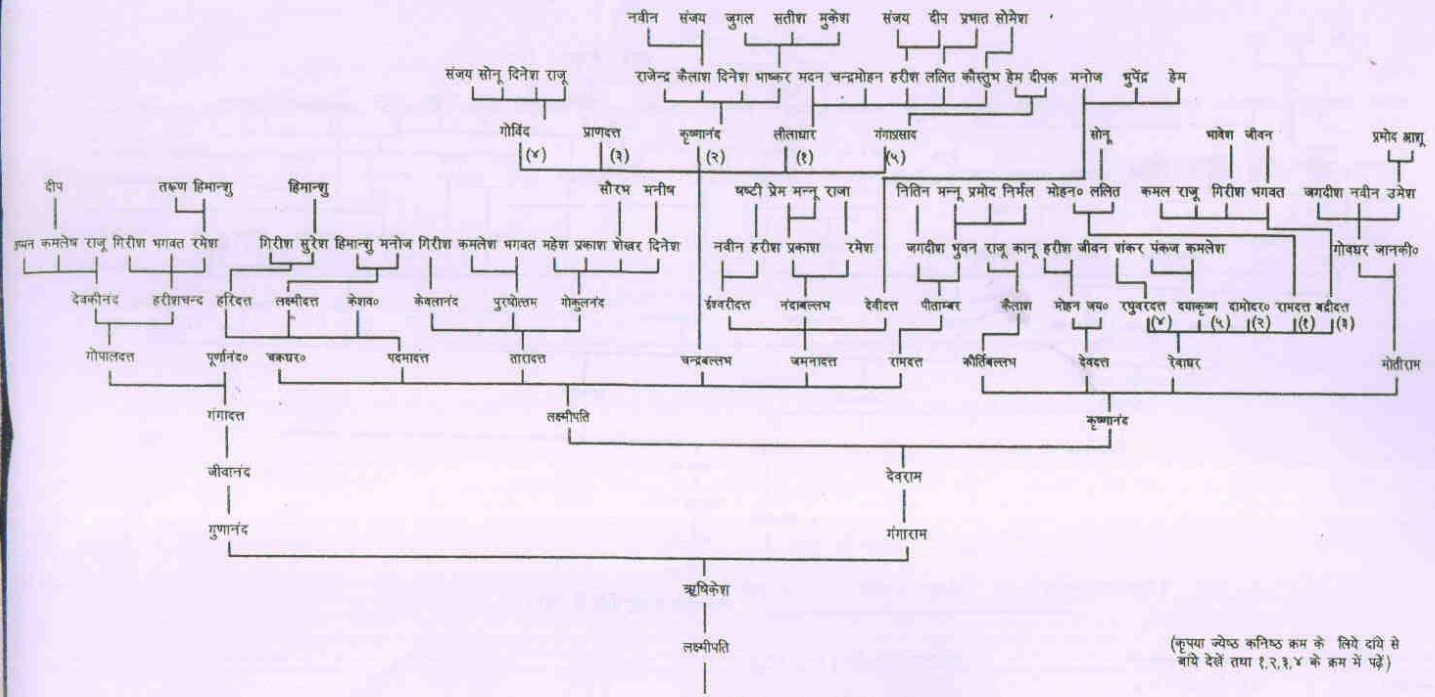

(कृपया ज्येष्ठ कनिष्ठ क्रम के लिये दांये से बांये देखें तथा १,२,३,४ के क्रम में पढ़ें)

राधापति-१७ वी पीढ़ी से आगे

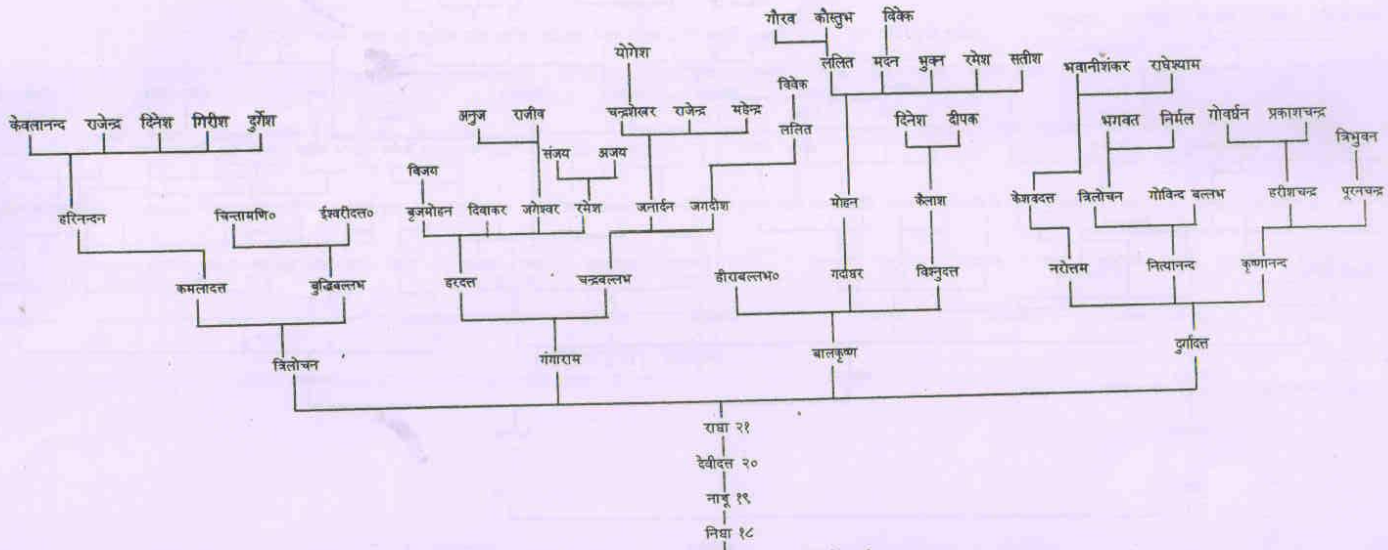

नीलमणि १७वीं पीढ़ी से आगे।

ग्राम खितोली – शाखा श्रीधर प्रशाखा शिवनिधि
(तालिका I)

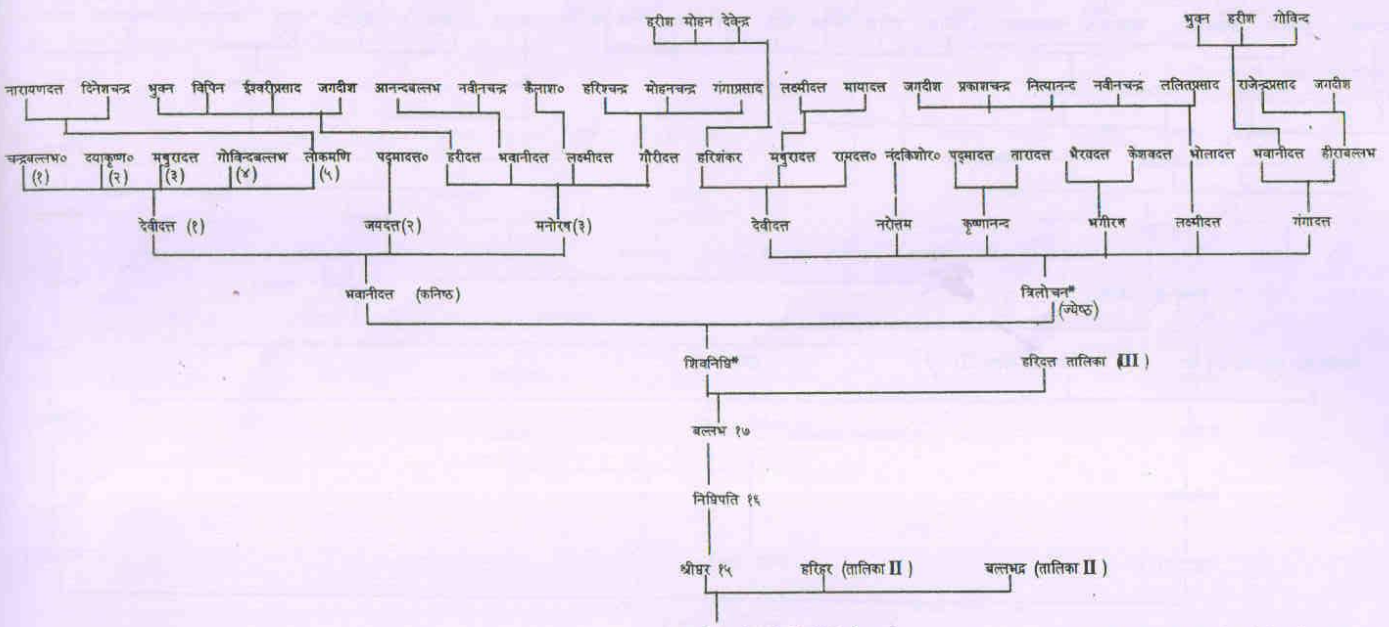

*ज्येष्ठ कनिष्ठ क्रम के लिये दाये से बांये तथा १, २, ३, ४ के क्रम में पढ़े। (←)

ग्राम खितोली – प्रशाखा – हरिहर और बलभद्र (तालिका II)

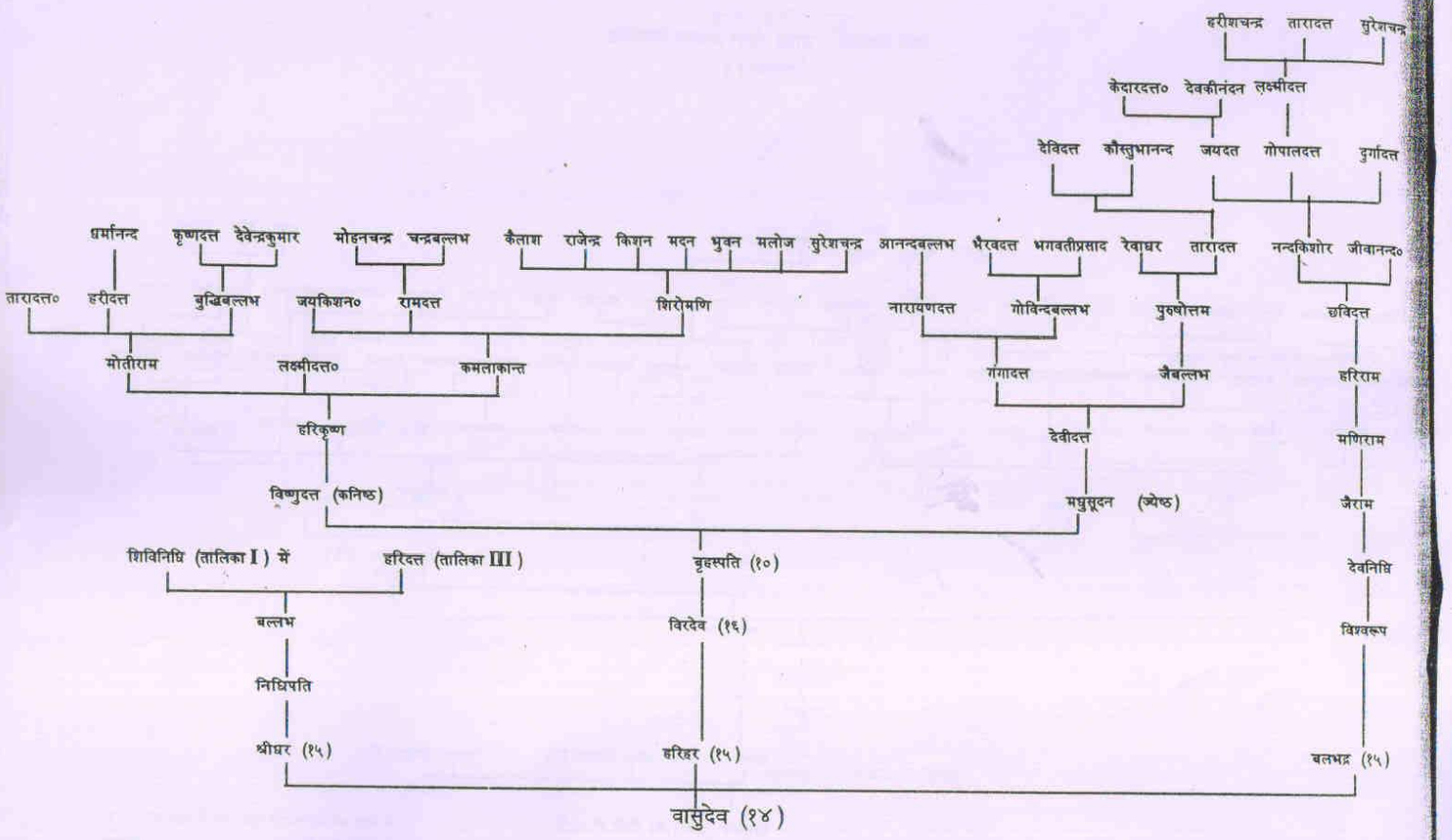

ग्राम खितोली - प्रशाखा - हरिदत्त (तालिका III)

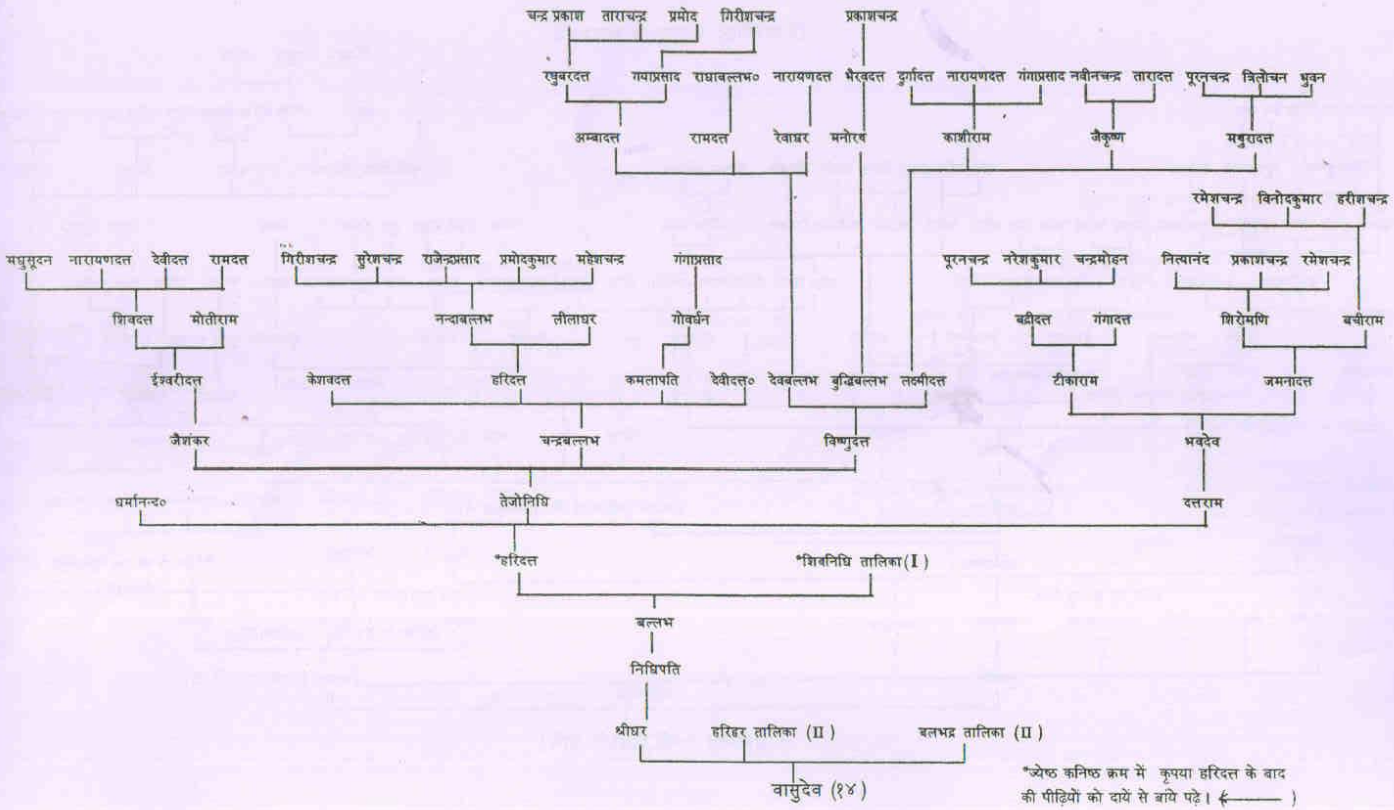

*ज्येष्ठ कनिष्ठ क्रम में कृपया हरिदत्त के बाद की पीढ़ियों को दायें से बाये पढ़े। (←——)

ग्राम स्यूनराकोट

कृष्णदेव की शाखा (तालिका I)

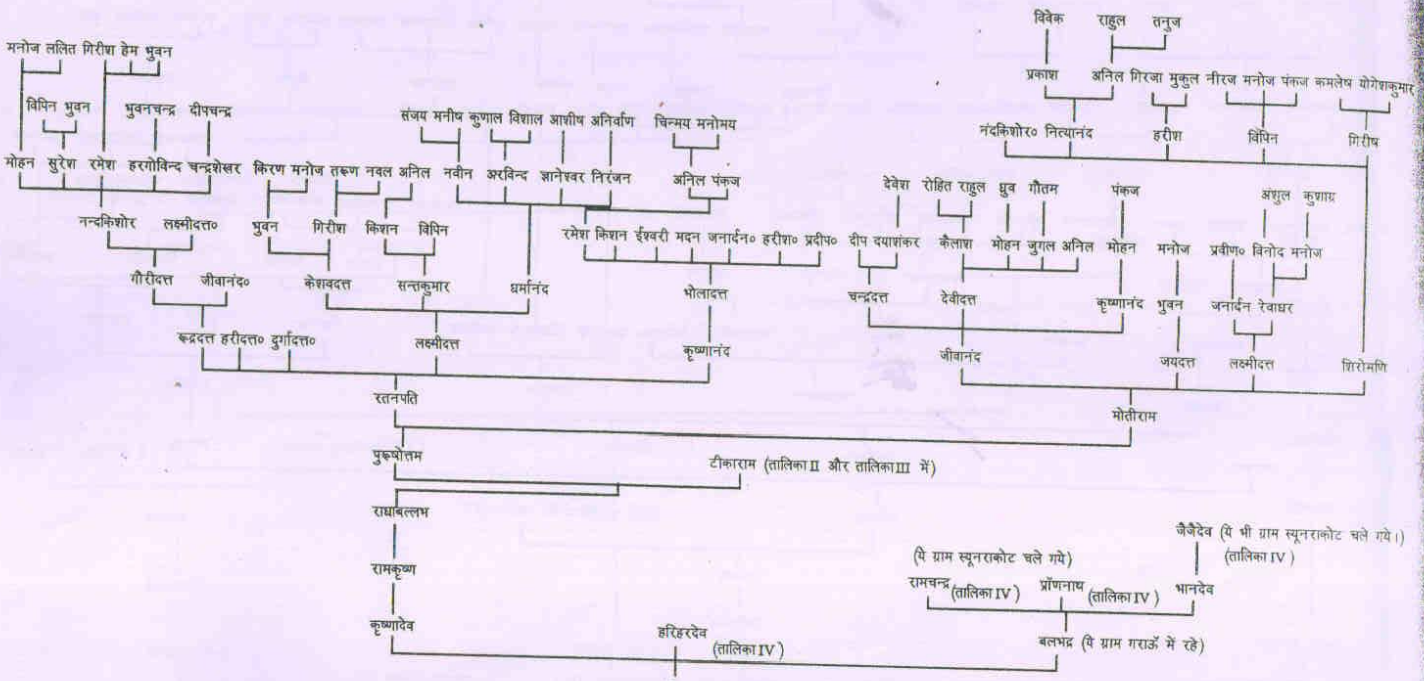

ग्राम स्यूनराकोट

टीकाराम की शाखा (तालिका II)

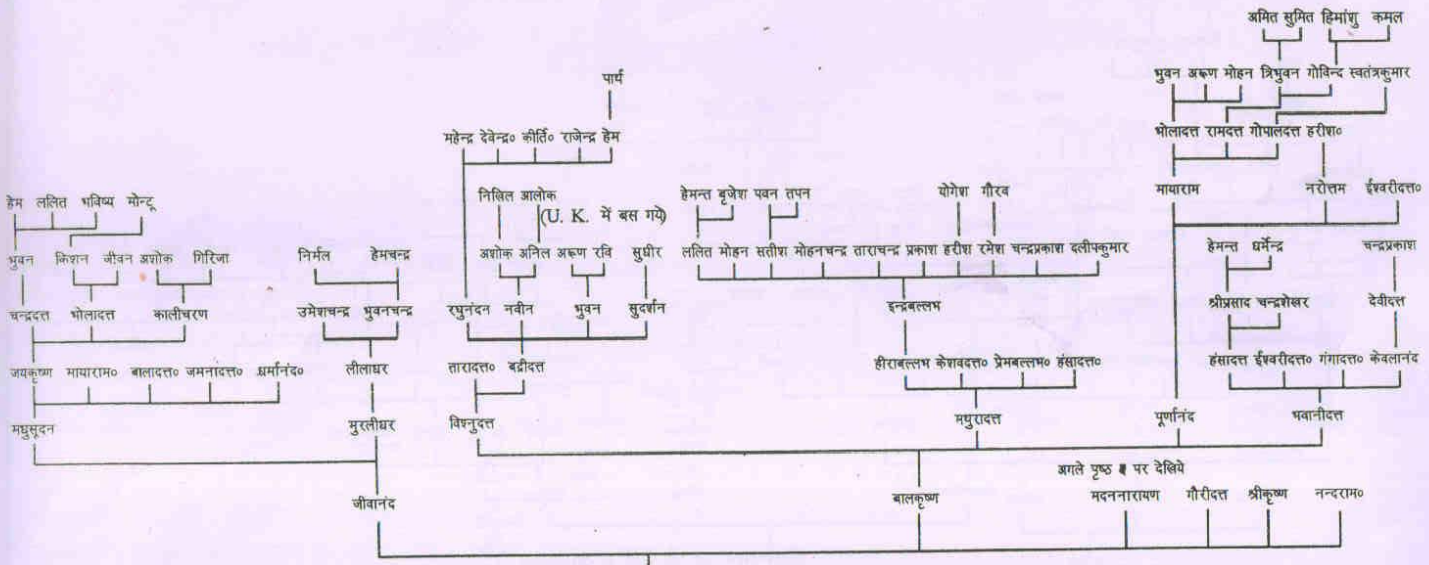

ग्राम - स्यूनराकोट - टीकाराम की शाखा

तालिका III

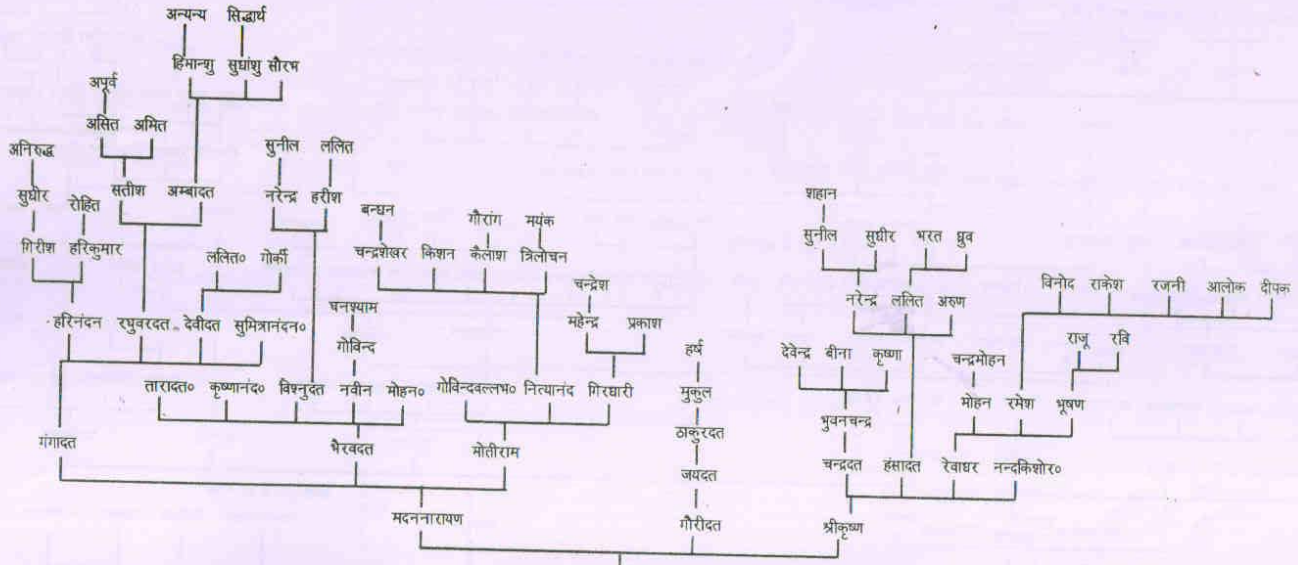

ग्राम - स्यूनराकोट - हरिहरदेव और बलभद्र की शाखा

तालिका IV

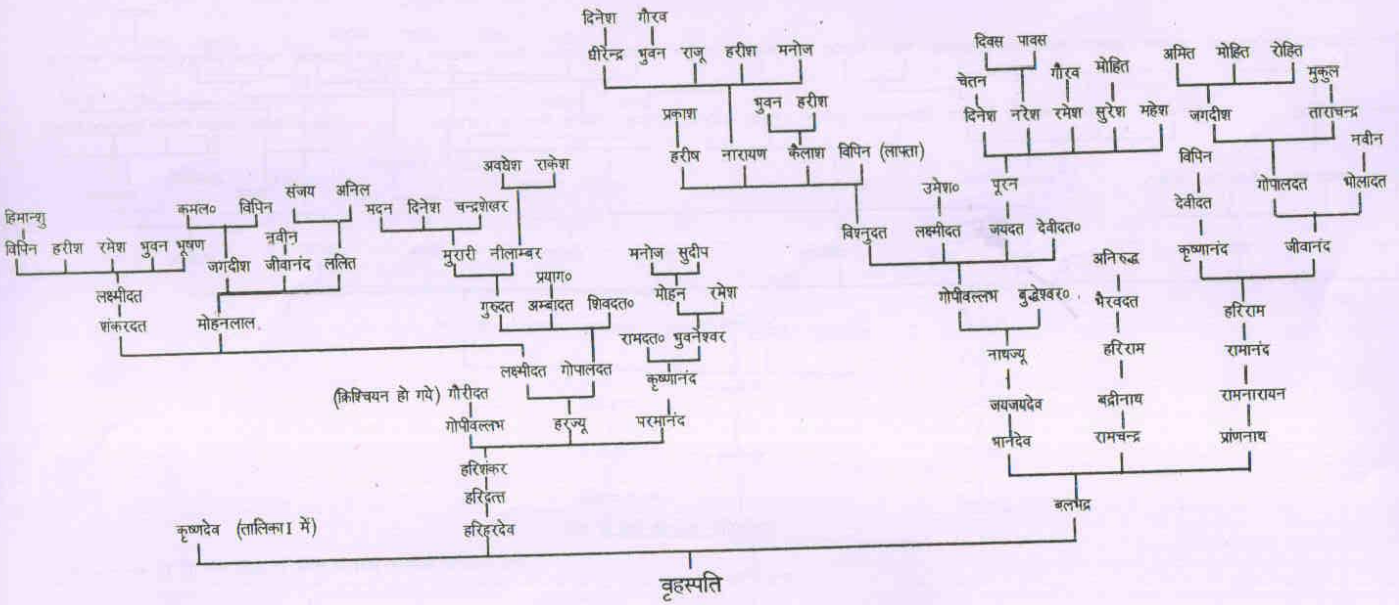

ग्राम तल्ला गराऊं -

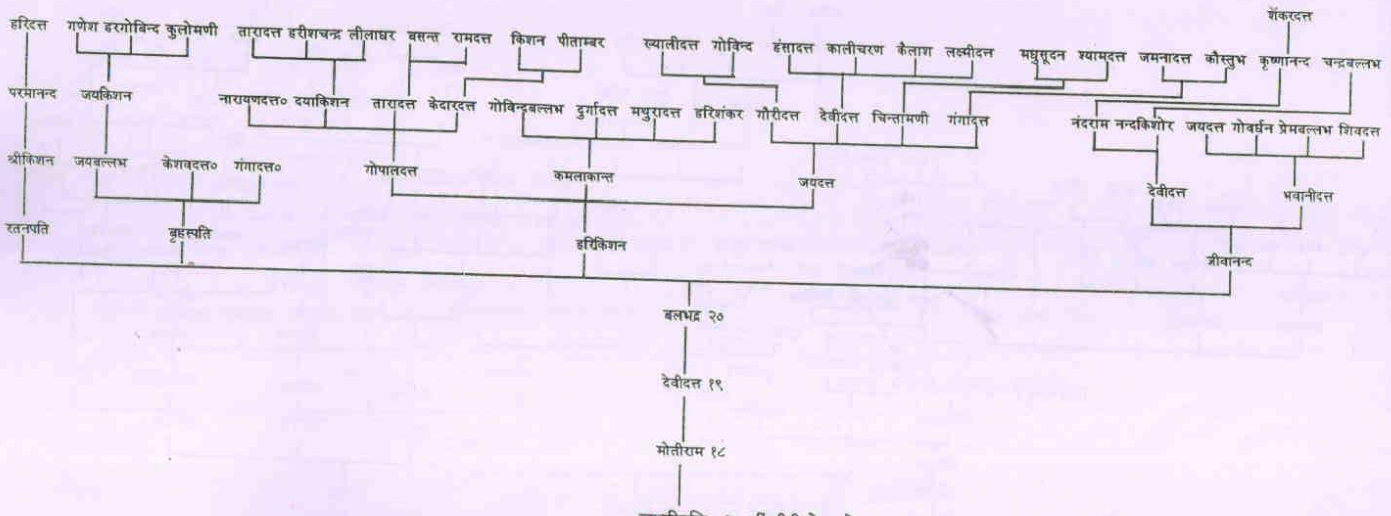

लक्ष्मीपति -१७ वीं पीढ़ी से आगे

नोट : ज्येष्ठ कनिष्ट क्रम में दायें से बायें को पढ़े।(←———)

ग्राम - ग्वीर

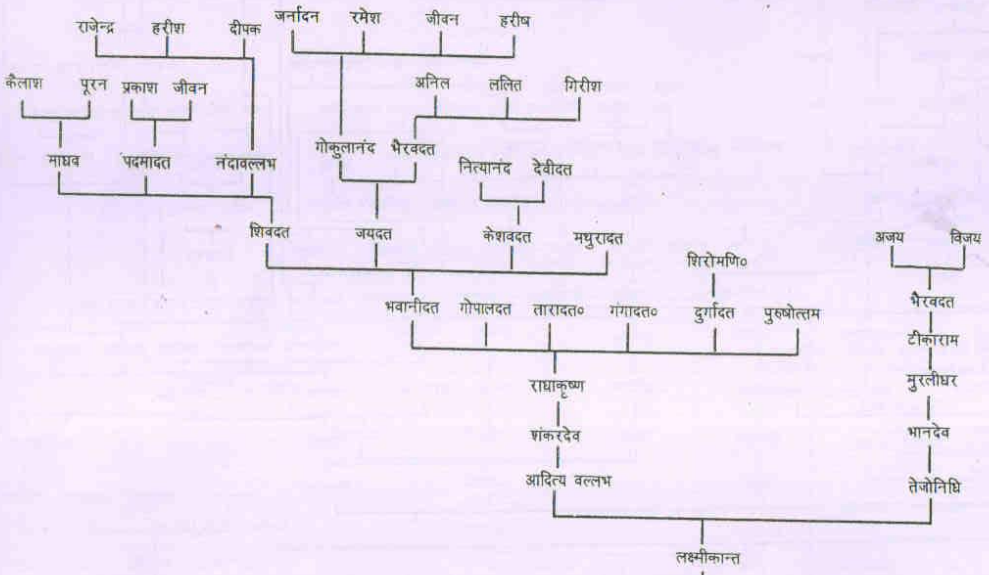

चिन्तामणि १७ वीं पीढ़ी से आगे

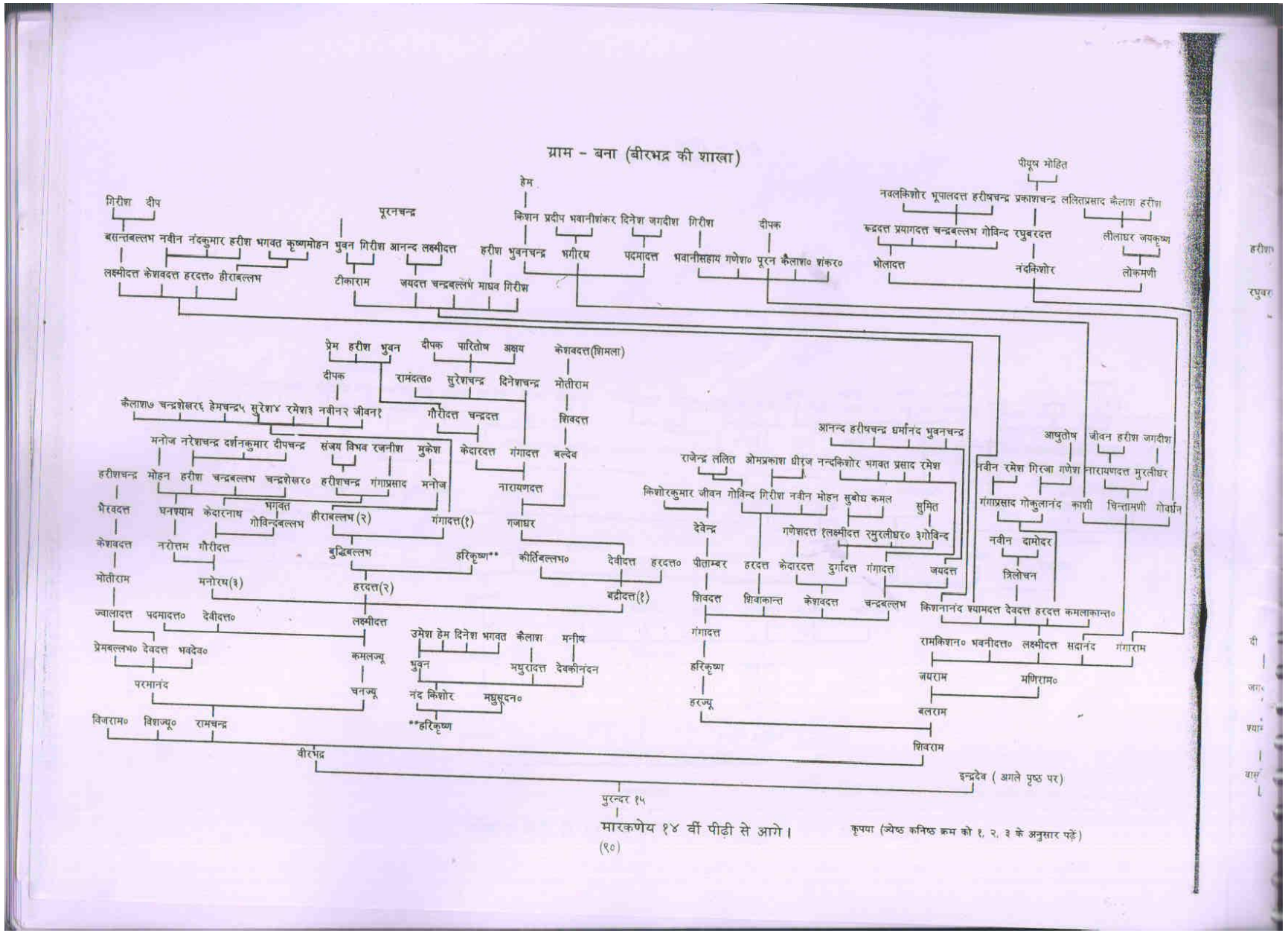

ग्राम - बना (बीरभद्र की शाखा)

मारकणेय १४ वीं पीढ़ी से आगे।

कृपया (ज्येष्ठ कनिष्ठ क्रम को १, २, ३ के अनुसार पढ़ें)

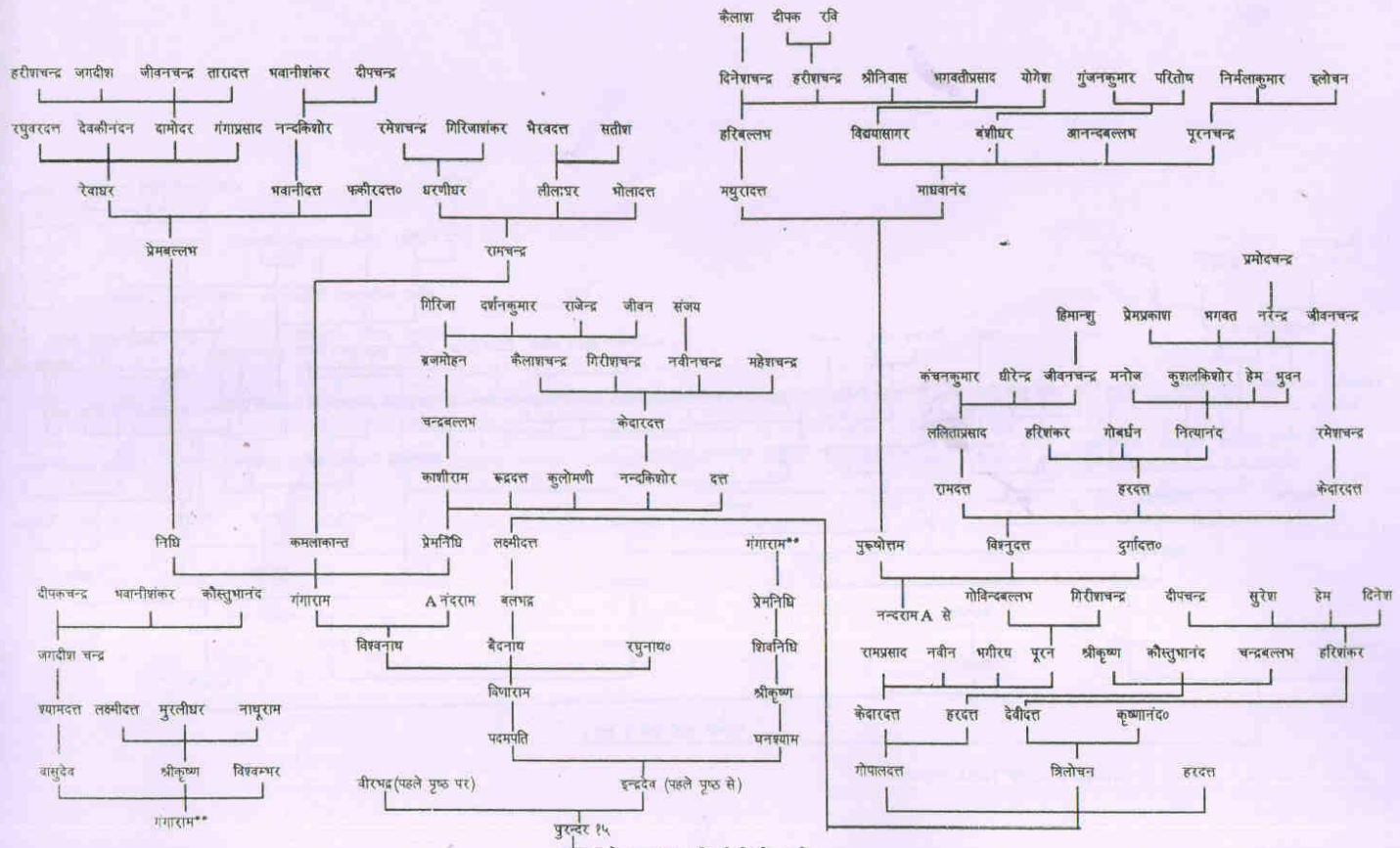

ग्राम बना (इन्द्रदेव की शाखा)

ग्राम पाली (चिल्ल)

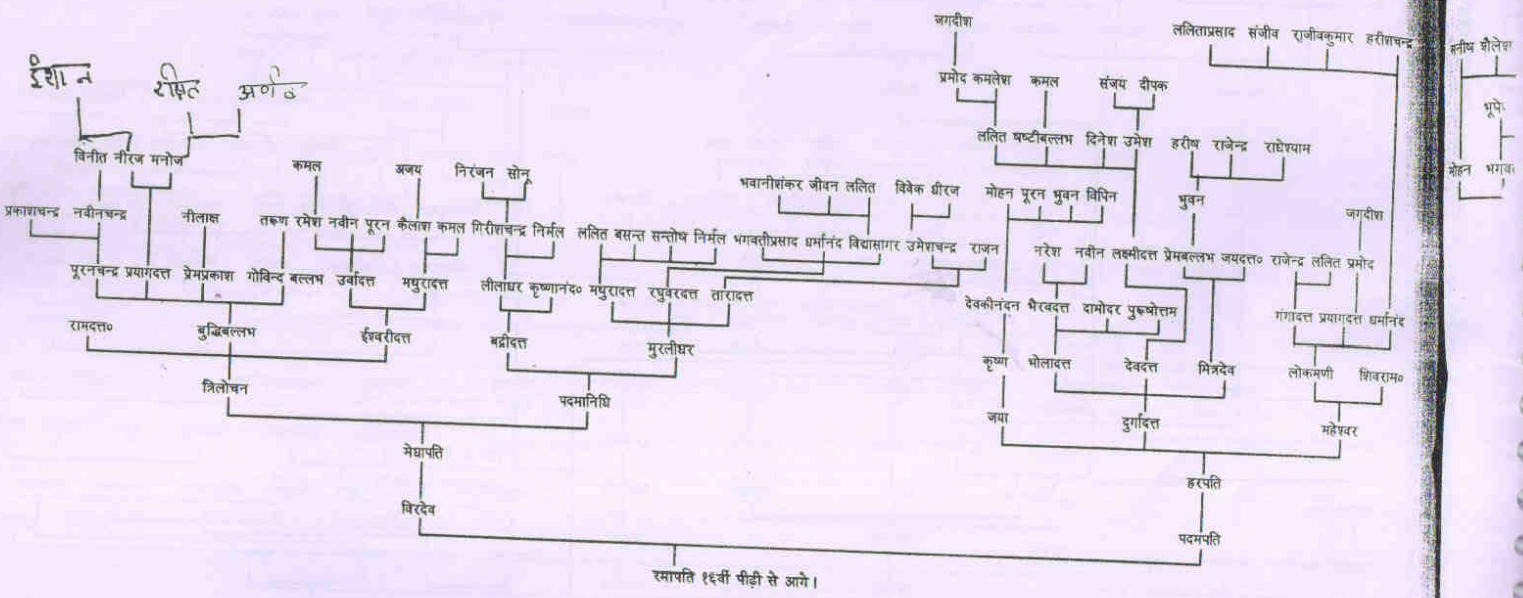

ईशान रक्षित अर्णव
विनीत नीरज मनोज
कमल
अजय
निरंजन सोनू
भवानीशंकर जीवन ललित
विवेक धीरज
जगदीश
प्रमोद कमलेश कमल संजय दीपक
ललित षष्टीबल्लभ दिनेश उमेश
हरीश राजेन्द्र राधेश्याम
ललिताप्रसाद संजीव राजीवकुमार हरीशचन्द्र
मनीष शैलेश
भूपे.
मोहन भगवा.
मोहन पूरन भुवन विपिन
भुवन
जगदीश
प्रकाशचन्द्र नवीनचन्द्र
नीलाक्ष
तरुण रमेश नवीन पूरन कैलाश कमल गिरीशचन्द्र निर्मल ललित बसन्त सन्तोष निर्मल भगवतीप्रसाद धर्मानंद विद्यासागर उमेशचन्द्र राजन
नरेश नवीन लक्ष्मीदत्त प्रेमबल्लभ जयदत्त० राजेन्द्र ललित प्रमोद
पूरनचन्द्र प्रयागदत्त प्रेमप्रकाश गोविन्द बल्लभ उर्वादत्त मथुरादत्त
लीलाधर कृष्णानंद० मथुरादत्त रघुवरदत्त तारादत्त
देवकीनंदन भैरवदत्त दामोदर पुरुषोत्तम
गंगादत्त प्रयागदत्त धर्मानंद
रामदत्त० बुद्धिबल्लभ ईश्वरीदत्त
बद्रीदत्त मुरलीधर
कृष्ण भोलादत्त देवदत्त मित्रदेव
लोकमणी शिवराम०
त्रिलोचन पदमानिधि
जया दुर्गादत्त महेश्वर
मेघापति
हरपति
विरदेव
पदमपति
रमापति १६वीं पीढ़ी से आगे।

ग्राम पाली (बिष्टौड़)

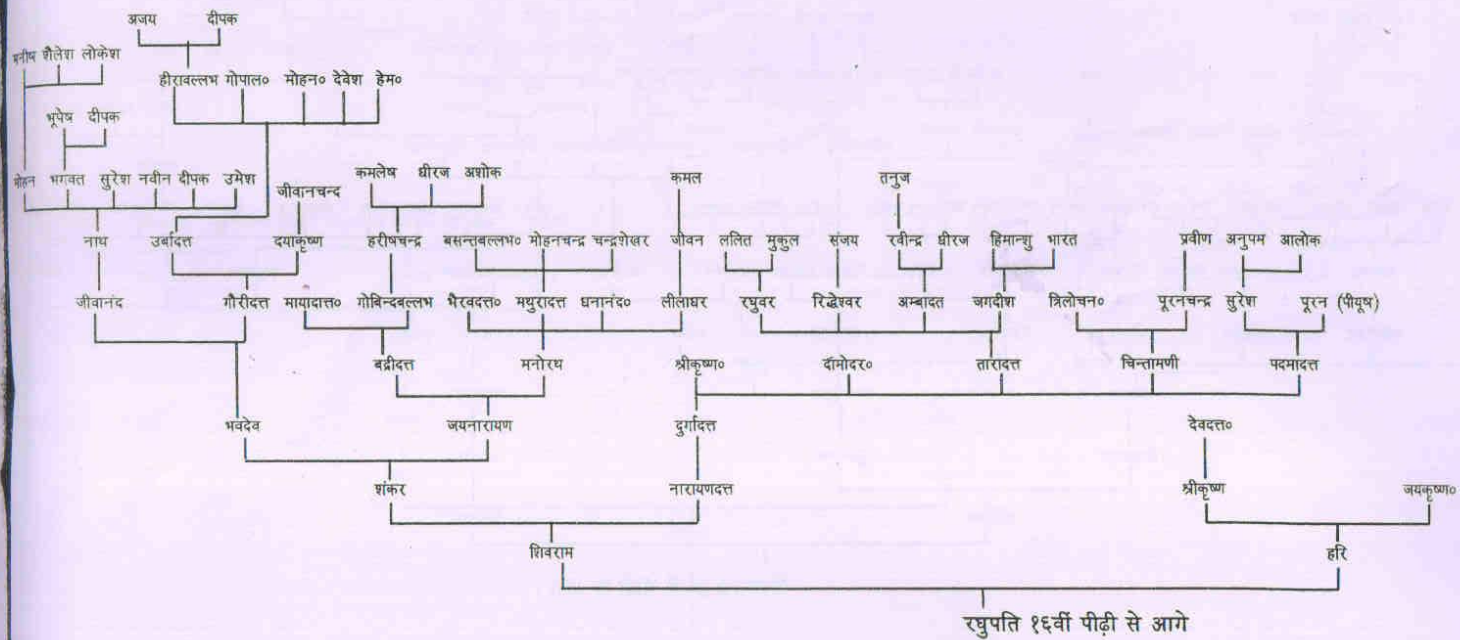

रघुपति १६वीं पीढ़ी से आगे

ग्राम - मल्ला छींना

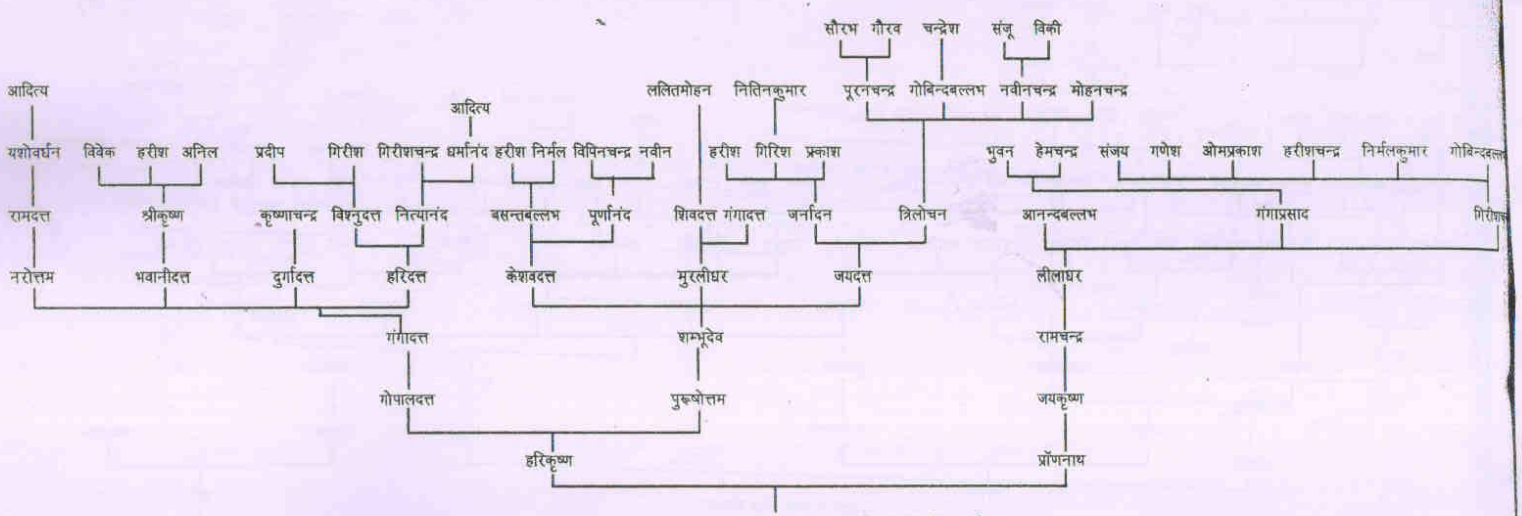

श्रीबल्लभ १६वीं पीढ़ी से आगे।

ग्राम खानतोली

गोपज्यू प्रशाखा नरोत्तम (तालिका I)

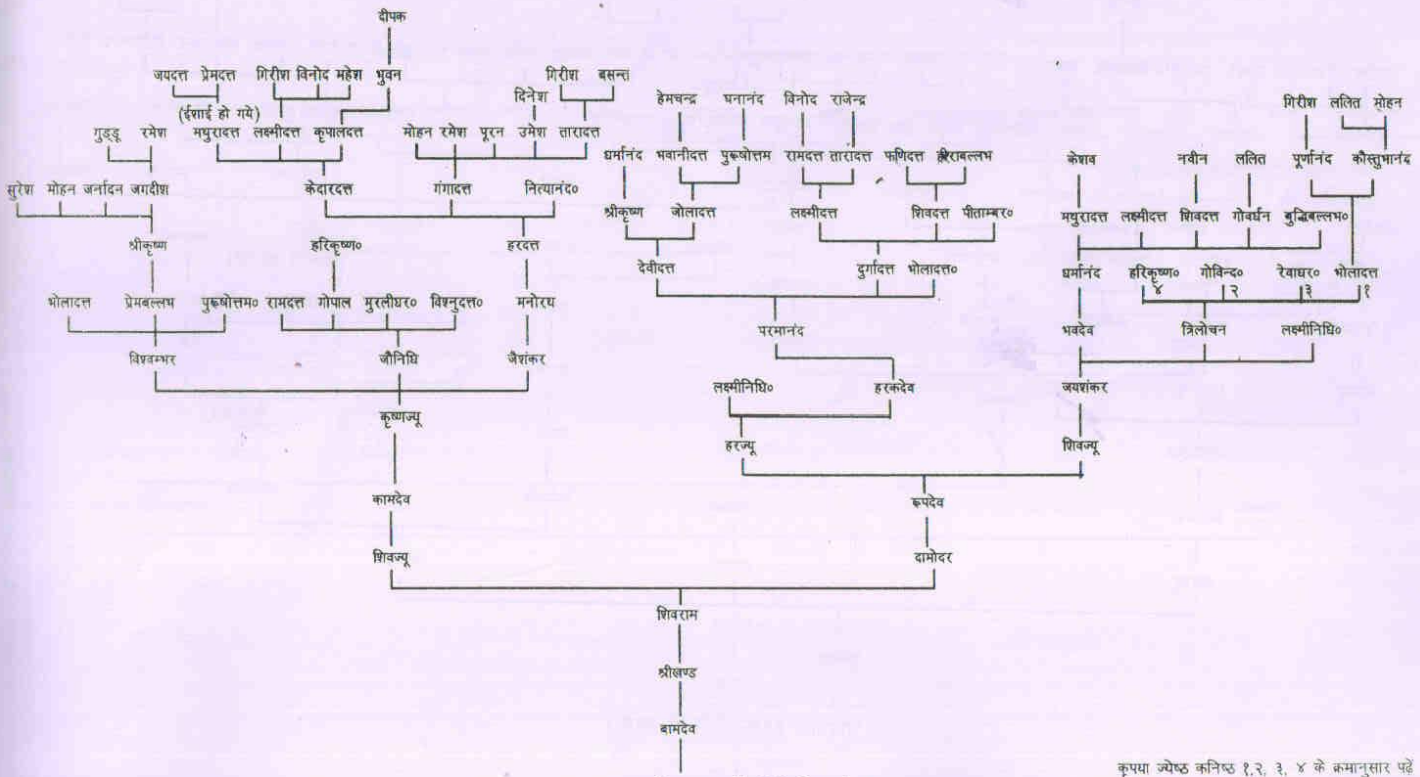

कृपया ज्येष्ठ कनिष्ठ १, २, ३, ४ के क्रमानुसार पढ़ें

नरोत्तम-१३वीं पीढ़ी से आगे।

ग्राम खानतोली
शाखा गोपज्यू प्रशाखा गणपति
(तालिका II)

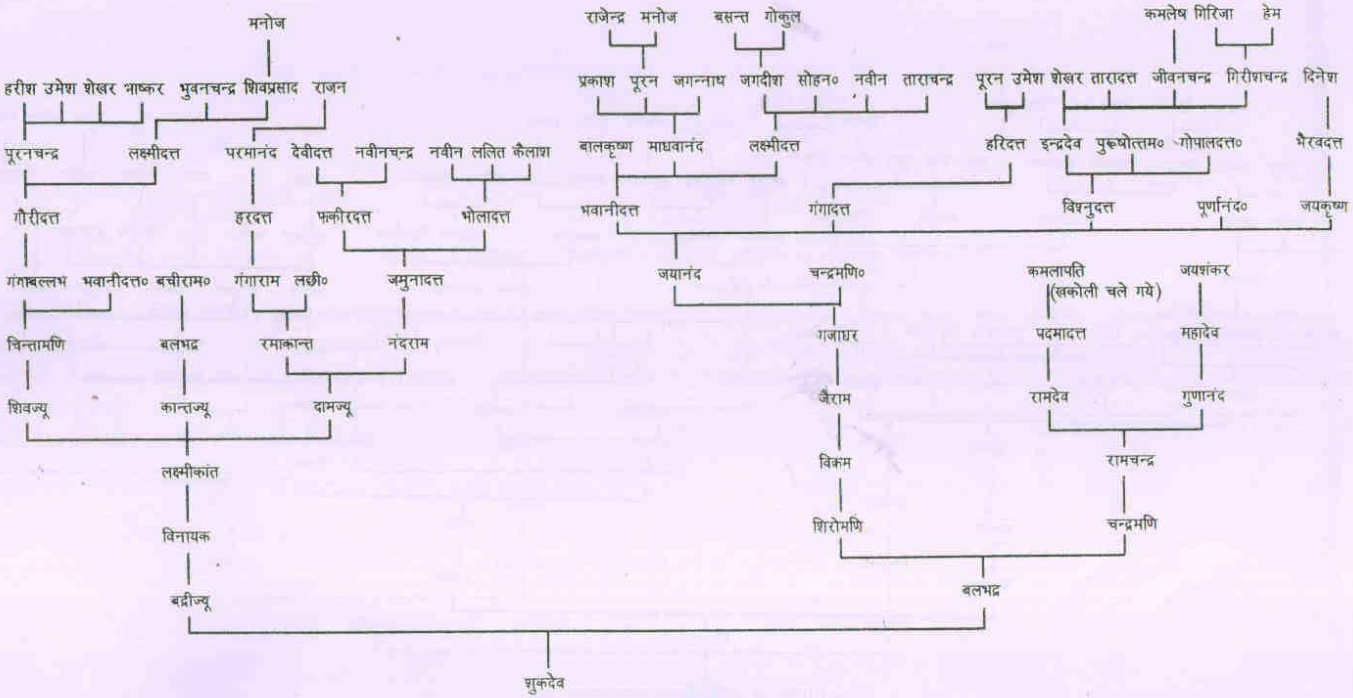

गणपति १३वीं पीढ़ी से आगे।

ग्राम खानतोली-भवदास-१०वीं पीढ़ी में

जौलज्यू/अनन्त की प्रशाखा-तालिका III

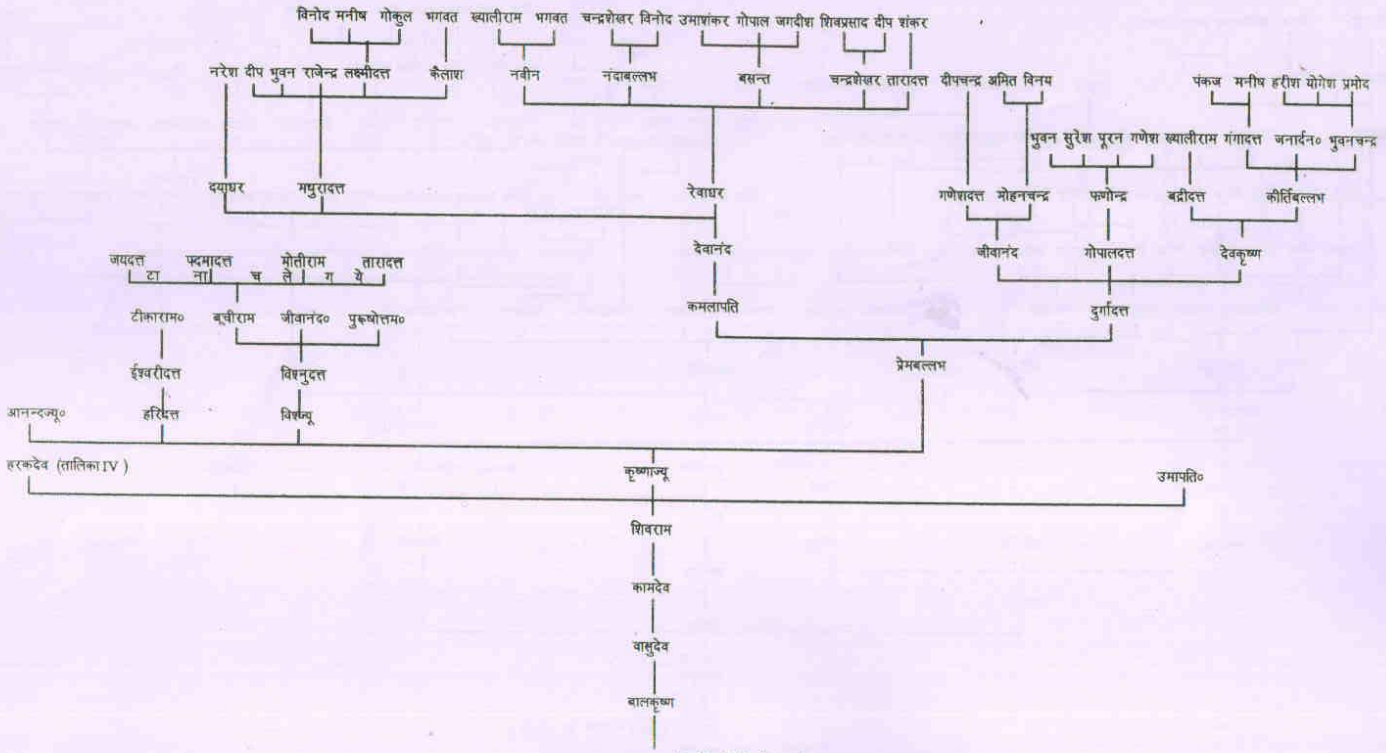

अनन्त १३वीं पीढ़ी से आगे।

ग्राम खानतोली

शाखा जौलज्यू प्रशाखा अनन्त हरकदेव का कुटुम्ब

(तालिका IV)

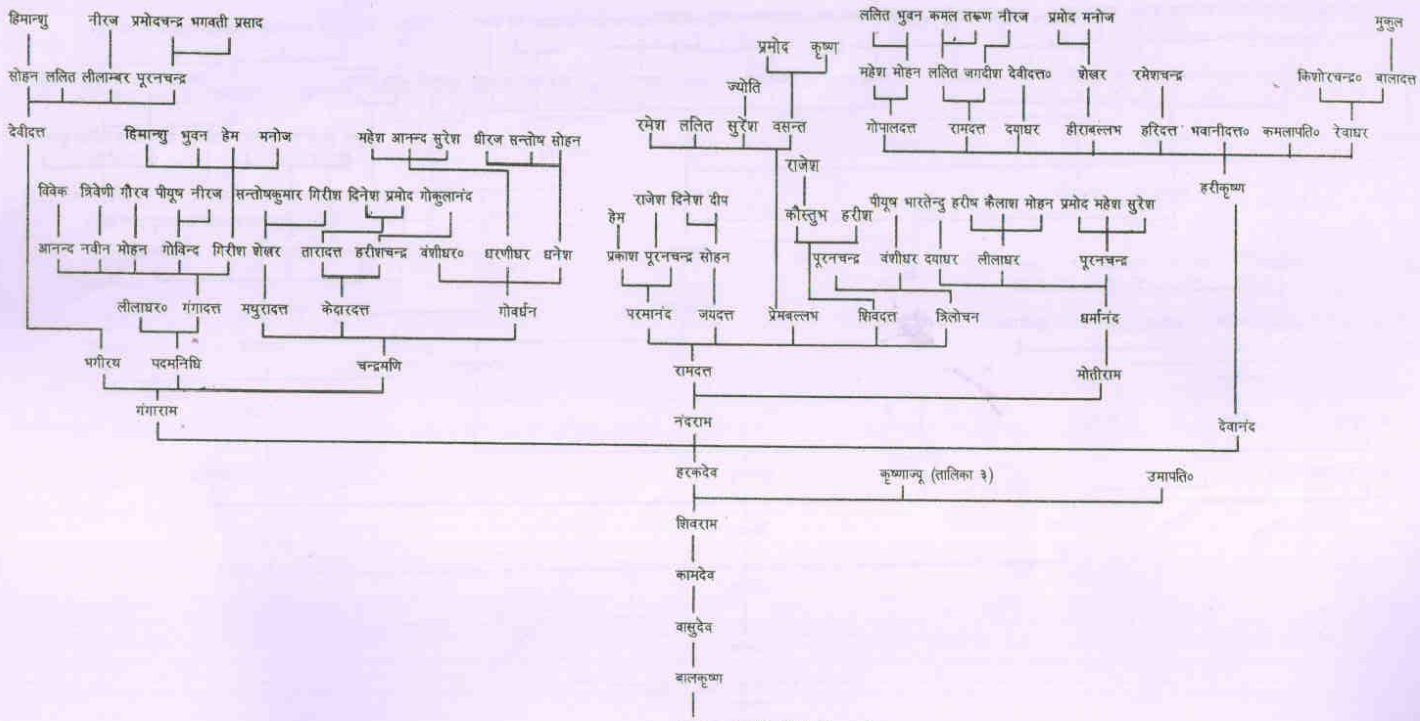

अनन्त १३वीं पीढ़ी से आगे।

खान्तोली (गणेशपुर)

जौलज्यू - नारद प्रशाखा-विणज्यू (तालिका V)

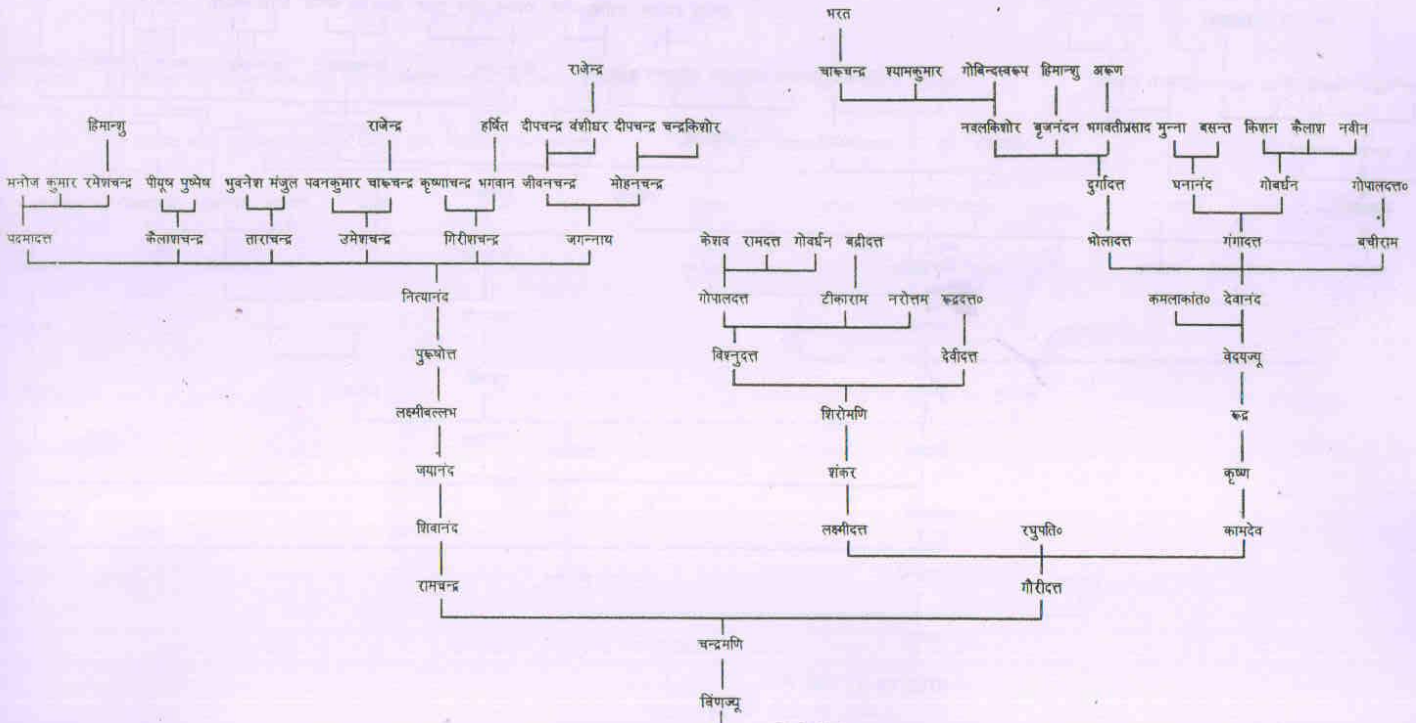

ग्राम-खान्तोली शाखा जौलज्यू प्रशाख नारद/रूद्रज्यू/रतनज्यू/ में रमापति का कुटुम्ब की (तालिका-VI)

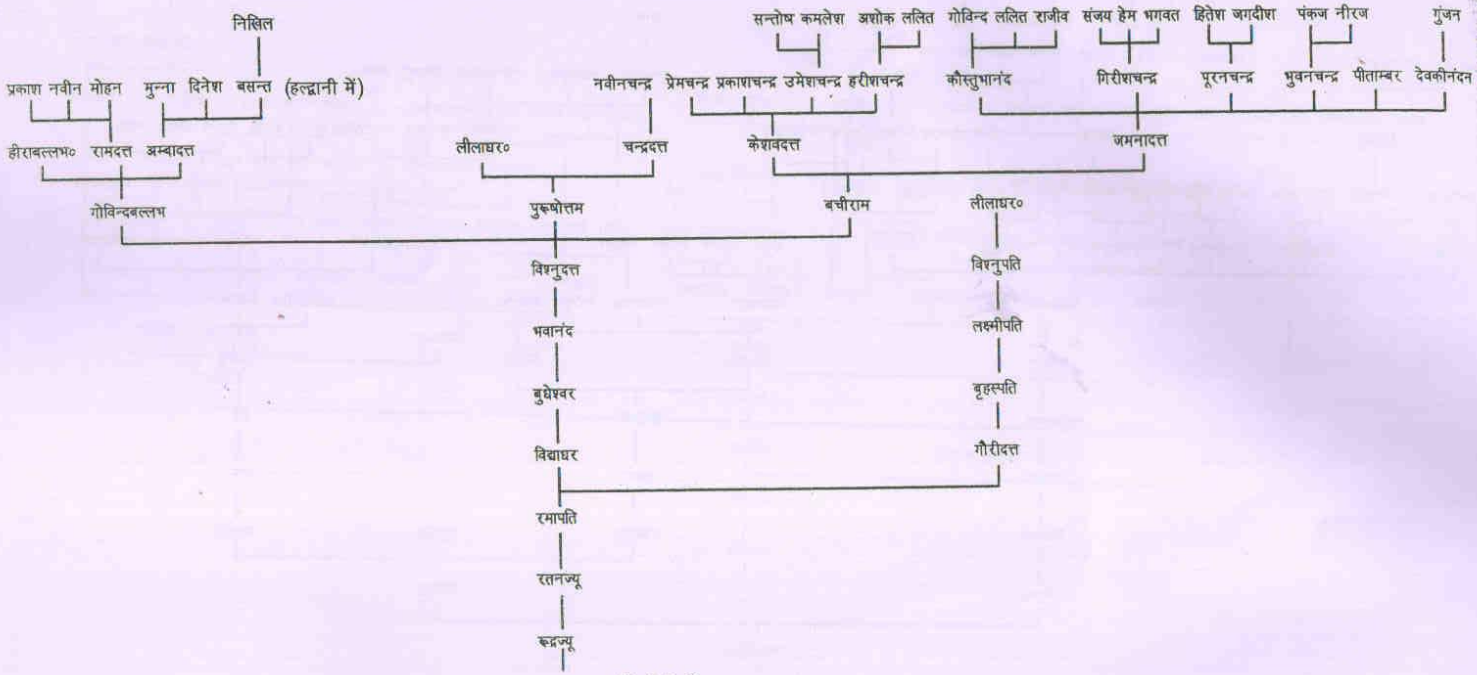

ग्राम खान्तोली

जौलज्यू/नारद की शाखा में गंगाधर की उप शाखा (तालिका VII)

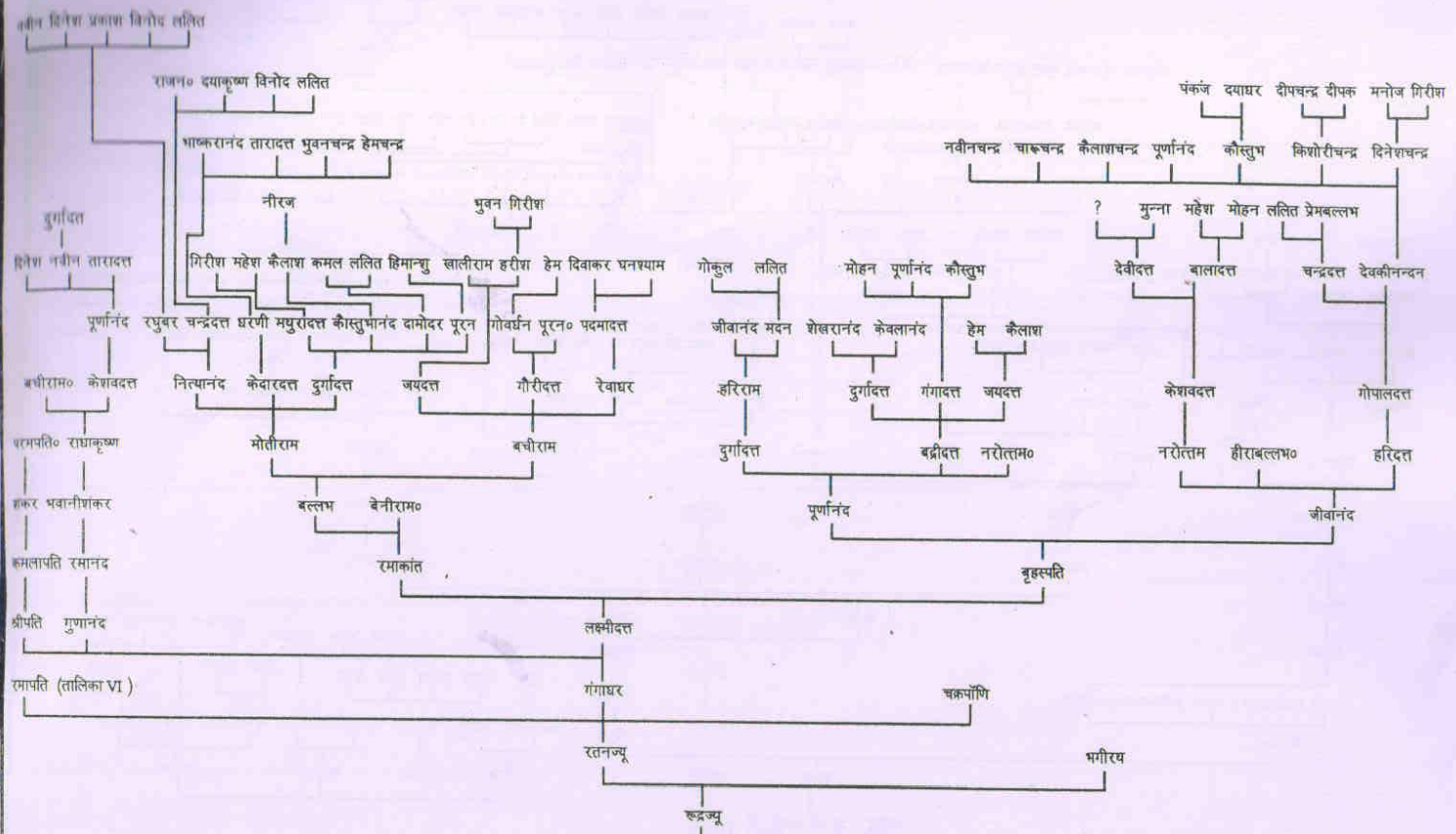

नारद १३ वीं पीढ़ी से आगे

ग्राम खान्तोली

नारद/रुद्रज्यू की शाखा में भगीरथ और चक्रपांणि की प्रशाखा तालिका VIII

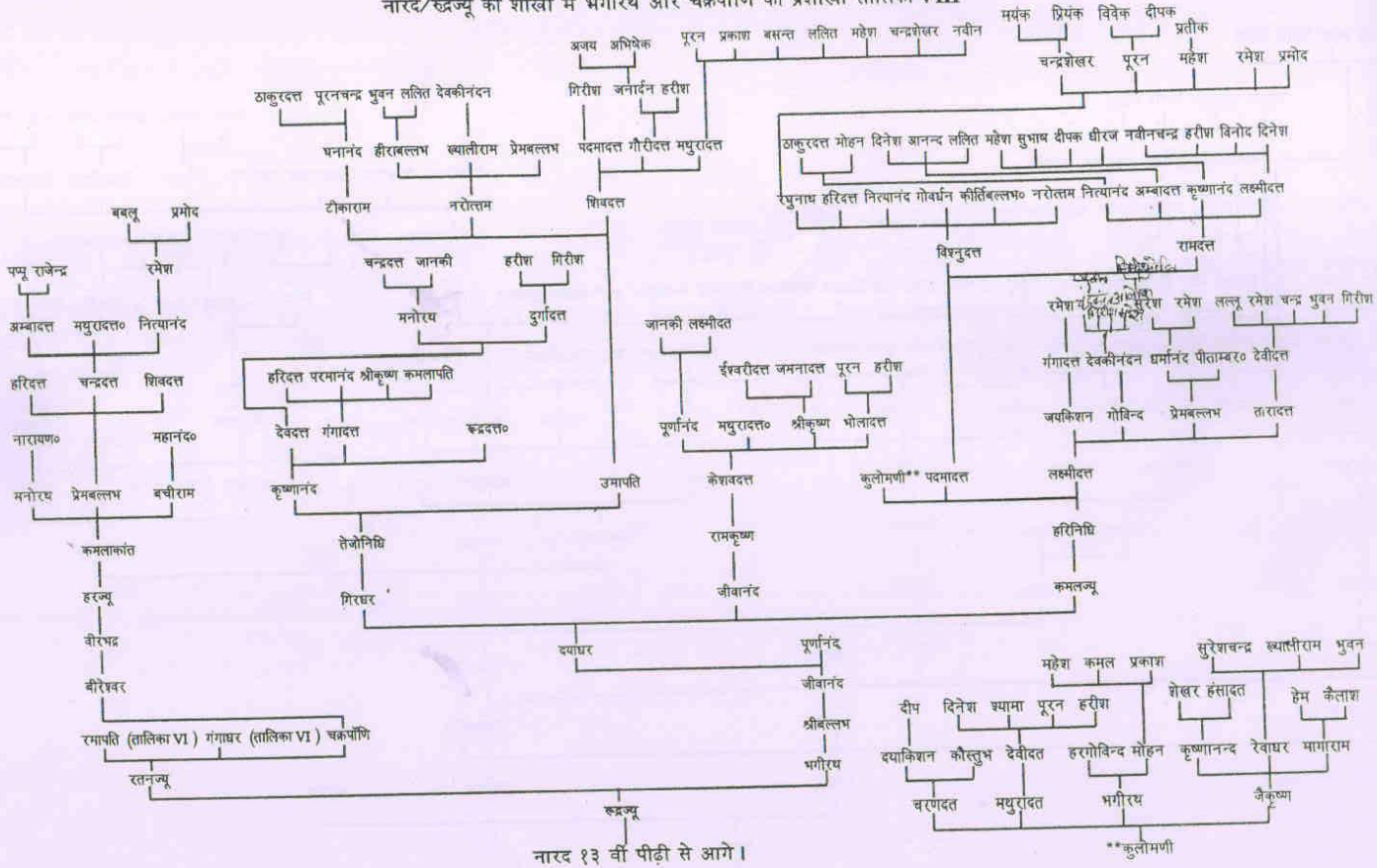

नारद १३ वीं पीढ़ी से आगे।

ग्राम-खानतोली

रूद्रज्यू की शाखा में पूर्णानंद की प्रशाखा-तालिका-IX

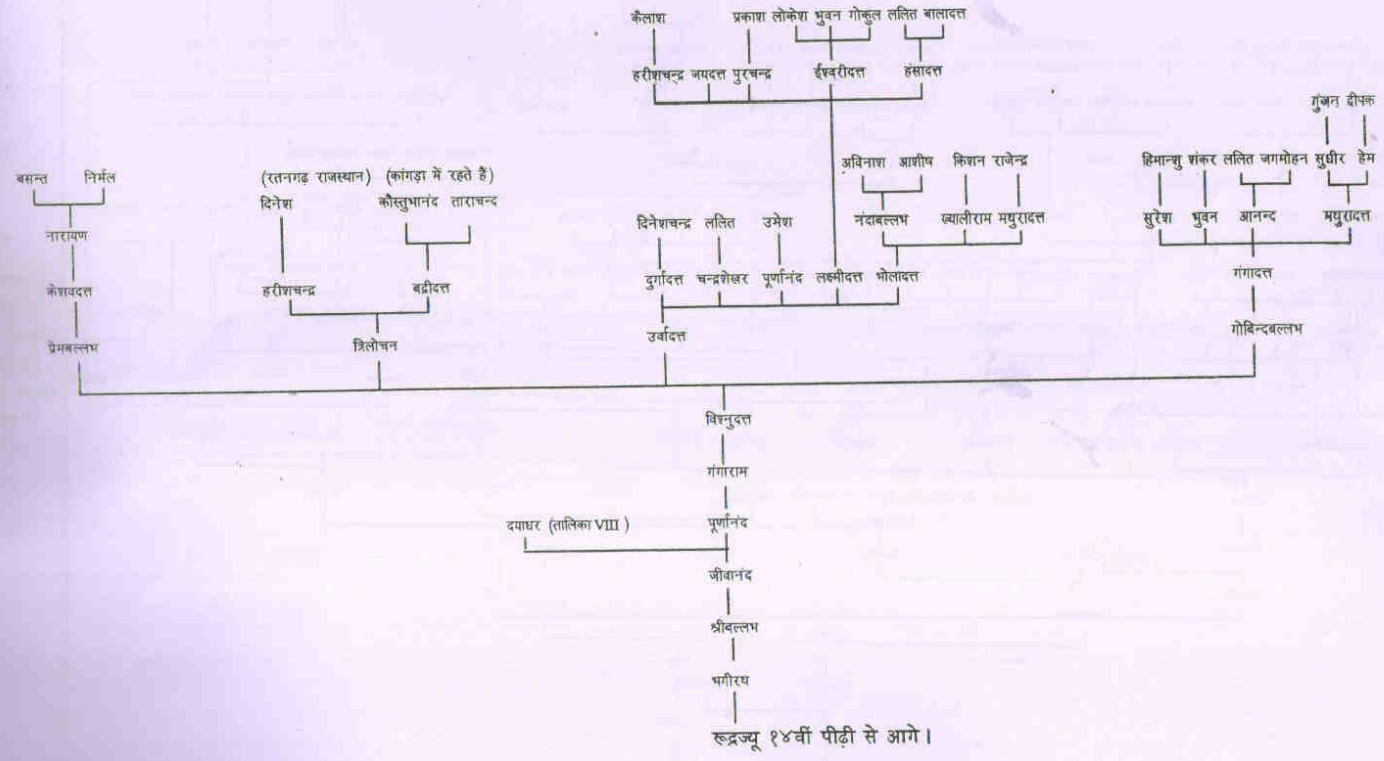

ग्राम खानतोली
हरज्यू की शाखा-तालिका-(X)

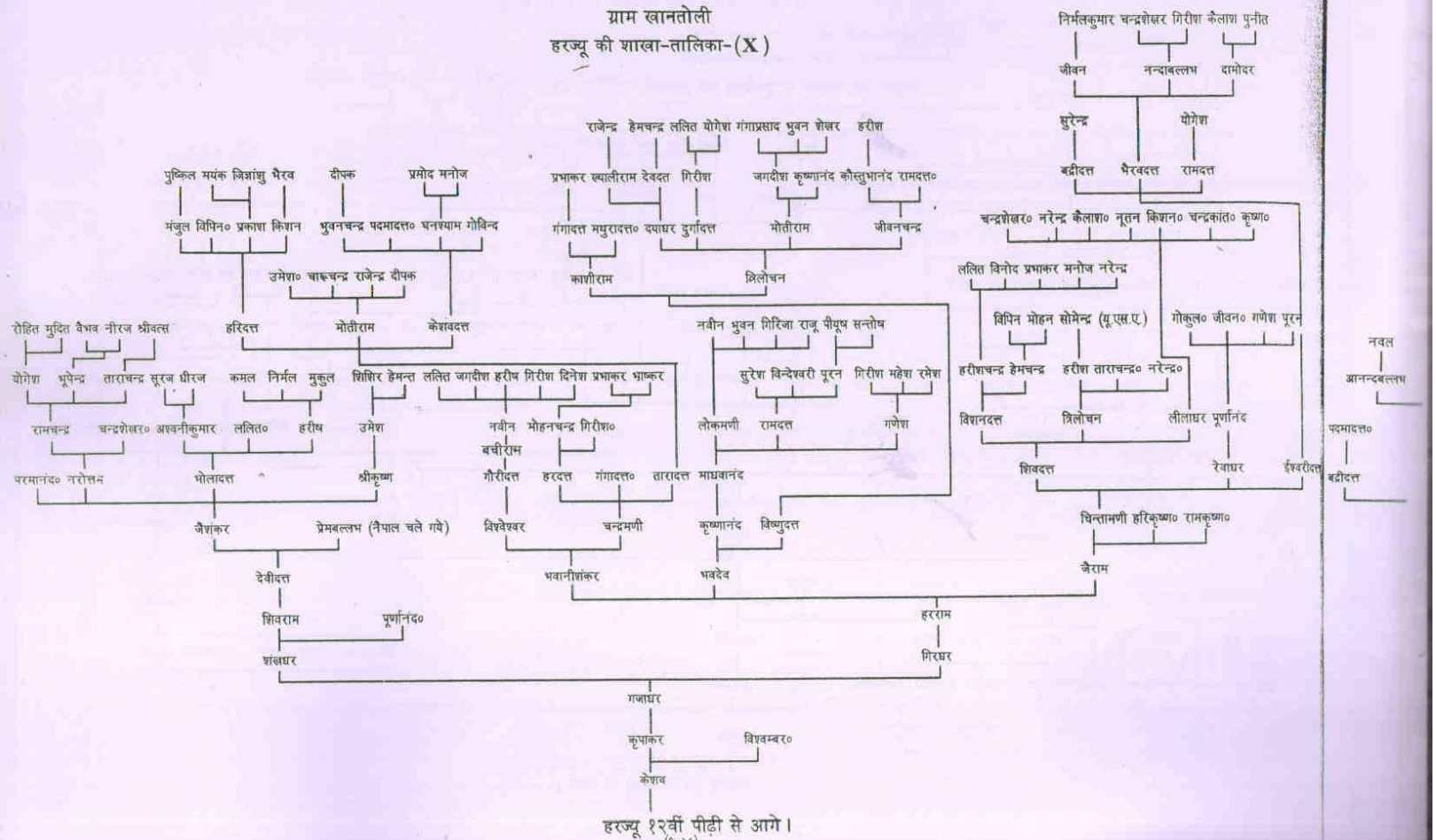

हरज्यू १२वीं पीढ़ी से आगे।

ग्राम ढनौली बृहमदास की शाखा
तालिका I

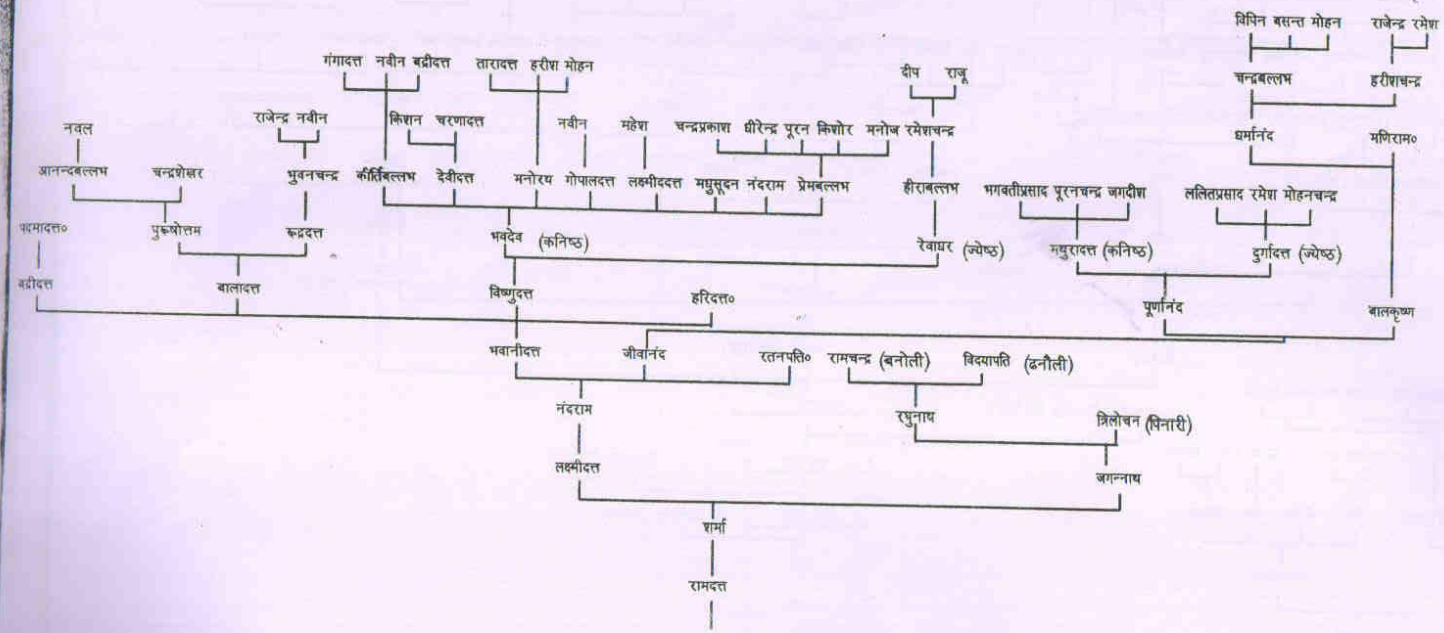

बृहमहास १३वीं पीढ़ी से आगे।

ग्राम ढनौली
बनोली और दिगतोली-तालिका-II

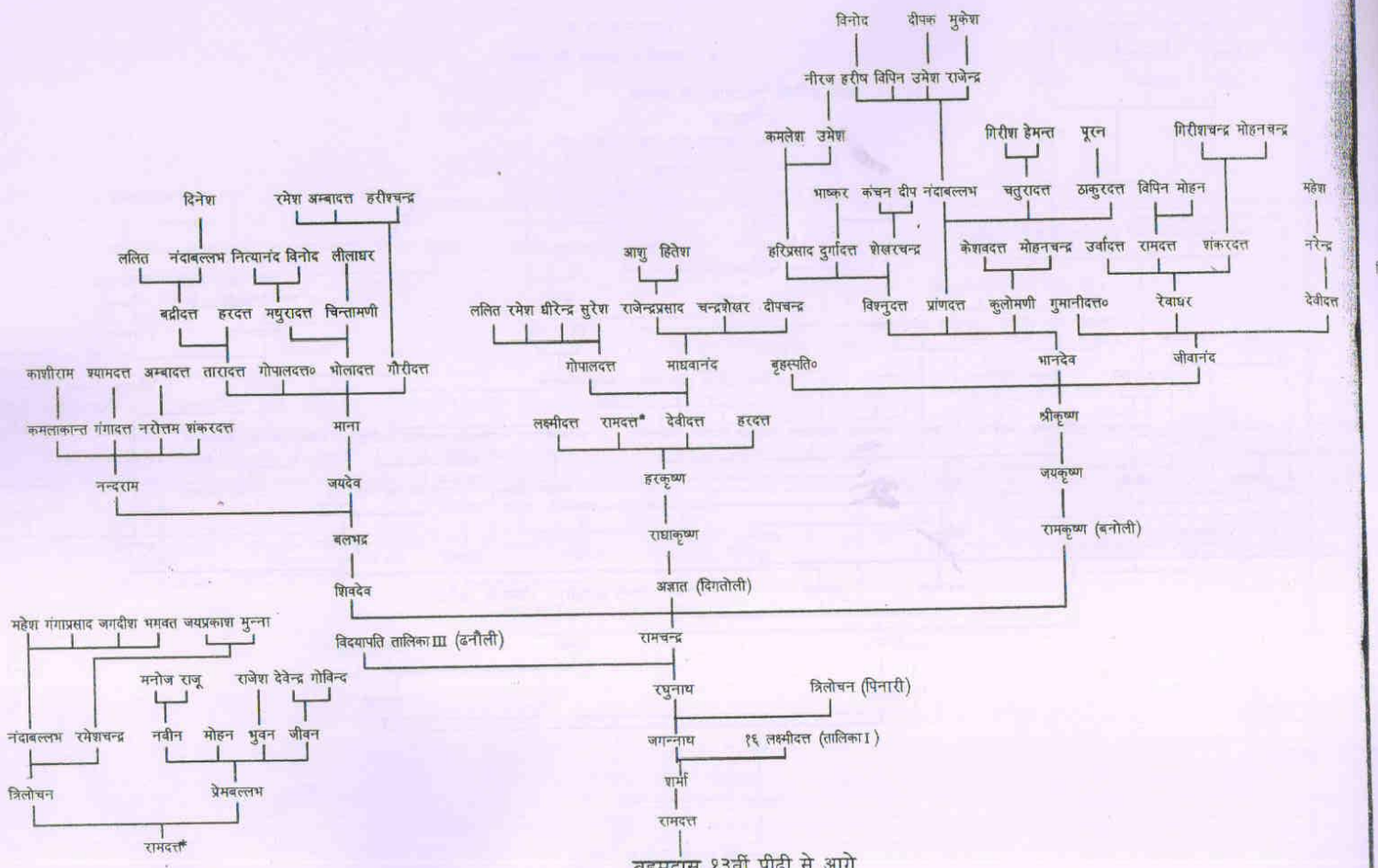

बृहमदास १३वीं पीढ़ी से आगे

ग्राम ढनौली विदयापति की शाखा-
तालिका-III

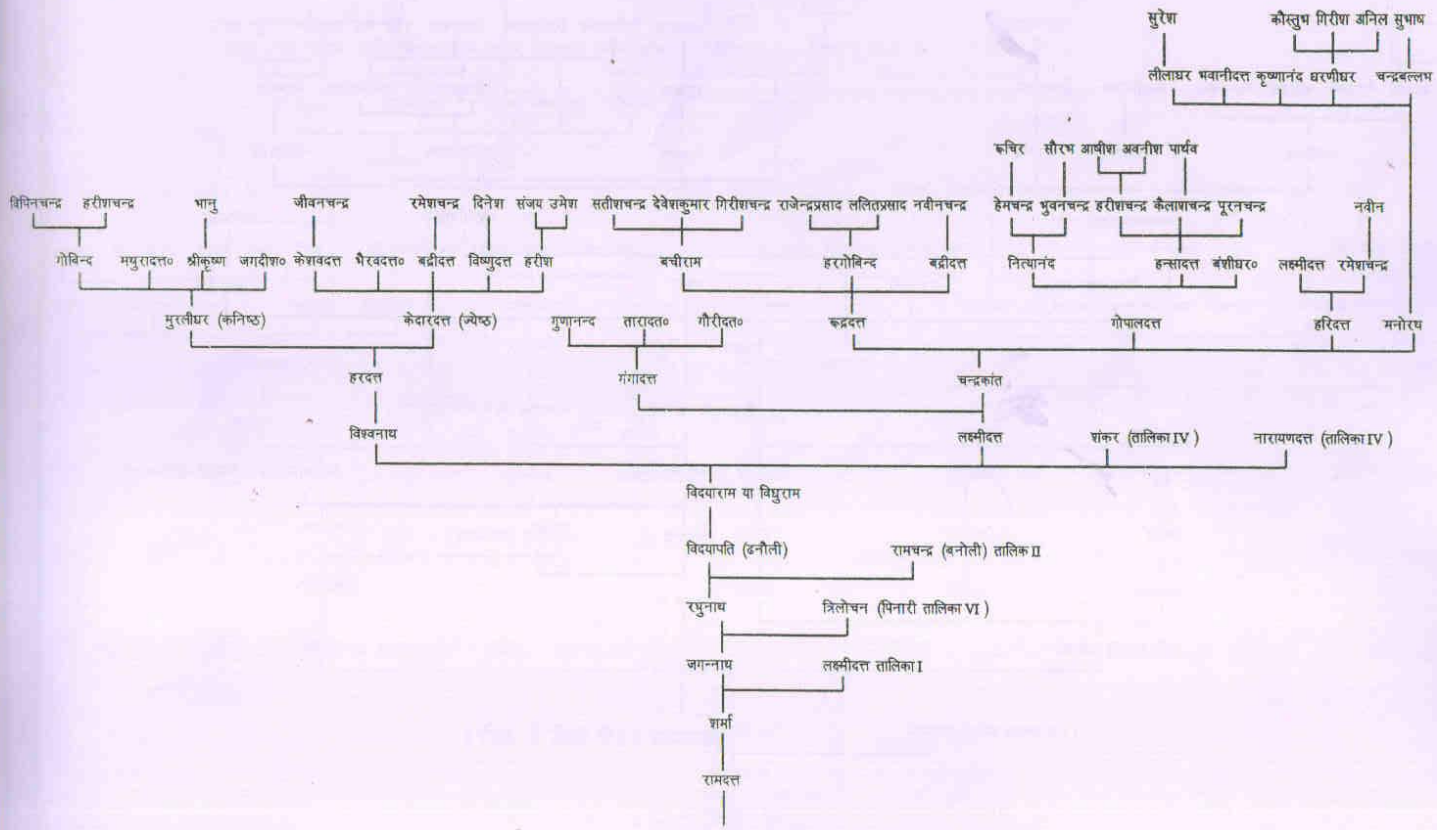

बृहमदास १३वीं पीढ़ी से आगे

ग्राम ढनौली विदयापति की शाखा में शंकर की प्रशाखा (तालिका IV)

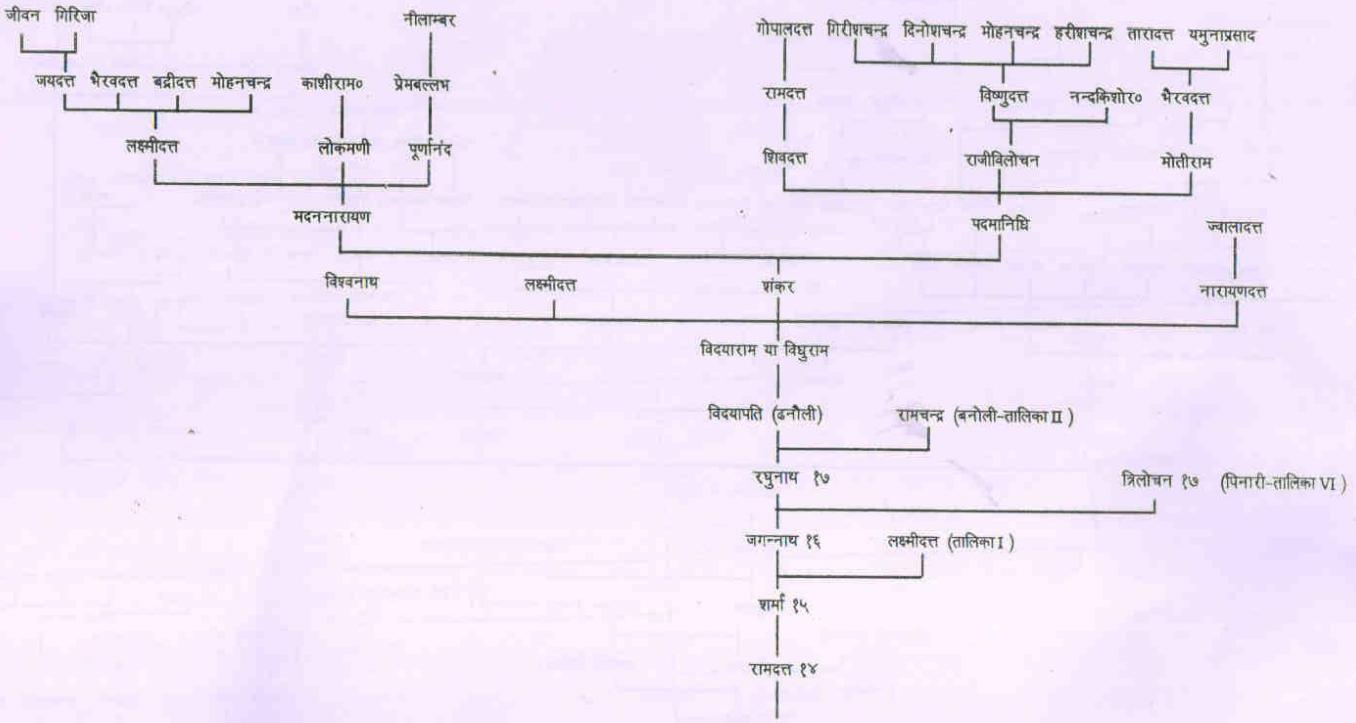

बृहमदास १३वीं पीढ़ी से आगे।

ग्राम ढनौली एवं पिनारी - महादेव की शाखा से - तालिका V

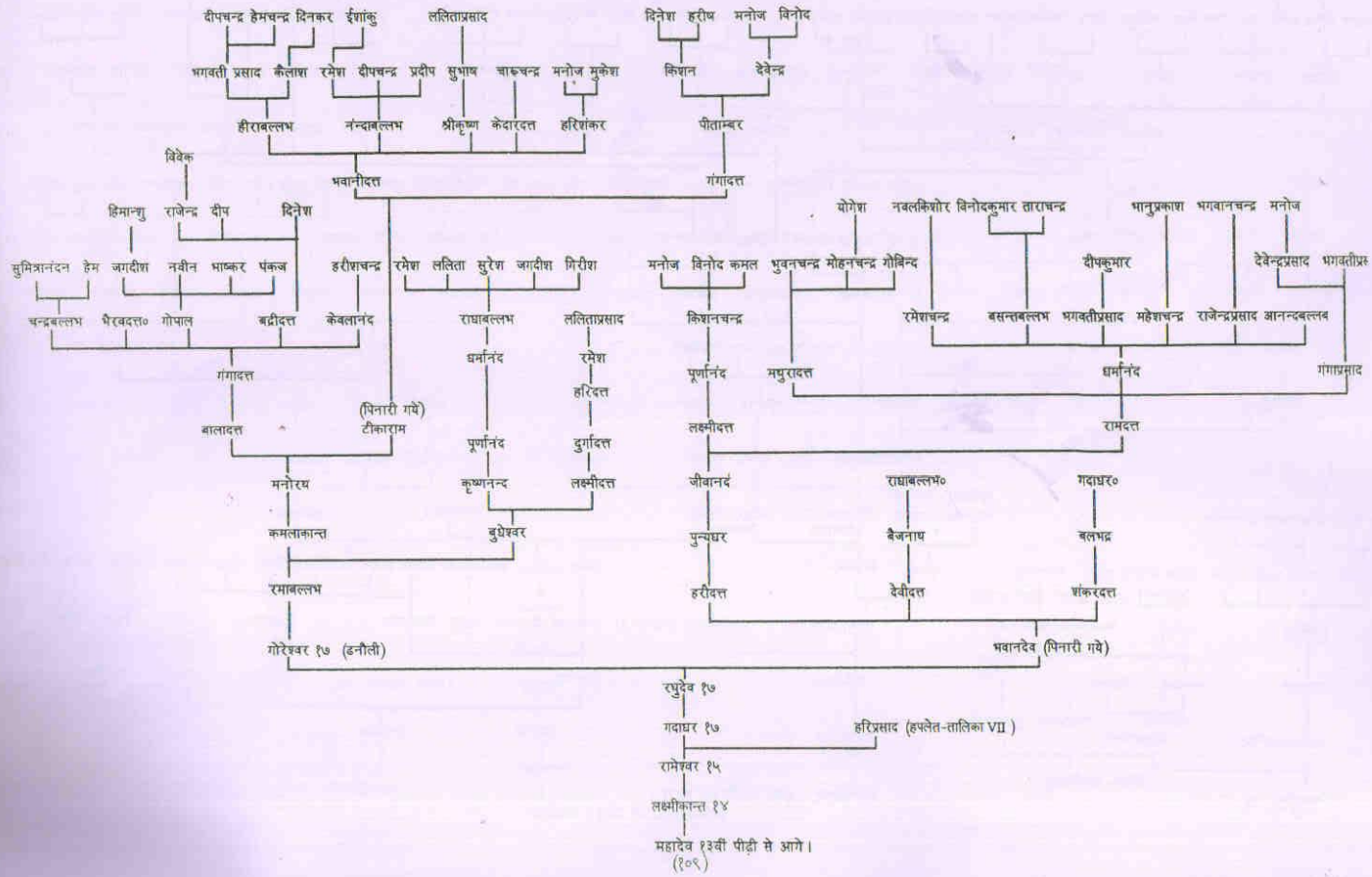

ग्राम पिनारी (बृहमदास की शाखा से)

तालिका - VI

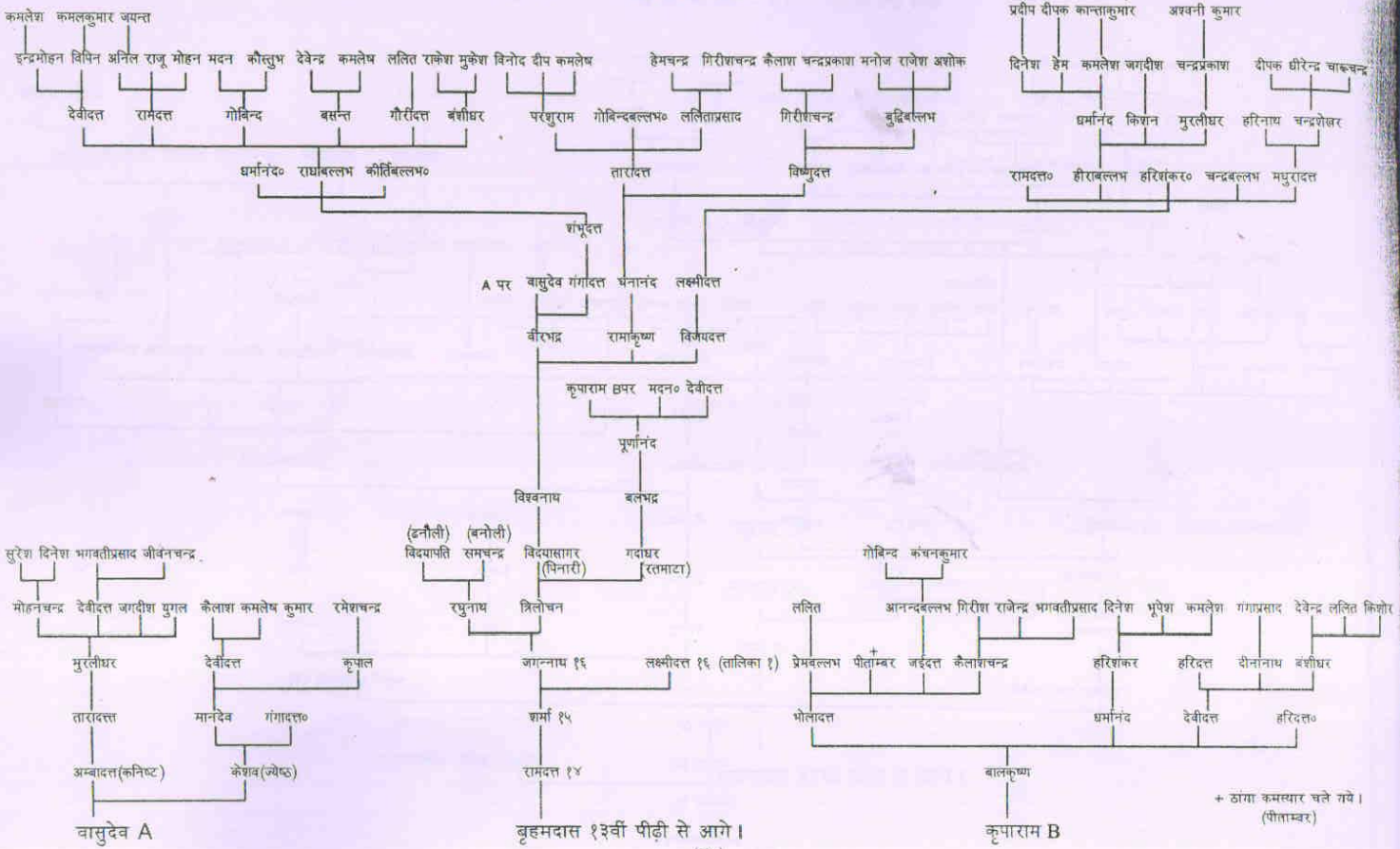

ग्राम ढनौली (हपलेत) - (तालिका VII)

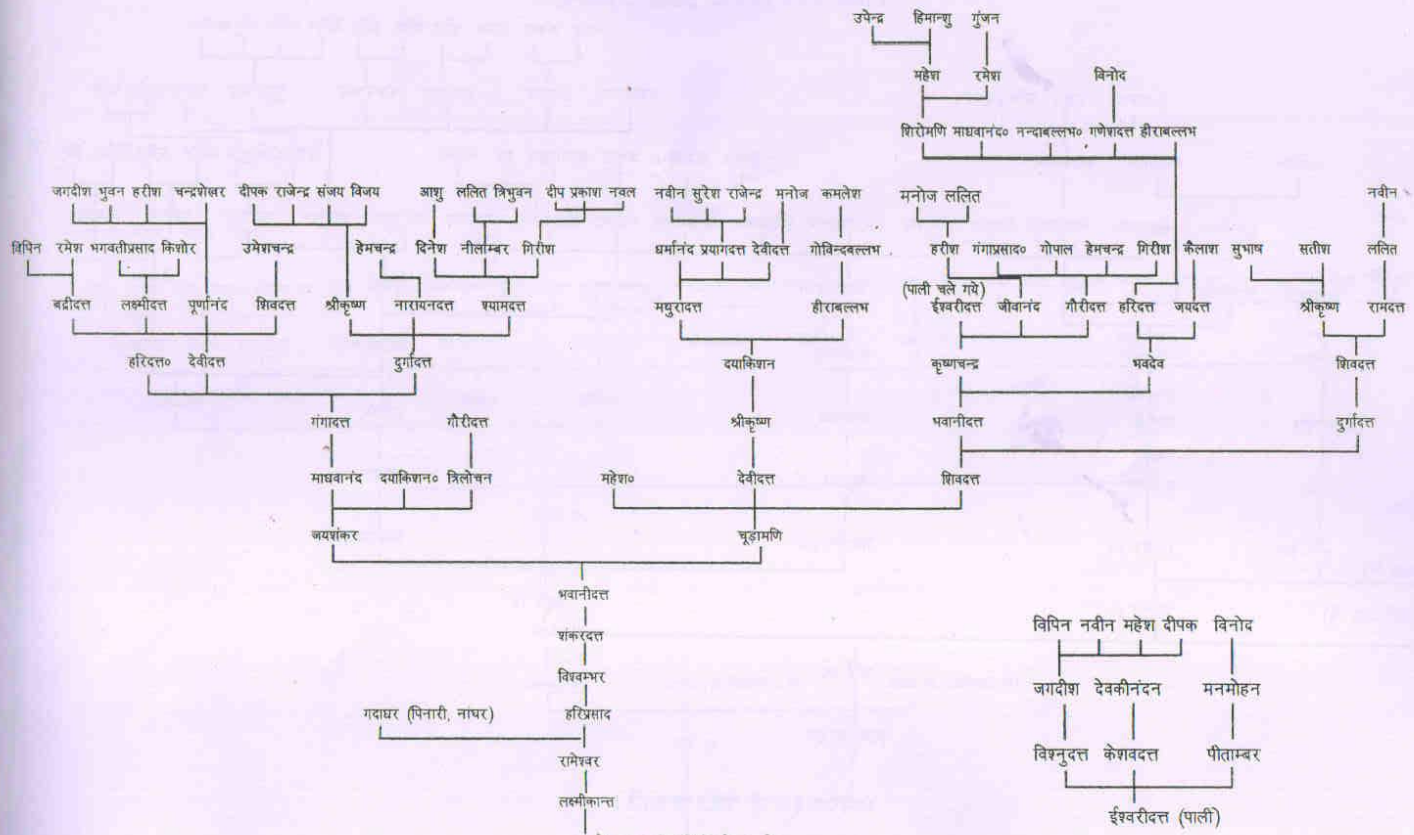

भटीगाँव - गंगाधर और श्रीधर की शाखा (तालिका I)

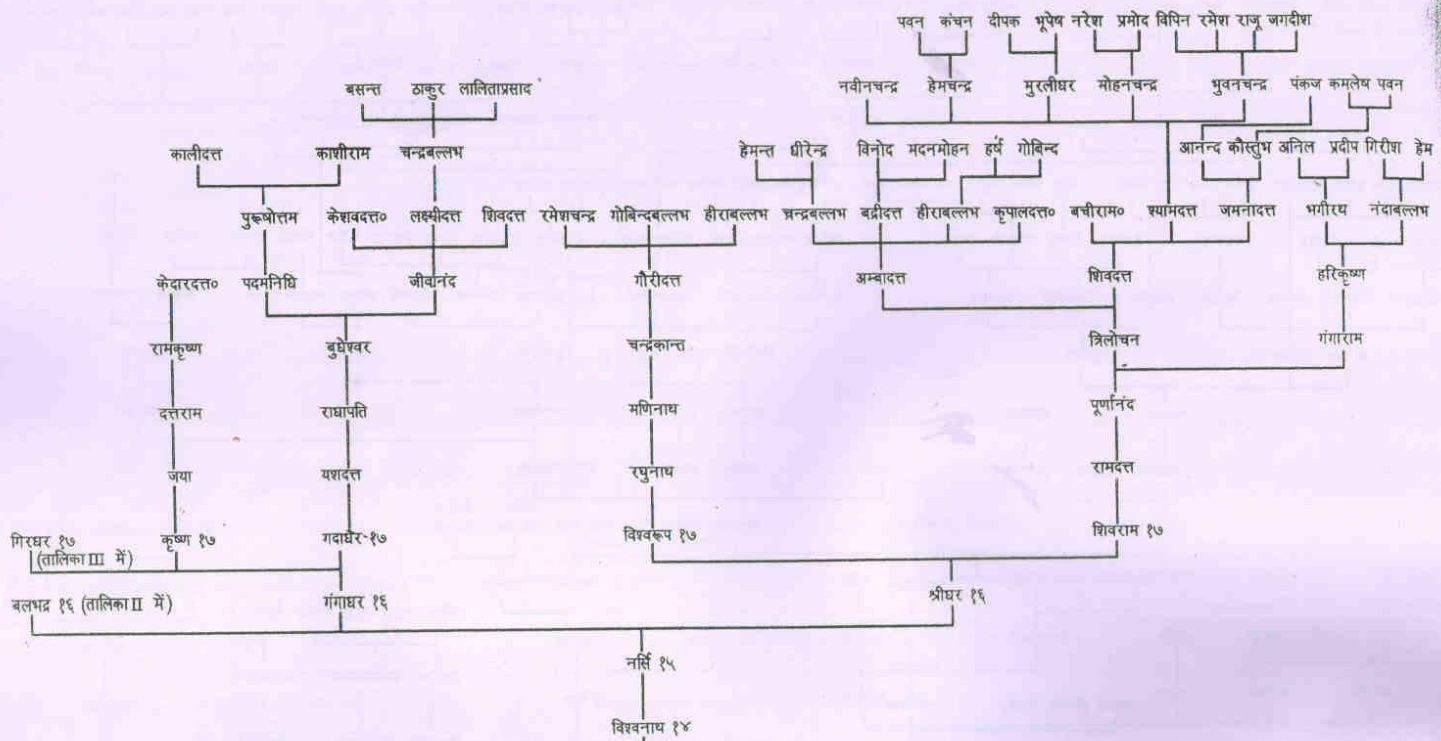

भगीरथ १३ वीं पीढ़ी से आगे।

भटीगाँव - बलभद्र की शाख - (तालिका II)

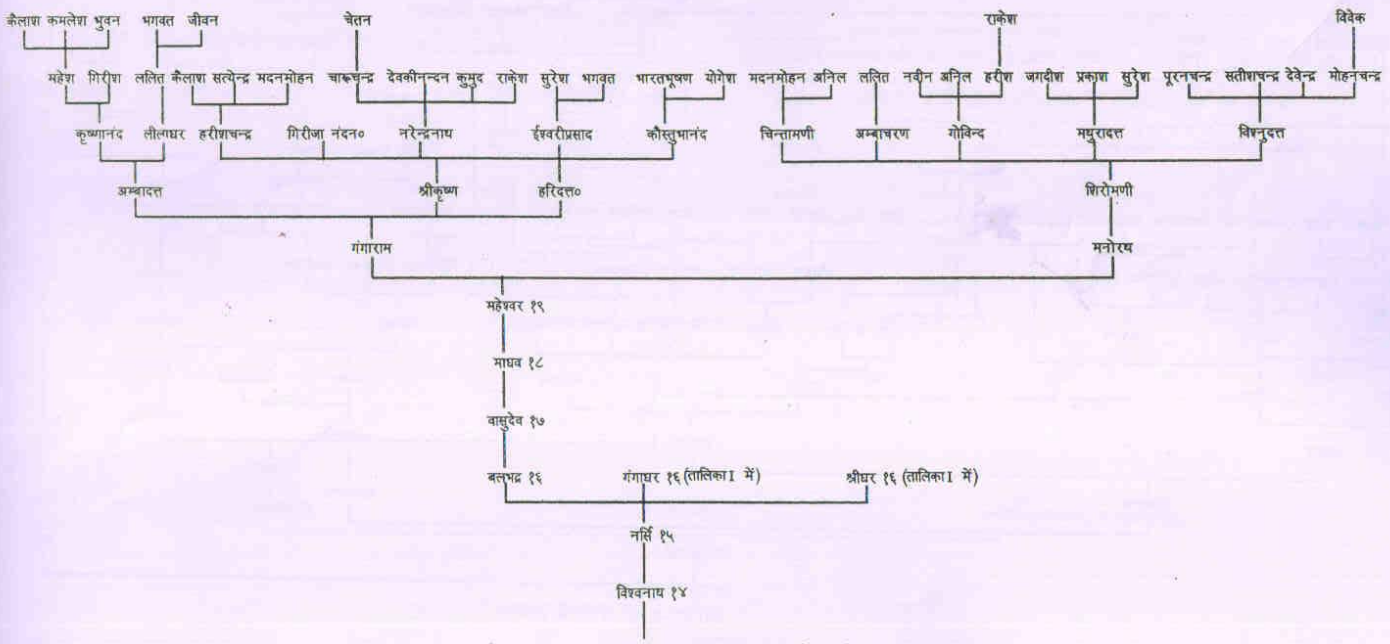

भगीरथ - १३वीं पीढ़ी से आगे।

ग्राम-भटीगांव- गिरधर की शाखा- (तालिका III)

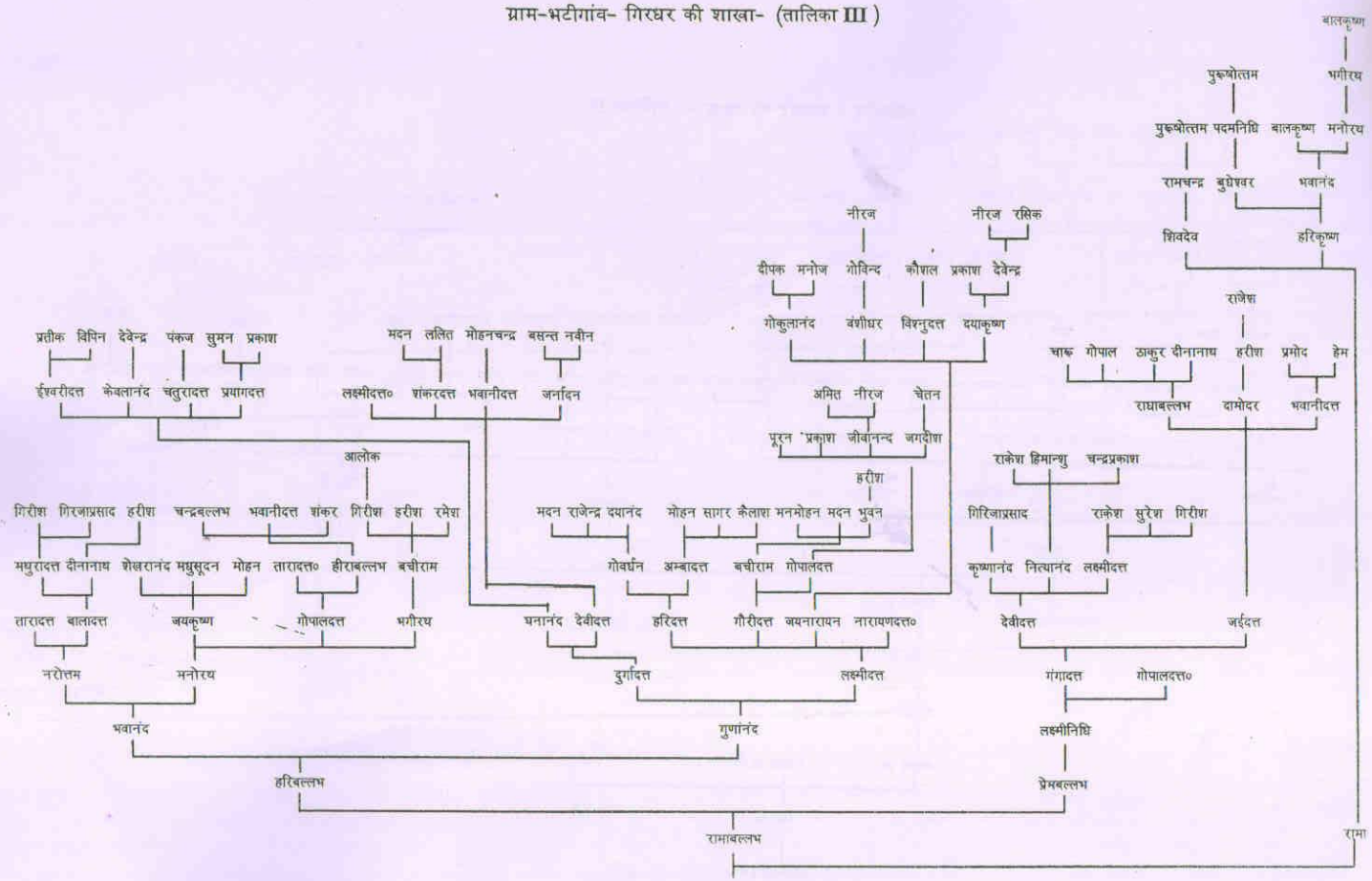

गिरधर-१७वीं पीढ़ी से आगे।

ग्राम मल्ला गराऊँ-राघव ज्यू की शाखा- (तालिका I)

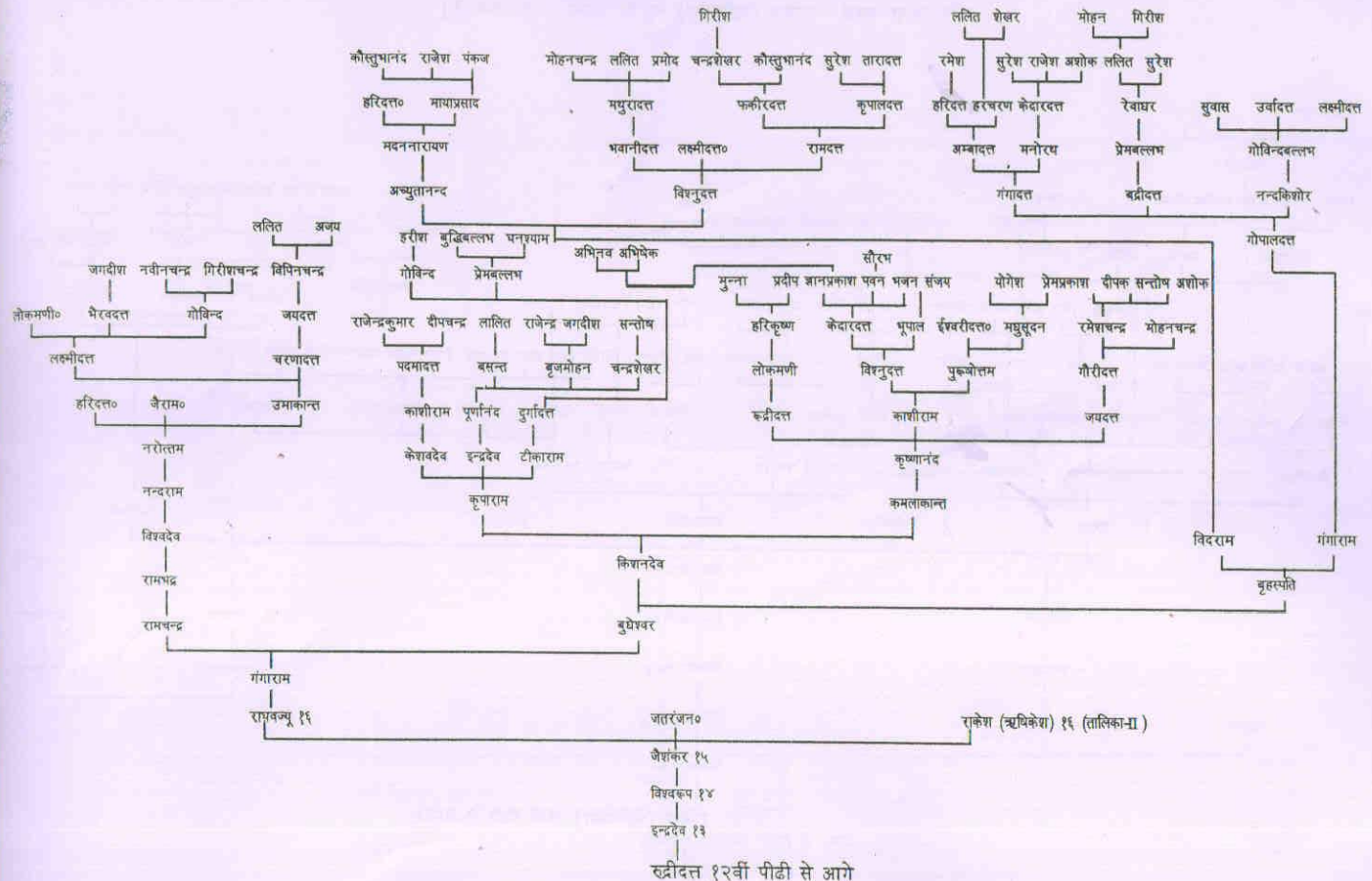

रुद्रीदत्त १२वीं पीढ़ी से आगे

ग्राम मल्ला गराऊँ - राकेश (ऋषिकेश) ज्यू की शाखा - (तालिका II)

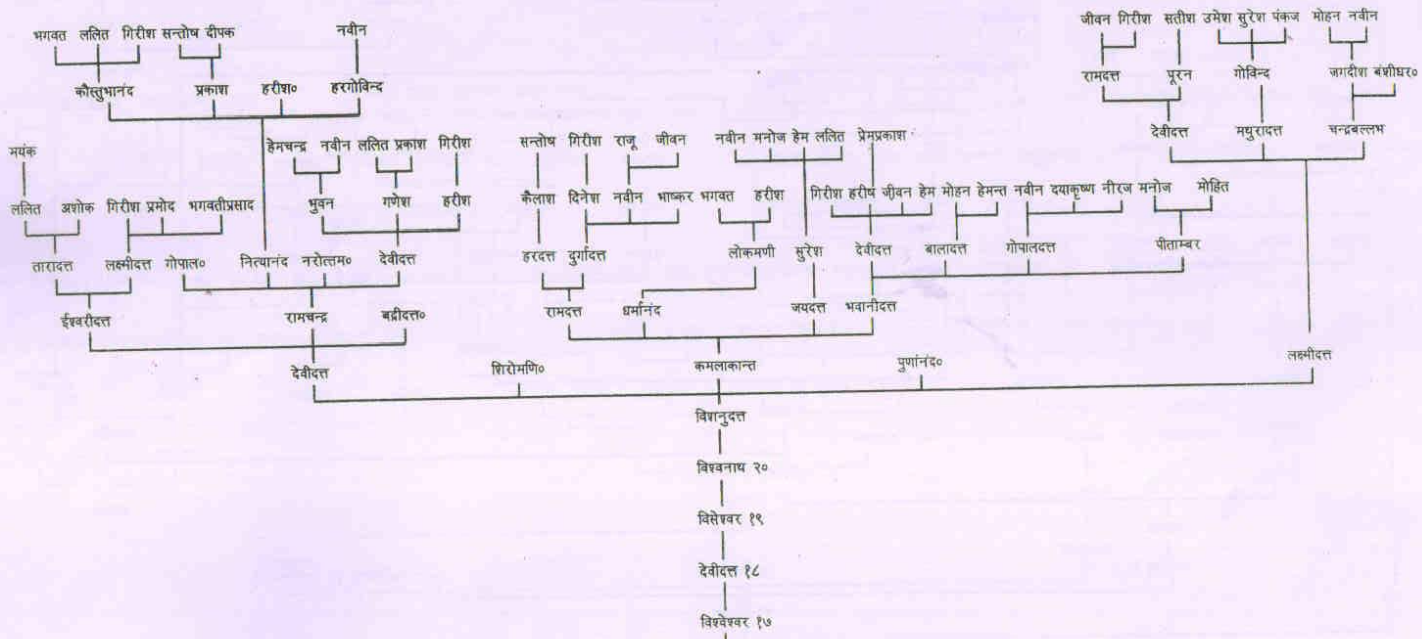

ग्राम तल्ला छींना - विष्णुदत्त (विदया) की शाखा।

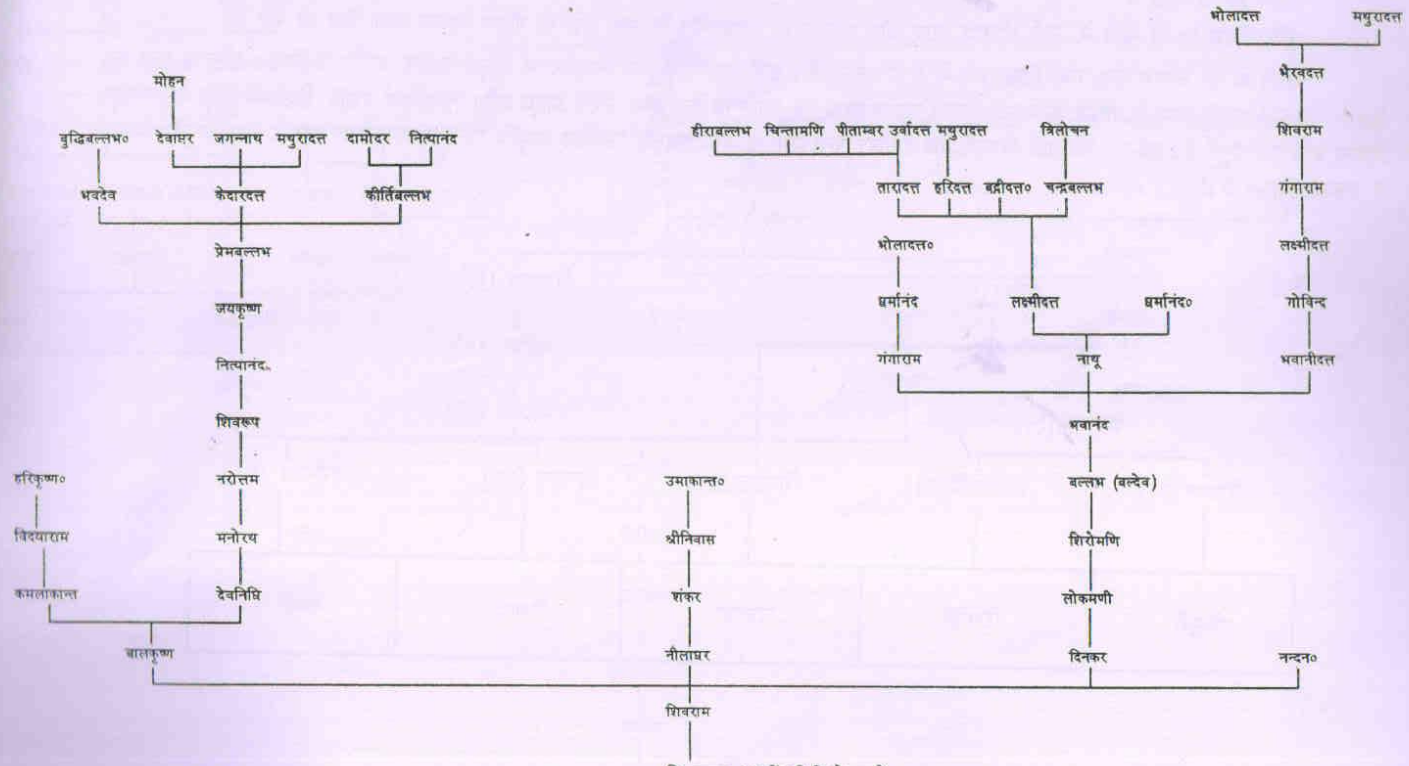

विष्णुदत्त १२वीं पीढ़ी से आगे

भाग-५ (गौतम ज्यूराठ)

सातवीं पीढ़ी में शिवदेव के चार पुत्र हुये, दामोदर, भानदेव, शम्भूदास और ब्रह्मदेव प्रथम तीन भाइयों को मणिकोटी राजा ने विभिन्न पदों पर नियुक्त किया और उन्हें अपने साथ गंगोली ले आये। चूंकि ब्रह्मदेव को कोई पद नहीं मिला अत: वे ग्राम रिखाड़ी में ही रहे। इनके वंशज कृषि कार्य व ब्रह्मवृत्ति करने लगे। कालान्तर में ये निम्न प्रकार विकसित हुये।

ब्रह्मदेव ८ वीं पीढ़ी में
आनन्ददेव ९ वीं पीढ़ी में
गौतम १० वीं पीढ़ी में

चूंकि गौतम १० वीं पीढ़ी में, शर्म, श्रीनाथं, नाथू और भवदास के समकालीन थे अत: इन्हें भी गौतम ज्यूराठ नाम दिया जा रहा है।

खाड़ी के श्री वल्लभ पन्त राजा विमलचन्द के सेनानायक रहे। इन्हें कालीगाड़ तथा सारकोट में विस्तृत जमीन जागीर में मिली। श्रीकृष्ण पन्त सन् (१८८७-१९६१) अपने समय के प्रसिद्ध कर्मकाण्डी विद्वान् एवं ज्योतिषी रहे इनके लिखित ग्रन्थ, सरल श्राद्ध दर्षण नित्य कर्म पद्धति, द्विजकर्म स्मृति एवं ज्योतिष विज्ञान ग्रन्थ महत्वपूर्ण हैं। वर्तमान में खाड़ी निवासी वैद्य दामोदर पन्त एम. ए. ज्यो. शास्त्री "साहित्य आयुर्वेद रत्न ज्योतिष तथा आयुर्वेद और आयुर्वेद विज्ञान के प्रकाण्ड विद्वान् हैं।"

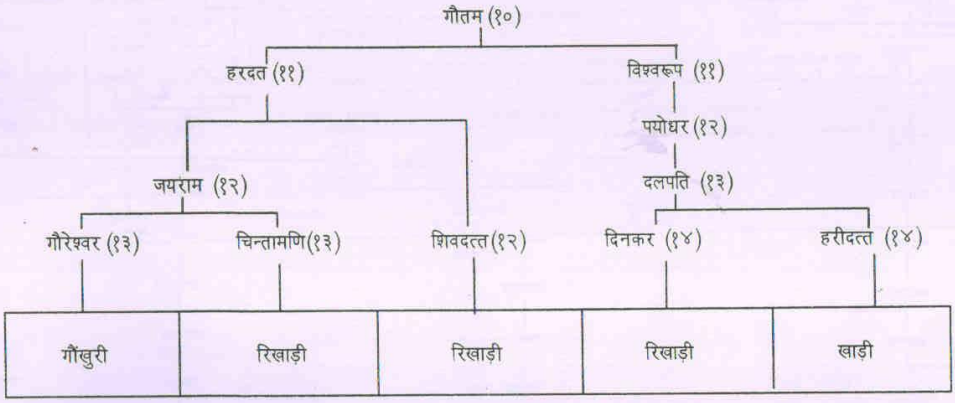

ग्राम गौंखुरी

गौरेश्वर की शाखा।

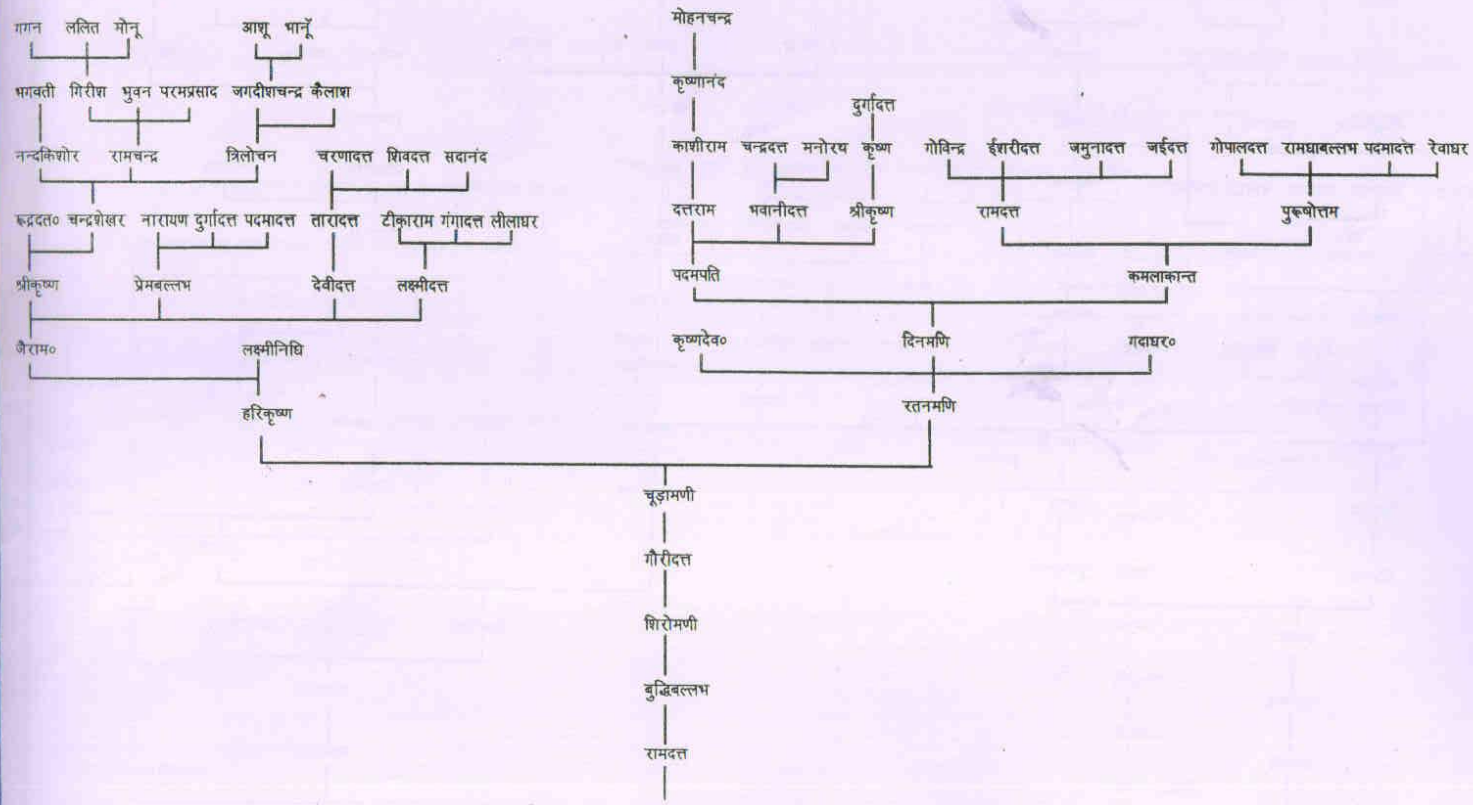

गौरेश्वर-१३वीं पीढ़ी से आगे।

ग्राम रिखाड़ी–चिन्तामणी एवं शिवदत्त की शाखा।

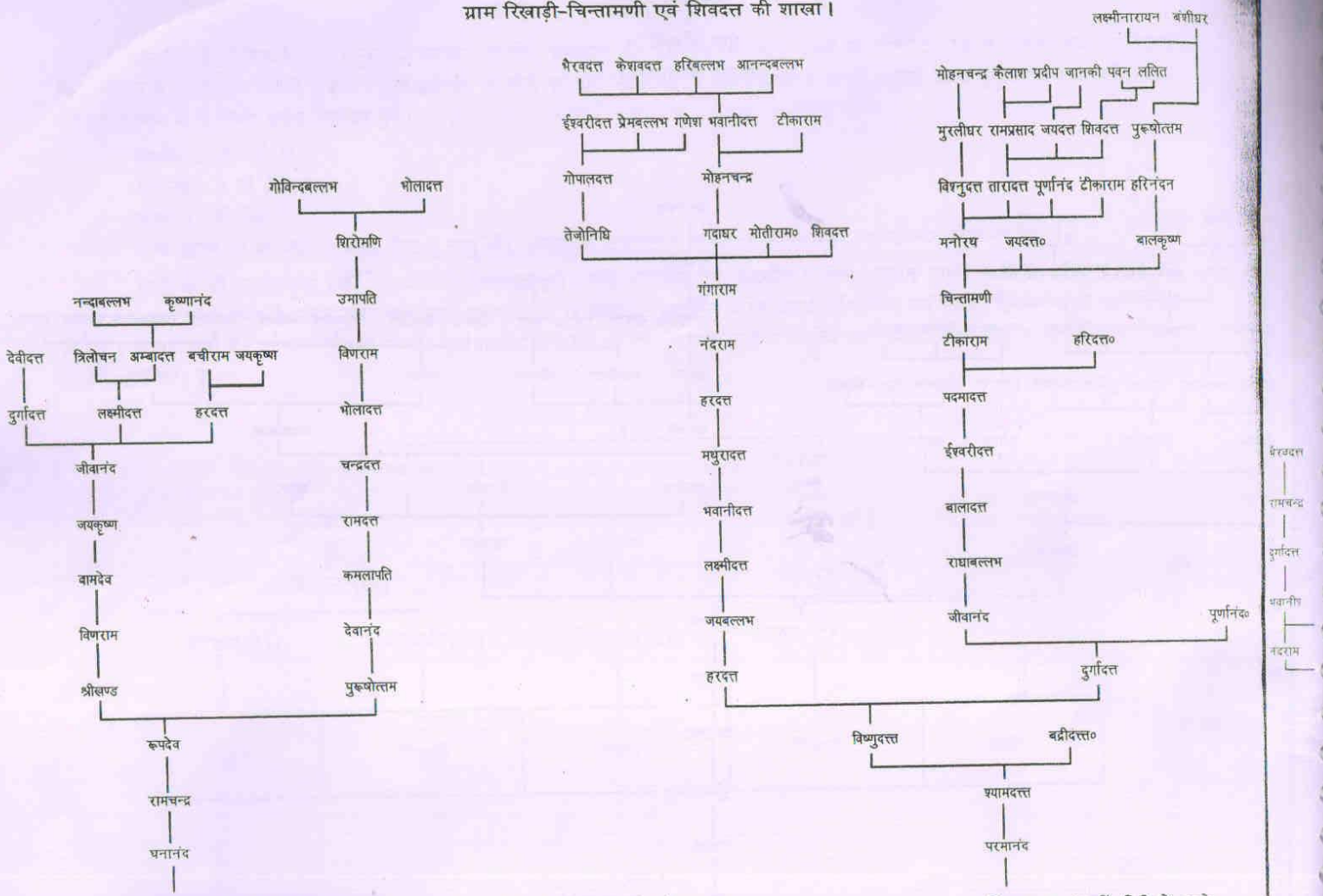

चिन्तामणी–१३वीं पीढ़ी से आगे

शिवदत्त – १२वीं पीढ़ी से आगे

ग्राम रिखाड़ी और खाड़ी- दिनकर की शाख (रिखाड़ी) हरिदत्त की शाखा (खाड़ी)

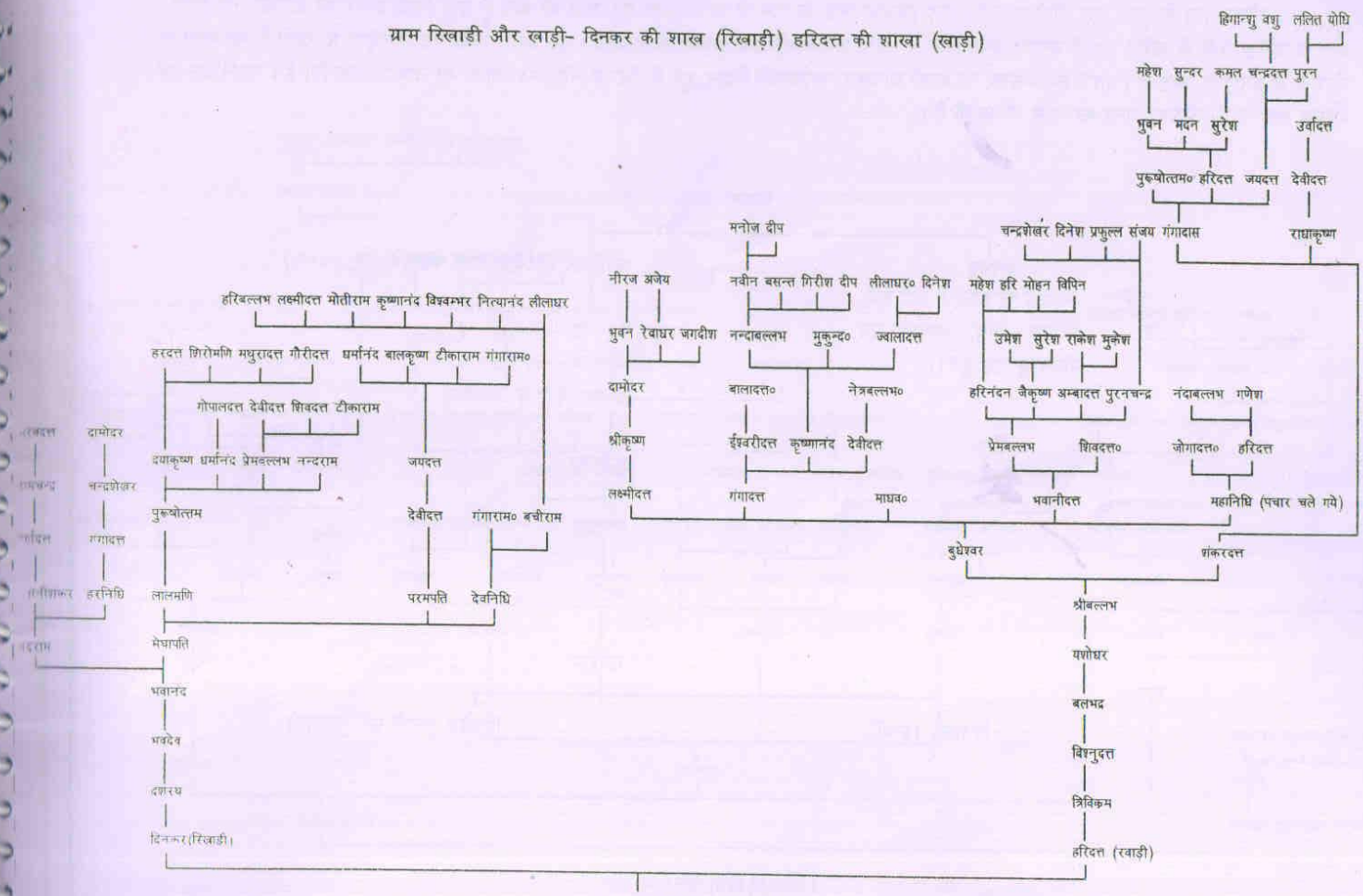

दलपति-१३वीं पीढ़ी से आगे।

भाग-६ (हटवाल पन्त)

श्रीधर पन्त के दूसरे पुत्र श्रीगोपाल की संतान हटवाल पन्त के नाम से जानी जाती है। राजा की ओर से इन्हें किसी प्रकार की प्रतिष्ठा नहीं मिली। अतः ये प्रसिद्ध नहीं हो पाये। इनकी सन्तान गंगोलीहाट के आस-पास लाली एवं चुढ्यार में रहते हैं। एक शाखा दन्यां पट्टी रंगोड़ में रहती है जो दन्यां के जोशियों में ब्रह्मवृत्ति करते हैं। इनमें समय-समय पर अच्छे जानकार कर्मकाण्डी विद्वान् हुये हैं, जिनमें नीलकण्ठ शास्त्री का नाम उल्लेखनीय हैं। राजनैतिक एवं वैद्यक क्षेत्र में पं. सीतावर पन्त का नाम भी अग्रणी है।

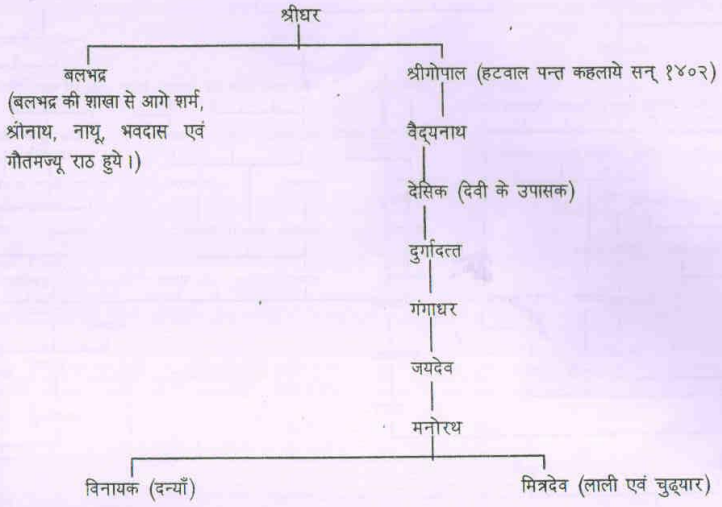

ग्राम दन्यां, लाली और चुढयार

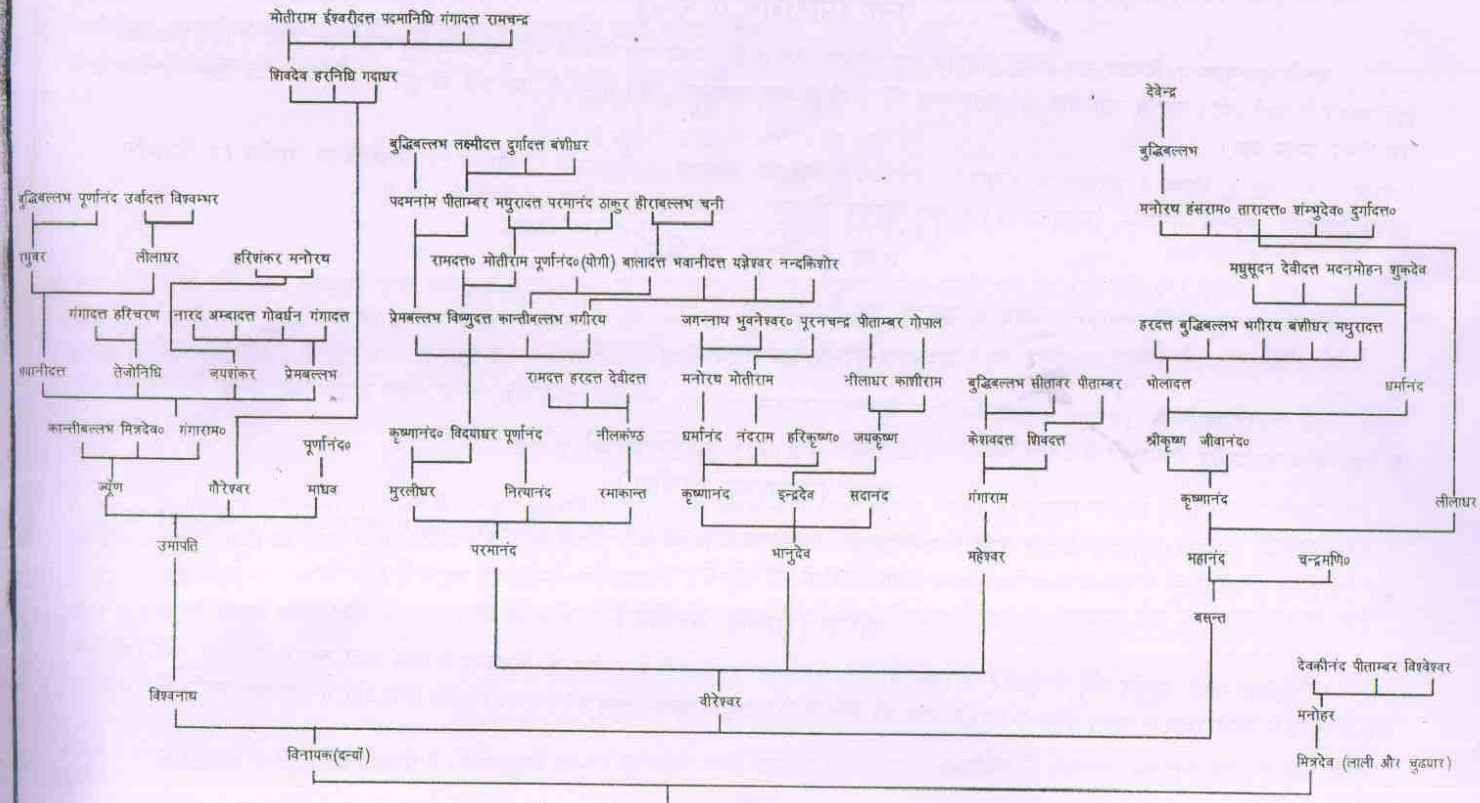

मनोरथ-१२वीं पीढ़ी से आगे।

भाग-७ अन्य गोत्रीय ब्राह्मण

कुमाऊं में ब्राह्मणों के अनेक वर्ग हैं। कुछ छठी व आठवीं शताब्दी के बाद कत्यूरी एवं चन्द राजाओं के शासनकाल में दक्षिण व गुजरात, से आकर यहां बस गये, कुछ उत्तरी भारत के मैदानी क्षेत्रों से भी आये। कुछ वे हैं जो इन्हीं में से आचार-व्यवहार व धनादि के अभाव में ब्रह्मवृत्ति, कृषि आदि करने लगे। कालान्तर में उनमें से कुछ कुटुम्ब, धन, विद्या प्राप्त कर प्रतिष्ठित हो गये। शेष वे हैं जो यहां पूर्व से ही बसे हैं तथा खस राजपूतों के पुरोहित थे और अपने-अपने पेशे से अथवा गांव के नाम से जाने जाते हैं। जिनमें से कुछ ब्राह्मण ही अधिक प्रकाश में हैं।

पन्त (पाराशर गोत्रीय)

इनके मूल पुरुष पं. दिनकर राव अथवा नीलमणि पन्त कौंकण प्रदेश से पं. जयदेव पन्त के साथ बद्रीनाथ यात्रा हेतु आये और उन्हीं के साथ उडयारी ग्राम कत्यूर में रहने लगे। बाद में जहां-जहां भारद्वाजीय पन्त गये उन्हीं के साथ-साथ जाते रहे। मणकोटी राज इन्हें जोग्यूड़ा ग्राम में रहने को मिला। इनका वंश निम्न प्रकार बढ़ा।

दिनकर १, नन्दराम २, श्रीहर्ष ३, हरिदत्त ४, हरिहर ५, कालेश्वर ६, चैतेश्वर ७, व्यास ८, चिन्तामणि ९, चतुर्भुज १०, दिनमणि ११, रामदेव १२, शिरोमणि १३, (शिवनिधि, गुणानंद, नन्दराम, रमाकान्त १४) ये लोग चिटगल, जोग्यूड़ा, बसै, कालासिल, पिपलेत एवं बडेत में रहते हैं।

पन्त (वशिष्ठ गोत्रीय)

ये वलना, कुणकोली, पन्तगांव रानीखेत के आसपास रहते हैं। सम्भवत: ये गढ़वाल की ओर से आये हैं।

पन्त (भारद्वाज गोत्रीय-शिराडी)

ये अस्कोट इलाके के ग्राम आगों में रहते हैं। नेपाल के शिराडी ग्राम से आये अत: शिराडी पन्त भी कहे जाते हैं। चूंकि इनकी गोत्र परम्परा शिष्यानुसार है, अत: अन्य भारद्वाजीय गोत्र पन्तों से इनकी ब्याह शादी हो जाती है।

पन्त (उपमन्यु गोत्रीय)

ये लोग जिला पिथौरागढ़ में कनाली छीना के पास सांगड़ी, मिताड़ीगांव तथा गुडार में रहते हैं। ये लोग नेपाल से आकर काली नदी के किनारे रहने लगे इन लोगों के भी आपस में संबंध, विवाह आदि अन्य गोत्रीय पन्तों से हो जाते हैं।

पाण्डे (मानस गोत्रीय)

मंडलिया पाण्डे चतुर्भुज और पं. मूलदेव, सारस्वत ब्राह्मण खरोटा के रहने वाले दोनूं लोग कु. सोमचन्द के साथ काली कुमाऊं में आये। राजा बनने पर सोमचन्द ने अपने राज्य के मल्ला मंडल में चतुर्भुज पाण्डे को और तल्ला मंडल में मूलदेव पाण्डे को कारदार नियुक्त किया और मनाली ग्राम जागीर में दिया।

अतः ये मंडलिया पाण्डे नाम से जाने जाते हैं। इनके वंशज, मानली तथा बेलकोट ग्रामों में तथा एक दो कुटुम्ब अन्यत्र भी रहते हैं।

पाण्डे देवलिया (गौतम गोत्री)

अठकिंसन के अनुसार गौतम गोत्रीय पाण्डे कांगड़ा से राजा मोहरचन्द के समय आये। पं. रुद्रदत्त पन्त के अनुसार श्री जयन्त देव पाण्डेपश्चिम ज्वालामुखी से कुं. वीरचन्द के पास आये। (यही सत्य लगता है क्योंकि अभी तक ये लोग ज्वाला देवी के उपासक हैं) जब वीरचन्द राजा बने तो उन्होंने पाण्डे जी को अपना पुरोहित बनाया, देवल उर्फ द्योलीगांव जागीर में दिया। इनके वंशज द्योलिया (देवलिया) पाण्डे कहे जाते हैं। ये लोग द्योलिया गांव (कुमाऊं) छांना, पल्यू, संगरौली, पाण्डेखोला, चम्पानौला अल्मोड़ा, छचार, बांसभीड़ा, पाटिया आदि ग्रामों में रहते हैं।
पल्यूं वालों के ताम्रपत्र में लिखा है।

कल्याण चंद सुतं रुद्रनरेन्द्र सूनुः।
श्री लक्ष्मणेन्द्र तनयेन धुरन्धरेण।
भूमिर्मनोरथ भगीरथ पण्डितोभ्याम।

पाण्डे पारकोटी (वत्सभार्गव गोत्रीय)

इनके मूल पुरुष श्रीब्रह्मा पाण्डे कांगड़ा से राजा संसार चन्द के समय आये और राजवैद्य हुये। इनके चार पुत्र (१) बद्री, (२) कालधर, (३) दशरथ और (४) देवकीनन्दन हुये। बद्री की सन्तान नायल पारकोट में रही। कालधर की सन्तान लेजम (थल के पास) एवं पट्टी सीरा करेला ग्राम में रहते हैं, ये अपना उपनाम पन्त लिखते हैं और वैद्यगिरी करते हैं। समय-समय पर इनमें निपुण वैद्य हुये हैं। दशरथ के वंशज अनूपशहर में रहते हैं। और प्रसिद्ध वैद्य हैं और देवकीनन्दन की सन्तान मझेड़ा (गरम पानी के निकट) रहती है।

पाण्डे सिमलटिया (कश्यप गोत्रीय)

ज्योतिषाचार्य स्व. मनोरथ शास्त्री के अनुसार श्री हरिहर पाण्डे राजा सोमचन्द्र के साथ आये थे, लेकिन पं. रुद्रदत्त पन्त जी के मतानुसार श्रीधर पाण्डे कन्नौज से आये। डोटी की तराई में कुं. वीरचन्द से मिले, जिसने राजा बनने के बाद श्रीधर पाण्डे को अपना गुरू बनाया। रसिपौला (वर्तमान सिमल्टा) गांव जागीर में दिया। सिमल्टा ग्राम में रहने के कारण सिमल्टिया पाण्डे कहलाते हैं। चूंकि ये राजा के विश्वास पात्र थे इसलिये रसोई बनाने का कार्य इन्हें सौंपा गया। सभी लोग इनका बनाया खाना खाते थे। अब इनके वंशज सिमल्टा, ढोलीगांव सालम, पचार, चामी विजोरी में रहते हैं। राजगुरू होने के कारण ये श्रेष्ठ माने जाते हैं।

पाण्डे (काश्यप गोत्रीय)

ये बड़खेड़ा के पाण्डे भी कहलाते हैं। कान्यकुब्ज ब्राह्मण श्री महती पाण्डे कन्नौज से बड़ोखरी (काठगोदाम के आसपास, अब लुप्त प्राय) में ठहरे इनके

सिंह और नृसिंह दो पुत्र हुये। इन्हें राजा ने राजगुरू भी बनाया। सिंह की सन्तान पाण्डेगांव भीमताल, सिलौटी, नाहन, पान, बैड़ती, भाटकोट और पीपलटांडा आदि ग्रामों में रहते हैं।

पाण्डे (भारद्वाज गोत्रीय)

कत्यूरी राज्य काल में चित्रकूट खोर के निवासी भारद्वाज अश्वस्थामा के वंशज श्रीवल्लभ पाण्डे कत्यूर में आये। राजा ने मल्ला स्यूनरा में जमीन दान में देकर बसाया और राजभवन में उपाध्याय (वेदपाठी) नियुक्त किया। श्रीवल्लभ के ज्येष्ठ पुत्र पदमा उपाध्याय के वंशज में गंगाधर को पाटिया ग्राम मिला और कत्यूरी राजाओं ने उन्हें अपना गुरू बनाया। पं. मधुसूदन पाण्डे ने राजा मोहनचन्द को नौ लाख मुद्रा ऋण दिया तब से इनकी सन्तान नौलखिया पाण्डे कहलाते हैं।

पदमा उपाध्याय के अन्य तीन भाइयों में एक ने लकड़ी के अभाव में लोहे का होम कर दिया, जिसके कारण आसपास की मिट्टी काली हो गयी, उस स्थान का नाम कलमटिया प्रसिद्ध हो गया। लौह होम के कारण ये लौहहोमी या लोहनी हो गये। अन्य भाई वेद में निपुण थे। वेदों की ऋचा के पालक यानी वेदों के काण्डों के पालक थे इसलिये वे काण्डपालक (काण्डपाल) नाम से जाने जाते हैं। ये लोग ग्राम लोहना, थापला, सत्राली आदि में रहते हैं।

श्रीवल्लभ जी तांत्रिक थे। उन्होंने सत्राली गांव में पानी की कमी को पूर्ण करने हेतु कुशा घास उखाड़कर पानी प्रकट किया। इनके नाम से अब भी वहां पर पानी का स्रोत श्रीवल्लभ का धारा (पानी का स्रोत) के नाम से जाना जाता है। इनके वंश के लोग पाटिया, कसून, पिलखा, पतेलखेत, भैंसोड़ी, उकाल, बल्दगाड़ और भगौती आदि स्थानों में रहते हैं।

जोशी

जोशी, ज्योतिषी अथवा ज्योतिर्विद सब एक ही नाम के पर्याय हैं। ज्योतिष विज्ञान में विद्वान् होने के कारण ये लोग प्रसिद्ध हुये। पर्वतीय जोशी अधिकतर कान्यकुब्ज ब्राह्मण हैं। विद्वान् एवं चतुर राजनीतिज्ञ होने से तत्कालीन राजाओं पर प्रभावित रहे। तमाम राजनीतिक शक्ति झिजाड़, गल्ली तथा दन्यां के जोशियों के हाथों में रही और सत्ता में बुद्धि कौशल से निर्णयों को प्रभावित करने में सदैव सक्षम रहे।

जोशी (गर्ग गोत्रीय)

उन्नाव ड्योड़ियाखेड़ा के कान्यकुब्ज ब्राह्मण सुधानिधि चौबे, कुं. सोमचन्द के साथ कुमाऊं में आये। जब कुं. सोमचन्द को राज्य मिला तो उन्होंने सुधानिधि को मंत्री बनाया। ज्योतिष अध्ययन के कारण सुधानिधि जोशी कहलाये, चन्द राजा का विजय मुहूर्त बताने से मंत्री पद मिला। इनका पुत्र भरत जोषी (जोशी) राजा भारती चन्द के साथ द्वादश वर्षीय युद्ध में डोटी गया और विजय के उपलक्ष्य में, अमोली और डुंगराकोट ग्राम जागीर में मिले। सन् १३८२ में इनकी मृत्यु हो गयी। इनका पुत्र वैकुण्ठ, राजा कीर्तिचन्द का मंत्री बना। इसने चौंगरर्वा, बारामंडल को चन्द राज्य में मिलाया। कत्यूरी वंश मांडलीक नृपों और गढ़नृपों को पराजित किया। इनके दो पुत्र थे पुरुषोत्तम और वासुदेव। उस समय कुमाऊं में दो धड़े (पक्ष) थे। महरा धड़ा राजा के पक्ष का और फरत्याल धड़ा सैनिक

विभाग के मुखिया का। पुरुषोत्तम महरा पक्ष के और वासुदेव फरत्याल पक्ष में रहे। पुरुषोत्तम सन् १५६२ में मंत्री बने। इनकी सन्तान मल्ला जोशी (सेलाखोला एवं झिजाड़वाले) कहलाये और वासुदेव तल्ला जोशी 'दिगोली' कहलाये।

भूमि कर की आय का चौथा हिस्सा मंत्रियों को मिलता था यही उनकी वृत्ति थी। पुरुषोत्तम के दो लड़के, हेरम्ब और श्रीकृष्ण हुये। हेरम्ब जोशी राजा लक्ष्मीचन्द के समय अल्मोड़ा आये। श्रीकृष्ण जोशी एक कुशल व नीतज्ञ मंत्री था। इसी की प्रेरणा से अल्मोड़ा राजधानी बनाई गई। ये मोहल्ला सेलाखोला में रहे जबकि हेरम्ब झिजाड़ में रहे। इनके पुत्र विष्णुदास और नरोत्तम हुये।

विष्णुदास के पुत्र ऋषिकेश हुये और ऋषिकेश के पांच पुत्र क्रमशः मनोरथ, पदमपति, जयकृष्ण, बालकृष्ण एवं दामोदर हुये। मनोरथ की भी पांच सन्तानें हुईं। रामकृष्ण, लक्ष्मीकान्त, दयानिधि, वीरभद्र और बलभद्र। रामकृष्ण को कलौन ग्राम मिला। सुप्रसिद्ध विद्वान हरीदत्त जी षटशास्त्री इसी शाखा में पैदा हुये लक्ष्मीकान्त को झिझाड़, दयानिधि को मल्ला स्यूनरा, विश्वेश्वर को कोतवाल गांव और बलभद्र को सीरा मिला।

नरोत्तम जोशी को भी झिजाड़ गांव मिला उसे पूर्वी माल (वर्तमान रुद्रपुर) का अध्यक्ष बनाया गया। इनके दो पुत्र हुये। महानंद और जयशंकर। महानंद का पौत्र हरिराम प्रसिद्ध सेनापति हुआ। जयशंकर का पुत्र चक्रधर राजा का अमात्य था। जयदेव को दशलता एवं बजेल ग्राम मिले। उनकी सन्तानों में से शिवदेव जोशी राजा कल्याणचन्द व दीपचन्द के प्रसिद्ध मंत्री रहे। शिवदेव के दो पुत्र जयकृष्ण व हर्षदेव हुये। इन्होंने चंद, गोरखा और अंग्रेजी शासनकाल में, सबको अपने राजनीतिक चाल से कठपुतली की तरह नचाया। जयकृष्ण के लक्ष्मीनारायण हुये। ये बक्शी कहलाये क्योंकि ये फौजी सरदार थे। हर्षदेव जी के दो पुत्र हुये मदान नारायण उर्फ गुजलला और बद्रीदत्त। अंग्रेजों के ये आखरी पोलिटिकल पेंशनर थे। कहते हैं कि गुजलला पहिले व्यक्ति थे जिन्होंने हुक्का पानी शुरू किया था क्योंकि उस समय हुक्का पीना अशुद्ध माना जाता था।

दिगौली के विजयदास को मिला ताम्रलेख कुछ इस प्रकार है। "श्री लक्ष्मणेन्दुना तेन वासुदेवात्मज, श्री शाके १५२३ समये ज्येष्ठ सुदी १५ शुक्रवासरे श्री महाराजाधिराज लक्ष्मणचन्द दैवेग्यं भूमि संकल्प पूर्वक करी लखनपुर, मौबल सामाल आली व दिगौली दीनी। श्री राजा लक्ष्मणचन्द देव की सन्तति ले भूमिदान करो विजयदास जोशी ज्यू की सन्तति ले भुचनी साक्षी श्री राजकुमार दिलीपचन्द, अर्जुन गुसांई।"

जोशी दन्यां (उपमन्यु गोत्रीय)

श्रीनिवास द्विवेदी प्रयागराज के समीप जयराजमकाऊं से राजा मोहरचन्द के समय चौदहवीं शताब्दी में काली कुमाऊं में आये। राजा ने पाण्डे का पद देकर चौथानी ब्राह्मणों में सम्मिलित किया और चौकी गांव रहने को दिया। कुछ पीढ़ियों के बाद इनमें से एक भाई नेपाल को चला गया। कुछ भाई वैद्य हुये। जो भाई बनारस से ज्योतिष पढ़कर आया वह जोशी कहलाया। सोलहवीं शताब्दी में श्री रघुनाथ जोशी को चौगर्खा में दन्यां ग्राम जागीर में मिला, दन्यां के जोशी कहलाये। जागेश्वर मन्दिर के प्रबन्धकर्ता रहे। अल्मोड़ा में जब राज दरबार आया तो श्री भरत जोशी राजपदाधिकारी नियुक्त हुये दीवान कहलाने लगे। राजा बाजबहादुरचन्द व उद्योतचन्द के समय जयदेव जोशी एवं राजा कल्याणचंद के समय, शिवदेव तथा हरिराम और भवानंद जोशी मंत्री हुये। राजा देवीचन्द के समय

वीरभद्र मंत्री रहे। यशोधर जोशी के नाम से जसपुर बसाया ये तराई के अधिकारी थे। शिवदेव की सन्तान त्रिलोचन जोशी गोरखाराज में दीवान थे और उनके पुत्र बद्रीदत्त जोशी को ब्रिटिश शासकों ने रायबहादुर की पदवी दी। रामजे कमिश्नर के साथ सदरमीन (सदर अमीन) रहे। ये कुशल राजनीतिज्ञ थे और इन्होंने पर्वतीय क्षेत्रों में अंग्रेजी शासन मजबूत करने में रामजे कमिश्नर के हाथ मजबूत किये। इन्हीं की पुत्री के लड़के माननीय पं. गोविन्द वल्लभ पन्त हुये। भवानंद की सन्तान कृष्णदेव राजा दीपचन्द के कार्यकाल से राजा महेशचन्द के कार्यकाल तक मंत्री रहे। ये लोग अब अल्मोड़ा में मोहल्ला तल्ला तथा मल्ला दन्यां, बाहरगांव दन्यां चौगर्खा, बांस (पिथौरागढ़) तथा कोटगांव में रहते हैं।

जोशी गल्ली (आंगिरस गोत्रीय)

कत्यूरी राज्य के समय, श्रीनाथूराज और विजयराज ज्योतिषार्थ कुमाऊं में आये और कार्तिकेयपुर में ठहरे। कत्यूर में सौढ़े (सेणू) ग्राम जागीर में मिला। राजज्योतिषी नियुक्त हुये। सेढ़याल जोशी कहलाये। एक भाई को माला ग्राम जागीर में मिला। इस ग्राम के पं. रुद्रदेव जोशी ने राजा बाजबहादुरचन्द के समय ज्योतिष चन्द्रार्क ग्रन्थ लिखा। सर्प एवं पल्यूड़ा ग्राम भी एक भाई की सन्तान को जागीर में मिले। श्री पदमनिधि जोशी को गल्ली ग्राम जागीर में मिला। सन् १६२६ में राजा विमलचन्द्र के दरबार में श्री दिनकर जोशी ब्राह्मणों के हिसाब के लेखक नियुक्त हुये, तब से ये लोग सहायक दीवान कहलाये। इस गोत्र के जोशी, गल्ली, सर्प, पल्यूड़ा, माला, चौड़ा, कपकोट, खरगौली हनेती, गणकोट महिनारी आदि स्थानों में रहते हैं।

पोखरी भेरंग के जोशी (कौशिक गोत्रीय)

मणाकोट राज के समय, कृष्णानंद जोशी नेपाल के पिउठणा स्थान से गंगोली में आये। राजा बाजबहादुरचन्द ने मनोरथ जोशी को पोखरी ग्राम जागीर में दिया तथा राजा उद्योत चन्द ने ऋषिकेश जोशी को सेलौनी ग्राम ताम्रपत्र करके दिया। ये लोग ज्योतिष विद्या में प्रवीण थे। पंचाग के गणनाकार रहे। इनके चार राठ (शाखा) हैं। माधव जोशी की सन्तान छकाता में रहती हैं। इसी शाखा के पं. रामदत्त ज्योतिर्विद एक महान विद्वान् एवं पंचाग गणनाकार हुये। यही कार्य इनके परिवार में अभी तक चला आ रहा है। ये लोग तांत्रिक भी थे, ऐसा कहा जाता है कि इनके किसी मूल पुरुष ने ग्राम पोखरी में कटार मार कर पानी निकाला था। उस जलाशय का नाम रुड़की मुंगरू है।

जोशी लटौला (भारद्वाज गोत्रीय)

चन्दवंशीय राज्य के समय श्री शक्ति शर्मा कन्नौज से काली कुमाऊं आये। एक अन्य मत से श्रीपचारद दुबे शुक्ल ब्राह्मण बद्रीनारायण यात्रा हेतु कुमाऊं आये। तत्कालीन राजा ने राज्य में ठहराया। लटौला प्रभृति गांव जागीर में दिये। ब्राह्मण विद्वान् थे। बोलने में तुतलाते थे, इसलिये उनको लाटो (गूंगा) जोशी कहते थे। जो गांव जागीर में मिला उसे "लाटोवाला" या लटौला प्रसिद्ध हुआ। लटौला जोशी, लटौला (चम्पावत में) जजुट, पाटिया, भैसोड़ी, तिलाड़ी, भेटा, सकनोली तथा उर्ग ग्राम में रहते हैं।

जोशी मस्मोली (कश्यप गोत्रीय)

महाराष्ट्र के कौंकण क्षेत्र से नेपाल आये। नेपाल में मल्ल राजाओं के साथ सीराकोट (डीडीहाट के पास) राजा ने मस्मोली ग्राम रहने को दिया। मल्ल (गोर्खाओं) और बाद में चन्द राजाओं के शासन काल में राज ज्योतिषी रहे। वार्षिक पंचाग की गणना करते थे। ये अपने साथ पलाश (ढाक) यज्ञ काष्ट की पौध भी लाये, जिसका वृक्ष इस गांव में अभी विद्यमान है।

जोशी शिल्वाल (भारद्वाज गोत्रीय)

राजा सोमचन्द के समय कन्नौज के निकट असनी गांव से भारद्वाज गोत्रीय त्रिवेदी लंकराज, तीर्थ यात्रार्थ कुमाऊं में आये। शिलग्राम जागीर में मिला, ज्योतिष का कार्य करते थे। अत: शिल्वाल जोशी कहलाने लगे। इन्हीं में एक पृथ्वीराज जोशी अल्मोड़ा आये। श्रीचन्द त्रिपाठी ने उन्हें अपनी कन्यां ब्याह दी। अल्मोड़े की अपनी भूमि का तृतीयांश भाग भी दे दिया। राजा ने इन्हें पुरोहिताई दी। पृथ्वीराज की तीन सन्तानें हुईं रुधाकर, दयाधर और भाष्कर तीनों ज्योतिष विद्या के ज्ञाता थे रुधाकर घराने के लोग शिल्वाल जोशी अल्मोड़ा जोशी खोला में रहते हैं। एक भाई राजा के साथ काशीपुर चले गये और वहीं बस गये। भाष्कर की सन्तान के अल्मोड़ा आने पर सैंज अनुली गांव पट्टी बिशौत में मिला ये सैंज के जोशी कहलाये। दयाधर की सन्तान को खेर्द व मकड़ी गांव राजद्वार से प्राप्त हुये खेर्द के रहने वाले खेर्द के जोशी और मकड़ी के रहने वाले मकड़ी के जोशी कहलाये। रुधाकर की सन्तान पं. चन्द्रमणि जोशी गोर्खा राज्य के समय फौजदार हुये। उनको धुरागांव जागीर में मिला धुरवाल जोशी कहलाये। बाद में चीनाखान में रहने से चीनाखान के जोशी कहलाते हैं।

तिवाड़ी सामवेदीय (गौतम गोत्रीय)

तिवाड़ी, तिवारी, त्रिपाठी अथवा त्रिवेदी सब एक ही गोत्र के हैं। कालान्तर में कोई अपने को तिवाड़ी, कोई तिवारी और कोई त्रिपाठी और कोई त्रिवेदी लिखने लगे। गुजरात के अमलाबाद-बड़नगर से श्रीचन्द्र तिवारी अपने पुत्र शुकदेव के साथ राजा उद्यान चन्द के समय कुमाऊं आये। राजा ने पिता की अपेक्षा पुत्र को अधिक सम्मान दिया। श्रीचन्द तिवारी राजा से नाराज होकर अल्मोड़ा की ओर आ गये। तब अल्मोड़ा शहर नहीं बसा था। यहां मंडलीक कत्यूरी राजा राज्य करते थे। राजधानी खगमराकोट में थी। राजा का माली फलों की डाली ले जा रहा था। पूछने पर उसने बताया कि यह फलों की डाली राजा के लिये है। श्रीचन्द तिवारी कुछ क्षण के लिये ध्यानमग्न हो गये, पश्चात माली से कहा कि यह नीबूं का फल राजा को न देना क्योंकि इसके अन्दर दूसरा फल है, यदि राजा उसे खायेगा तो अशुभ होगा। सत्यता जानने के लिये राजा ने नीबूं कटवाया और उसके अन्दर दूसरा फल देखकर, वह अचंभित हो गया। राजा के पूछने पर ब्राह्मण तिवारी ने अपना देश, जाति आस्पद का विवरण दिया और अशुभ निवारण हेतु राजा को राय दी है कि यह फल जिस जमीन में पैदा हुआ है उसे किसी ब्राह्मण को दान में दे देनी चाहिये। राजा ने वह भूमि श्रीचन्द तिवारी को ही दान में देनी चाही, लेकिन उन्होंने कहा कि वे परदेशी हैं यह भूमि लेकर क्या करेंगे। राजा के हठ करने पर तिवारी इसके लिये सहमत हो गये और राजा ने अल्मोड़ा की लगभग सारी भूमि संकल्प करके श्रीचन्द तिवारी को दान में दे दी। अल्मोड़ा में जल कम था तिवारी तांत्रिक भी थे, उन्होंने प्रोक्षण करके जल पैदा किया। जब राजा बालोचन्द ने अल्मोड़ा शहर बसाया तो उसने तिवारी

खानदान के लिये कुछ भूमि छोड़कर बाकी भूमि शहर बसाने के लिये ले ली और बदले में दस गुना भूमि अन्यत्र दे दी।

श्रीचन्द की वंशावली का थोड़ा सा भाग निम्न प्रकार है :

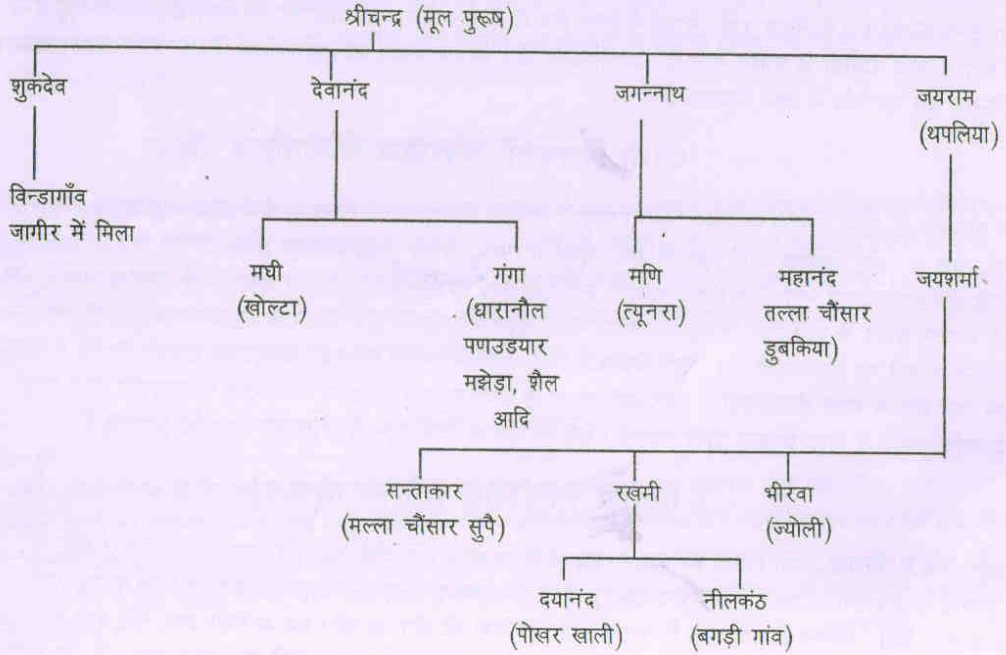

इन लोगों को कुछ गांव जागीर में मिले और कुछ अल्मोड़े की जमीन के बदले में मिले और ये लोग फैलते गये, कुछ प्रसिद्धि में आये कुछ प्रकाश में नहीं आये। शकुदेव बिन्डाग्राम चले गये और बिन्डा के तिवाड़ी कहलाने लगे। मघी के वंशज खोल्टा मोहल्ला में रहते हैं। गंगा की सन्तान, धारानौला, पणउडयार मझेड़ा, शैल, जाख, कुंगाड़खेत, निशणी आदि जगहों पर रहती हैं। कोई रामपुर व काशीपुर में भी रहते हैं। महानंद के घराने के लोग तल्ला चौंसार खरकोट, डुबकिया में रहते हैं। डुबकिया के लक्ष्मीपति को करास ग्राम मिला। ये धर्माधिकारी रहे। सन्ताकर की सन्तान में नारायण तिवारी हुये। इनकी माता ने बाजबहादुरचन्द

की रक्षा की तथा पाला-पोसा। राजा बनने पर बाजबहादुरचन्द ने नारायण तिवाड़ी को बहुत सम्मान दिया और जागीरें दीं। इन्हीं के नाम से बना नारायण तिवाड़ी देवाल (देवालय) अल्मोड़े में अभी भी विद्यमान है। इनके वंशज मल्ला चौंसार, सुपै, बरेली, चाऊपुर, लोहस्याल, चन्दौसी, हाथरस, मथुरा आदि स्थानों में रहते हैं। रखमी के पुत्र नीलकंठ को कैड़ारौ में बगड़गांव मिला, ये बगड़गांव के तिवारी कहे जाते हैं। रखमी की सन्तान मध्ये दयानन्द की सन्तान पोखरखाली में रहती है। भीरवा की सन्तान ज्योली में रहती है और जयराम की थपलिया में। कहा जाता है कि तिमली, रमड़ा, दोरा, दैरी के लोग भी सामवेदीय और गौतम गोत्रीय हैं और गढ़वाल से आये हैं।

भट्ट विशाड़ (विश्वामित्र गोत्रीय)

श्रीविश्वकर्मा, दक्षिण द्रविड़ देश से ब्रह्म उर्फ बम राजाओं के समय सोर (पिथौरागढ़) आये। बम राजाओं ने उन्हें वेदपाठी जानकर अपने यहां आश्रय दिया। विश्बाड़ उर्फ बिषाड़ गांव दान में दिया और राजकर्मचारी भी बनाया। अब ये लोग बिषाड़, खेती गांव, पल्यूं कांशीपुर व रामनगर में रहते हैं। कुछ पन्तों की तरह ये लोग भी निरमांसी हैं, प्याज, लहसुन भी नहीं खाते हैं। बिषाड़ के भट्टों के अलावा भी कुछ भट्ट और हैं, ये राजा भीष्म चन्द के समय, दक्षिण व बनारस से आये। राजा ने राजमहल में इन्हें हलवाई का कार्य दिया। इस खानदान के लोगं अल्मोड़ा व उसके आसपास रहते हैं।

मिश्र, मिश्रा या मिसर (उपमन्यु गोत्रीय)

श्रीनिवास द्विवेदी प्रयागराज से काली कुमाऊं में आये। पाण्डे सकूनत से चौथानी ब्राह्मणों में गिने गये। ये वैद्यक शास्त्र में प्रवीण थे, वैद्य या मिश्र कहलाये। इनकी सन्तान काली कुमाऊं दिपतिया, कुंज, अल्मोड़ा एवं छकाता में रहते हैं।

कोठयारी (भारद्वाज गोत्रीय)

श्री सूर्य दीक्षित कोठारी नागर ब्राह्मण, मलावर के कोठार नगर से कुमाऊं में आये। मणिकोटी राजा ने ब्राह्मण को विद्वान् जानकर आश्रय दिया। भंडार या कोठी का रक्षक नियुक्त किया। कोठयाली या कोठयारी (कोठारी) कहलाये। जिस गांव में रहते थे उसका नाम भी कोठयारी गांव प्रसिद्ध हो गया। यह गंगोलीहाट के नजदीक है। यत्र-तत्र एक दो मवासे अलग से भी रहते हैं। लेकिन वे अधिक प्रकाश में नहीं हैं। पं. रामदत्त ज्योतिर्विद जी ने लिखा है कि ये महाराष्ट्र के कौंकण प्रदेश से आये हैं ये भी पन्त कहलाते थे पर कुठार का कार्य करने से कोठयारी कहलाने लगे।

बिष्ट (कृष्णादि गोत्रीय)

श्री देवनिधि और श्री चन्द्रधर सारस्वत झांसी से राजा सोमचन्द्र के समय काली कुमाऊं में आये। इनको राजा ने अपना कारदार बनाया। फौज तथा दफ्तर में काम करने से विशिष्ट उर्फ विष्ट पद मिला। श्री देवनिधि डड्या ग्राम में रहने से डड्या बिष्ट कहलाये तथा श्री चन्द्रधर सैंज ग्राम में रहने से सौंज्याल बिष्ट कहलाये। इस घराने के कुछ लोग गंगोली में गडेरा व अन्य ग्रामों में भी रहते हैं।

उपाध्याय (उपमन्यु गोत्रीय)

कालीपार नेपाल से आये और पट्टीमाली के खोलीग्राम में रहते हैं। इनके पूर्वज वेदपाठी व कर्मकाण्डी थे। अधिकतर अध्यापक हुआ करते थे अतः उपाध्याय कहलाने लगे।

अवस्थी (अगस्त गोत्रीय)

मैथिली ब्राह्मण पं. विद्यापति अवस्थी रजबार उछवपाल के समय अस्कोट तालुका में आये। पं. रुद्रदत्त पन्त ने इनको कन्नौजिया ब्राह्मण बताया है। ये अस्कोट के रजबार पाल लोगों के दीवान, लेखक व कारोबारी का कार्य करते थे। पाल रजबार ने इन्हें पन्तगांव, नौलविसा, नरेत, चमतोली ग्राम पट्टी गर्खा में दिये। तालुकेद्दारी समाप्त होने पर ये कृषि व वृत्ति का कार्य करते हैं। कुछ परिवार अब बाहर पंजाब, कांगड़ा, लखनऊ, देहरादून आदि स्थानों में बस गये हैं।

ओझा (अत्रिगोत्रीय)

पं. रामदत्त ज्योतिर्विद के अनुसार ओझा लोग, तिरहुत या मिथिला से नेपाल होते हुये, अस्कोट पहुंचे। रजबार दरबार में प्रतिष्ठा मिली। रामी ओझा को देवी पूजा के लिये पुजारी नियुक्त किया गया। पाल खानदान में ये लोग रसोई का कार्य करते थे। ये निरामिष ब्राह्मण हैं। कुछ समय पहले तक नमक भी नहीं खाते थे। अस्कोट तालुका, पट्टी गर्खा में ओझा गांव, कफलौली तथा हेलपिया में रहते हैं। अब कुछ परिवार इधर-उधर शहरों में भी बस गये हैं।

पाठक (शांडिल्य गोत्रीय)

श्री जनार्दन शर्मा सारस्वत ब्राह्मण थानेश्वर कुरुक्षेत्र से मणिकोटी राज्यकाल में गंगोली में आये। पं. रामदत्त ज्योतिर्विद के अनुसार ये शांडिल्य गोत्री पाठक, कान्यकुब्ज ब्राह्मण नरोत्तम वेदपाठी के वंशज हैं, जो अवध के सांणी-पाली गांव से आये। राजा ने हाटकालिका मंदिर में पाठ करने के लिये नियुक्त किया, पास ही गांव रहने को दिया। पाठकों के रहने के कारण इस गांव का नाम पठक्यूड़ा हो गया। कश्यप गोत्रीय पाठकों के मूल पुरुष श्री कमलाकर थे वे अवध के सनार-पाली गांव से आये। ये लोग खेती (चौंगर्खा) दशौली (पट्टी पुंगरांव), पठक्यूड़ा (पट्टी दुग) ज्योली, कराला, ठांगा आदि स्थानों में रहते हैं। पल्याल घराने के पाठक पाली इलाके में रहते हैं।

उप्रेती (भारद्वाज गोत्रीय)

पं. रुद्रदत्त पन्त जी के अनुसार नेपाल के चौकी गांव से पं. शम्भु शर्मा कनौजिया ब्राह्मण काली कुमाऊं आये। राजा ने पेती गांव रहने को दिया, उससे उप्रेती कहलाये। लेकिन पं. रामदत्त ज्योतिर्विद का मत है कि ये द्रविड़ देश से आये। पं. शिवप्रसाद को मणिकोटी राजा ने उप्रेतड़ा गांव रहने को दिया (कालान्तर में यह गांव राजा ने उप्रेतियों से छीनकर पन्तों को दिया, जिन्होंने इसका नाम उप्राड़ा रखा)। उप्रेती लोग पेती, कूं. (वर्तमान कुंजनपुर), सूपाकोट, खेतीधूरा,

कफलनी, पाटिया, अलै, बांकूबिन्डा, हुड़ेती आदि गांवों में रहते हैं। ये (१) सिंह, (२) देव, (३) श्रीधर और (४) पृथ्वीधर चार घरानों में बंटे हैं। गोरखा राज के समय पं. जयकृष्ण उप्रेती सेनाध्यक्ष थे। इनके वंशज अल्मोड़ा में रहते हैं।

इसके अलावा बहुत से ब्राह्मण कुमाऊं में यहीं के पुराने निवासी हैं, जैसे अधिकारी, भाट, दुर्गापाल, पाटणीं, मठपाल, वैष्णव, दुमका पनेरू आदि। कुछ आस्पद गांव के नाम पर उनके कार्य पर हैं। उदाहरणार्थ गुरानी, गुराना ग्राम के, छिम्वाल, छिमी गांव के, भटेनियां, भेटना गांव के, कपोली, कपोला ग्राम के, दुगाल, दुगग्राम के आदि। काम के नाम से जाने जाते ब्राह्मणों में, पूजा करने वाले, पुजारी, हरि-कीर्तन करने वाला हरबोला, फूल देने वाला फुलारा, मठ की रक्षा करने वाला, मठपाल, दुर्ग या मंदिर का रक्षक दुर्गापाल, रानी को मंत्र देने वाला गुरूरानी आदि इस प्रकार कुमाऊं में लगभग तीन सौ प्रकार के ब्राह्मण हैं।

भाग–८

(पर्व, ब्रत, त्यौहार, रीति रिवाज तथा मंत्र, तंत्र प्रयोग)

जिन मुख्य तिथियों में स्नान, दान कर ब्रत रखा जाता है उसे पर्व कहा जाता है। सक्रान्ति, पूर्णिमा, गंगादशहरा (दसार) आदि पर्व हैं। जिन त्यौहारों में आमोद प्रमोद, हर्ष उल्लास मनाया जाता है वे उत्सव कहे जाते हैं। जैसे होली दीवाली आदि। रामनवमी, जन्माष्टमी, शिवरात्रि ये ब्रत हैं, दिन में उपवास रखकर सायं पूजा पश्चात भोजन करने का विधान होता है।

पर्वतीय संस्कृति एक मिली जुली संस्कृति है, जिसमें बाहर से आई विभिन्न जातियों और स्थानीय जातियों के रीति रिवाजों का समावेश है। मुख्यत: हर पर्व में ब्रत पूजा व त्यौहार का विधान होता है। कुमाऊं में मुख्य पर्व आदि निम्न प्रकार मनाये जाते हैं। कुछ सौरमास के अनुसार गते (पैट) को होते हैं और कुछ चान्द्रमांस तिथियों के अनुसार होते हैं। सौर मास की संक्रान्ति को होने वाले पर्व निम्न प्रकार होते हैं:-

मेष संक्रान्ति – वैशाख मास का प्रथम दिन विषौती के नाम से जाना जाता है। इस दिन नदी में स्नान का महत्व माना गया है। ऐसा विश्वास है कि उस दिन शरीर का जो भाग कोरा रह जाय अर्थात् जहां पानी नहीं लगे वहां पर (विष) फोड़ा, फुन्सी, खुजली आदि हो जायेगी। पिथौरागढ़ अंचल में, एक आदमी, दूसरे आदमी को चुपके से सिसैण (एक प्रकार की पहाड़ी घास जिसे विच्छू घास के नाम से भी जाना जाता है) लगा देते हैं, ऐसा विश्वास है कि विच्छू घास के विष के प्रभाव से अन्य कोई विष या बीमारी नहीं होती, इसी कारण इस सक्रान्ति को विषौती सक्रान्ति भी कहते हैं।

कर्क संक्रान्ति– श्रावण की संक्रान्ति को कर्क या हरेला संक्रान्ति कहा जाता है। इस संक्रान्ति से ९-१० दिन पहिले किसी टोकरी में मिट्टी डालकर, बरसात में पैदा होने वाले अनाजों को बोया जाता है और मासान्त के दिन शाम को, मिट्टी के डिकारे (मूर्ति) अर्थात् गौरी महेश्वर, गणेश एवं कार्तिकेय की मूर्तियां बना कर पूजा की जाती है और संक्रान्ति के प्रात: उत्तरांग पूजन पश्चात, हरेला काटकर पहिले, भगवान तथा इष्ट देवता, ग्राम देवताओं की मूर्तियों के सिर पर रखा जाता है तत्पश्चात बहिन बेटियां, हरेला का टीका करती हैं। इसी दिन से दक्षिणायन प्रारम्भ होता है। इस हरेला का रिवाज कुमाऊं से अन्यत्र नहीं है। यह एक स्थानीय त्यौहार है।

ओलगिया संक्रान्ति – भादों मांस की संक्रान्ति ओलगिया संक्रान्ति के नाम से जानी जाती है। उस दिन सम्मानीय तथा विशिष्ट लोगों को ओलगा देने की प्रथा है। चन्द राजाओं के समय शिल्पी लोग अपनी बनाई हुई वस्तुओं को राजा को सम्मान देने के लिये दिया करते थे और बदले में पुरस्कार पाते थे। चन्द राज्य का अन्त होने पर यह प्रथा, केवल सम्मानीय तथा विशिष्ट व्यक्तिओं और पूज्यजनों को देने तक ही सीमित रह गई तथा धीरे-धीरे यह प्रथा लगभग समाप्त हो गई। इस दिन को घी (घ्यू) संक्रान्ति भी कहते हैं। इस दिन बेडुवा रोटी (उड़द की दाल की पिट्ठी से भरी) घी के साथ खाने का रिवाज है, अत: इसे घ्यू संक्रान्त भी कहा जाता है। यह एक स्थानीय त्यौहार है।

आश्विन (कन्या)– मास की संक्रान्ति को कुमाऊं में खतडुवा संक्रान्ति कहा जाता है। इस दिन पहिले से तैयार, सूखी घास के ढेर को जलाया जाता है। शाम को बालबृन्द फूल अथवा फूले हुये कांस के झन्डे बनाकर, भैलो खतुंडवा, भैलो-भैलो, गाते हुये खतड़वा के चारों ओर नांचते, गाते हैं और खतडुवा को

जलाते हैं, उसकी आग सेंकते हैं। पहाड़ी खीरा, खाते हैं और आपस में बांटते हैं। इसकी आग को सेंकने से जाड़ों में शीत जनित (सर्दी जुकाम आदि) रोग नहीं होते ऐसा विश्वास किया जाता है। सत्रहवीं शताब्दी में कुमाऊंनी सेनापति गैड़ा ने गढ़वाली सेनापति खतड़सिंह को युद्ध में मार दिया। इस विजय की सूचना कुमाऊं वालों को ऊंची चोटियों पर सूखी घास के ढेर को जलाकर दी गई। तब से यह दिन उत्सव के रूप में मनाया जाता है। उस अवसर पर "भैलो खतडुवा, भैलो, भैलो, गैड़ा कि जीत खतड़ की हार गैड़ा पड़ो श्योल (छांव) खतड़ पड़ो म्योल (चट्टान) आदि बालकों द्वारा गाया जाता है।

माघ(मकर) - संक्रान्ति इसको उत्तरायणी भी कहते हैं, क्योंकि इसी दिन से सूर्य उत्तर को आने लगता है। यह एक महत्वपूर्ण स्नान पर्व है, और सारे भारत वर्ष में मनाया जाता है। प्रयागराज, (इलाहाबाद) में इस दिन बहुत बड़ा स्नान पर्व होता है। कुमाऊं से प्रतिवर्ष सैकड़ों लोग यहां आकर गंगा स्नान का पुण्य अर्जित करते हैं। कुमाऊं में भी इसदिन मुख्य-मुख्य नदियों के किनारे स्नान पर्व तथा मेले आयोजित होते हैं।

कुमाऊं में इसे स्थानीय रूप से **घुघुतिया त्यौहार** के रूप में भी मनाने की प्रथा है। पहिले दिन शाम को आटे में गुड़ मिलाकर घुघुते (एक पक्षी विशेष) की आकृति बनाकर उसमें स्थानीय फल, बताशे, मूंगफली के साथ माला बनाई जाती है और प्रातःकाल बच्चों को स्नान कराकर पहिना दी जाती जो निम्नलिखित शब्दों का समवेत स्वरों में गाकर, कौवों से धन प्राप्ति की कामना करते हैं। घुघुतों की माला आत्मीय जनों को प्रसाद स्वरूप बांटते हैं-

काले, कौव्वा, काले काले।
ले कौव्वा पूरी, मैं कैं दे सूनुं की छूरी।।
ले कौवा बड़ों मैं कैं दे सुनूं को घड़ों।
ले कौवा भात मैं कैं दे सुनू की थात।।

चैत्र (मीन)- संक्रान्ति को कुमाऊं में 'फूलदेई' संक्रान्ति मनाने की प्रथा है। इस दिन गांवों में घरों की देली (देहरी) को लाल मिट्टी से लीप कर ऐपण (अल्पना) बनाये जाते हैं। कन्याएं इस दिन गांव घरों में जाकर देहरी की पूजा फूल और अक्षतों से करती हैं, बदले में दक्षिणा प्राप्त करती हैं। देली पूजन में भाइयों और बहिनों की दीर्घायु तथा भण्डार को अन्न से भरपूर रखने की कामना की जाती है।

फूल देली छम्मा देली,
दैणों द्वार भर मकार त्वे, देली सू सौ नमस्कार।
बांयो द्वार कर बहार आवौदेली पूजों द्वार,
भाई जी रौ लाखों बरस, बैणीं जी रौ लाखो बरष।
फूल देली छम्मा देली।

इसी दिन से ऋतुराज बसन्त का आगमन होता है। पहिले समय ढोली, या हुड़किये (जाति विशेष) गांव-गांव जाकर ऋतुरैंण गाया करते थे, अनांज, बस्त्र व मुद्रा इनाम में पाते थे लेकिन अब गांवों से परिवारों का शहरों की ओर पलायन होने से यह प्रथा लगभग समाप्त हो गई है। यह भी स्थानीय उत्सव है कुमाऊं से अन्यत्र कहीं नहीं मनाया जाता।

रितु ऐ गे हेरि फेरि ओ गरमा ऋतु
मरियों- मानिख पलटि नि ऊनो।

चान्द्र मास के, पर्व, त्यौहार अथवा उत्सव निश्चित तिथियों को मनाये जाते हैं।

संवत्सर प्रतिपदा – चैत्र शुक्ल पड़वा, वर्ष के आरम्भ में होती है। इस दिन ब्राह्मण द्वारा नये संवत्सर का फल सुनाया जाता है। नवदुर्गा की स्थापना कर नवरात्र व्रत किया जाता है। कहीं-कहीं हरेला भी डाला जाता है। सम्वत् तथा शाके के नये वर्ष इसी दिन से शुरू होते हैं। रामनवमी को मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम का जन्म दिन मनाया जाता है। दिनभर उपवास कर सायंकाल पूजा पश्चात, फलाहार करने की विधि है।

वट-सावित्री – वट सावित्री का व्रत महिलायें करती हैं। वट वृक्ष के नीचे, सत्यवान, सावित्री एवं यमराज की मूर्ति बना कर अखण्ड सौभाग्य की कामना करती हैं। बारह गांठों वाली डोरक (डोर) की प्रतिष्ठा कर गले में बांधने की प्रथा है। यह व्रत ज्येष्ठ कृष्णपक्ष की अमावस को किया जाता है।

दशहरा या (दसार) – ज्येष्ठ शुक्ल दशमी को यह पर्व मनाया जाता है। इस दिन गंगा स्नान, शरबत दान किया जाता है। कुमाऊं में, कागज पर लिख कर अथवा मुख्य द्वार पर पिठ्या (रोली) से गणेश की मूर्ति बना कर 'अगस्तस्य, पुलसतस्य' आदि तीन श्लोक लिख कर दरवाजों में चिपकाये जाते हैं। ऐसा विश्वास किया जाता है कि इससे मेघ, वर्षा, बज्रपात आदि दैविक प्रकोपों से रक्षा होती है।

हरशयनी एकादशी-व्रत – एकादशी का व्रत वर्ष भर में हर एकादशी को किया जाता है। इस व्रत में चावल नहीं खाये जाते। कोई-कोई लोग, केवल फलाहार करते हैं। वर्षा कालीन एकादशी व्रत (हरशयनी से हरबोधिनी तक) अधिक महत्वपूर्ण माने जाते हैं। इस बीच हर रोज सूर्यास्त के बाद तुलसी के पेड़ की आरती व पूजा कर मंगल गीत भी गाये जाते हैं।

श्रावणी उपाकर्म और रक्षा बन्धन – श्रावण शुक्ल पौर्णिमा को यह पर्व मनाया जाता है। इसी दिन रक्षा बन्धन का त्यौहार भी होता है। ब्राह्मणों का यह एक सर्वोपरि पर्व है। इसदिन, पहिले से तैयार किये नये यज्ञोपवीतों को, ऋषितपर्ण करके, प्रतिष्ठित कर पहिना जाता है। तत्पश्चात रक्षा बन्धन का उत्सव होता है। यज्ञोपवीत बनाने की विधि कुछ जटिल होती है और समय भी बहुत लगता है। शास्त्रोक्त विधि से तैयार किये गये यज्ञोपवीत वही लोग पहिन पाते हैं जो इन्हें स्वयं विधि अनुसार बनायें। अन्यथा बाजार से खरीद कर भी पहिन लेते हैं।

संकष्ट चतुर्थी – भाद्र कृष्ण चतुर्थी एवं माघ कृष्णचतुर्थी को गणेश जी का व्रत किया जाता है। इस व्रत को प्रायः महिलायें ही करती हैं। जौ, चावल, तिल, दूर्वा एक सौ आठ की संख्या में गिनकर अर्पण करने की विधि है। तिल के लड्डुओं का प्रसाद चढ़ाया जाता है। शाम को चन्द्रमा के उदय होने पर, अर्घदान व आरती उपरान्त भोजन किया जाता है।

जन्माष्टमी – इसे श्रीकृष्ण जन्माष्टमी भी कहते हैं। भगवान श्रीकृष्ण का जन्म भाद्रपद कृष्णपक्ष की अष्टमी की मध्यरात्रि रोहिणी नक्षत्र में हुआ था। इसी उपलक्ष में यह व्रत मनाया जाता है। ग्रामों में भगवान श्रीकृष्ण की विभिन्न लीलाओं को दीवारों में चित्रित कर उनकी पूजा की जाती है। कोई, फलाहार और कोई निराहार व्रत रखते हैं।

हरताली – भाद्र शुक्ल तृतीया को महिलायें यह व्रत सौभाग्य के लिये करती हैं। सामवेदी लोगों का उपाकर्म होता है, वे इसी दिन सामवेदानुसार नये यज्ञोपवीत पहिनते हैं।

ऋषि पंचमी – भाद्र शुक्ल पंचमी के दिन स्त्रियां, अरुन्धती सहित कश्यप आदि सप्तर्षियों का रजस्वलावस्था कृत सम्पर्क जनित दोषों का निवारण हेतु पूजा करती हैं। इस दिन हल बैल द्वारा पैदा किया अन्न खाना बर्जित है। इसीदिन 'विरुड़ा भी भिगाये जाते हैं अत: यह दिन 'विरुड़' पंचमी के नाम से भी जाना जाता है। वैसे श्रावण शुक्ल पंचमी को नागों की पूजा होती है। लेकिन आजकल नागपूजा भी इसी दिन करने का रिवाज चल पड़ा है, इसलिये, इसे नागपंचमी भी कहते हैं।

अमुकता भरण सप्तमी – भाद्रपद शुक्ल सप्तमी को स्त्रियों का प्रधान व्रत होता है। सुख, सौभाग्य, सन्तति प्राप्ति हेतु गौरी-महेश्वर की पूजा की जाती है, सात ग्रन्थि (गांठ) वाले डोर की प्रतिष्ठा कर महिलायें पहिनती हैं।

दूर्वाष्टमी – भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को महिलायें सौभाग्य-सन्तति हेतु दूर्बा की पूजा करती हैं। रेशम अथवा किसी रंगीन तागे से दूर्बा बना कर गले में धारण करती हैं।

कुमाऊं के चन्द राजाओं की कुलदेवी नंदा है। अत: चन्द काल में नन्दादेवी की पूजा बड़े धूमधाम से होती थी, भैसे अथवा बकरे की बलि दी जाती थी। अल्मोड़ा शहर में अब भी यह पूजा उसी प्रकार की जाती है। चन्द वंश के अवतंस इसकी पूजा करते हैं और मेला लगता है जिसमें हजारों की संख्या में ग्रामीण भी भाग लेते हैं। इस अष्टमी को नंदाष्टमी भी कहते हैं।

अनन्त चौदस – भाद्र, शुक्ल चतुदर्शी को यह व्रत पर्व मनाया जाता है। इसे अधिकांश ब्राह्मण वर्ग ही मनाते हैं। चौदह गांठों का अनन्त बना कर धारण किया जाता है।

पितृपक्ष या महालया श्राद्ध – आश्विन कृष्णा प्रतिपदा से अमावस्या पर्यन्त पार्वण श्राद्ध किया जाता है। पिता के लिये उसकी मृत्यु तिथि को और मां का केवल नवमी को श्राद्ध होता है। यदि किसी के पिता की श्राद्ध तिथि नवमी के बाद पड़ती है तो उसका श्राद्ध मां के श्राद्ध यानी नवमी से पहिले अष्टमी को किया जाता है। मातृ नवमी का श्राद्ध अन्य दिन नहीं होता। अश्विन शुक्ला प्रतिपदा को दौहित्र द्वारा मातामहादि त्रय की पूजा एवं श्राद्ध सहित श्राद्धों की संख्या सोलह हो जाती है इसलिये इस पक्ष को सोलह श्राद्ध भी कहा जाता है। श्राद्ध के दिन नाना प्रकार के व्यंजन बना कर, इष्टमित्रों भाई विरादरी वालों तथा ब्राह्मणों को भोजन कराया जाता है और ब्राह्मणों को दक्षिणा दी जाती है। मृत पितरों की स्मृति का यह एक बड़ा पर्व माना जाता है। कविवर गुमानी ने भी इस विषय में निम्न प्रकार लिखा है-

खांछयाँ भात जमोलि को खसखसो, घीऊ बड़ा लोचईं,
धोई दाल बटयाल, साग चटर्णी, कालो जुदो टपकिया।
गाढ़ो दै भली खीर लसकनी, मुट्ठी भरी दक्षिणां,
बीता सोल, सराद हाय, छिनन में आकाश वांणी भई।।

नवरात्रि – आश्विन सुदी प्रतिपदा से दुर्गापूजन उत्सव मनाया जाता है। हरियाला बोया जाता है। नवरात्रि पर्यन्त कोई-कोई व्रत भी रखते हैं। प्रतिदिन अथवा अष्टमी को दुर्गापाठ करते हैं या करवाते हैं। नवमी को नौ कुमारी कन्याओं की पूजा कर उन्हें भोजन कराने की भी प्रथा है। कुमाऊं में बहुत स्थानों पर रामलीला का मंचन भी होता है। दशमी को 'दसांई' कहते हैं। इस दिन नव दुर्गाओं का विसर्जन होता है। देवी, देवताओं को हरेला अर्पित कर, बहिन, बेटियों द्वारा, हरेला का टीका किया जाता है।

कोजागर – आश्विन शुक्ल पौणिंमा को छोटी दीवाली, मनाई जाती है। महिलायें व्रत रखती है। सायंकाल लक्ष्मी पूजन किया जाता है।

दीपोत्सव – कार्तिक कृष्ण एकादशी को, हरिदीप, त्रयोदशी को यमदीप, चतुर्दशी को शिवदीप जलाया जाता है। तुर्लाक पर्यन्त आकाश दीप जलाने की प्रथा है।

नरक चतुर्दशी – चन्द्रोदय व्यापिनी चतुर्दशी के उषाकाल में छोटे असंस्कारी बच्चों को नरहर स्नान, नरक यातना निवारणार्थ कराया जाता है।

दीप मालिका या दीवाली – कार्तिक कृष्ण अमावस, महालक्ष्मी पूजन का एक महत्वपूर्ण त्यौहार है। यह त्यौहार पूरे भारत वर्ष में मनाया जाता है। सायंकाल दीपमालिका, दीये जलाकर रोशनी की जाती है। अनेक प्रकार की आतिशबाजी चलाई जाती है। महालक्ष्मी का व्रत उपासना और पूजा की जाती है।

दूसरे दिन अर्थात कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा को गायों व बछड़ों को तिलक लगाया जाता है। पुष्प माला पहिनाकर उनकी पूजा और आरती की जाती है। खीर मांखन, दही दूध का नैवेदय लगाया जाता है। कहते हैं इस दिन भगवान कृष्ण ने इन्द्र के कोप से गोवर्धन पर्वत अंगुली में उठाकर गायों व ग्वालों की रक्षा की थी। तब से कृष्ण गोवर्धन तथा गोधन की पूजा करने का विधान है।

यम द्वितीया या भैया दूज – पौराणिक कथा के अनुसार कार्तिक शुक्ल द्वितीया, को यमराज अपनी बहिन के घर भोजन करने गये थे। तब से बहिन से रोली और चिऊड़ों से टीका करवाकर बहिन के घर भोजन करने की प्रथा है। कुमाऊं में इस दिन एक खास पकवान बनाते हैं। जिसे स्थानीय भाषा में 'सिंगल' कहा जाता है। इसे चांवल के आटे अथवा सूजी (रवा) में दूध या दही मिलाकर बनाया जाता है जिसे पर्वतीय खीरे के रायते के साथ खाया जाता है। यह पकवान स्वादिष्ट होने के साथ-साथ शुभ कारक भी माना जाता है।

हरबोधिनी एकादशी – वर्षा कालीन एकादशी व्रत (हरशयनी से हरवोधिनी पर्यन्त) जो लोग रखते हैं वे इस दिन उसका उद्यापन करते हैं। वैसे एकादशी का व्रत सालभर किया जाता है।

कार्तिकी पौणमासी – यह गंगा स्नान का पर्व है। इस दिन बूढ़ी दीवाली भी मनाई जाती है।

बसन्त पंचमी – माघ शुक्ल पंचमी को जौं की पत्तियों को देवी देवताओं को अर्पण करते हैं। हरियाले की तरह इससे, बहिन बेटियों टीका करती हैं और पीला रूमाल देती हैं। इसी दिन से होलियों की बैठकें प्रारम्भ हो जाती हैं।

शिवरात्रि – फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को शिवरात्रि का ब्रत सारे भारत वर्ष में मनाया जाता है। इस दिन उपवास रखा जाता है। नदियों के संगम में स्नान तथा भगवान शंकर के दर्शन और पूजन का विधान है।

होली – जैसे दीपावली दियों की रोशनी का त्यौहार है उसी प्रकार होली रंगों का त्यौहार है। यह त्यौहार सारे भारतवर्ष में मनाया जाता है। कुमाऊं की होली अति विशिष्ट होती है। फाल्गुन शुक्ल एकादशी से यह त्यौहार प्रारम्भ होता है। इस दिन चीर बन्धन होता है। कहीं-कहीं चीर बन्धन अष्टमी को भी होता है। इस एकादशी को आमलकी एकादशी कहते हैं। भद्रारहित काल में देवी देवताओं में रंग अबीर छिड़कते हैं, पश्चात अपने होली खेलने वाले कपड़ों पर भी रंग छिड़का जाता है जो प्रायः सफेद व नवीन होते हैं। होली का शुभारम्भ बसन्त पंचमी से हो जाता है, हर शाम होली की बैठकें होती हैं। चीर बन्धन के बाद होली का उत्सव अपने पूर्ण यौवन पर आ जाता है, और धूम की होलियां गाई जाती हैं। प्रारम्भ मे होलियां भगवान गणेश श्रीकृष्ण, राम, शिव, देवी आदि की लीलाओं पर आधारित होती हैं ज्यों-ज्यों होलियों का उन्माद बढ़ता है, श्रृंगार रस की होलियां गाई जाती हैं। दिन में खड़ी होली हर मकान के आगे विशेष नृत्य शैली में गाते हैं। रात्रि में एक निश्चित स्थान पर, धूनी के चारों ओर बैठकर होली गाने की प्रथा है। बीच-बीच में प्रहसन, स्वांग भी दिखाते हैं। देवर-भावी, जीजा-साली तथा जीजा और साले में काफी हंसी मजाक चलता है। एक दूसरे को रंग अबीर गुलाल से सरावोर किया जाता है। पौर्णमांसी की रात्रि होलिका दहन होता है। दूसरे दिन छरड़ी के बाद सभी को भविष्य में सुख समृद्धि सहित जीने का आशीर्वाद देने के पश्चात होली का समापन कर दिया जाता है जो निम्न प्रकार से होता है।

'होरी खेली खालि मथुरा चले, आज कन्हैया रंग भरे।
होलस रे हो, होलस रे, हो होलस रे।
गांऊं बजाऊं, जिब्बांसी, हो होलस रे।
आम डलि हो कोयल करौ, हो होलस रे।
बरष दिवाली, बरषै फाग हो होलस रे।
जो नर जीवै, खेले फाग, हो होलस रे।
आज को बसन्त हो कैका घरौ, हो होलस रे।
आज को बसन्त (अमुक) ज्यू का घरौ, हो होलस रे।
उनरो पूत परिवार जीरौ हो लाक्षै भरी, हो होलस रे।
होलस रे हो होलस रे।

(आमुक) के स्थान पर पहिले, गणेश, पंच देवता व अन्य देवी देवता, ग्राम देवता स्थान देवता, कुल देवता, इष्ट देवता का नाम लिया जाता है फिर प्रत्येक कुटुम्भ के मुखिया का नाम लिया जाता है।

झाड़, फूंक, मंतर, जंतर आदि।

छोटी-छोटी बीमारी तथा भूत-प्रेत आदि के भय को झाड़ने राई को अभिमन्त्रित करने अथवा विभूत लगाने से दूर करने या भगाने हेतु मंत्रों आदि पर कुमाऊं में अब भी विश्वास किया जाता है। यद्यपि कोई-कोई लोग इस पर विश्वास नहीं करते पर इससे फायदा अवश्य होता है। जो व्यक्ति इसमें रुचि रखते हों उनके लिये झाड़ने व बभूति लगाने के प्रचलित मंत्रों व प्रयोग की विधि नीचे दी जा रही है।

कभी-कभी बच्चों को खाजी, खुजली, खशरुवा, छोटे-छोटे दाने आदि हो जाते हैं। इस रोग को गंगोला रोग भी कहा जाता है। संभवतः पहिले इसका प्रकोप गंगोली में हुआ होगा, बाद में अन्यत्र भी फैल गया। इसका निदान सौंली (शिवाली) की टहनी से मिट्टी और गोबर में झाड़ने से किया जाता है। सुबह, दिन में और शाम को अथवा शाम को ही तीन बार झाड़ा जाता है लगातार एक हफ्ते तक। अन्य विषाक्त रोग (सैप्टिक) भी इसी मंत्र से झाड़ने पर ठीक हो जाता है। सावधनी यह रखनी पड़ती है कि जिस पक्ष अथवा महीने में झाड़ना शुरू करें उसी पक्ष या महीने में पूरा हो। रविवार या बुधवार से प्रारम्भ करना चाहिये।

खसरुवा या विष झाड़ने का मंत्र।

ऊं श्री गुरुभ्यों नमः श्री धन्वन्तरे नमः (तीन बार पढ़ैं) सात समुन्दर पार लोटा माटी, तहां उपजैं विष की बोटी। बीसै लाऊं वीसै खाऊं विषहर (रोगहर) अमृतधर गुरू गोरखनाथ तुम्हारी दुहाई लागै। फूल मंत्रों ईश्वरी वाचः।

ऊं श्री गुरूभ्यो नमः श्री धनवन्तरे नमः/ भाद्रपद मांस अमुशी चतुर्दशी मंगलवार, काली चतुर्दशी आधीरात साटी सौ विष उपजै। अजैकल, विजैकल। माई तेरी शुन्डी नाऊं, वैंणी तेरी राई नाऊं। जारे वीष (रोग), तू बीस में चौबीस तू रवाबै बत्तीस दाड़ी मैं खाऊं छत्तीस दाड़ी। तू जावै डाली डाली, मैं जाऊं पात-पात। तेरो बीस (रोग) झाड़ी स्वर्ग पाताल हालूं। ऊं श्री गुरुभ्यो नमः (३) अरे बीष (रोग) तू कहां पैठे, सिर पैठै तो जटापांणीं देवता को अवतार, आंखें पैठै तो सूर्य देवता को अबतार। कान पैठै तो कात्यायनी देवी को अवतार, नाक पैठै तो श्रोत्रपांणी देवता को अवतार, रवाप पैठै तो सरस्वती देवता को अवतार, गला पैठै तो नीलकंठ देवता को अबतार, जांघ पैठै तो जंघल देवता को अबतार धूना पैठै तो चक्रपाणि देवता को अवतार, नड़केठा पैठे तो नारायणी देवी को अवतार पांव पैठै तो पारबती देवी को अबतार शिव शक्ति जा विश्ना शक्ति जा, हराई जा बिलाई जा गोबरमाटी जा। जा तू विष (रोग) सात समुन्दर पार जा। गोवर माटी जा हिमांचल कांठी जा। फूल मंत्ररों ईश्वरी बाचः ऊं श्री गुरुभ्यो नमः (३) अरे रोग तू कहां पैठै चुली पैठै तो चूली को चुल्यौंणों काटू, खोरा को लटिन काटूं, सिर को मुनियां काटूं, कान को कर्णामूल काटूं, कपाल को चन्द्रैणो काटूं, नाक को नकसीरिया काटूं, रवाप को दन्ताफोड़ी काटूं, जीव को पणजीवों काटूं नहर को नहरुवा काटूं, कोखी को बुकानों काटूं, गला को गलघंटिका काटू, पीठ को बरण काटू, छाती को सरण काटूं, चूचा को थणिल काटूं, पेट की बाघा काटूं, भग को भगेन्द्र काटूं लिंग को उपधौंसिया काटूं, गुदाद्वार को भगन्दर काटूं, जांघ को जंघिया काटूं, नड़केठा को बेतिया काटूं, घूना को धौंणियां काटूं गठयूणी को गठिया काटूं, पाय को पतिया काटूं, अंगुली को टटणियां काटूं, काटी कूटी तीता तुमड़ा डाली सात समुन्दर पार वहाऊं। धन्वन्तरि वैद्य, गुरू गोरखनाथ, नौ नाथ चौरासी सिद्ध तुम्हारी दुहाई लागै, शिव शक्ति जा विश्ना शक्ति जा। ऊं श्री गुरुभ्यों नमः (३) हतुवा वीष नागलो वीष गनियों वीष, चलनियां बीष, मोरा राज फाड़ी तल धरती बीष, (रोग) ले लियो अवतार। गरुड़ देवता की दीठ पड़ै, चमार छयोड़ा को पाणी चढ़ैं, पाकै पूकैं, चड़कै चाड़कै ओसावै विषायें, ईश्वर महादेव,

पारबती तुम्हारी दुहाई लागै। २० पातों बीस मारूं, १९ पातो बीस मारूं, १८ पातों बीस मारूं, १७ पातों बीस मारूं, १६ पातों बीस मारूं, १५ पातों बीस मारूं, १४ पातो बीस मारूं, १३ पातो बीस मारूं, १२ पातो बीस मारूं, ११ पातो बीस मारूं, १० पातो बीस मारूं, ९ पातो बीस मारूं, ८ पातो बीस मारूं, ७ पातो बीस मारूं, ६ पातो बीस मारूं, ५ पातो बीस मारूं, ४ पातो बीस मारूं, ३ पातो बीस मारूं, २ पातो बीस मारूं, १ पातो बीस मारूं। बार जाति अठारह प्रकार को बीष मारूं, सरग जावै सरग मारूं, पाताल जावै पाताल मारूं पंच देवता की हाक ले मारूं, शिव शक्ति जा, विश्ना शक्ति जा, गोवरमाटी जा, हिमांचल काठी जा। फूल मंत्ररों ईश्वरी बाचः

ऊं श्री गुरुभ्यो नमः (३) अरे बीष (रोग) तू कहां पैठै हाड़ पैठै तो फोड़ी गाडूं, रगद पैठै तो पस्याई गाडू, मांस पैठै तौ काटी गाडूं, कलेजा पैठै तो छीनी गाडूं, बाल पैठै तो चीरी गाडूं, नाक पैठै तो रुई गाडूं, अनड़ा पैठै तो निचोड़ी गाडूं, नखा पैठै तो कोरी गाडूं, नसा पैठै तो धोई गाडूं, हाड़ हाड़ है गाडूं, सांस-सांस है गाडूं, सिर बटी झाड़ी, पांव बटी निकलूं (रोगी का नाम लेकर) का अंग पिन्ड, नौ नाड़ी बहत्तर कोठा है गाडूं। शिव शक्ति जा विश्ना शक्ति जा, मेरी भक्ति, गुरू की शक्ति, फूल मंतरों ईश्वरी बाचः ऊं श्री गुरुभ्यो नमः (३) श्री धन्वन्तरे नमः (३)

विष (रोग) की जगह केवल खशरुवा कहना चाहिये। यदि केवल खशंरुवा झाड़ना हो, अन्यथा अन्य रोग झाड़नें हों तो केवल उस रोग का नाम लै। किसी भी प्रकार का विषाक्त रोग (सैप्टिक) झाड़ना हो तो विष या बीष का प्रयोग करें।

विभूति मंत्ररणां को मंत्र।

ऊं श्री गुरुभ्यो नमः अगनिद भस्म, गगनिद भस्म, यो भस्म कहां उपजो, अठार भार बंसवती मं उपजो, गाय ले चरो गोवर भयो, सूर्यमुख सूखो, अग्निमुख जलो। जागृत जोगिनी रोहिणी ले अग्नि जलाई वेर भस्म उपजायों। एक टंग विभूति, नौ टंग पाणी, किनले ऑणी, किनले छांणी महादेव ले आंणी पारवती ले छांणी। पहिलो भस्म गुरू गोरख नाथ को चढ़ैं, दूसरे भस्म, हनुमंत वीर को चढ़ैं तीसरो भस्म तैंतीस कोटि देवताओं को चढ़ै। चौथो भस्म चंडिका देवी को चढ़ैं। पांचवो भस्म पंच परमेश्वरन को चढ़ै। छटो भस्म षष्टी हिंसुला देवी को चढ़ै। सातवों भस्म सात समुन्दर पार परमेश्वरन को चढ़ै। आठवों भस्म अष्ट भैरवन को चढ़ै। नौवो भस्म नौ नाथ सिद्धों को चढ़ै। दशवों भस्म दशशीष रावण को चढ़ै। ग्यारहों भस्म एकादश लिंगन को चढ़ै। बारहवों भस्म चौंसठ योगिनी बावन वीरों को चढ़ै। चलन्ति विभूति, बड़न्ति काया रक्षा कर (रोगी का नाम लेकर) का अंग पिन्ड, नौ नाड़ी बहत्तर कोठा है, दीठ, मूंठ, कूट कपट, छल छिद्र, मूंठ मसांण भूत प्रेत डाकिनी साकिनी, जोरता भाज रे भाज आज का दिन आज की राती। रण कम्पै, डांणा को ऐड़ी, गाड़ को मसांण, ईंटन की पाती, हरमिजा देवी की लाट पड़ै, बापू का पूत हनुमन्त वीर की दुहाई पड़ै। सात समुन्द्रों की करुं एक चूल, सात भूतों की करुं एक पंखा तब कहूं मैं हनुमंत पंखा, हूं हूं करैं टूं टूं करै चलते फिरते, उठते बैठते, हनुमान हटेली, लोहा की लाट, बज्र की सिला, राम सीता का बचन, मेरी भक्ति गुरू की शक्ति, फूल मंतरो ईश्वरी वाचाः

(विभूति को उपरोक्त मंत्र से अभिमंत्रित कर रोगी के सर में पांच या सात घुमा कर बाहर को फूंक दे और एक चुटकी विभूति रोगी के मांथे पर लगा दें। छल, छिद्र, दीढ नजर, झपाला आदि किस्म की व्याधि दूर हो जायेगी।)

राई मंतरण को मंत्र।

राई-राई किन्ने वोई किन्ने लवाई। श्री महादेव ले बोई पारवती ले लवाई। अंग चिरी बेर राई बोई, नरव चिरी बेर मांस बोया। जामन्ता खेत हरियां भया। फूल नंग पीला भया। मील प्रमाण का झाल, मुसल प्रमाण का कोसा, बेल प्रमाण का दांणा भया। आठौं राई मेरा पीठ का भाई, जहां लगाई तहां जाई, पूरा काम सिद्ध कर लाई। मड़ खाई, मसांण खाई, कापड़ी चोटिया, बीर गफा कर लाई। वीर, वीर, वीर, बेला वीर क्वैलाबीर, पीपल बीर, लटक बीर, झटक बीर पांच सौ वीर पाखा में बैठाऊं तीन सौ बीर देली में बैठाऊं। तीन दिशा बन्द करुं चौथी दिशा खाली राखूं (रोगी का नाम लेकर) का अंग पिन्ड में तौ करै, तकरार करै, पीड़िया पितौडिया मेषधारी वृहमचारी छोड़ रे छोड़ बड़च्योत। समसान की बभूती पैरुं, कमलाड़ की झोली पैरुं। हरिया पहर की हाक मारूं, नौ, नौ चोट की धाप मारूं। जीव में दयूं लोहा की कील, सिर में दंयू पत्थर की सील। ताता तवा बैठणा सूं दयूं, लोहा का चणां बुकूणां सूं दयूं। चल रे बीर, महावीर, महमंता वीर, नारसिंग वीर, भैरों वीर गोरिया वीर, इतना काम न करै फाटि फाटि मरे। जो निसानी स्वर्ग न जाऊं, दुर्गामाता दांत तोड़ाऊं। डाडम माटी डाडम पैठै, तीन खंड में धूम्र कराऊं। सात सरसों आठों राई, तू मेरी बैणी में तेरा भाई। जो सरसों चार दिशा, छै उपदिशा का डंड बादूं, सीख वादूं, छल बादूं, छिद्र बादूं, कोट बादूं, कपट बांदू, आवन्ता काक बादूं, भुकुन्ता कुत्ता बादूं। अलर अल्ला, मसमल्ला, खुदा की बेटी, हेम शस्त्र से, कलुबा लोहार का बहत्तर बांणी, नौ मांणा का तोषा चला, हिन्दू का बांण चला, मुसलमान का छुरा चला, मोहम बैठा राम चला सलामत दिल्ली तख्त को सलामत। जम्मू बोकस् को हिन्दू होवै तो गौ भरवे, मुसलमान होवै तो सुअर भरवे, उड़ना पक्षी को खलुवा को खदेरुवा को, झेरी झटक। कोह हफ्ता को चौंसठ योगिनी, अस्सी सौ मसांण इतने को बिद, लेऊं, सट्टा सै तोड़ती आई। आदिनाथ, सिलीनाथ, मछलीनाथ, जगन्नाथ, केदारनाथ, बैजनाथ, बागनाथ, नागनाथ, भोलानाथ, नौ गुरू की आज्ञा लागैं, मैले उपाई, मर्माड उपाई, ज्ञान रचो विष रचों अट्ठारह भार वंशवती रची। सिरमाने का महादेव तुम्हारी आज्ञा लागे। आंखूं की दृष्टि कांटूं, खंकार की दृष्टि कांटू, मड़मसान की दृष्टि काटूं, सैला की दृष्टि काटूं, प्रजा की दृष्टि काटूं, पड़ौसियों की चाख काटूं, दाई दुश्मन की दीठ काटूं। मुच, मुच न मुचै तो सिरमाने का महादेव तुम्हारी आज्ञा लागै, नरसिंग वीर तुम्हारी आज्ञा लागै, गौरी महेश्वर तुम्हारी आज्ञा लागै, हनुमंत वीर तुम्हारी आज्ञा लागै। गुरू गोरखनाथ तुम्हारी आज्ञा लागै। फूल मंतरों ईश्वरी बाचा:

(दीठ, नजर चाख, छल छिद्र झपाला आदि व्याधियों के उपचार हेतु, उपरोक्त मंत्र से उपचारित राई को सिर में पांच या सात बार फिराकर उसका धूवां सुघाना चाहिये और अवशेष को, चौराह में डाल देना चाहिये। कभी-कभी जानवरों, गाय बैल, भैंस को भी नजर आदि लग जाती है, इनके लिये भी यही क्रिया करनी चाहिये (१) डांसी पत्थर, (२) साबूत मांस, (३) लाल मिर्च, (४) धान की भूसी, (५) कपास का बनौला, (६) सांप की कांचुली, (७) भोज पत्र, (८) मोर पंख, (९) राई और पीली सरसों सब को एक साथ मांणा (अनाज नापने का उपकरण जिससे एक पाव अनांज नापा जाता है।) में डालकर ताले (पहिले समय के दरवाजे खोलने वाला, लोहे की गोलाकार छड़ या पेट में डालने वाला ताला)। से मंतरना चाहिये। रविवार या बुधवार को अधिक लाभदायक होता है।)

कमल वायु या पीलिया झाड़ने का मंत्र।

ऊं नमो आदेश, गुरू को जोहार, विदया माता को नमस्कार! महादेव जी धरै ध्यान तब नारायण खेलै सागर भगवान। तब पारवती मन कल करै तब नारायन जी बांधे ध्यान। पैल रखे आपणां गोद बीसी मांस झाड़ी जटा की रोस्ती, रतड़ की फोड़ी बजर की कोटली, बजर की लाट, सवा मन लोहा का मुगरा बनाया, फल की बाड़ी जंगवाला लगाया राम की साथ जंगवाला हो, बाबा वीर हनुमंता हाक मारदा छन, चाक मारदा छन। हाकरे वीर हनुमंता वीर जंगवाली रहे

तब रे बाबा, सौंण स्वाती, अमुशी की राती, मंगलवार, उपजी गयों रे बाबा गढ़ लंका का वार। जड़ी कर जड़ प्रमोह कंत कर मुली सूची कर सुनाणी, गंगाणी, अमिरत पांणी सात श्रोत को पांणी, बीरगुदा हो बाबा। हमुं, जांणों माता वीजतनु, मारी लवे गुदा पन्था, सैलो कर हात सेली कर, गात हीरती फीरती जा। लंका का बार-बार में बयाली, सात सौ निखाई, जट्ठोतर सै फोड़ी। तुम जावौं गढ़ लंका का वार। राच्छणीं बुच्छणी, बन की बयाली, अंगास की आंचरी, पाताल की नागिणी, तुम जावौ लंका का वार। हीत वाई, सीत बाई, पीत बाई, कमल बाई, खात बाई तुम जावौ हो बाबा लंका का वार, फूल मंत्ररो ईश्वरी बाचा:।

(इसे झाड़ने की विधि दो प्रकार से की जाती है प्रथम विधि रोगी के सिर में किसी कांसे के वर्तन में लगभग एक या दो तोला कड़ुवा तेल और उतना ही पानी डाल कर दूब से मन्तरा जाता है। दूसरी विधि के अनुसार इस मंत्र से रोगी के हाथ धोये जाते हैं।)

सिर दर्द (मुनां) झाड़ने का मंत्र।

अंजनी को पुत्र हनुमंत आयो, चोमरे की वटी लायो चन्तर कोट आयो, गंगा जमुना जीव्या उमसी समायो। अर्जुन को तीर उमसी समायो, द्रौपदी का हीरा हारन उमसी लगायो, नकुल को खांड़ो उमसी लगायो राम, लछीमन को हतियार उमसी ल्यायो गर्भ्याली स्त्री उमसी ल्यायो, मातीया जातीया उमसी ल्यायो, खानी छां कुकुर उमसी ल्यायो, पांच पुरुष की नार उमसी ल्यायो। हल का वैल उमसी ल्यायो, लूवा उमसी ल्यायो, गाड़ खाड़ का ल्वाड़ी उमसी ल्यायो, आंचरी खांचरी को राजा, आषण को जोगी को उमसी ल्यायो, मुनमां गई, उमसण भई फूल मंतरो ईश्वरी वाचा:

(दाये हाथ की अंगुलियों से रोगी के माथे सहलाते रहें। तीन बार मंत्र पढ़ें)।

रीठा अभिमंत्रित करने का मंत्र।

(बच्चों को कुदृष्टि नजर आदि से बचाने के लिये रीठे के दाने को आमंत्रित कर काले या लाल डोरे से गले में बांध दें)।

ऊं नमो आदेश, गुरू को जोहार, विदया माता को नमस्कार, चार चौके लुवा की काढ़ि, आधे चौकी रखू, हनुमंता वीर मध्ये माशा करौ, द्वारा पांजा, भैरूं दे हंकारा, काली कुत्ती मछि हात मूठ मारूं, तुसूं साठ राई चिनी, रक्षा करे, जो ये पिंड ना लगे, बांण काली का धण धण करै, हात उठे पूजा रखू रे सब शरीर पूरब दिशा की बांधू कारा जोगिणी पच्छिम दिशा की बांधू काला कलुवा को बांधू, चार दिशा की डाकिणी को बांधूं, यहां चले महादेव का चक्र, इस पिंड में छल करे छिद्र करे, हों करे, हंकार करे त्रास करे, रूनी चमारी मेरी भक्ति गुरू की शक्ति चल। फूल मतरो ईश्वरी बाच:

पेट के कीड़े (जूका) झाड़ने का मंत्र।

ऊं हंकारी, हंकारी, तेरो अहंकार कहां लै गयो सात-सात समुन्दर पार गयो, सात समुन्दर पार क्या लूणां सूं गयो रामचन्द्र की छुरी लूंणा गयो। छूरी ले क्या करछौ। रातो जूको काटो छै, सेतो जूको काटो छौ, गरमी, सीत को जूको काटो छौ, खाटो मीठो जूको काटो छौ। डुडानो, पिड़ानो, खानो, काटनो, जूको काटो छौ फूल मंतरो ईश्वरी वाच:

(इस मंत्र से राख को पेट में पांच या सात बार मलें, जूका उपद्रव शान्त हो जायेगा)।

सर्प दंश के विष को उतारने का मंत्र।

ऊं नमो: आदेश, गुरू जी को जोहार। विदया को नमस्कार। प्रथम नाग राजा को भाग राजा, भाग राजा को साग राजा, साग राजा को बूड़ा बासुकी नाग। बासुकी नाग को तच्छत नाग, तच्छत नाग को कालो नाग, कालो नाग को सुर्खेसुर नाग, सुर्खेसुर नाग को शेषनाग, शेषनाग को पदमगिरी नाग, पदमगिरी नाग को चन्द्रगिरी नाग, चन्द्रगिरी नाग को अटइया नाग, अटइया नाग को भटइया रवा माटी। बांणों को भांडा हमारो। बाईस काल की नाल बन्धौं, सहस्र गोंठी बाल बन्धू। कीड़ो निछों, जोड़ो निछों, टूटी गोछी उठी जा। अनघूं, काल सरप तेज मारूं। पुण्य पाप, मान झुला धरुं गुला, तब देखूं तो काला सरप सुलागत जा बैठे तो गुरू जी की आंण पड़े, सिर में बैठों तो गरुड़ में विछै ठूनी फोड़ दे, दे बायदे पिलाय दे, चौगंगा पार बुलाय दे। तल्ला लोक उपर लोक, मीतला सीतला में, मैं मारू तल्ला तरु बीच घोले। संगति पाताल आव रे। कैमैं मारुं, कैमैं नाऊं, तू खावै उल्टा, मैं खाऊं सुल्टा, तू खावै चौड़ाई, मैं खाऊं बत्तीसी दाड़ी। भूमि बाड़ी तिसमें धोई, कहो नागो आपणं विस लैजा, गाड़ी भेर दे छाड़ी। आपणां विष न लै तो चन्द्रगिरी नाग की दोहाई, पदम गिरी नाग की दोहाई, कहो नागो आपणां विष न लै जावै तो अटिया, मटिया की दोहाई। ऊला मल्ला की दोहाई। हालसी गरुड़, गांजली गरुड़, घूरमा कूरमा गरुड़, लुवा ठूनी वज्जर भूनी गरुड़, सड़यासौ गरुड़, गरुड़न की आन पड़े मेरी भक्ति गुरू की शक्ति फूल मंतरो ईश्वरी वाचा:

(किसी हरी, सौली (टहनी) से, सिर से ब्रण की ओर झाड़ैं)।

सर्प दंश झाड़ने का एक अन्य मंत्र।

ऊं नमो भगवते नील कंठाय चि:। अमल कंठाय चि: सर्वज्ञ कंठाय चि:, क्षिप, क्षिप ऊं स्वाहा। अमल नील कंठाय नैक सर्प विषापहाय, नमस्ते रुद्र मन्यवे।

ऊं नमो भगवते रुद्राय प्रेताधिपतये हुलु-हुलु गर्ज गर्ज नागान भ्रामाय भ्रामय, मुञ्च मुञ्च, मोहय मोहय कट्ट-कट्ट आविष आविष सुवर्ण पतंक रूद्रो ज्ञापयति स्वाहा। पहिले मंत्र को रोगी के कान के पास पढ़ैं, साथ-साथ रोगी के पास की भूमि को जूते से पीटने पर विष उतर जाता है। दूसरे मंत्र से रोगी को अभिमंत्रित किया जाय तो विष का प्रभाव समाप्त हो जाता है।

बाल विघ्नहर बाल तंत्र।

ऊं नमो सर्वमातृभ्यो बाल पीड़ा रोयोगं भुञ्च, भुञ्च चुट, चुट स्पोटम, स्पोटम स्फुर स्फुर गृह-गृह क्रन्दयऽऽ क्रन्दय एवं शुद्ध रूपों ज्ञापयति। हर हर निर्देशं कुरू कुरू बालिकाम बालं स्त्रियं पुरुषं वा सर्व ग्रहाणांमुपक्रमात। चामुण्डे नमो देव्यै हूं हूं ह्रीं अपसर दुष्टग्रहान हूं तदयथा गच्छन्तु, गृहयका, अन्यत्र पन्थानं रुद्रो ज्ञापवति।

(इस मंत्र से बाल गृह जनित पीड़ा का निवारण होता है)।

गो समुदाय रक्षा मंत्र।

गो रक्षा हेतु निम्न मंत्र को कागज में लिख कर गोशाला में टांग दें।

ऊं नमो भगवते त्रयुम्बकायो पशमयो, यशमय चुलु चुलु मिलि मिलि भिदि गोमानिनि चक्रिणी हूं फट। अस्मिन ग्रामे गो कुलस्य रक्षां कुरु, शान्ति कुरु कुरु कुरु ठ, ठ, ठ।

शनि प्रकोप निवारण

अपने सामने गंगा जल, काले तिल, काले उड़द, शनिवार के दिन शनि की होरा में दो माला (एक माला १० ८) निम्न मंत्र का जाप करें पश्चात गंगाजल को घर में छिड़क बांकी तिल, उड़द में से एक को चौराहे में रख दें और दूसरे को पानी में बहा दें।

मंत्र - 'अथ शनि ब्रहम'।

शनि प्रकोप निवारर्णाथ अन्य विधि:-

नीले रंग का कपड़ा ले लें, उस पर नीले रंग से निम्न यंत्र बनायें।

३	३	३
५	७	५
३	३	३
७	५	७
३	३	३
५	७	५

तर्जनी अंगुली से आंख मूंद कर यंत्र पर रखें जितनी संख्या आये उतनी बार "नीला जन सभा मासम रविपुत्र ममाग्रजम छाय, मारतण्ड संभूतं तं नमामि शनैश्वर" मंत्र पढ़ें। यंत्र बन जाने पर पहिले इस मंत्र से यंत्र में २१ बार फूंक मारें। यंत्र को पानी में प्रवाहित कर दें।

यात्रा अनिष्ट निवारण कार्य सिद्धि मंत्र।

अनिष्ट निवारण अथवा कार्य सिद्धि हेतु निम्न मंत्र को जपते-जपते चले जायें, अनिष्ट निवारण होकर कार्य सिद्ध होगा।

मंत्र - ऊं नमो महाशावरी, शक्ति मम अनिष्ट, निवारय, निवारय, मम कार्य सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

कटे घाव से खून बन्द करने का मंत्र।

ओंकार मंत्र को आदेश, गुरू को आदेश, शब्द सच्चा पिन्ड कच्चा, धूली धूलेश्वरी धूरनी माता परमेश्वरी इस पिन्ड प्रांण की पीड़ा न हरे तो गुरू गोरखनाथ की दुहाई पड़ै। फूल मंत्ररो ईश्वरी वाचा:।

(धूल उठाकर तीन बार मंत्र पढ़कर घाव में डालें तो खून बहना बन्द हो जायेगा)।

कटे घाव पर आराम।

शस्त्र से कटे घाव पर मंत्र पढ़कर फूंक मारैं।

मंत्र - ऊं नमो साखमार, विजयसार, संसार बांधूं, सात बार कटै अंग न उपजे घाव सिर राखे श्री गोरखनाथ फूल मंत्ररो ईश्वरी वाचा:।

खूनी दस्त से बचाव का मंत्र।

ऊं नमो कामरुदेश, कामाक्षी देवी, तहां क्षीर सागर के बीच उपजा पानी, अरे रक्त पेचिस तोर कौन ठिकाना अमुक (रोगी का नाम लेकर) के उदर खोंचा जो रहा उपजाय, नरसिंग वरसे क्षण में चल जाय (रोगी का नाम लेकर) अंग में नहीं रोग नहीं पीड़ नहीं। गुरू बांध दिया जंजीर, आज्ञा छाड़ि दासी चंडी की।

(इस मंत्र से पानी को अभिमंत्रित कर रोगी को पिला दें)

दांत दर्द मंत्र।

तीन बार अंगुली से झाड़ें।

मंत्र - आग बांधो, अंगिया बेताल बांधो, सो खाल विकराल बांधो, बज्र अस होय, बज्र फनं दांत पिराय तो महादेव की आन पड़ै।

गर्भ धारण मंत्र।

"ऊं थं ठं ठिं ठीं ठ ठ: ऊं" इस मंत्र को अनार की कलम से भोज पत्र पर लिखकर तावीज में डालकर पहिनादें। जिन महिलाओं को बार-बार गर्भ गिर जाता है, उन्हें अवश्य लाभ होगा।

वायु गोला यंत्र।

रविवार को सादे कागज पर काली स्याही से निम्न यंत्र लिखें रविवार को ही सूर्य के सामने, जल से धोकर पियें जिनके वायु गोला बन जाता हो इसके पीने से ठीक हो जायेगा।

५	७
९	२

घाव में कीड़ा निवारण हेतु।

चार अंगुल बड़ी लसोड़े की चार लकड़ी (दो सूत मोटी) लैं। एक गले में पहिना दें। फिर तीन दिन लगातार एक-एक करके रोगी के ऊपर से उतार कर प्रवाहित कर दें।

मानसिक रोग निवारणार्थ यंत्र।

रक्त चन्दन, केशर की स्याही से तथा अपामार्ग की कलम से रविवार या पुष्य नक्षत्र में भोज पत्र में लिखें।

ऊ	घ्रों	चूरों
ह्री	आ	क्रां
१४ ॥३	६ ॥।७१	३१+५
१३।	६=३	४=३

इस यंत्र को ताबीज में भर कर रख लें फिर निम्न मंत्र से १०८ बार हवन करें।

"ऊं ह्रौं जूं स: स्वाहा तन्मे मन: शिव संकल्पमस्तु ऊं" बाद में ताबीज को रोगी को पहिना दें।

बबासीर का मंत्र।

कुरेशान, इन किन्डी साही, खूनी बादी तुरतै जाई। (शौच के लिये रखे पानी के ऊपर अंगुली से ``X`` का चिन्ह बनावें, फिर उस पानी से शौच कर लें। जब-जब शौच करैं यह क्रिया अवश्य करें। किसी भी प्रकार के बबासीर की बीमारी ठीक हो जायेगी।)

लापता व्यक्ति का नाम................लापता व्यक्ति की खोज

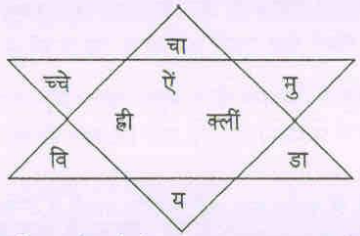

जिस कमरे में लापता व्यक्ति का निवास रहा हो उसके ईशान कोण में बैठकर अनार की कलम सेलाल चन्दन में निम्न यंत्र सफेद कागज पर बनावें।

यंत्र को मिट्टी की हंडिया के अन्दर रखकर तांबे के ९ सिक्के रखें। हांडी को मिट्टी के ढक्कन से ढक कर ईशान कोण में 'ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाय बिच्चे'' मंत्र से ९ बार हवन कर हांडी को ९ बार घुमा कर उसी स्थान पर रख दें। खोया व्यक्ति ९ दिन में वापस आ जायेगा या उसका समाचार मिल जायेगा।

समापन

प्राय: यह सभी को ज्ञात है कि भारद्वाज गोत्रीय पन्त, महाराष्ट्र से आये, चन्द राज्य के समय कुमाऊं में आश्रय मिला प्रतिष्ठा मिली, और ये लोग एक गांव से दूसरे गांव में फैलते गये। यह प्रक्रिया तब तक रही जब तक कुमाऊं में चन्दों का राज्य रहा। ब्रिटिश शासन में गांव आदि न मिलने से, आगे का विस्तार बन्द सा हो गया और लोग अपने ही गांवों तक सीमित रह गये। आजीविका हेतु कृषि, ब्रह्म वृत्ति, वैद्यक, ज्योतिष, छोटी मोटी राज्य सेवा ही मात्र साधन रह गया। इस समय पन्तों के गांव निम्न प्रकार हैं:-

शर्म	श्रीनाथ	माधव	नाथू	भवदास	गौतम	हटवाल
१. उप्राड़ा	१. [illegible]	तमाटा	१. ढुँगाल गाँव	१. काण्डे	१. रिखाड़ी	१. लाली
२. जजूट	२. अल्मोड़ा	२. खर्क (अरिकु)	२. खूंट	२. बना	२. खाडी	२.चुढयार
३. सुनौली	३. तिलाड़ी	३. कोटाबाग	३. मलेरा	३. खितोली	३. गौंखुरी	३. दन्या
४. छांनां	४. पाण्डेखोला	४. हल्यांटी	४. ज्योली	४. गराऊं		
५. गढ़तिर	५. काशीपुर		५. पाण्डेखोला (अल्मोड़ा)	५. पाली		
६. कुनल्ता			६. सिलौटी	६. छीनां		
७. चितई			७. पोखरखाली	७. खानतोली		
८. बरसायत				८. ढ़नौली		
९. पभ्या				९. भटीगांव		
१०. पीपली				१०. बुडेरा		
११. बैड़ती				११. स्यूनराकोट		
१२. अल्मोड़ा- (१) विष्टाकुड़ा (२) चम्पानौला (३) त्यूनरा				१२. ग्वीर		
१३. मलौज						
१४. अघार						

पहाड़ों में आजीविका के साधन सीमित हो जाने के कारण कुछ वर्षों से लोग, शहरों व अन्य मैदानी क्षेत्रों की ओर अग्रसरित हुये और यह प्रक्रिया निरन्तर चल रही है तथा वहां स्थाई रूप से बस गये हैं। अत: गांवों की जनसंख्या तेजी से घट रही है। कोई-कोई तो दो चार पीढ़ी पहले से ही बाहर बस गये थे। भारतवर्ष ही नहीं, भारतवर्ष के बाहर भी बहुत से कुटुम्भ रहने लगे हैं। इनमें से अधिकांश लोग यह भी नहीं जानते कि वे किस गांव के है और किस शाखा से हैं। अपने

पिता, पितामह, प्रपितामह से आगे के नाम भी नहीं जानते। कुछ ऐसे व्यक्ति भी हैं जो केवल यही जानते हैं कि वे पन्त हैं, और पर्वतीय क्षेत्र के हैं।

महाराष्ट्र में हमारा पूर्व इतिहास क्या था, इससे हम अनभिज्ञ हैं। हम कौन हैं कहां से आये, किस प्रकार हमारा विकास हुआ हमारी परम्परा, रीति रिवाज तथा संस्कृति क्या है, इसकी जानकारी वर्तमान परिपेक्ष में सभी का आवश्यकीय है। मुख्यत: उन प्रवासियों के लिये जिनका संबंध अपने मूल गांव से लगभग समाप्त हो गया है।

संयोग से कुछ वर्ष पहले मुझे अल्मोड़ा में उप्राड़ा के श्री ललित प्रसाद पन्त मिले। उनके पास भारद्वाजीय पन्तों की एक वंश-वृक्ष की प्रतिलिपि थी। उन्होंने मुझसे आग्रह किया कि मैं उसका अध्ययन करुं और प्रयास करुं कि इसे और विस्तृत कर वर्तमान तक पूरा करुं।

वंशावली बनाने का कार्य, विद्वानों और जानकारों का है। इस विषय में मेरा ज्ञान तथा लेखन शैली सीमित है। उत्सुकतावश मैंने उस वंशवृक्ष का अध्ययन किया। मैंने देखा कि उसमें केवल दो ही मुख्य शाखायें (राठ) शर्म और भौदास (भवदास) ही दशाय गये हैं, अन्य राठों को छोड़ दिया गया है। बहुत सी, उपशाखायें प्रशाखायें भी छुटी हुई थीं। सम्मिलित रूप से बनी होने के कारण गांवों की अलग-अलग स्थिति मालूम न हो सकी। यदि गांव-गांव घूमा जाय और जानकार लोगों से सम्पर्क कर सूचना इकट्ठी की जाय तो यह कार्य कठिन तो अवश्य है किन्तु असम्भव नहीं है। इसी को ध्यान में रखकर, पहिले मैं वर्षायत (पीपली) ग्राम निवासी श्री ठाकुर दत्त पन्त से मिला उसके पास उसके पिता स्व. मोतीराम पंत जी द्वारा संकलित एक वंशावली उपलब्ध थी जो उन्होंने महामहोपाध्याय स्व. नित्यानंद पंत तथा स्व. तारादत पंत षटशास्त्री के सहयोग से बनाई थी। दोनों वंशावलियों को मिलाकर मैं गांवों की अलग-अलग वंशावली बनाने में आंशिक रूप से सफल हो गया लेकिन फिर भी यह पूर्ण नहीं थी, कुछ गांव और शाखायें छूटी हुई थी। इसके लिये मैं पर्वतीय क्षेत्र में पन्त लोगों के गांवों में घूमा, जानकर लोगों से सम्पर्क कर सूचनायें एकत्र की। कहीं-कहीं पुरानी वंशावलियां भी मिलीं किन्तु वे अपनी ही शाखा तक सीमित थी तथा इस प्रकार बनी थी कि उन्हें केवल वही समझ सकता है जिसने बनाई है। गांवों में मुझे काफी सहायता मिली, प्रेरणा मिली, जिससे मेरा उत्साह बढ़ा। लेकिन काफी प्रयास करने के पश्चात भी इसमें बहुत कुछ करना अभी शेष है। इस कठिन कार्य में त्रुटियों का रह जाना स्वाभाविक है। मुख्यत: व्यक्तियों का नाम ज्येष्ठ, कनिष्ट क्रम में उलटफेर कहीं-कहीं कुछ परिवार भी छूट गये हों, जैसी सूचना मुझे प्राप्त हुई उसी के आधार पर संकलन किया गया है। अत: मैं उन सभी व्यक्तियों से क्षमा मांगता हूं जो इससे प्रभावित हुये हों और प्रार्थना करता हूं कि वे इसे अन्यथा न लेकर सही स्थिति दर्शा दे और मुझे भी तद्नुसार सूचित कर दें।

कुछ गांव ऐसे भी हैं जो भारद्वाज गोत्रीय हैं, लेकिन उनका पूर्ण ब्यौरा मालूम न हो सका कि वे मुख्य शाखा से कहां पर जुड़ते हैं। उनका कौन पूर्वज किस गांव से आया। केवल वर्तमान पीढ़ी से पांच/सात पीढ़ी पूर्व तक की वंशावली ज्ञात हो सकी। भविष्य में जब सही स्थिति ज्ञात होगी तो उन्हें तद्नुसार जोड़ दिया जायेगा।

पन्तों का समय-समय पर विकास विस्तार, तत्कालीन राजाओं से सम्पर्क, जागीर, रौत, दान तथा राज्य संचालन में सहयोग आदि का विवरण भी देना आवश्यकीय था, जिसे सूक्ष्म रुपेण कुमाऊं केशरी पं. बद्रीदत्त पाण्डे जी द्वारा लिखित "कुमाऊं का इतिहास" से भी मदद ली गई, जिसके लिये मैं उस महान इतिहासकार का चिरऋणी हूं। मैं उन सभी भाई, बिरादर, ईष्ट मित्रों, तथा अपने परिवार के समस्त सदस्यों के उत्साहवर्द्धन हेतु अत्यन्त आभारी हूं जिन्होंने मुझे इस वंशावली

को संकलित करने में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग दिया। मैं अपने भाई चि. कैलाशचन्द्र पन्त का विशेष रूप से आभारी हूं जिसने समय-समय पर मुझे हर प्रकार प्रोत्साहित किया और मेरा मनोबल बढ़ाया तथा इस वंशावली को छपवाने की पूर्ण व्यवस्था स्वयं की, जिसके परिणाम स्वरूप यह पुस्तक पाठकों के सन्मुख प्रस्तुत हो सकी है। मैं सभी से अनुरोध करता हूं कि वे त्रुटियों की आलोचना न कर उसमें यथोचित सुधार कर इसे जन-जन तक फैलावें, तभी मेरा यह अल्प प्रयास सफल होगा।

अन्ततः मैं अपने इस प्रयास को उन समस्त, पूर्वजों, पितरों, अग्रजों को सादर समर्पित करता हूं जिन्होंने अपने पांडित्य, निर्भीक वीरता, राजनीति, साहित्य, ज्योतिष, आयुर्वेद शास्त्र तथा अन्य शास्त्रों में ख्याति प्राप्त कर न केवल पन्तों का नाम उजागर किया बल्कि समस्त भारतवर्ष में कूर्मांचल क्षेत्र को गौरवान्वित किया है।

वर्तमान पता
के-६१९ आशियाना
पो. औ. एल. डी. ए. कालोनी
कानपुर रोड-लखनऊ-२२६०१२

विनीत
मोहन चन्द्र पन्त
ग्राम-वर्षायत (बजेत)
पो. औ. जाबुकाथल (बिरीनाग)
२६२५३१
जिला-पिथौरागढ़